Stavan, Stotra, Mantr and Yantr Sankalan

Hiralal Siddantshastri

Unpublished draft

admin

[Type the abstract of the document here. The abstract is typically a short summary of the contents of the document. Type the abstract of the document here. The abstract is typically a short summary of the contents of the document.]

[Type the company name]

[Type the company address]

[Type the phone number]

[Type the fax number]

[Pick the date]

Stavan-Stotr-Mantr-Yantr Sankalan by Hiralal

This unpublished draft manuscript was prepared a few years. After Kakka's death it was in possession of Kumari Koshal for several years. She borrowed substantial portions of this material for her book *Mantr-anushashan* (1985) published by Koshal Granthmala (Badaut, Merath, India).

Ancient tradition of Stavan (objective and meditative contemplation of issues at hand) has evolved considerably over the last 2000 years. Stotr (verses of appreciation of veetraag) turned into songs of devotion of arihants. Somewhat later mantr and Yantr with Brahminical symbols and sounds in the Vedic tradition were developed to resolve specific concerns with Namokar to Parmeshti.

जंबुद्वीप.

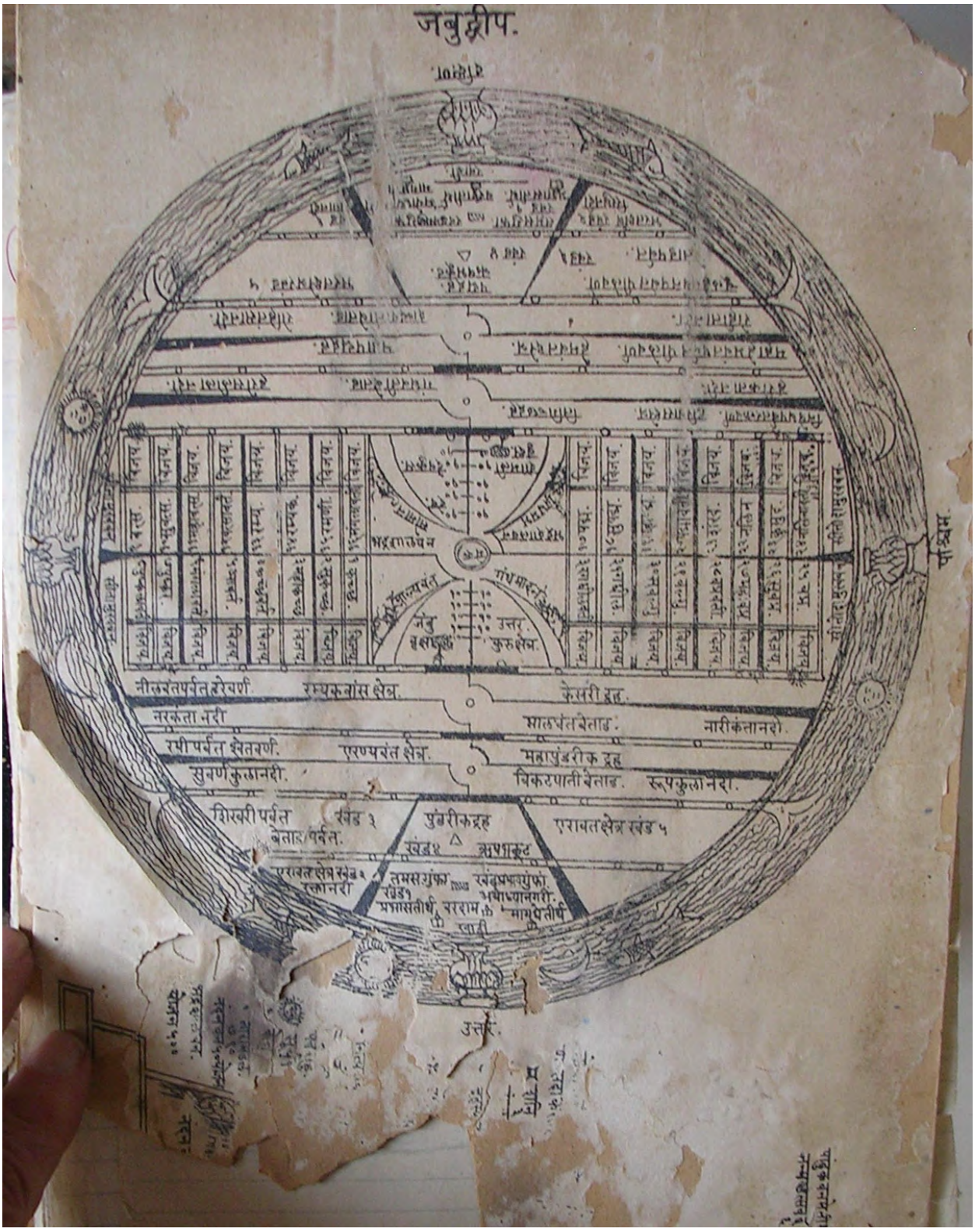

पश्चिम.
भद्रशालवन
मेरु
उत्तर. कुरुक्षेत्र.
नीलवंतपर्वत हरेवर्ण.
रम्यकवांस क्षेत्र.
केसरी द्रह.
नरकांता नदी
मालवंत वैताड.
नारीकंतानदी.
रुपीपर्वत श्वेतवर्ण.
एरण्यवंत क्षेत्र.
महापुंडरीक द्रह
सुवर्णकुलानदी.
विकटपाती वैताड.
रूपकुलानदी.
शिखरी पर्वत
खंड ३
पुंडरीकद्रह
एरावतक्षेत्र खंड ५
वैताड पर्वत.
खंड४
ऋषभकूट
एरावत क्षेत्र खंड२
रक्तानदी
तमसगुंफा
खंडप्रपातगुंफा
खंड१
अयोध्यानगरी.
प्रभासतीर्थ
वरदाम
मागधतीर्थ
उत्तर.

श्री

(२०८)

2

प्रस्तावना - सामग्री

कलिकालतप्रभावेण पापप्राग्भारतोऽपि वा।
एतस्मिन् मंत्रसिद्धिर्हि दृश्यते नैव यद्यपि ॥२४१॥
लक्षादि जपहोमाद्यैर्मतः सोऽभ्यस्यतु यत्।
पापं प्रलीयते जाप्याद्यात्मनः पुण्यमक्षयम् ॥२४२॥
तपो दानं श्रुतं तीर्थमित्याद्यो धर्मसंचयः।
संसिद्धमंत्रजाप्यस्य कालो नाक्रमते तनुम् ॥२४३॥
यथा जलदसंघातः क्षीयते पवनाहतः।
पुण्यमंत्रजपोद्भूतस्तथा पापसमुच्चयः ॥२४४॥
अनन्तभवलग्नस्य पापपङ्कस्य देहिनाम्।
मंत्रजाप्याद् विना नान्यत्करणं विद्यते क्वचित् ॥२४५॥
देवे धर्मे गुरौ मंत्रे तस्माद्भक्तिमुद्वहन्।
पुण्यमंत्रजपं कुर्यादात्मनः सिद्धिवांछया ॥२४६॥

(विद्यानुशासन, पत्र २२५-२२६)

विद्यानुशासन में 'भट्ट हस्तिमल्ल' का उल्लेख है, अतः यह ग्रन्थ उनके पीछे रचा गया है (देखो — विद्यानु० पत्र २२३B)

पं० आशाधरका भी उल्लेख है (पत्र १४३B) जिससे पीछे इसके संग्रहीता सुकुमारसेन मुनि हुए हैं।

ऋद्धि मंत्र एवं साधन विधि

१. ऋद्धि — ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो जिणाणं।
मंत्र — ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं पुराणपुरुषोत्तम श्री वृषभदेवाय नमः स्वाहा।
विधि — श्रद्धापूर्वक प्रतिदिन ऋद्धि और मंत्र १०८ बार जपने से समस्त विघ्न नाश होते हैं।

२. ऋद्धि — ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं।
मंत्र — ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः स्वाहा।
विधि — श्रद्धा सहित प्रतिदिन ११ दिन तक १००० बार ऋद्धिमंत्र जपने से समस्त कार्य सिद्ध होते हैं।

३. ऋद्धि — ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहिजिणाणं।
मंत्र — ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः स्वाहा।
विधि — श्रद्धापूर्वक इस महा मंत्र का ४१ दिन तक १२००० जाप पूरा करने से मनोवांछित कार्य सिद्ध होते हैं।

४. ऋद्धि — ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं।
मंत्र — ॐ ह्रीं अर्हं नमः स्वीं स्वाहा।
विधि — लगातार ६ दिन तक १००० बार श्रद्धा पूर्वक ऋद्धि मंत्र जपने से विघ्न बाधायें दूर होती हैं।

५. ऋद्धि — ॐ ह्रीं अर्हं अणंतोहि जिणाणं।
मंत्र — ॐ ह्रीं श्रीं क्रौं विकट संकट निवारणेभ्यः ऋषभ यक्षेभ्यो नमो नमः स्वाहा।
विधि — श्रद्धा सहित २१ दिन तक प्रतिदिन ऋद्धि मंत्र का ८००० बार जप करने से सब तरह के विकट संकट शान्त होते जाते हैं।

६. ऋद्धि — ॐ ह्रीं अर्हं णमो कुट्ठबुद्धीणं।
मंत्र — ॐ ह्रीं श्रीं वृषभ देवाय ह्रीं नमः।
विधि — ११ दिन तक प्रतिदिन १००० बार ऋद्धि मंत्र को श्रद्धा सहित जपने से विषम विघ्नों का नाश होता है।

७. ऋद्धि — ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीज बुद्धीणं

मंत्र – ॐ आं क्रों ह्रीं क्षीं क्लीं ब्लूं द्रों द्रीं ज्वालामालिनी स्वाहा ।
विधि – २८ दिन तक प्रतिदिन १०८ बार ऋद्धि मंत्र भावों को एकाग्र करके जपने से दूर प्रकार के भयंकर विष दूर हो जाते हैं

८. ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो पादानुसारिणं ।
मंत्र – ॐ नमो भगवते क्ष क्ष व व हमल्व्यूं विषधर गतिस्तम्भं कुरु कुरु स्वाहा ।
विधि – २१ दिन तक प्रतिदिन एकाग्र मन से ऋद्धि मंत्र का जाप करने से सर्प का विष दूर होता है।

९. ऋद्धि – ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं णमो संभिण्ण सोदराणं ह्रां ह्रीं ह्रूं फट् स्वाहा ।
मंत्र – ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सर्व शांति कुरु कुरु ॐ नमः स्वाहा ।
विधि – प्रातःकाल स्नानादि कार्यों से निवृत्त होकर एकाग्र मन से नित्य प्रति ऋद्धि मंत्र को १०८ बार नित्य मंत्र जप करने से सप्त ग्रहों के अरिष्ट निवारण होते हैं।

१०. ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हं णमोसयं बुद्धीणं ।
मंत्र – ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा ।
विधि – ४० दिन तक प्रतिदिन प्रातःकाल एकान्त में एकाग्रचित से ऋद्धि मंत्र का १०८ बार जप करने से कैवल्य रूपी लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ।

११. ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धीणं ।
मंत्र – ॐ ह्रीं वद वद वाग्वादिनी भगवती सरस्वती देवी ह्रू नमः स्वाहा।
विधि – प्रतिदिन प्रातःकाल श्रद्धापूर्वक १०८ बार ऋद्धि मंत्र का जपकर २१००० जाप पूरा करने से बुद्धि विकसित होती है ।

१२. ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहि बुद्धीणं
मंत्र – ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग ग ओ ग ग नमो संकट कष्ट विकट दुःख निवारणाय स्वाहा ।

विधि — प्रातःकाल प्रतिदिन वीतराग देव के समक्ष ऋद्धि मंत्र की एक एक माला फेरने से समस्त संकट दुःख आदि निवारण होते हैं।

१३. ऋद्धि — ॐ ह्रीं ऋजुमतीणं ।
मंत्र — ह्रों मं मं यं यं क्र ठं वं वं लं क्षं यं रं रें ओं ओं हः नमः स्वाहा ।
विधि — ४२ दिन तक प्रतिदिन १०८ बार जप करने से वृश्चिक (बिच्छु) से सताये व्यक्ति पर अजमाये तो कष्ट दूर होता है।

१४. ऋद्धि — ॐ ह्रीं अर्हं णमो विपुलमतीणं ।
मंत्र — ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमि उणे विसहर विसह जिण फुलिंग ह्रीं श्रीं क्लीं नमः ।
विधि — ब्रह्मचर्य पूर्वक ऋद्धिमंत्र का २००० बार प्रतिदिन जप करते हुये सवा लाख पूरा करने से अधिष्ठातृ देवी प्रसन्न होती है और लक्ष्मी बढ़ती है।

१५. ऋद्धि — ॐ ह्रीं अर्हं णमो दशपुर्वीणं ।
मंत्र — ॐ ह्रीं हं सः स्वाहा ।
विधि — लगातार ११ दिन तक रविवार के दिनों में रात्रि में सोने से पूर्व ऋद्धि मंत्र का १०८ जप करने से ऋद्धि सिद्धि बढ़ती है।

१६. ऋद्धि — ॐ ह्रीं अर्हं णमो चवदश पुर्वीणं ।
मंत्र — ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं परम शान्ति विधायकाय श्री वृषभजिन पादाय नमः स्वाहा ।
विधि — प्रतिदिन प्रातः ऋद्धि मंत्र का १०८ बार जप से राज्य सम्पदा मिलती है।

१७. ऋद्धि — ॐ ह्रीं अर्हं णमो अटुंग महानिमित कुसलाणं ।
मंत्र — ॐ ह्रीं श्रीं ऐं साध्य २ क्लूं अर्हं नमः स्वाहा ।
विधि — प्रतिदिन ऋद्धि मंत्र के जाप से संताप दूर होते हैं।

१८. ऋद्धि — ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउणयिड्ढि पत्ताणं ।
मंत्र — ॐ क्रीं क्लीं अ सि आ सा वरे सुरे नमः स्वाहा ।

विधि – लगातार ११ मंगलवार के दिनों में प्रातः ऋद्धि मंत्र की आराधना करने से प्रतिद्वन्द्वियों की पराजय होती है।

१९. ऋद्धि — ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं ।
मंत्र — ॐ ह्रीं वीं क्ष्वीं श्रुतदेव आये अर्हत उत्पत उत्पत स्वाहा ।
विधि — ऋद्धि मंत्र के आराधना से साधक अतुल विभूति एवं प्रतिष्ठ पाता है।

२०. ऋद्धि — ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं
मन्त्र — ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चक्रधारिणी चक्रेश्वरी देवी दुष्टान हनय हनय स्वाहा ।
विधि — मंत्राराधन कर ऋद्धि सहित मंत्र को भुजबंध में धारण करने से दुष्ट अपनी दुष्टता त्याग देता है ।

२१. ऋद्धि — ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं ।
मंत्र — ॐ ह्रीं हर हुं हः सर सुंस क्लीं हुं फट् स्वाहा ।
विधि — श्रद्धा सहित इस मंत्र के बार बार आराधन से क्रोधित स्वामी भी प्रसन्न हो जाता है।

२२. ऋद्धि — ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामिणं ।
मन्त्र — ॐ ह्रीं ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रः अग्निदोष शम कुरु कुरु स्वाहा ।
विधि — ऋद्धि मंत्र को एकान्त में आराधना से अग्निभय दूर होता है।

२३. ऋद्धि — ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं ।
मंत्र — ॐ णमो क्रां श्रीं क्रौं क्ष्वीं ह्रीं फट् स्वाहा ।
विधि — प्रतिदिन आराधना से शत्रु वश में होता है और विजय मिलती है।

२४. ऋद्धि — ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठि विसाणं ।
मंत्र — ॐ ह्रीं णमो नमः सर्व सूरिभ्यः उपाध्यायेभ्य ॐ नमः नमः स्वाहा ।
विधि — प्रतिदिन ऋद्धि मंत्र आराधन से दुःखों का नाश, सुखों की प्राप्ति होती है।

२५. ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं ।
मंत्र – ॐ थम्मेई थम्मेई जल जलण चोर,वसग्गं पवरोड स्वाहा ।
विधि – लगातार २१ दिन तक ऋद्धि मंत्र ~~आह~~ आराधना से विपत्तियों से छुटकारा होता है।

२६. ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं ।
मंत्र – ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं धणुं धणुं महाधणुं महाधणुं स्वाहा ।
विधि – लगातार ~~२६~~ २८ दिन तक १००० बार ऋद्धि मंत्र का आराधन से चोर और डकुओं का भय जाता रहता है।

२७. ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं ।
मंत्र – ॐ नमो भगवते श्रीमते जय विजय विमोहय सर्व सिद्धि सौख्यं कुरु कुरु-स्वाहा ।
विधि – उक्त मन्त्र के आराधन से सभी कार्य सिद्ध होते हैं।

२८. ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर तवाणं ।
मंत्र – ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं अ सि आ सा चुलु चुलु हुलु हुलु मुलु मुलु कुलु कुलु इच्छियं मे कुरु कुरु स्वाहा ।
विधि – प्रातःकाल प्रतिदिन लगातार ४२ दिनों तक १०८ बार उक्त जप से सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध होती है।

२९. ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हं णमो बंभचारिणं ।
मंत्र – ॐ नमः ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः क्ष्वीं सर्वरोग निवारणं सर्वदोष हारणं कुरु कुरु स्वाहा ।
विधि – २१ सप्ताह लगातार सोम, बुद्ध, शुक्र व रविवार के दिनों में प्रातः १०८ बार जपने से समस्त रोग दोषों का निवारण होता है।

३०. ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं परक्कमाणं ।
मंत्र – ॐ ह्रीं श्रीं क्ष्वीं अरिहंत सिद्ध आइरियं उवज्झं सव्व सव्व साहूणं
विधि – ऋद्धि मंत्र के आराधन करते रहने से अलौकिक विभूतियां प्राप्त एवं आन्तरिक वेदनाओं का परिहार होता है।

३१. ऋद्धि — ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहि पत्ताणं ।
मंत्र — ॐ ह्रीं क्लीं ध्वीं ऐं ह्रौं पद्मावत्यै नमो नमः श्रीं स्वाहा ।
विधि — उक्त ऋद्धि मंत्र का ७ दिन तक प्रतिदिन १०८ बार आराधन करने के पश्चात कच्चे सूत को मंत्रित कर कमर में बांधने से असमय में गर्भ का पतन नहीं होता ।

३२. ऋद्धि — ॐ ह्रीं अर्हं णमो खिल्लोसहि पत्ताणं ।
मंत्र — ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा सर्व परिदुष्टान् स्तम्भय २ मोहय २ अंधय २ मूकवत्कारय कुरु कुरु ह्रीं स्वाहा ।
विधि — लगातार २१ दिन तक १०८ बार ऋद्धि मंत्र को जपने के पश्चात मुष्टिका बांधकर उक्त मंत्र को जपे तो भूत पिशाचादि से छुटकारा मिलता है।

३३. ऋद्धि — ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहि पत्ताणं ।
मंत्र — ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्यं व्याधिक विषापहारिणी विद्या हूँ नमः स्वाहा ।
विधि — वायव्य वायव्य कोण की ओर मुख करके प्रति शनिवार को लगातार एक वर्ष तक उक्त मंत्र को १००० जप कर सिद्ध करे। पश्चात बिच्छू काटे आदमी पर इस मंत्र से मंत्रित राख द्वारा झाड़ा देने से बिच्छू का जहर नष्ट होता है।

३४. ऋद्धि - ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहि पत्ताणं ।
मंत्र — ॐ ह्रीं श्री बाहुबलि महा बाहुबलि प्रचण्ड बाहुबली पराक्रमी बाहुबली ऊर्ध्व बाहुबलि शुभाशुभं कथयते कथयते स्वाहा।
विधि — स्नानादि से शुद्ध होकर प्रतिदिन प्रातः सायं १०८ बार जप करे। सिद्धि के पश्चात सोते समय उक्त मंत्र को १०८ बार जप करे। भूमि पर सोवे तो जो बात पूछोगे उसका उत्तर अवश्य मिलेगा।

३५. ऋद्धि — ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहि पत्ताणं ।
मंत्र — ॐ ह्रीं वृषभ यक्ष दिव्य रूपाय महा वर्ण रहि रहि श्री श्रों क्रों ह्रीं नमः स्वाहा ।

विधि — ४२ दिन तक प्रतिदिन १०८ बार जपने से शुभाशुभ प्रश्नों का उत्तर विदित होता है।

३६. ऋद्धि — ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचबलीणं, कायबलीणं खीरसवीणं सप्पिसवीणं।

मंत्र — ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्री चामुंडे स्वाहा।

विधि — ऋद्धि मंत्र का ८ दिन लगातार आराधन करने से विविध उपसर्गों का शमन होता है। उपद्रव शान्त होते हैं।

३७. ऋद्धि — ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं।

मंत्र — ॐ नमो ज्वालामालिनी जिनशासन सेवाकारिणी क्षुद्रोपद्रव विनाशिनी शान्तिकारिणी धर्म प्रकाशिनी नमः कुरु कुरु स्वाहा।

विधि — प्रतिदिन १०८ बार ४१ दिन तक जपने से सब प्रकार की शान्ति होती है, भय मिटता है।

३८. ऋद्धि — ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमीयसवीणं।

मंत्र — ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लीं ब्लीं हूं स ह्रीं ह्रः ह्रां द्रां द्रीं द्रौं द्रः सर्व जनवश्यं महामोहनी कुरु कुरु स्वाहा।

विधि — लगातार ११ दिन तक ११०० बार श्रद्धापूर्वक जप करने से तथा ८ उड़द इस मंत्र द्वारा १०८ बार मंत्रित कर चारों दिशाओं में फेंकने से साधक के शरीर की रक्षा होती है।

३९. ऋद्धि — ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणं महाणसाणं वड्ढमाणाणं।

मन्त्र — ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रां श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रः क्ष्वीं कुविष विषमविष महाविष विदारिणी महामायायै नमः स्वाहा।

विधि — श्रद्धापूर्वक आराधन से सभी प्रकार के प्राण घातक विषों का शमन होता है।

४०. ऋद्धि — ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्व साहूणं।

मंत्र — ॐ नमो भगवते विषम विष विनाशिनी महाकालदष्ट मृतक को स्थापनी पाप विमोचनी कालकुट्टारिणी देवि देवते ह्रीं श्रीं नमो नमः स्वाहा।

विधि — उक्त ऋद्धि मंत्र के आराधन से साधक सब पापों से विमुक्त होता है।

द्वितीय प्रकरण

१. बीजों का प्रयोजन - दूसरा वर्ग -

ध्वनार्थ श्वेताक्षर, आकृष्टि स्तम्भन, मोहनार्थ पीताक्षर व हरिताक्षर तथा व्यभिचारार्थ कृष्णाक्षर । ई ऊ व रु ण स्त्रीलिंगी. ऋ ॠ ऌ ॡ ण न म य द र ऐ ओ और औ विकल्पेन स्त्रीलिंगी हैं। ल य म विकल्पेन नपुंसक है। शेष अक्षर पुल्लिंग हैं। ई ष ऌ ॡ और ऊ पीताक्षर हैं। ऋ ॠ ष ण य द क्ष र - ये कठिन भेद और कार्य कारण सम्बन्ध वाले कार्यों को करते हैं। शेष अक्षर मिले हुए तिल और चावलों के समान रहते हैं। मंत्र को जानने वाला मनुष्य ताकि (मंत्र की) विशेषता बुद्धि से जड़ न करे, सब काम ले। अकार आकार का प्रतिषेधक है। अकार बिन्दु सहित होने पर शान्तिक, पौष्टिक, वश्य और आकर्षण कर्मों को करता है। उ ऊ ऋ ॠ ए ऐ और ओ निर्विष कर्म तथा व्यभिचार करते हैं। अंकार सब का उच्चाटन करता है। खकार निर्विष कर्म को और विकल्प से वशीकरण करता है। घकार वशीकरण किन्तु विकल्प से स्तम्भन, भेदन और व्यभिचार कर्मों को करता है। चकार और घकार शांतिक और पौष्टिक कर्मों को करता है। और विकल्प से भेदन और व्यभिचार को करता है। ज और झ निर्विष करता है। विकल्प से स्तम्भन और व्यभिचार को भी करता है। ञ आकर्षण को और विकल्प से व्यभिचार को भी करता है। ट वश्य और व्यभिचार को करता है। ण व्यभिचार को करता है। त थ शान्ति और पौष्टिक करता है। द ध व्यभिचार करता है। न भी व्यभिचार करता है। प फ शान्ति और पौष्टिक करता है। ब भ स्तोभ और स्तम्भन करता है। म सब कर्मों को और विकल्प से सब सिद्धि को करता है। य सब व्यभिचार के कर्म और विकल्प से आकर्षण करता है। लं स्तम्भन वशीकरण, मोहन तथा विकल्प से निर्विष करता है। व निर्विष करता है। श शान्ति, पौष्टिक, वश्य और आकर्षण करता है। ष स्तम्भन और मोहन करता है। स वाणी सिद्धि करता है। ह सर्व कार्य सि· करता है। क्ष सब योगों को करने वाला है। मंत्री को अक्षर के प्रति सभी प्रयत्न करने चाहिए।

श्वेताक्षर - ध्वनार्थ, पीताक्षर - स्तम्भन व मोहन में, हरित व कृष्णाक्षर - व्यभिचार में ।

स्त्रीलिंगी - ई ऊ व रु ण

नपुंसक - ऋ, ॠ, ऌ, ॡ ण न म य द र ऐ ओ औ ।

पुलिंग - अ आ इ उ अः क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ,
ट ठ ड ढ त थ ध, प फ ब भ ल श ष स ह क्ष ।

इति

तृतीय परिच्छेद

साधकों को आवश्यक सूचनायें -

सामान्यतः मंत्रों के ऊपर से जनता का विश्वास उठता चला जाता है। कोई कहता है कलियुग में मंत्र सिद्ध नहीं होते। कोई कहता है उनकी विधि पूर्ण नहीं और कोई कहता है मंत्र विद्या सब झूठ मूठ का ढकोसला है। तीसरा विचार रखने वालों से हमारा कहने का अधिकार नहीं है क्यों कि चिरकाल के मनन के पश्चात् बना हुआ विचार पूर्ण विश्वास के साथ कभी नहीं बदलता। अथवा यदि बदलता भी है तो बहुत धीरे-धीरे ही बदलता है। इसके अतिरिक्त श्रद्धा के बिना किया हुआ जप निष्फल भी होता है। इन्हीं सब कारणों से मंत्र की सिद्धि में विश्वास न रखने वालों के लिए हमारा कुछ भी कहना अरण्यरोदन के अतिरिक्त और कुछ न होगा। दूसरा मत रखने वालों की बात बहुत कुछ ठीक है और उन्हीं के वास्ते यह ग्रन्थ तैयार किया गया है इस ग्रन्थ की सहायता से मंत्रों की अपूर्ण विधियां पूर्ण की जा सकेंगी और उनका अनुष्ठान पूर्ण विश्वास के साथ दत्त-चित होकर करने से अवश्य ही सफलता मिलेगी। प्रथम मत रखने वालों की बात भी अंशतः ठीक है और वह इस प्रकार है - कलियुग में मंत्रों की शक्ति अथवा देवताओं की शक्तियां कम नहीं हुई, किन्तु साधकों की शक्तियां पूर्ण रूप से घट गयी हैं। हमारे दैनिक जीवन में भोग-विलास और सांसारिक वासनाओं का प्रवेश इतना अधिक हो गया है कि हमारा नैतिक जीवन लगभग समाप्त हो गया है। अतएव नये साधकों को चाहिये कि वह पहले अपने अन्दर साधक के लक्षणों के गुणों को भरकर ही मंत्र-साधन में हाथ लगावें। यहां वह बात और भी है कि साधक के असाधारण गुणों को देखकर किन्हीं को निराश होने की आवश्यकता नहीं है। क्यों कि - गुणों की परम्परा से साधकों के भी तीन भेद होते हैं - उत्तम मध्यम और जघन्य। साधक के योग्य सब गुणों को रखने वाले उत्तम साधक होते हैं। इनको यदि कुछ विधि संबंधी न्यूनता भी होगी तो उसमें विशेष क्षति नहीं होती। उत्तम साधक के मंत्र के सिद्ध होने पर मंत्र का अधिष्ठाता देवता प्रत्यक्ष होकर उसके सम्मुख आता है। साधक के योग्य अधिकांश गुणों के रखने वाले और थोड़े से गुणों से रहित पुरुष मध्यम साधक होते हैं। यह भी विधि की न्यूनता को थोड़ा बहुत निबाह सकते हैं। इनके सन्मुख देवता अप्रत्यक्षरूप से आता है। किंतु उनको देवता के आने का पता भलीप्रकार लग जाता है। कभी कभी देवता इनको स्वप्न में भी दर्शन देते हैं। साधक के योग्य थोड़े से गुणों को रखने वाले और अधिकांश गुणों से रहित पुरुष जघन्य या अधम साधक होते हैं।

उनका मंत्र पूर्ण विधि के बिना सिद्ध नहीं होता। सिद्ध होने पर भी देवता इनके पास नहीं आता। केवल मन की प्रसन्नता और संतुष्टि आदि से ही इनको यह पता लग जाता है कि मंत्र सिद्ध हुआ या नहीं। देवता के न आने पर भी अधम साधकों का कार्य मंत्र के सिद्ध होने पर पूर्ण हो जाता है।

मंत्रों के सिद्ध न होने का एक कारण और भी है। वह यह है कि प्रायः साधक किसी भी मंत्र के चटकीले फल को देखते ही उसमें हाथ डाल देते हैं। ऐसा करना ही मंत्रों की असफलता का मूल कारण है। प्रत्येक साधक को चाहिये कि - वह किसी भी मंत्र में हाथ डालने के पूर्व योगोपदेश में लिखित उपायों से यह निश्चित करे कि अमुक मंत्र उसको सिद्ध हो सकता है अथवा नहीं।

साधकों के भी दो भेद होते हैं गुरु और शिष्य। प्रत्येक साधक को योग्य है कि, गुरु के संयोग में ही अनुष्ठान को आरम्भ करे, स्वयं कदापि न करे। अन्यथा कार्य के बिगड़ने पर अनेक प्रकार की हानियों की संभावना है। यहां यह भी ध्यान में रखने योग्य बात है कि गुरु की सहायता बिना उनको धन-मान आदि से पूर्णतया संतुष्ट किये कभी न ले। अन्यथा चित्त प्रसन्न न रहने से बीच में बहुत सी अड़चनें आ जावेंगी। जो साधक उपरोक्त इन सब बातों के ऊपर विशेष लक्ष देकर मंत्रों की सिद्धि में हाथ डालेंगे, उनके मंत्र अवश्य ही सिद्ध होंगे, इसमें लेश मात्र भी सन्देह नहीं है।

योगोपदेश –

मंत्र साधनके लिए योग, उपदेश, देवता, सकलीकरण, उपचार, जप, होम, दिशा, काल आदि तथा पृथिवी आदि मण्डल, और अक्षरोंकी संज्ञायें जाननी आवश्यक हैं। सर्व प्रथम साधकके नाम और मंत्रोंके अक्षरोंके नक्षत्र, तारे और राशिको मिलाना चाहिये। विरोध न होने पर समझ लेना चाहिये कि यह मंत्र इसको सिद्ध होगा अथवा नहीं। तदुपरांत ही मुहूर्त आदि देखकर अनुष्ठान प्रारम्भ करना चाहिये। मंत्र और नामकी इस प्रकार परीक्षा विधिको योगोपयोग कहा जाता है। जैन एवं वैदिक मंत्र शास्त्रोंमें अनेक विधियों का वर्णन किया गया है।

चतुर्थ प्रकरण

मंत्र निर्माण निर्देश –

अं हँ ह हा हि ही हु हू हृ हॄ हॢ हॣ हे है हो हौ हं हः । इन सोलह बीजों से अक्षरों के बांधने का कर्म होता है। अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः इन अक्षरों के विकल्प से एक दूसरे का निरोध होता है। स्व (वायव्य) और रं (अग्नि) अक्षर परस्पर मित्र हैं। क्षि (पृथ्वी) य (जल) मित्र हैं। ~~पीक्ष~~ पीताक्षर और रक्ताक्षर एक दूसरे के सम्बन्धी हैं। कृष्णाक्षर और हरिताक्षर भी एक दूसरे के संबंधी हैं। श्वेताक्षर का अपना ही संबंध होता है। स्त्री अक्षर और पुल्लिंग अक्षर मित्र होते हैं। नपुंसक अक्षर उदासीन होता है। ज क ग ल ऌ ए ऐ का अभय संबंध होता है। ~~क~~ ऊ और ऐ का संबंध, च श का संबंध होता है। ऋ ॠ य र ड ण और म का वह संबंध नहीं होता है। विकल्प से संयोग संबंध हो जाता है। ख ग छ झ ठ थ फ ब और अ का संबंध होता है। अक्षर उदासीन रहते हैं। आधार अक्षरों से आधार अक्षरों को मिलाकर जाल बनावे। उनमें जो अक्षर बलवान हो उसी से मिलावे। कृष्ण अक्षर सब को सुख देते हैं। यह मिलाये जाने से कार्य को नष्ट नहीं करते। ऊर्ध्व अक्षर और अधः अक्षर भाषा अक्षरों के साथ विकल्प से आकर्षण और उच्चाटन करते हैं। अव्यय अक्षर स्तंभन और प्रतिषेध करते हैं। अधः अक्षर विकल्प से सब काम करते हैं। निर्विष अक्षर प्रतिषेध कार्य को नहीं करता, विसर्ग (~~सहित~~ रहित) वशीकरण को ही करता है। चौंतीस योगाक्षर और सोलह अक्षर सभी कर्म कर लेते हैं। एक एक अक्षर से सोलह मंत्र और यंत्र होते हैं। क्रिया-कारक के संबंध से पचास (५०) तथा चवालीस (४४) मंत्र यंत्र बनते हैं।

इति चतुर्थ प्रकरणम्

पंचम प्रकरण

बीजाक्षरों के नाम व सामर्थ्य –

अक्षर	नाम	कार्य
ह्रीं अं ह्रीं	×	मृत्युनाशनं
ह्रीं आँ ह्रीं	×	आकर्षणं
ह्रीं इ ह्रीं	×	आकर्षणं
ह्रीं उं ह्रीं	×	बलकरं
ह्रीं ऊँ ह्रीं	×	उच्चाटनं
ऋं	×	क्षोभनं
ॠं	×	मोहनं
लृं	×	विद्वेषणं
ॡं	×	उच्चाटनं
एं	×	वश्यं
ऐं	×	पुरुष वश्यं
[illegible]	×	लोक वश्यं
औं	×	राज वश्यं
अं	×	गजवश्यं
अः	×	मृत्युनाशनं
कं	विषबीजं	
खं	×	स्तोभनं
गं	गणपति	×
घं	×	स्तम्भनम्
ङ	असुरं	×
चं	सुरबीजं	×
छं	×	लाभं मृत्यु नाशनं च
जं	ब्रह्मराक्षसे	मृत्यु नाशने
झं	चन्द्र बीजं	काम्यार्थः धर्मार्थ काम मोक्ष राजवश्याकर्षणं च।
ञं	×	मोहनं
टं	×	क्षोभनं चित्त कलंककण्ठे
ठं	चन्द्र बीजं	विष मृत्यु नाशनं
डं	~~गरुड~~ गरुड बीजं	विष नाशनं च

ढं	कुबेर बीजं (कुमार बीजं)	उत्तराभिमुखं स्थितं चतुर्लक्ष जपा सिद्धिः धन धान्य समृद्धि शंख निधि पद्म निधिं च करोति ।
णं	असुर बीजं	(त्रिलक्ष जपात्सिद्धः)
तं	अष्टव सुधा बीज	धन धान्य समृद्धिः
थं	यमराज बीजं	मृत्युभय नाशनं
दं	दुर्गा बीजं	वश्य पुष्टि करं
धं	सूर्य बीजं	जय सुखकरं
नं	ज्वर बीजं (ज्वर देवता)	x
पं	वीरभद्र बीजं	सर्व विघ्न विनाशन
फं	विष्णु बीजं	धन धान्य वर्धनं
बं	ब्रह्म बीजं	वात-पित्त श्लेष्म रोग नाशनं
भं	भद्रकाली बीजं	भूत-प्रेत पिशाच भयोच्चाटनं
मं	मालाद्रिन रुद्र बीजं	स्तोभन, मोहन, विद्वेषण, करे
	[illegible]द्रः	भूत प्रेत पिशाचाद्याछानन्नं अष्ट महा सिद्धि करं ।
[illegible]	व[illegible] [illegible]जं	उच्चाटने
रं	आग्नेय बीजं	उग्र कर्म कार्य कर्तृ
लं	इन्द्र बीजं	धन धान्य सम्यक्त्व करं
वं	वरुण बीजं	विष मृत्यु नाशनं
शं	लक्ष्मी ~~श्रि~~ बीजं	लक्ष जपात् लक्ष्मीकरं
षं	सूर्य बीजं	धर्मार्थ काम मोक्षकरं
सं	वागीश	ज्ञानकरं वाचा सिद्धि करं
हं	शिव बीजं	दश सहस्र जपात् कार्य सिद्धिः
ळं	भू बीजं	भू लाभं
क्षं	नृसिंह बीजं	दश सहस्र जपात् मृत्युनाशनं

अकार से क्षकार पर्यन्त ये सब अक्षर 'ह्रींकार' को आगे पीछे स्थापित करे मध्य में एक एक पृथक् पृथक् अक्षर रखकर जपने से सर्व कार्यों की सिद्धि होती है ।

इति पंचम प्रकरणम्

—ध्यान विधि—

हाथ की दो दो अंगुलियों के बन्ध से पांचों परमेष्ठियों की मुद्रा को धारण करके पद्मासन से बैठा हुआ मंत्री अपने शरीर की ओर से चित्त हटाकर नाभि में एक सोलह दल के कमल का ध्यान करे। फिर प्रत्येक पत्र के ऊपर अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ऋ ॠ ऌ ॡ ओ औ अं अः। इन सोलह स्वरों का तथा कमल की मध्यवर्ती कर्णिका पर 'ह्रँ' का ध्यान करे।

पुनः हृदय में मुकुलित हुए एक आठ दल वाले कमल का ध्यान करे तथा इस हृदय कमल की कर्णिका में अपने शुद्ध सिद्ध समान स्वरूप का चिन्तन करे। हृदय कमल के आठ पत्तों पर क्रम से ज्ञानावरणादि आठ कर्मों को स्थापित करे।

पश्चात् कुम्भक प्राणायाम से नाभिकमल के पत्तों को विकसित कर '[illegible]' इस अग्नि बीज की रेफ से निकलती हुई ज्वाला द्वारा कमल पत्तों [illegible]र स्थित [illegible] आठों कर्मों को जलाता हुआ चिन्तन करे। फिर [illegible] स्वर [illegible]रा उसकी भस्म को बाहर उड़ाकर उस 'हं' के अर्द्धचन्द्र से निकलने वाले तीन प्रकार के अमृत "श्रीं हं सः" से आदर पूर्वक उस हृदय कमल को सींचे।

[illegible]त [illegible]के स्वर से अपने आत्मा को अष्ट प्रातिहार्यों से अलंकृत तीनों [illegible]कों में व्याप्त अरिहन्त अरहन्त परमात्मा का चिन्तन करे। उस समय अपनी आत्मा को स्फटिक मणि के समान स्वच्छ व निर्मल और ज्ञान तेज से सब चराचर जगत को अपने दोनों चरणों में झुकता हुआ ध्यान करे।

—ध्यान मंत्र—

ॐ ह्रीं सकल शतेन्द्र पूजित, अष्टमहाप्रातिहार्य विभवैरलंकृत, द्वादशगण परिवेष्टित सर्वानन्त चतुष्टय सर्वज्ञ भट्टारक तव पाद युगलं मम मानस कमले स्थितं करोमि स्वाहा।

इस प्रकार अपने को परमात्म रूप में ध्यान करने वाले साधक के बंधे हुए कर्मों की प्रतिक्षण विपुल परिमाण में निर्जरा होती है। आने वाले विघ्न दूर भाग जाते हैं। डाकिनी, शाकिनी, भूत-प्रेत आदि दूर से ही भाग जाते हैं। उक्त प्रकार के ध्यान से बढ़कर हितकारी कोई ध्यान नहीं है।

इस प्रकार उक्त सकलीकरण किसी भी मन्त्र के पूर्व करना अत्यावश्यक है।

101 (१०८)

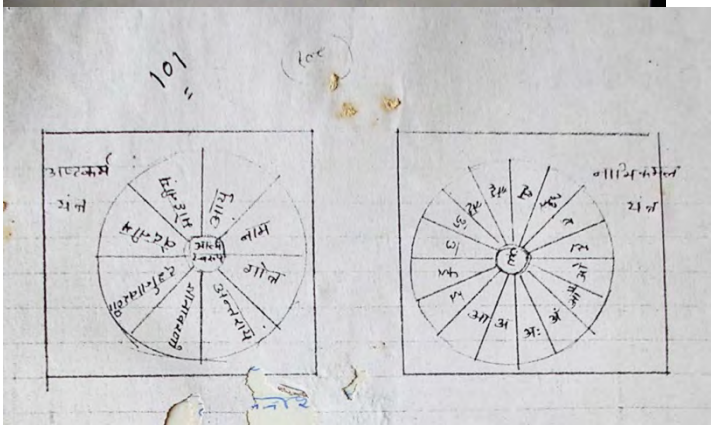

मंत्र जप विधि का कोष्ठक

कर्म	स्तम्भन १	विद्वेषण २	आकर्षण ३	पौष्टिक ४	शांतिक ५	उच्चाटन ६	वश्य ७	मारण ८
१. दिशा	पूर्व	आग्नेय	यम	नैऋत्य	वरुण	वायव्य	कुबेर	ईशान
२. समय	पूर्वाह्न	मध्याह्न	पूर्वाह्न	प्रभात	अर्द्धरात्रि	अपराह्न	पूर्वाह्न	संध्या
३. मुद्रा	शंख	प्रवाल	अंकुश	ज्ञान	ज्ञान	प्रवाल	सरोज	वज्र
४. आसन	वज्रासन	कुक्कुटासन	दंडासन	पंकजासन	पंकजासन	कुक्कुटासन	स्वस्तिक	भद्रासन
५. पल्लव	ठं ठः	हुं	वौषट्	स्वधा	स्वाहा	फट्	वषट्	घे घे
६. वस्त्र	पीत	धूम्र	उदयार्क	श्वेत	श्वेत	धूम्र	अरुण	कृष्ण
७. पुष्प	पीत	धूम्र	अरुण	श्वेत	श्वेत	धूम्र	अरुण	कृष्ण
८. वर्ण	पीत	धूम्र	उदयार्क	श्वेत	श्वेत	धूम्र	रक्त	कृष्ण
९. विन्यास	आक्रान्त गर्भित	पाशान्तरोधक	ग्रथित	संपुट सर्वतो मुख (विदर्भित)	×	समस्त आद्यन्त रोधक गर्भित	मन्थन आद्यन्त गर्भित विदर्भित	ग्रस्त गर्भित पल्लव
१०. प्राणायाम	कुम्भक	रेचक	पूरक	[illegible]	पूरक	रेचक	पूरक	रेचक
११. माला	नीम के फल	रीठे के फल	कमल के बीज	[illegible]	शंख	घोड़े के दांत	कमल के बीज	गधे के दांत
१२. मणिये	स्वर्ण	पुत्रजी[illegible]	[illegible]	[illegible]	स्फटिक	पुत्रजीवा	प्रवाल	पुत्रजीवा
१३. अंगुली	कनिष्ठ[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मध्यमा	तर्जनी	अनामिका	तर्जनी
१४. हाथ	दक्षिण	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	दक्षिण	वाम	दक्षिण
१५. [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण
१६. ऋतु	बसन्त	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	बसंत	शिशिर
१७. मण्डल	पृथ्वी	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	जल	वायु
१८. देवता	लक्ष्मी	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	दुर्गा	सरस्वती	काली
१९. बिछाने के आसन	हस्ति चर्म	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]			
२०. दानों की संख्या	१५	१२	१०८	[illegible]	[illegible]	१५	१०८	१५
२१. दिवस	रवि, शनि, मंगल	शुक्र, शनि	×	[illegible], सोम, मंगल	बुध, गुरु	शनि	गुरु, सोम	रवि, शनि, मंगल
२२. पक्ष	कृष्ण	कृष्ण		कृष्ण	शुक्ल	कृष्ण	शुक्ल	कृष्ण
२३. तिथि	अष्टमी, पूर्णा अमावस्या	८, ९, १०, ११		४, ८, ९, १४	२, ३, ५, ७	८, १४	४, ६, ९, १३	
२४. नक्षत्र	अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूला, रेवती	वैनाशिक	पुष्य उत्तरा त्रय	पुष्य उत्तरा त्रय		वैनाशिक	पुष्य, उत्तरा	~~वैनाशिक~~ वैनाशिक
२५. योग	चर	चर	स्थिर	स्थिर	स्थिर	चर	स्थिर	चर
२६. करण	×	×	बव, बालव, कौलव	बव, बालव, कौलव		×	×	×
२७. लग्न	वृश्चिक	वृश्चिक		सिंह	सिंह	वृश्चिक	×	वृश्चिक
२८. तत्त्वोदय	पृथ्वी उदय	आकाशोदय	अग्नि उदय	जल उदय	जल उदय	वायु उदय	अग्नि उदय	अग्नि उदय
२९. अक्षर	पृथ्वी बीज ल	आकाश ह	जल व	चंद्र स	चंद्र बीज स	वायु बीज य	जल बीज व	अग्नि बीज र

	५	४	७		१	८	२	६
कर्म	शांति कर्म	पौष्टिक कर्म	वश्य कर्म	आकर्ष[illegible] कर्म	स्तंभन कर्म	मारण कर्म	विद्वेषण कर्म	उच्चाटन कर्म
दिशा	वरुण	नैऋत्य	कुबेर	[illegible]	पूर्व	ईशान	आग्नेय	वायव्य
समय	अर्द्ध रात्रि	प्रभात काल	पूर्वाह्नकाल	पूर्व[illegible]	पूर्वाह्न काल	संध्या काल	मध्याह्न काल	अपराह्न काल
मुद्रा	ज्ञान मुद्रा	ज्ञान मुद्रा	सर[illegible]	[illegible]	शंख मुद्रा	वज्र मुद्रा	प्रवाल मुद्रा	प्रवाल मुद्रा
आसन	पंकजासन	पंकजासन	स्वस्तिक	[illegible]	वज्रासन	भद्रासन	कुक्कुटासन	कुक्कुटासन
पल्लव	स्वाहा	स्वधा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	घे घे	हुं	फट्
वस्त्र	श्वेत	श्वेत	रक्त	[illegible]	[illegible]त	कृष्ण	धूम्र	धूम्र
पुष्प	श्वेत	श्वेत	[illegible]	[illegible]	[illegible]त	कृष्ण	धूम्र	धूम्र
वर्ण	श्वेत	श्वेत	[illegible]	[illegible]	[illegible]त	कृष्ण	धूम्र	धूम्र
प्राणायाम	पूरक योग	पूरक	[illegible]	[illegible]	[illegible]	रेचक	रेचक	रेचक
नाम	दीपनादि नाम	दीपनादि[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] नाम	रोधन आदि नाम ध्यान नाम	पल्लवांत नाम	पल्लवांत नाम
माला	स्फटिक मणि	मुक्ताफल	[illegible]	प्र[illegible]	स्वर्ण मणि	पुत्रजीवा मणि	पुत्रजीवा मणि	पुत्रजीवामणि
अंगुलि	मध्यमा	मध्यमा	[illegible]	[illegible]	कनिष्ठिका	तर्जनी	तर्जनी	तर्जनी
हाथ	दक्षिण	दक्षिण	[illegible]	वाम	दक्षिण	दक्षिण	दक्षिण	दक्षिण
वायु स्वर	वाम	वाम	वाम	वाम	दक्षिण	दक्षिण	दक्षिण	दक्षिण
ऋतु	शरद	हेम	बसंत	बसंत	बसंत	शिशिर	ग्रीष्म	ग्रीष्म
समय	मध्य	प्रभात	पूर्वाह्न	पूर्वाह्न	पूर्वाह्न	संध्या काल	मध्य काल	अपराह्न
मंडल	जलमंडल	जलमंडल	जल	अग्नि	पृथ्वी	वायु	वायु	वायु

सर्वशान्ति मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्व तीर्थंकराय श्रीमद् रत्नत्रय रूपाय दिव्यतेजो मूर्तये प्रभामण्डल मण्डिताय द्वादश गण परिवेष्टिताय अनन्त चतुष्टय सहिताय समवशरण केवल ज्ञान लक्ष्मी शोभिताय अष्टादश दोष रहिताय षट् चत्वारिंशद् गुण संयुक्ताय परम पवित्राय सम्यग्ज्ञानाय स्वयंभुवे सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने परम सुखाय त्रैलोक्य महिताय अनंत संसार चक्र परिमर्दनाय अनंत ज्ञान दर्शन वीर्य सुखास्पदाय त्रैलोक्य वशंकराय सत्य ब्रह्मणे उपसर्ग विनाशनाय घातिकर्म क्षयंकराय अजराय अभवाय अस्माकं श्री वृषभाद्रि [illegible] मेतु: सर्वोपसर्ग विघ्नविनाशन अष्टमहाकर्म निर्मूलनाय देवाधि-देवाय नमोनम:

मम (अस्माकं) सर्वं मंत्र यंत्र तंत्र प्रभावात् सर्वोपसर्ग विघ्न राज चौर दुष्ट शत्रु भय विनाशो भवतु। इहलोक परलोक भयात् मरण वेदना अकस्मात भय विनाशो भवतु सर्वक्षय रोग कुष्ठ रोग ज्वरातिसारादि रोग विनाशो भवतु। सर्व गज गो-महिष धान्य वृक्ष फल पत्र पुष्प प्रभृति सर्व रहित देशमारी विरवमारी विनाशो भवतु। सर्व-मोहनीय ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय अन्तराय वेदनीय नामगोत्र आयु कर्म विनाशो भवतु।

—८—

१. ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं परमोहि जिणाणं। शिरो रोग विनाशनं भवतु।
२ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहिजिणाणं कर्ण रोग विनाशनं भवतु
३- ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठ बुद्धीणं बीज बुद्धीणं समस्तानि विवेक ज्ञानं भवतु।
४- ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदानुसारीणं परस्पर विरोध विनाशनं भवतु।
५- ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिन्न सोदराणं श्वास रोग विनाशनं भवतु॥
६- ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धाणं प्रतिवादि विद्या विनाशनं भवतु।
७- ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धाणं कवित्वं पाण्डित्यं च भवतु।
८- ॐ ह्रीं अर्हं णमो ...हिय बुद्धाणं द्वादशांग श्रुत ज्ञानं भवतु॥

९- ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं परमेन्द्र विज्ञानं भवतु।
१०- ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं मन:पर्यय ज्ञानं भवतु।
११ दस पुव्वीणं दशपूर्व ज्ञानं भवतु।
१२ चउदस पुव्वीणं चतुर्दश पूर्व ज्ञानं भवतु।
१३ अट्ठंग महानिमित्त कुसलाणं जीवित मरणादि विज्ञानं भवतु।
१४ विउव्वण इड्ढिपत्ताणं कामित वस्तु प्राप्ति भवतु
१५ विज्जाहराणं उपदेश मात्र ज्ञानं भवतु।
१६- चारणाणं नष्ट पदार्थ चिन्ता ज्ञानं भवतु।
१७- पण्ण समणाणं आयुष्यावसान ज्ञानं भवतु॥
१८

जिनपंजर स्तोत्रम्

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमो नमः। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनमः। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्येभ्यो नमो नमः। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमोनमः। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं गौतमस्वामिप्रमुख सर्वसाधुभ्यो नमोनमः।

एषो पञ्चनमस्कारः सर्वपापक्षयंकरः।
मंगलानां च सर्वेषां प्रथमं भवेत मंगलम् ॥१॥
ॐ ह्रीं श्रीं जय-विजये अर्हं परमात्मने नमः।
कमलप्रभसूरीन्द्रैः भाषितं जिनपंजरम् ॥२॥
एकभक्तोपवासेन त्रिकालं यः पठेत्सदा।
मनोऽभिलषितं सर्वं फलं स लभते ध्रुवम् ॥३॥
भूशय्या-ब्रह्मचर्येण क्रोध-लोभ-विवर्जितः।
देवताग्रे पवित्रात्मा षण्मासैर्लभते फलम् ॥४॥

अर्हन्तं स्थापयेन्मूर्ध्नि सिद्धं चक्षुर्ललाटके।
आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये उपाध्यायं तु नासिके ॥५॥
साधुवृन्दं मुखस्याग्रे मनःशुद्धिं विधाय च।
सूर्य-चन्द्रनिरोधेन, सुधीः सर्वार्थसिद्धये ॥६॥
दक्षिणे मदनद्वेषी वामपार्श्वे स्थितो जिनः।
अंग-सन्धिषु सर्वज्ञः परमेष्ठी शिवंकरः ॥७॥
पूर्वाशां श्रीजिनो रक्षेदाग्नेयीं विजितेन्द्रियः।
दक्षिणाशां परब्रह्मा नैर्ऋतीं च त्रिकालवित् ॥८॥
पश्चिमाशां जगन्नाथो वायवीं परमेश्वरः।
उत्तरां तीर्थकृत्सर्व ईशानाशां निरंजनः ॥९॥
पातालं भगवान्नर्हन् आकाशं पुरुषोत्तमः।
रोहिणीप्रमुखा देव्यो रक्षन्तु सकलं कुलम् ॥१०॥
ऋषभो मस्तकं रक्षेदजितोऽपि विलोचने।
संभवः कर्णयुगलेऽभिनन्दनस्तु नासिके ॥११॥
ओष्ठौ श्रीसुमतिः रक्षेद्दन्तान् पद्मप्रभो विभुः।
जिह्वां सुपार्श्वदेवोऽयं तालुं चन्द्रप्रभाभिधः ॥१२॥
कण्ठं श्रीसुविधिः रक्षेद् हृदयं श्रीसुशीतलः।
श्रेयान्सो बाहुयुगलं वासुपूज्यः करद्वयम् ॥१३॥
अंगुलीर्विमलो रक्षेदनन्तोऽसौ नखानपि।
श्रीधर्मोऽप्युदरास्थीनि श्रीशान्तिर्नाभिमण्डलम् ॥१४॥

श्रीकुन्थुः गुह्यकं रक्षेदरो लोमकटीतटे।
मल्लिरूरू पृष्ठिवंशं पिण्डिकां मुनिसुव्रतः ॥१५॥
पादगुल्फे नमी रक्षेत् श्रीनेमिश्चरणद्वयम्।
श्रीपार्श्वनाथः सर्वाङ्गं वर्धमानश्चिदात्मकम् ॥१६॥
पृथिवी जलतेजस्क-वाय्वाकाशमयं जगत्।
रक्षेदशेषपापेभ्यो वीतरागो निरञ्जनः ॥१७॥
राजद्वारे श्मशाने च संग्रामे शत्रुसंकटे।
व्याधि-चौराग्नि-सर्पादि भूतप्रेतभयाश्रिते ॥१८॥
अकाले मरणे प्राप्ते दारिद्र्यादि समाश्रिते।
अपुत्रत्वे महादुःखे मूर्खत्वे रोगपीडिते ॥१९॥
डाकिनी-शाकिनीग्रस्ते महाग्रहगणार्दिते।
नद्युत्तारेऽध्ववैषम्ये व्यसने चापदि स्मरेत् ॥२०॥
प्रातरेव समुत्थाय यः स्मरेज्जिनपंजरम्।
तस्य किञ्चिद् भयं नास्ति लभते सुखसम्पदः ॥२१॥
जिनपंजरनामेदं यः स्मरेदनुवासरम्।
कमलप्रभ राजेन्द्रश्रियं स लभते नरः ॥२२॥
प्रातः समुत्थाय पठेत् कृतज्ञो यः स्तोत्रमेतज्जिनपंजरस्य।
आसादयेत् स कमलप्रभाख्यां लक्ष्मीं मनोवांछितपूरणाय ॥२३॥

—०—

श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगच्छे देवप्रभार्यपदपद्महंसः।
वादीन्द्रचूडामणिरेष जैनो जीयादसौ श्रीकमलप्रभः सः ॥२४॥

—०—

वज्रपंजरस्तोत्रम्

परमेष्ठि-नमस्कारं सारं नवपदात्मकम् ।
आत्मरक्षाकरं वज्र-पञ्जराभं स्मरामि अहम् ॥१॥
ॐ णमो अरिहंताणं शिरस्कं शिरसि स्थितम् ।
ॐ णमो सिद्धाणं मुखे मुखपटाम्बरम् ॥२॥
ॐ णमो आयरियाणं अङ्गरक्षातिशायिनी ।
ॐ णमो उवज्झायाणं आयुधं हस्तयोर्दृढम् ॥३॥
ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं मोचके पादयोः शुभे ।
एसो पंच णमुक्कारो शिला वज्रमयी तले ॥४॥
सव्वपावप्पणासणो वप्रो वज्रमयो बहिः ।
मंगलाणं च सव्वेसिं खादिरांगारखातिका ॥५॥
स्वाहान्तं च पदं ज्ञेयं पढमं हवइ मंगलं ।
वप्रोपरि वज्रमयं पिधानं देहरक्षणे ॥६॥
महाप्रभावरक्षेयं क्षुद्रोपद्रवनाशिनी ।
परमेष्ठिपदोद्भूता कथिता पूर्वसूरिभिः ॥७॥
यश्चैवं कुरुते रक्षां परमेष्ठिपदैः सदा ।
तस्य न स्याद्भयं व्याधिराधिश्चापि कदाचन ॥८॥

—०—

जिनरक्षास्तोत्रम् –

श्रीजिनं भक्तितो नत्वा त्रैलोक्याऽऽह्लाददायकम् ।
जैनरक्षामहं वक्ष्ये देहिनामादिरक्षकम् ॥१॥
आद्यावादीश्वरः पातु शिरोऽग्रं सर्वदा मम ।
श्री अजितो देवनाथो भालं रक्षतु शर्मदः ॥२॥
नेत्रयो रक्षको भूयाद् ॐ आँ क्रौं संभवो जिनः ।
रक्षेद् घ्राणेन्द्रियं सर्वं श्रीं क्लीं ब्लूँ (श्री) अभिनन्दनः ॥३॥
सुजिह्वां सुमुखं पातु सुमतिः प्रणवान्वितः ।
कर्णयोः पातु मां नित्यं ॐ ह्रीं रक्ष पद्मप्रभ ॥४॥
सुपार्श्वः सदा नः पातु ग्रीवायां ह्रीं-श्रीरन्वितः ।
पातु चन्द्रप्रभः श्रीं ह्रीं क्रौं क्लीं पूर्वस्कन्धौ मम ॥५॥
सुविधि-शीतलौ नाथौ रक्षकौ कर-पंकजौ ।
~~ॐ ह्रां ह्रीं~~ [illegible] ~~जिनाधीशौ~~ [illegible] दमयौ शुभौ ॥६॥

(पीछे भी है-)

④

श्रेयांस-वासुपूज्यौ हि हृदये सदयं यथा ।
भूयाद् रक्षाकरौ वारं सारश्रीप्रणवाङ्कितौ ॥७॥
विमलानन्तनाथौ च मायाबीजसमन्वितौ ।
उदरे सन्दरे सद्यः रक्षया कारकौ मतौ ॥८॥
श्रीधर्म-शान्तिनामानौ नाभिपद्मे सुहासनौ ।
ॐ ह्रीं श्रीं क्रौं संयुक्तौ पुण्यायातां पुनः पुनः ॥९॥
श्री कुन्थुवरहनाथौ तु सगुह्ये सकटीतटे ।
भवेतां रक्षकौ भूरि ॐ ह्रीं क्लीं सहितौ जिनौ ॥१०॥
अवतां चारुजंघायां श्रीमल्लि-मुनिसुव्रतौ ।
ॐ ह्रीं ह्रां ह्रः सतो ब्लूँ क्लीं श्रीजगतः कृपापरौ ॥११॥
सज्जिनौ रक्षकौ जानू नमि-नेमीश्वरनामकौ ।
राज्य-राजमतीमुक्तौ प्रणवाक्षरपूर्वकौ ॥१२॥
श्री पार्श्व-श्रीमहावीरौ पातां मेऽङ्घ्री सुशान्तिदौ ।
ॐ ह्रीं यथा भूँ क्लीं ह्रीं हूँ श्री जिनौ जिनौ ॥१३॥
रक्षाकरो यथा स्नाने भवति भयवायकम् ।
कर्मक्षयकरो ध्याता भीतार्तिभीतिवारकः ॥१४॥
जैनरक्षां लिखित्वेमां मस्तके यस्तु धारयेत् ।
तस्योग्ररोग-वेतालाः शाकिनी-भूत-राक्षसाः ॥१५॥
एते दोषा न दृश्यन्ते किंकराश्च भवन्त्यमी ।
जैनरक्षामिमां भक्त्या प्रातरुत्थाय यः पठेत् ॥१६॥
ईप्सितान् लभते कामान् सम्पदश्च पदे पदे
श्रावणे शुक्ल-वाष्टम्यां व्रतिभिः स्तोत्रमुत्तमम् ॥१७॥
अभिषेकं जिनेन्द्राणां कारयेद् दिवसाष्टकम् ।
ब्रह्मचर्यं विधातव्यमेकभुक्तं तथैव च ॥१८॥
शुचिना शुभवस्त्रेण वालङ्कारेण शोभितः ।
नरो वाऽपि तथा नारी शुद्धभावयुतोऽपि सन् ॥१९॥
दिने दिने यथा कुर्याज्जाप्यं सर्वार्थसिद्धये ।
कारयन् विधातव्यमुद्यापनमहोत्सवम् ॥२०॥
पूजाविधिसमायुक्तं कर्तव्यं स्वजनैः जनैः ।
ततः सम्प्राप्नुयात्पूर्णं लाभं स पुरुषोत्तमः ॥२१॥

—०—

सरस्वती स्तोत्र

अविरलशब्दघनौघप्रक्षालितसकलभूतलकलङ्का ।
मुनिभिरुपासिततीर्था सरस्वती हरतु नो दुरितम् ॥१॥

२

ॐ ह्रीं श्री मन्त्ररूपे विबुधजननुते देव-देवेन्द्र-वन्द्ये
चञ्चच्चन्द्रावदाते क्षपितकलिमले हार-नीहार-गौरे ।
भीमे भीमाट्टहासे भव-भय-हरणे भैरवी भीरु-धीरे,
ह्रां ह्रीं ह्रुंकारनादे मम मनसि सदा शारदे तिष्ठ देवि ॥

३

ह्रं यं क्षं बीजगर्भे सुर-नर-रमणी-पूजितेऽनेकरूपे
कोपे चण्डे प्रमेये नर-तनु-सुते योगिनि योगमार्गे ।
हंसस्थे स्वर्गलोकैश्च प्रतिदिन-नमिते प्रस्थितालापकीर्ते
देवेन्द्रैर्ध्यायमाने मम मनसि सदा शारदे तिष्ठ देवि ॥

४

दैत्यैर्दैत्यारिनाथैर्नमितयुगपदे भक्त-दृष्टि-प्रदात्रि,
यक्षैः सिद्धैः समस्तैरहमहमिकया देहकान्त्या सुकान्ते ।
आं इं ऊं अ आ ग्रेदग्ध मदने सुस्वरे नश्वरेनं
इत्येवं प्रोह्यमाने मम मनसि सदा शारदे तिष्ठ देवि ॥

५

क्षां क्षीं क्षुं क्षः स्वरूपे हन विषमविषं स्थावरं जङ्गमं वा,
संसारे संश्रितानां तव-चरणयुगे सर्वकालं नराणाम् ।
अव्यक्ते व्यक्तरूपे प्रणत-नर-वरे ब्रह्मरूपे स्वरूपे,
ऐं क्लीं क्लूं योगिगम्ये मम मनसि सदा शारदे तिष्ठ देवि ॥

६

सम्पूर्णैर्विंशतीभं शशिधर-धवलं दास्यबिम्बात्स्रुतैः,
रम्यैः स्वच्छैश्च कान्तैर्द्विज-कर-निकरैश्चन्द्रिकाकारभासैः ।
अस्माकं तद्-भवाब्धौ दिनमणिः सततं कालुषं क्षालयन्ती,
श्रां श्रीं श्रुं श्रः मन्त्ररूपे मम मनसि सदा शारदे तिष्ठ देवि ॥

७

भासे पद्मासनस्थे जिनमुख-निःसृते पद्महस्ते प्रशस्ते
प्रां प्रीं प्रुं प्रः पवित्रे हर हर दुरितं दुष्टजं दुःखदं च ।
वाचाली भाव-भक्ता त्रिदश-युवतिभिः प्रत्यहं पूज्यपादे,
चण्डि-चण्डं कराले मम मनसि सदा शारदे तिष्ठ देवि ॥

(P.T.O.)

८

नम्रीभूत-क्षिति-प्रवर-नृपतिभिर्दृष्ट-पादारविन्दे,
पद्मस्थे पद्मनेत्रे गजगति-गमने हंसयाने विमाने ।
कीर्ति-श्री-बुद्धि-चक्रे जयति जय-जये गौरि गान्धार-युक्ते,
ध्येये ध्येय-स्वरूपे मम मनसि सदा शारदे तिष्ठ देवि ॥

९

विद्युज्ज्वाला-प्रदीप्तां प्रवर-मणि-मयामक्षमालोकराग्रे,
रम्यां वृत्तां धरित्री-दिनमणि सततं मन्त्रकं शारदं च ।
नागेन्द्रैरिन्द्र-चन्द्रैर्मनुज-मनुतमैः संस्तुता या च देवी,
कल्याणं सा च दिव्यं दिशतु मम सदा निर्मलं ज्ञानरत्नम् ॥

—o—

आत्म-रक्षक पद्मावती स्तोत्र -

१

श्रीमन्माणिक्यरश्मिकणगणमुकुटे पद्मपत्रायताक्षि,
ह्रॉं ह्रीं ह्रौंकारनादे ह-ह-ह-ह-हसिते हुम्महाट्टाट्टहासे ।
ह्रॉं ह्रीं ह्रौं ह्रः पार्श्वहस्ते वर-वर-वरणे वज्र-वज्राङ्कहस्ते,
पद्मे पद्मासनस्थे प्रहसितवदने देवि मां रक्ष पद्मे ॥

२

क्षॉं क्षीं क्षूं क्षों क्षौं क्षः क्षमलवर युते पिण्डबीजे त्रिनेत्रे,
क्षां क्षीं क्षौं क्षः क्षिप्र-क्षिप्रे तुर-तुर-गमने नागिनी-नागपाशे ।
क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः दिक्षु क्षुभित दश दिशा-बन्धनं वज्रहस्ते,
रौद्रे त्रैलोक्यनाथे प्रहसितवदने देवि मां रक्ष पद्मे ॥

३

घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घोररूपे घिणि-घिणि-घिणिते घण्ट-[illegible] नादे,
क्लीं ख्लीं ग्लीं घ्लीं घुटीनां घुल-घुल-घुलिते [illegible]-घर्जन-भ्रमन्ते ।
घं घं घं घुग्मयन्ती दह दह पच मे कर्म निर्मूलयन्ती,
दुष्टं दुष्टप्रहारे कह-कह-वदने देवि मां रक्ष पद्मे ॥

४

क्ष्मं टं ग्लौं मन्त्रमूर्ते फणि-गण-निलये डाकिनी-स्तम्भकारी,
भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रः भ्रमन्ते भुवि-रवि-भुवि ते भूरि भूम्येकपादे ।
क्लिं क्लिं क्लिं विप्रचण्डे स्थिर-वसतां कामिनी-मोह-पाशे,
ॐकारे मन्त्रमूर्ते सुप्रभ गणयुते देवि मां रक्ष पद्मे ॥

५

ध्रां ध्रीं ध्रौं पद्महस्ते ग्रहकुल-मथने शाकिनी-सिंहनादे,
हं हं हं वायुवेगे ह-ह-ह-ह-हसिते हुम्महाट्टाट्टहासे ।
क्लीं ख्लीं ग्लीं ब्लीं प्रचण्डे चलि-चलि-चलिते चालिनी वज्रहस्ते,
यं रं लं वं कराले मनु-मनु-मनुते देवि मां रक्ष पद्मे ॥

६

भ्रां भ्रीं भ्रूं मर्द-मर्दे प्रहरण-चपले स्तम्भिनी कामरूपे,
क्रूं क्रूं क्रौं वज्रहस्ते मणिमुकुटमये ज्योतिर्दंष्ट्राकराले ।
ब्लां ब्लीं ब्लूं ब्रह्मरूपे जं-ज-ज-ज-जजये कालिनी कालमुद्रे,
दिव्ये दिव्यावतारे कुरु-कुरु वदने देवि मां रक्ष पद्मे ॥

७

म्लां म्लीं म्लौं दिव्यरूपे चुरु-चुरु-चुरुते चारुणी, चारुनेत्रे,
श्रीं ह्रीं क्लींकारपिण्डे ल-ल-ल-ल-लवने पद्मिनी लम्बजिह्वे ।
पादं बाहुं सहस्रे कलकल-रहसे मात्र माकाश गामि,
ज्रां ज्रीं ज्रूं ज्रौं नागकन्ये त्रिभुवन विजये देवि मां रक्ष पद्मे ॥

८

ॐ ब्लूं ब्रां ब्रः वज्रहस्ते ग-ग-ग-ग-गमने कामिनी मन्त्ररक्षे,
पद्मे पद्म-प्रवासि सुर-गण-नमिते, पद्म-पत्राक्षनेत्रे ।
क्लीं ब्लीं ग्लीं घ्लीं रमभ्रे कुरु कुरु वदने हुम्महाट्टाट्ट-हासे
वं हं सं शान्तिबीजं प्रहसितवदने देवि मां रक्ष पद्मे ॥

९

ॐ हं सं पङ्कजास्ये ल-ल-ल-ल-सहिते रक्तपद्माभवर्णे,
जम्भे ह्रीं मोहनीये हिलि हिलि रमणे मर्द-मर्दे प्रमर्दे,
दुष्टे नीकान्धकारे दह-दह-दहने ह्रौं ललाटायताक्षि,
ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रः प्रसन्ने प्रहसितवदने देवि मां रक्ष पद्मे ॥

—o—

पद्मावती स्तोत्रम्

(भैरव पद्मावती कल्प) पृ० १२७

१

श्रीमद्-गीर्वाणचक्र-स्फुट-मुकुट-तटी दिव्य माणिक्यमाला,
ज्योतिर्ज्वाला कराल-स्फुरित-मुकुरिका-घृष्ट पादारविन्दे।
व्याघ्रोरुल्का सहस्र-ज्वलदनलशिखा-लोलपाशाङ्कुशाढ्ये,
आं क्रौं ह्रीं मन्त्ररूपे क्षपितकलिमले रक्ष मां देवि पद्मे॥

२

भित्वा पातालमूलं चलचलचलिते व्याललीलाकराले,
विद्युद्दण्डप्रचण्डे प्रहरणमहितैः सद्भुजैस्तर्जयन्ती।
दैत्येन्द्रं क्रूर दंष्ट्रैः कटकटकटिते स्पष्टभीमाट्टहासे,
मायाजीमूतमाला कुहरितगगने रक्ष मां देवि पद्मे॥

३

कूजत्कोदण्डकाण्डो डमरविधुरितं क्रूरघो[illegible]सर्गे,
दिव्यं वज्रातपत्रं प्रगुणमणिरणत्-किंकि[illegible]क्वाणरम्यम्।
भास्वद्वैडूर्यदण्डं मदनविजयिनो विभ्रती पार्श्वभर्तुः,
सा देवी पद्महस्ता विघटयतु महाडामरं मामकीनम्॥

४

भृङ्गी काली कराली परिजनमहिते चण्डि चामुण्डि नित्ये,
क्षां क्षीं क्षूं क्षः क्षणार्धे क्षतरिपुनिवहे ह्रीं महामन्त्रवश्ये।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भृङ्गसङ्गे भ्रुकुटिपुटतटे त्रासितोद्दामदैत्ये,
श्रां श्रीं श्रूं श्रः प्रचण्डे स्तुतिशतमुखरे रक्ष मां देवि पद्मे॥

५

चञ्चत्काञ्चीकलापे स्तनतटविलुठत्तारहारावलीके,
प्रोत्फुल्लत्पारिजातद्रुम-कुसुम-महामञ्जरी-पूज्यपादे।
ह्रां ह्रीं क्लीं ब्लूं समेते भुवनवशकरी क्षोभिणी द्राविणी त्वं,
आं ऐं ॐ पद्महस्ते कुरु कुरु घटने रक्ष मां देवि पद्मे॥

६

लीलाव्यालोलनीलोत्पलदलनयने प्रज्वलद्वाडवाग्नि,
उद्यज्ज्वालास्फुलिङ्ग-स्फुरदरुणकरोदग्रवज्राग्रहस्ते।
ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः हरन्ती हर हर हर हुङ्कारभीमैकनादे,
पद्मे पद्मासनस्थे व्यपनयदुरिते रक्ष मां देवि पद्मे॥

७

कोपं वं झं सहंसः कुवलयकलितोद्दाममालीला प्रबन्धे,
ज्रां ज्रीं ज्रूं ज्रः पवित्रे शशिकर-धवले प्रक्षरत्क्षीरगौरे।
व्यालव्याबद्धजूटे प्रबलबल महाकालकूटं हरन्ती,
हा हा हुङ्कारनादे कृतकरकमले रक्ष मां देवि पद्मे॥

८

प्रातर्बालार्करश्मि-स्फुरित-घन-महासान्द्र-सिन्दूर-धूली
सन्ध्या रागारुणाङ्गी त्रिदशवरवधू-वन्द्यपादारविन्दे।
चञ्चच्चण्डासिधारा-प्रहत-रिपुकुले कुण्डलोद्घृष्टगण्डे,
श्रां श्रीं श्रूं श्रः स्मरन्ती मदगजगमने रक्ष मां देवि पद्मे॥

९

गर्जन्नीरदगर्भनिर्गततडिज्ज्वालासहस्रस्फुरत्-
सद्वज्राङ्कुश-पाश-पंकजकरा भक्त्यामरैरर्चिता।
सद्यः पुष्पित पारिजात-रुचिरं दिव्यं वपुः बिभ्रती,
सा मां पातु सदा प्रसन्नवदना पद्मावती देवता॥

१०

विस्तीर्णे पद्मपीठे कमलदलनिवासोचिते काम[illegible]
लां लां ग्रीं समेते प्रहसितवदने नित्यहस्त[illegible]ते।
रक्ते रक्तोत्पलाङ्गे प्रतिवहसि सदा वाग्भवां कामबीजे
हंसारूढे सुनेत्रे भगवति वरदे रक्ष मां देवि पद्मे॥

११

षट्कोणे चक्रमध्ये प्रणववरयुते वाग्भवे कामराजे,
हंसारूढे सबिन्दुं विकसितकमलं कर्णिकायै निधाय।
नित्यं क्लिन्नमदाङ्के द्रवयसि सततं साङ्कुशे पाशहस्ते,
ध्यानात्क्षोभयन्ती त्रिभुवनवशकृत् रक्ष मां देवि पद्मे॥

१२

जिह्वाग्रे नासिकान्ते हृदि मनसि दृशोः कर्णयोर्नाभिपद्मे,
स्कन्धे कण्ठे ललाटे शिरसि च भुजयोः पृष्ठ-पार्श्वप्रदेशे।
सर्वाङ्गोपाङ्गशुद्ध्याऽत्यतिशयभुवनं दिव्यरूपं स्वरूपं,
ध्यायामः सर्वकालं प्रणवबलयुतं पार्श्वनाथेति शब्दम्॥

१३

ॐ क्रों ह्रीं पञ्चवर्णैः लिखितषट्दले चक्रमध्ये हसौ क्लीं
क्रों ह्रीं पत्रान्तराले स्वरपरिकलिते वसुना वेष्टिताङ्गी।
ह्रीं वेष्ट्या रक्तपुष्पैर्जयति मतिमता क्षोभिणी द्राविणी त्वं,
त्रैलोक्यं चालयन्ती सपदि जनहिते रक्ष मां देवि पद्मे॥

१४

ब्रह्माणी कालरात्रिर्भगवति वरदे चण्डि चामुण्डि नित्ये
मातङ्गि गान्धारि गौरि धृतिमति विजये कीर्ति ह्रीं स्तुत्यपद्मे।
संग्रामे शत्रुमध्ये जलज्वलनजले वेष्टितान्यैः स्वरास्त्रैः,
क्षां क्षीं क्षूं क्षः क्षणार्धे क्षतरिपुनिवहे रक्ष मां देवि पद्मे॥

१५

५ विश्वेक्षण-चन्द्रबिम्बपृथिवी युग्मैन्द संख्याक्रमात्
चन्द्राम्भोनिधिबाणविश्वमुनिदिक् संवेन्द्रोष्ठादिषु ।
ऐश्वर्यं रिपुमारि विश्वभयकृत् क्षोभान्तराया विषा
लक्ष्मी लक्षण भारती गुरुमुखान्मन्त्रार्चिते दैवते ॥

१६

खड्गं कोदण्डकाण्डं मुसल-हलयुतं बाण-नाराच-चक्रैः
शक्त्या शल्याग्निशूलैर्वरफणशकरैः मुद्गरैर्मुष्टिदण्डैः ।
पाशैः पाषाणवृक्षैः वरगिरिसहितैः दिव्यशस्त्रैरमानैः,
दुष्टानां दारयन्ती वरभुजललिते रक्ष मां देवि पद्मे ॥

१७

यस्याः देवैर्नरेन्द्रैः सुरपतिगणैः किन्नरैर्दान[illegible]
सिद्धैर्नागेन्द्रयक्षैर्नरमुकुटतटी-घृष्टपादारवि[illegible] ।
सौम्ये सौभाग्यलक्ष्मीर्दलितकलिमले पद्मकल्याणमाले,
अम्बे काले समाधिं प्रकटय परमं रक्ष मां देवि पद्मे ॥

१८

धूपैश्चन्दन-तन्दुलैः शुभमहागन्धैश्च मन्त्रान्वितैः,
नानावर्णयुतैर्विचित्रकुसुमैर्दिव्यैर्मनोहारिभिः ।
नैवेद्यैर्मणिदीपकैः शुभफलैर्भक्त्यान्वितैः पूजिते,
अर्घ्यं त्वं भवति प्रसन्न सततं पद्मे सदा पाहि माम् ॥

१९

तारा त्वं सुगतागमे भगवती गौरीति शैवागमे,
वज्रा कौलिकशासने जिनमते पद्मावती विश्रुता ।
गायत्री श्रुतिशालिनी प्रकृतिरित्युक्तासि सांख्यागमे,
मातर्भारति किं प्रभूतभणितैर्व्याप्तं समस्तं त्वया ॥

२०

संजप्त्वा करवीरसत्कुसुमैः पुष्पैश्चिरं रक्तैः
सम्मिश्रैः घृतगुग्गुलौघमधुभिः कुण्डे त्रिकोणेकृते ।
होमार्थं कृत षोडशाङ्गुलमितं वह्नौ दशांशं जपेत्,
तं वाञ्छं ददासीह देवि सहसा पद्मावती देवता ॥

२१

ह्रीँकारे चन्द्रमध्ये पुनरपि वलये षोडशावर्तपूर्णे,
बाह्ये कण्ठैरर वेष्ट्या कमलदलयुतं मूलमन्त्रप्रयुक्तम् ।
साक्षात् त्रैलोक्यवश्यं पुरुषवशकृतं मन्त्रराजेन्द्र राज्यं
एतत्तत्त्वस्वरूपं परमपदमिदं पातु मां पार्श्वनाथः ॥

२२

भक्तानां देहि सिद्धिं मम सकलमलं देव दूरीकुरु त्वं
सर्वेषां धार्मिकाणां सततनियमितं वाञ्छितं पूरयस्व ।
संसाराब्धौ निमग्नां प्रगुणगुणयुतां जीवराशिं च पाहि,
श्रीमज्जैनेन्द्रधर्मं प्रकटय विमलं देवि पद्मावति त्वम् ॥

२३

पाताले वसतां विषं विषधरांश्चूर्णन्ति ब्रह्माण्डजाः
स्वर्भूमिपति-देव-दानवगणाः सूर्येन्दवो यद्गुणाः ।
कल्लोलास्तव पादपङ्कजनुताः मुक्तामणिश्चुम्बिता,
सा त्रैलोक्यनतानना त्रिभुवने त्वत्पादभूता सदा ॥

२४

क्षुद्रोपद्रव-रोग-शोकहरिणी दारिद्र्य-विद्र[illegible]णी,
व्याल-व्याघ्रहरा फणात्रयधरा देहप्रभा भासुरा ।
पातालाधिपतिप्रिया प्रणयिनी चिन्तामणिः प्राणिनां,
श्रीमत्पार्श्वजिनेशशासनसुरी पद्मावती देवता ॥

२५

मातः पद्मिनि पद्मरागरुचिरे पद्मप्रभा भासुरे,
पद्मे पद्मासनस्थिते परिलसत्पद्माक्षि पद्मानने ।
पद्मामोदिनि पद्मरागरुचिरे पद्मप्रसूनानने, +
पद्मोल्लासिनि पद्मनाभिनिलये पद्मावती पाहि माम् ॥

२६

दिव्यं स्तोत्रं पवित्रं पटुतरपठतां भक्तिपूर्वं त्रिसन्ध्यं
लक्ष्मी-सौभाग्यरूपं दलितकलिमलं मङ्गलं मङ्गलानाम् ।
पूज्यां कल्याणमालां जनयति सततं पार्श्वनाथप्रसादात्
देवी पद्मावती नः प्रहसितवदना या स्तुता दानवेन्द्रैः ॥

२७

या देवी त्रिपुरा पुरत्रयगता शीघ्रा च शीघ्रप्रदा,
या देवी समया समस्तभुवने या गीयते कामदा ।
तारा मानविमर्दिनी भगवती देवी च पद्मावती,
सा स्यात् सर्वगता त्वमेव नियतं मातेति तुभ्यं नमः ॥

२८

पद्मानना पद्मदलायताक्षी पद्मासिनी पद्मकराङ्घ्रिपद्मा ।
पद्मप्रभा पार्श्वजिनेन्द्रशक्तिः पद्मावती पातु फणीन्द्रपत्नी ॥

२९

आद्यं चोपद्रवं हन्ति द्वितीयं भूतनाशनम्।
तृतीयं च मरीं हन्ति चतुर्थं रिपुनाशनम्॥

३०

पञ्चमं तु जनानां च वशीकारं भवेत्सदा।
षष्ठं चोच्चाटनं हन्ति सप्तमं घोरसङ्कटम्॥

३१

हन्त्युद्वेगं चाष्टमं च नवमं सर्वकार्यकृत्।
दृष्टा भवति तेषां च त्रिकालं च पठन्ति ये॥

३२

आह्वानं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजामर्चां न जानामि क्षमस्व परमे[illegible]रि॥

३३

पठितं भणितं गुणितं जय-विजय-रमानिबन्धनं परमम्।
सर्वाधि-व्याधि-हर्त्रं जयति पद्मावती-स्तोत्रम्॥

३४

अपराध-सहस्राणि क्रियन्ते नित्यशो मया।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि॥

३५

आज्ञाहीनं क्रियाहीनं मन्त्रहीनं च यत्कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि, प्रसीद परमेश्वरि॥

इतिश्री पद्मावती-स्तोत्रं समाप्तम्।

—०—

श्री चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तोत्र

किं कर्पूरमयं सुधारसमयं किं चन्द्ररोचिर्मयं?
किं लावण्यमयं महामणिमयं कारुण्यकेलीमयम्?
विश्वानन्दमयं महोदयमयं शोभामयं चिन्मयं?
शुक्लध्यानमयं वपुर्जिनपतेर्भूयाद् भवालम्बनम्॥१॥

हिन्दी पद्य

क्या कर्पूरमयी सुधारसमयी, या चन्द्रकिरणों मयी?
क्या लावण्यमयी महामणिमयी कारुण्यकेली मयी?
विश्वानन्दमयी महोदयमयी ~~कारुण्यकेलीमयी?~~ शोभामयी चिन्मयी
शुक्लध्यानमयी ~~महोदयमयी~~
प्रभो! तुव तनु होवे भ[illegible]म्बन॥१॥

२

पातालं कलयन् धरां धवलयन्नाकाशमापूरयन्,
दिक्चक्रं क्रमयन् सुरासुरनरश्रेणिं च विस्मापयन्।
ब्रह्माण्डं सुखयन् जलानि जलधेः फेनच्छलाल्लोलयन्,
श्री चिन्तामणि-पार्श्व-सम्भव यशो हंसश्चिरं राजते॥

हिन्दी पद्य

पाताल भूतल नभस्तल व्याप्त-कर्ता,
दिक्चक्र औ नर-सुरासुर को झुकाता।
ब्रह्माण्ड को सुखित, वारिधि श्वेत-कर्ता
श्री पार्श्व-सम्भव यशो वर हंस भाता।

३

पुण्यानां विपणिस्तमोदिनमणिः कामेभकुम्भे सृणिः,
मोक्षे निस्सरणिः सुरद्रु-करिणी ज्योतिः प्रकाशारणिः।
दाने देवमणिर्नतोत्तम जनश्रेणिः कृपा सारिणिः
विश्वानन्द सुधाघृणिर्भवभिदे श्रीपार्श्वचिन्तामणिः॥

~~हिन्दी पद्य~~

~~चिन्तामणी चिन्त-चिन्त्य-दाता, पर न करता आप-सम,~~
~~पर आप करते भक्त का उद्धार करके आप-सम।~~
~~संजीवनी[illegible] आप है, भवचक्र-नाशक आप ही,~~
~~दुर्दैव दुर्दिन कष्ट विनशे, फले वाञ्छित आप ही॥~~

हिन्दी पद्य

पुण्य के भण्डार हैं, अज्ञान-तम-हर सूर्य हैं,
काम-गज को वशी करने परम अंकुश धुर्य हैं।
मोक्ष की निःश्रेणिका, सुर-रक्षकारी ज्योति हैं,
कर्म-वन के दहन करने दाव-अग्नि पुनीत हैं॥
दान में चिन्तामणी, कारुण्य की हैं सारिणी,
विश्व को आनन्द-दाता श्री पार्श्व हैं चिन्तामणी।
चिन्तामणि-श्री पार्श्व का चिन्तन करूं मैं रात-दिन,
फिर क्यों न मेरे पाप नाशैं, बढ़ें सुख क्यों ना प्रतिक्षण॥

४

श्रीचिन्तामणि-पार्श्व विश्वजनता-सञ्जीवनस्त्वं मया,
दृष्टस्तात! ततः श्रियः समभवन्नाशक्रमाच[illegible]
मुक्तिः क्रीडति हस्तयोर्बहुविधं सिद्धं मनोवाञ्छितं,
दुर्दैवं दुरितं च दुर्दिनभयं कष्टं प्रणष्टं मम॥

हिन्दी पद्य

चिन्तामणी चित-चिन्त्य-दाता, पर न करता आप-सम,
पर आप करते भक्त का उद्धार करके आप-सम।
संजीवनामृत आप हैं, भव-चक्र-नाशक आप ही,
दुर्दैव दुर्दिन कष्ट विनशे, फलें वांछित आप ही॥

५

यस्य प्रौढतम-प्रताप-तपनः प्रोद्दाम-धामा जगज्-
जङ्घालः कलि-काल-केलि-दलनो मोहान्ध-विध्वंसकः।
नित्योद्योत-पदं समस्त-कमला-केली-गृहं राजते,
स श्रीपार्श्वजिनो जने हितकरश्चिन्तामणिः पातु माम्॥

हिन्दी पद्य

जिनका प्रताप अतुल्य है, अनुपम प्रभा के धाम हैं,
कलिकाल-केलि-विनाश-कर्ता, मोह-नाशक धाम हैं।
जो नित्य हैं उद्योत-कर्ता, परम कमला-धाम हैं,
श्री पार्श्व जिन हैं जग-हितैषी कल्पवृक्ष-समान हैं॥

६

विश्वव्यापितमो हिनस्ति तरणिर्बालोऽपि कल्पाङ्कुरो,
दारिद्र्याणि गजावलीं हरि-शिशुः काष्ठानि वह्नेः कणः।
पीयूषस्य लवोऽपि रोग-निवहं यद्वत्तथा ते विभो!
मूर्तिः स्फूर्तिमती सती त्रिजगती-कष्टानि हर्तुं क्षमा॥

हिन्दी पद्य

बाल रवि है अन्धहरता, विश्वव्यापी क्यों न हो?
दारिद्र को हरता सदा कल्पद्रु-अंकुर क्यों न हो?
सिंह-शिशु गज-पंक्ति भेदे, अग्नि-कण जंगल जलावे,
पीयूष-कण भी रोग नाशे, अमर जन को वह बनावे॥
त्यों ही प्रभो! तेरी विमल मुद्रा परम सुख-दायि[illegible]
तीन जग के कष्ट हरती, शान्ति दे मन भावनी।
क्या करूं वर्णन विभो! आता समझ में कुछ नहीं,
तुव नाम का बस स्मरण करता रात-दिन मैं सब कहीं॥

७

श्रीचिन्तामणिमन्त्रमोङ्कृति-युतं ह्रींकार साराश्रितं,
श्रीमर्हन्नमिऊण पास कलितं त्रैलोक्य-वश्यावहम्।
द्वेधाभूतविषापहं विषहरं श्रेयःप्रभावाश्रयं,
सोल्लासं वसहाङ्कितं जिन फुलिङ्गानन्ददं देहिनाम्॥

हिन्दी पद्य

ओं ह्रीं अर्हं युक्त नमि श्री पार्श्व चिन्तामणि प्रभो!
मंत्र यह त्रैलोक्य-वशकर, सर्पविष-हारी विभो!
सोल्लास व-स-हाङ्कित प्रभावक सर्वजगदानन्द है,
धारूं हृदय में भक्ति-युत, शिव-सौख्य का यह कन्द है॥

८

ह्रीं श्रींकारवरं नमोऽक्षर-परं ध्यायन्ति ये योगिनो,
हृत्पद्मे विनिवेश्य पार्श्वमधिपं चिन्तामणि-संज्ञकम्।
भाले वामभुजे च नाभि-करयोर्भूयो भुजे दक्षिणे,
पश्चादष्ट-दलेषु ते शिव-पदं द्वि-त्रैर्भवैर्यान्त्यहो॥

हिन्दी पद्य

'ह्रीं श्रीं नमः' यह मन्त्र पावन, ध्यान करते योगि जे,
चिन्तामणी श्रीपार्श्व का हृत्पद्म में नित भव्य जे।
भाल में, या भुज-युगल में, नाभि में, या हस्त-युग में,
दो-तीन भव में नियम से वे भव्य जाते मोक्ष में॥

९

नो रोगा नैव शोका, न कलह-कलना, नारि-मारि-प्रचारा,
नैवाधिर्नासमाधिर्न च दर-दुरिते, दुष्ट-दारिद्रता नो।
नो शाकिन्यो ग्रहा नो न हरि-करि-गणा: व्याल-वेताल-जाला:,
जायन्ते पार्श्वचिन्तामणि-नतिवशत: प्राणिनां भक्तिभाजाम्॥

हिन्दी पद्य

नहिं रोग हो, नहिं शोक हो, नहिं कलह-कलना कोई हो,
अरि-मारि हो ना, व्याधि भय हो, ईति भीति न कोई हो।
ग्रह शाकिनी डाकिनि पिशाचिनि, व्याल वेतालादि भी,
चिन्तामणि-श्री पार्श्व जिनके नाम से भागें सभी॥

२०

गीर्वाण-द्रुम-धेनु-कुम्भ-मणयस्तस्याङ्गणे रिङ्गिणो
देवा दानव-मानवा: सविनयं तस्मै हितं ध्यायिन:।
लक्ष्मीस्तस्य वशाऽवशेव गुणिनां ब्रह्माण्ड-संस्थायिनी;
श्री चिन्तामणि-पार्श्वनाथ मनिशं संस्तौति यो ध्यायति॥

हिन्दी पद्य

श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिन को ध्याते सदा भक्ति से,
सो चिन्तामणि काम-गो, सुर-तरु, तिहिं घरे किलसे सदा भक्ति से।
हो लक्ष्मी उसके अधीन, मुनिजन सेवें सदा चाव से,
होवे प्राप्त समस्त सम्पद् उसे लोकत्रयी भाग्य से।

२२

इति जिनपति पार्श्व: पार्श्व-पार्श्वाख्ययक्ष:
प्रदलित-दुरितौघ: प्रीणित-प्राणि-सार्थ:।
त्रिभुवन-जन-वाञ्छा-दान-चिन्तामणीक:,
शिवपद-तरुबीजं बोधि-बीजं ददातु॥

हिन्दी पद्य

इम जिनपति पार्श्व पास में पार्श्वयक्ष,
दुरित दलित करता हर्ष दे प्राणि-सार्थ।
त्रिभुवन-जन-वांछा पूरते कल्पवृक्ष,
शिवपद-तरुबीजं बोधि-बीजं मुझे दें॥

—०—

इन्द्रस्तव

अपर नाम सिद्धि श्रेय समुदय स्तोत्र

ॐ नमोऽर्हते परमात्मने परमज्योतिषे परमपरमेष्ठिने परमवेधसे परमयोगिने परमेश्वराय तमसः परस्तात् सदोदित्यादित्यवर्णाय समूलोन्मूलितानादिसकलक्लेशाय ॥१॥

ॐ नमो भूर्भुवःस्वस्त्रयीनाथ-मौलिमन्दारमालार्चितक्रमाय सकलपुरुषार्थयोनि-निरवद्य-प्रवर्तनैकवीराय नमःस्वस्ति-स्वाहा-स्वधाऽलंवषडथैकान्तशान्तमूर्तये भवद्भाविभूतभावावभासिने कालपाशनाशिने सत्त्वरजस्तमोगुणातीताय अनन्तगुणाय वाङ्मनसोऽगोचर-चरित्राय पवित्राय कारण-कारणाय तारण-तारणाय सात्त्विकदैवताय तात्त्विकजीविताय निर्ग्रन्थ-परम-हृदयाय योगीन्द्रप्राणनाथाय त्रिभुवनभव्यकुलनित्योत्सवाय विज्ञानानन्द-परमब्रह्मैकात्म्य-सात्म्य-समाधये हरि-हर-हिरण्यगर्भादिदेवतापरिकल्पितस्वरूपाय सम्यग्ध्येयाय [illegible] श्रद्धेयाय सम्यक्शरण्याय सुसमाहित सम्यक् स्पृहणीयाय ॥२॥

ॐ नमोऽर्हते भगवते आदिकराय तीर्थकराय स्वयम्बुद्धाय पुरुषोत्तमाय पुरुषसिंहाय पुरुषवरपुण्डरीकाय पुरुषवरगन्धहस्तिने लोकोत्तमाय लोकहिताय लोकप्रद्योतकारिणे लोकप्रदीपाय अभयदाय दृष्टिदाय मार्गदाय बोधदाय धर्मदाय जीवदाय शरणदाय धर्मदेशकाय धर्मनायकाय धर्मसारथये धर्मवर-चातुरन्त चक्रवर्तिने व्यावृत्तछद्मने अप्रतिहत सम्यग्दर्शन-ज्ञानसद्मने ॥३॥

ॐ नमोऽर्हते जिनाय जापकाय, तीर्णाय तारकाय, बुद्धाय बोधकाय, मुक्ताय मोचकाय, त्रिकालवेदिने पारङ्गताय कर्माष्टकनिषूदनाय, अधीश्वराय शम्भवे स्वयम्भुवे जगत्प्रभवे जिनेश्वराय स्याद्वादिने सार्वाय सर्वज्ञाय सर्वदर्शिने सर्वतीर्थोपनिषदे सर्वपाषण्डमोचिने सर्वयज्ञफलात्मने सर्वयज्ञफलाय सर्वकलात्मने सर्वध्यानरहस्याय केवलिने देवाधिदेवाय वीतरागाय ॥४॥

ॐ नमोऽर्हते परमार्थाय परमकारुणिकाय सुगताय तथागताय महाहंसाय हंसराजाय महासत्त्वाय महाशिवाय महाबोधाय महामैत्राय सुगताय सुनिश्चिताय विगतद्वन्द्वाय गुणाब्धये लोकनाथाय जितमारबलाय ॥५॥

ॐ नमोऽर्हते सनातनाय उत्तमश्लोकाय मुकुन्दाय गोविन्दाय विष्णवे जिष्णवे अनन्ताय अच्युताय श्रीपतये विश्वरूपाय हृषीकेशाय जगन्नाथाय भूर्भुवःस्वःसमुत्ताराय मानञ्जराय कालञ्जराय ध्रुवाय अजेयाय अजिताय अजराय अजरसे अजाय अचलाय अव्ययाय विभवे अविनाशाय अचिन्त्याय

असङ्ख्याय आदिसाङ्ख्याय आदिकेशाय आदिशिवाय महाब्रह्मणे परमशिवाय एकानेकानन्तस्वरूपिणे भावाभावविवर्जिताय अस्ति-नास्तिद्वयातीताय पुण्य-पापविरहिताय सुख-दुःखविमुक्ताय व्यक्ताव्यक्तस्वरूपाय आदि-मध्य-निधनाय नमो मुक्तिस्वरूपाय ॥६॥

ॐ नमोऽर्हते निस्तङ्काय निःशङ्काय निर्भयाय निर्द्वन्द्वाय निस्तरङ्गाय निरूर्मये निरामयाय निष्कलङ्काय परमदैवताय सर्वदैवताय सदाशिवाय महादेवाय शङ्कराय महेश्वराय महाव्रतिने महायोगिने पञ्चमुखाय मृत्युञ्जयाय अष्टमूर्तये भूतनाथाय जगदानन्दाय जगत्पितामहाय जगद्देवाधिदेवाय जगदीश्वराय जगदादिकन्दाय जगद्भास्वते जगत्कर्मसाक्षिणे जगच्चक्षुषे त्रयीतनवे अमृतकराय शान्तिकराय ज्योतिश्चक्रचक्रिणे महाज्योतिर्महात्मने परिप्रतिष्ठाय स्वयंकर्त्रे स्वयंहर्त्रे स्वयंपालकाय आत्मेश्वराय नमो विश्वात्मने ॥७॥

ॐ नमोऽर्हते सर्वदेवमयाय सर्वध्यानमयाय सर्वज्ञानम[illegible] तेजोमयाय सर्वमन्त्रमयाय सर्वरहस्यमयाय सर्वभावाभाव-जीवाजीवेश्वराय अरहस्यरहस्याय अस्पृहस्पृहणीयाय अचिन्त्यचिन्तनीयाय अकामकामधेनवे असङ्कल्पितकल्पद्रुमाय अचिन्त्यचिन्तामणये चतुर्दशरज्ज्वात्मकजीवलोकचूडामणये चतुरशीतिजीवयोनिलक्षप्राणिनाथाय पुरुषार्थनाथाय परमार्थनाथाय अनाथनाथाय जीवनाथाय देव-दानव-सिद्धसेनाधिनाथाय ॥८॥

ॐ नमोऽर्हते निरञ्जनाय अनन्तकल्याणनिकेतनकीर्तनाय सुगृहीतनामधेयाय धीरोदात्त-धीरोद्धत-धीरशान्त-धीरललित-पुरुषोत्तम-पुण्यश्लोकशतसहस्रलक्षकोटिवन्दितपादारविन्दाय सर्वगताय ॥९॥

ॐ नमोऽर्हते सर्वसमर्थाय सर्वप्रदाय सर्वहिताय सर्वाधिनाथाय कस्मैचनाय क्षेत्राय पात्राय तीर्थाय पावनाय पवित्राय अनुत्तराय उत्तराय योगाचार्याय संप्रक्षालनाय प्रवराय अग्राय वाचस्पतये माङ्गल्याय सर्वात्मनीनाय सर्वार्थाय अमृताय सदोदितब्रह्मचारिणे तायिने दक्षिणीयाय निर्विकाराय वज्रऋषभनाराचमूर्तये तत्त्वदर्शिने पारदर्शिने निरुपमज्ञान-बल-वीर्य-धैर्य-तेजः-शक्त्यैश्वर्यमयाय महाचिदिनेश्वराय महामोहसंहारिणे महासत्त्वाय महाज्ञानमहेन्द्राय महाहंसराजाय महासिद्धाय महालयाय महाशान्तये महायोगीन्द्राय अयोगिने महामहीयसे महाहंसाय शिवमचलमरुजमनन्तमक्षयमव्याबाधमपुनरावृत्ति महानन्दमहोदयं सर्वदुःखक्षयं कैवल्यममृतं निर्वाणमक्षरं परब्रह्म निःश्रेयसमपुनर्भवं सिद्धगति-नामधेयं स्थानं सुप्राप्तवते चराचरवते नमोऽस्तु श्रीमहावीराय त्रिजगत्स्वामिने श्रीवर्धमानाय ॥१०॥

ॐ नमोऽर्हते केवलिने परमयोगिने मुक्तिमार्गयोगिने विशालशासनाय सर्वलब्धिसम्पन्नाय निर्विकल्पाय कल्पनातीताय कलाकलापकलिताय विस्फुरदुरुशुक्लध्यानाग्निनिर्दग्धकर्मबीजाय प्राप्तानन्तचतुष्टयाय सौम्याय शान्ताय दान्ताय माङ्गल्यवरदाय अष्टादशदोषरहिताय ध्वासय द्विश्वस्वामीहिताय ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः स्वाहा ॥१२॥

लोकोत्तमो निःप्रतिमस्त्वमेव त्वं शाश्वतं मङ्गलमप्यधीश ।
त्वामेकमर्हन् शरणं प्रपद्ये सिद्धार्थसद्धर्ममयस्त्वमेव ॥१॥

त्वं मे माता पिता नेता, देवो धर्मो गुरुः परः।
प्राणाः स्वर्गोऽपवर्गश्च सत्त्वं तत्त्वं मतिर्गतिः॥२॥
जिनो दाता जिनो भोक्ता जिनः सर्वमिदं जगत् ।
जिनो जयति सर्वत्र यो जिनः सोऽहमेव च ॥३॥
यत्किञ्चित्कर्म हे देव, मया सुकृत-दुष्कृतम् ।
तन्मे जिनपदस्थस्य हुं क्षः क्षपयतां जिनः॥४॥
गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपः।
सिद्धिः श्रयति मां येन यत्प्रसादात्त्वयि स्थितम्॥५॥

माहात्म्यवर्णनम् –

इतीमं पूर्वोक्तमिन्द्रस्तवैकादशमन्त्रराजोपनिषद्-गर्भं अष्टमहासिद्धिप्रदं सर्वपापनिवारणं सर्वपुण्यकारणं सर्वदोषहरं सर्वगुणाकरं महाप्रभावं अनेकसम्यग्दृष्टि-भद्रक-देवता-शत-सहस्रशुश्रूषितं भवान्तरकृतासङ्ख्यपुण्यप्राप्यं सम्यग्-जपतां पठतां गुण्यतां शृण्वतां समनुप्रेक्षमाणानां भव्यजीवानां चराचरेऽपि तद्वस्तु तन्नास्ति यत्करतले प्रणतमपि न भवति। इति।

किञ्च, इतीमं पूर्वोक्तमिन्द्रस्तवैकादशमन्त्रराजोपनिषद्-गर्भं अष्टमहासिद्धिप्रदं सर्वपापनिवारणं सर्वपुण्यकारणं सर्वदोषहरं सर्वगुणाकरं महाप्रभावं अनेकसम्यग्दृष्टि-भद्रक-देवता-शत-सहस्रशुश्रूषितं भवान्तरकृतासङ्ख्यपुण्यप्राप्यं सम्यग् जपतां पठतां गुण्यतां शृण्वतां समनुप्रेक्षमाणानां भव्यजीवानां भवनपति-व्यन्तर-ज्योतिष्क-वैमानिकवासिनो देवाः सदा प्रसीदन्ति ।

इतीमं पूर्वोक्तमिन्द्रस्तवैकादशमन्त्रराजोपनिषद्-गर्भं अष्टमहासिद्धिप्रदं सर्वपापनिवारणं सर्वपुण्यकारणं सर्वदोषहरं सर्वगुणाकरं महाप्रभावं अनेकसम्यग्दृष्टि-भद्रक-देवता-शत-सहस्र-शुश्रूषितं भवान्तरकृतासङ्ख्यपुण्यप्राप्यं सम्यग् जपतां पठतां गुण्यतां शृण्वतां

समनुप्रेक्षमाणानां भव्यजीवानां व्याधयो विलीयन्ते ।

इतीमं पूर्वोक्तमिन्द्रस्तवैकादशमन्त्रराजोपनिषद्-गर्भं अष्टमहासिद्धिप्रदं सर्वपापनिवारणं सर्वपुण्यकारणं सर्वदोषहरं सर्वगुणाकरं महाप्रभावं अनेकसम्यग्दृष्टि-भद्रक-देवता-शत-सहस्रशुश्रूषितं भवान्तरकृतासङ्ख्यपुण्यप्राप्यं सम्यग् जपतां पठतां गुण्यतां शृण्वतां समनुप्रेक्षमाणानां भव्यजीवानां पृथिव्यप्तेजोवायुगगनानि भवन्त्यनुकूलानि ।

इतीमं पूर्वोक्तमिन्द्रस्तवैकादशमन्त्रराजोपनिषद्-गर्भं अष्टमहासिद्धिप्रदं सर्वपापनिवारणं सर्वपुण्यकारणं सर्वदोषहरं सर्वगुणाकरं महाप्रभावं अनेकसम्यग्दृष्टि-भद्रक-देवता-शत-सहस्र-शुश्रूषितं भवान्तरकृतासङ्ख्यपुण्यप्राप्यं सम्यग् जपतां पठतां गुण्यतां शृण्वतां समनुप्रेक्षमाणानां भव्यजीवानां सर्वसम्पदामूलं जायते जनानुरागः।

इतीमं पूर्वोक्तमिन्द्रस्तवैकादशमन्त्रराजोपनिषद्-गर्भं अष्ट[illegible]प्रदं सर्वपापनिवारणं सर्वपुण्यकारणं सर्वदोषहरं सर्वगुणाकरं महाप्रभावं अनेकसम्यग्दृष्टि-भद्रक-देवता-शत-सहस्र-शुश्रूषितं भवान्तरकृतासङ्ख्यपुण्यप्राप्यं सम्यग् जपतां पठतां गुण्यतां शृण्वतां समनुप्रेक्षमाणानां भव्यजीवानां साधवः सौमनस्येनानुग्रहपराः जायन्ते ।

इतीमं पूर्वोक्तमिन्द्रस्तवैकादशमन्त्रराजोपनिषद्-गर्भं अष्टमहासिद्धिप्रदं सर्वपापनिवारणं सर्वपुण्यकारणं सर्वदोषहरं सर्वगुणाकरं महाप्रभावं अनेकसम्यग्दृष्टि-भद्रक-देवता-शत-सहस्रशुश्रूषितं भवान्तरकृतासङ्ख्यपुण्यप्राप्यं सम्यग् जपतां पठतां गुण्यतां शृण्वतां समनुप्रेक्षमाणानां भव्यजीवानां खलाः क्षीयन्ते । जल-स्थल-गगनचराः क्रूरजन्तवोऽपि मैत्रीमयाः भवन्ति ।

इतीमं पूर्वोक्तमिन्द्रस्तवैकादशमन्त्रराजोपनिषद्-गर्भं अष्टमहासिद्धिप्रदं सर्वपापनिवारणं सर्वपुण्यकारणं सर्वदोषहरं सर्वगुणाकरं महाप्रभावं अनेकसम्यग्दृष्टि-भद्रक-देवता-शत-सहस्रशुश्रूषितं भवान्तरकृतासङ्ख्यपुण्यप्राप्यं सम्यग् जपतां पठतां गुण्यतां शृण्वतां समनुप्रेक्षमाणानां भव्यजीवानां रोहिण्यः सर्वा अपि शुद्धगोत्र-कलत्र-पुत्र-मित्र-धन-धान्य-जीवित-यौवन-रूपारोग्य-यशःपुरस्सराः सर्वजिनीनाः सम्पदः परमभाग्यशालिन्यः सदैकान्त्य सम्मुखीनाः भवन्ति। आनुषङ्गिक्यः स्वर्गापवर्गश्रियोऽपि क्रमेण यथेच्छं स्वयं वरेण्योत्सव समुत्सुका भवन्ति ।

यथेन्द्रेण प्रसन्नेन समादिष्टोऽर्हतां स्तवः।
तथाऽयं सिद्धसेनेन लिखिते साम्पदं पदम्॥

इति शक्रस्तव सहस्रनामापरपर्याय सिद्धिश्रेय समुदय स्तोत्रं समाप्तम् ।

—o—

एकीभाव स्तोत्र

१

एकीभावं गत इव मया यः स्वयं कर्मबन्धो,
घोरं दुःखं भव-भव-गतो दुर्निवारः करोति।
तस्याप्यस्य त्वयि जिनवरे भक्तिरुन्मुक्तये चेत्,
जेतुं शक्यो भवति न तया कोऽपरस्तापहेतुः॥

हिन्दी पद्य

वादिराज मुनिराज के, चरण-कमल चित लाय।
भाषा एकीभाव की, करूं स्व-पर-सुखदाय॥
जो अति एकीभाव भयौ मानों अनिवारी, सो मुझ कर्म प्रबन्ध करत भव-भव दुख भारी।
ताहि तिहारी भक्ति-जनित रवि जो निरवारै, सो अब और क्लेश कौन सो नाहिं विदारै॥

२

ज्योतीरूपं दुरित-निवह-ध्वान्त-विध्वंसहेतुं
त्वामेवाहुर्जिनवर चिरं तत्त्वविद्याभियुक्ताः।
चेतोवासे भवसि च मम स्फारमुद्भासमान-
स्तस्मिन्नंहः कथमिव तमो वस्तुतो वस्तुमीष्टे॥

हिन्दी पद्य

तुम जिन ज्योतिस्वरूप दुरित अंधियार निवारी, सो गणेश गुरु कहें तत्त्वविद्या-धन-धारी।
मेरे चित-घर-मांहि बसौ तेजोमय यावत्, पाप-तिमिर अवकाश तहां सो क्यों कर पावत॥

३

आनन्दाश्रु-स्नपितवदनं गद्गदं चाभिजल्पन्,
यश्चायेत त्वयि दृढमनाः स्तोत्रमन्त्रैर्भवन्तम्।
तस्याभ्यस्तादपि च सुचिरं देह-वल्मीक-मध्यात्
निष्कास्यन्ते विविध-विषम-व्याधयः काद्रवेयाः॥

हिन्दी पद्य

आनंद-आसूं-वदन धोय तुमसों चित सानै, गदगद सुरसों सुयश मंत्र पढ़ि पूजा ठानै।
ताके बहुविध व्याधि व्याल चिरकाल निवासी, भाजैं थानक छोड़ देह-बांबई के वासी॥

४

प्रागेवेह त्रिदिव-भवनादेष्यता भव्यपुण्यात्
पृथ्वीचक्रं कनकमयतां देव निन्ये त्वयेदम्।
ध्यानद्वारं मम रुचिकरं स्वान्त-गेहं प्रविष्टः
तत् किं चित्रं जिन वपुरिदं यत्सुवर्णीकरोषि॥

हिन्दी पद्य

दिवि तैं आवनहार भये भवि-भाग-उदय बल, पहले ही सुर आय कनकमय कियौ महीतल।
मन-गृह ध्यान दुवार आय निवसौ जगनामी, जो सुवरन तन करौ कौन यह अचरज स्वामी॥

५

लोकस्यैकस्त्वमसि भगवन् निर्निमित्तेन बन्धु-
स्त्वय्येवासौ सकलविषया शक्तिरप्रत्यनीका ।
भक्तिस्फीतां चिरमधिवसन् मामिकां चित्तशय्यां
मय्युत्पन्नं कथमिव ततः क्लेशयूथं सहेथाः ॥

हिन्दी पद्य

प्रभु सब जगके विना हेतु बान्धव उपकारी, निरावरण सर्वज्ञ शक्ति जिनराज तिहारी ।
भक्ति-रचित मम चित्त सेज नित वास करोगे, मेरे दुख-सन्ताप देख किम धीर धरोगे ?

६

जन्माटव्यां कथमपि मया देव दीर्घं भ्रमित्वा
प्राप्तैवेयं तव नयकथा स्फार-पीयूष-वापी ।
तस्या मध्ये हिमकर-हिम-व्यूह-शीते नितान्तं
निर्मग्नं मां न जहति कथं दुःख-दावोपतापाः ॥

हिन्दी पद्य

भव-वनमें चिरकाल भ्रम्यौ कछु कही न जाई, तुम थुति-कथा-पियूष-वापिका भागनि पाई ।
शशि तुषार घनसार हार शीतल नहिं जा सम, करत न्हौन तामांहि क्यों न भव-ताप बुझै मम ॥

७

पादन्यासादपि च पुनतो यात्रया ते त्रिलोकीं
हेमाभासो भवति सुरभिः श्रीनिवासश्च पद्मः ।
सर्वाङ्गेण स्पृशति भगवंस्त्वय्यशेषं मनो मे
श्रेयः किं तत् स्वयमहरहर्यन्न मामभ्युपैति ॥

हिन्दी पद्य

श्रीविहार-परिवाह होत शुचिरूप सकल जग, कमल कनक आभास सुरभि श्रीवास धरत पग ।
मेरो मन सर्वांग परस प्रभु को सुख पावे, अब सो कौन कल्याण जो न दिन दिन ढिग आवे ॥

८

पश्यन्तं त्वद्वचनममृतं भक्ति-पात्र्या पिबन्तं
कर्मारण्यात् पुरुषमसमानन्द-धाम प्रविष्टम् ।
त्वां दुर्वार-स्मर-मद-हरं त्वत्प्रसादैकभूमिं
क्रूराकाराः कथमिव रुजा कण्टका निर्लुठन्ति ॥

हिन्दी पद्य

भव तज सुखपद बसे काम-मद सुभट संहारे, जो तुमको निरखंत सदा प्रिय दास तिहारे ।
तुम वचनामृत पान भक्ति-अंजुलिसों पीवैं, तिन्हैं भयानक क्रूर रोग रिपु कैसे छीवैं ॥

९

पाषाणात्मा तदितरसमः केवलं रत्नमूर्तिः,
मानस्तम्भो भवति च परस्तादृशो रत्नवर्गः ।
दृष्टिप्राप्तो हरति स कथं मानरोगं नराणां
प्रत्यासत्तिर्यदि न भवतस्तस्य तच्छक्तिहेतुः॥

हिन्दी पद्य

मानथंभ पाषाण आन पाषाण-पटंतर, ऐसे और अनेक रतन दीखैं जग-अन्तर।
देखत दृष्टि-प्रमाण मान-मद तुरत मिटावै, जो तुम निकट न होय शक्ति यह क्योंकर पावै।

१०

हृद्यः प्राप्तो मरुदपि भवन्मूर्ति-शैलोपवाही
सद्यः पुंसां निरवधि-रुजा-धूलिबन्धं धुनोति ।
ध्यानाहूतो हृदयकमलं यस्य तु त्वं प्रविष्टः
तस्याशक्यः क इह भुवने देव लोकोपकारः॥

हिन्दी पद्य

प्रभुतन-पर्वत-परसि पवन उर में निबहै है, तासों तत छिन सकल रोग-रज बाहर ह्वै है।
जाके ध्यानाहूत बसो उर-अंबुज-माहीं, कौन जगत उपकार करन सो समरथ नाहीं॥

११

जानासि त्वं मम भव-भवे यच्च यादृक् च दुःखं
जातं यस्य स्मरणमपि मे शस्त्रवन्निष्पिनष्टि ।
त्वं सर्वेशः सकृप इति च त्वामुपेतोऽस्मि भक्त्या
यत्कर्तव्यं तदिह विषये देव एव प्रमाणम् ॥

हिन्दी-पद्य

जनम-जनम में दुःख सहे सब ते तुम जानो, याद किये मुझ हिये लगें आयुध से मानो।
तुम दयाल जगपाल स्वामि मैं शरण गही है, जो कछु करनो होय करो परमान वही है॥

१२

प्रापद्दैवं तव नुति-पदैर्जीवकेनोपदिष्टैः
पापाचारी मरण-समये सारमेयोऽपि सौख्यम् ।
कः सन्देहो यदुपलभते वासव-श्री-प्रभुत्वं
जल्पञ्जाप्यैर्मणिभिरमलैस्त्वन्नमस्कारचक्रम्॥

हिन्दी पद्य

मरण-समय तुव नाम-मंत्र जीवकतैं पायो, पापाचारी स्वान प्रान तजि अमर कहायो।
जो मणि-माला लेय जपै तुव नाम निरन्तर, इन्द्र-सम्पदा लहै कौन संशय इस अन्तर॥

१३

शुद्धे ज्ञाने शुचिनि चरिते सत्यपि त्वय्यनीचा
भक्तिर्नो चेदनवधि-सुखावञ्चिका कुञ्चिकेयम् ।
शक्योद्घाटं भवति हि कथं मुक्ति-कामस्य पुंसो
मुक्तिद्वारं परिदृढ-महा मोह-मुद्रा-कपाटम् ॥

हिन्दी पद्य

जो नर निर्मल ज्ञान मान शुचि चारित साधै, अनवधि सुखकी सार भक्ति कूंची नहिं लाधै ।
सो शिव-वांछक पुरुष मोक्ष-पट केम उघारै, मोह-मुहर दिढ़ करी मोक्ष-मन्दिरके द्वारै ॥

१४

प्रच्छन्नः खल्वयमघमयैरन्धकारैः समन्तात्
पन्था मुक्तेः स्थपुटित-पदः क्लेशगर्तैरगाधैः ।
तत्कस्तेन व्रजति सुखतो देव तत्त्वावभासी,
यद्यग्रेऽग्रे न भवति भवद्-भारती-रत्नदीपः ॥

हिन्दी पद्य

शिवपुर-केरो पन्थ पाप-तमसें अति छायो, दुख-सरूप बहु कूप खाड़ सें विकट बतायो ।
स्वामी सुख सें तहां कौन जन मारग लागै, प्रभु-प्रवचन-मणिदीप जोन कै आगै आगै ॥

१५

आत्मज्योतिर्निधिरनवधिर्द्रष्टुरानन्दहेतुः
कर्म-क्षोणी-पटल-पिहितो योऽनवाप्यः परेषाम् ।
हस्ते कुर्वन्त्यनतिचिरतस्तं भवद्भक्तिभाजः
स्तोत्रैर्बन्ध-प्रकृति-पुरुषोद्दाम-धात्री-खनित्रैः ॥

हिन्दी पद्य

कर्म-पटल-भू मांहि दबी आतम-निधि भारी, देखत अति सुख होय विमुखजन नाहिं उघारी ।
तुम सेवक ततकाल ताहि निहचै कर धारै, थुति-कुदाल सैं खोदि बन्ध-भू कठिन विदारै ॥

१६

प्रत्युत्पन्ना नयहिमगिरेरायता चामृताब्धेः
या देव त्वत्पद-कमलयोः सङ्गता भक्ति-गङ्गा ।
चेतस्तस्यां मम रुचिवशादाप्लुतं क्षालितांहः
कल्माषं यद्भवति किमियं देव सन्देहभूमिः ॥

हिन्दी पद्य

स्याद्वादगिरि उपजि मोक्ष-सागर लौं धाई, तुव चरणांबुज परसि भक्ति-गंगा सुखदाई ।
मो चित निर्मल थयो न्होन रुचि पूरब तामैं, अब वह हो न मलीन कौन जिनसंशय यामैं ॥

१७

प्रादुर्भूत-स्थिर-पद-सुख त्वामनुध्यायतो मे
त्वय्येवाहं स इति मतिरुत्पद्यते निर्विकल्पा ।
मिथ्यैवेयं तदपि तनुते तृप्तिमभ्रेयरूपां
दोषात्मानोऽप्यभिमतफलास्त्वत्प्रसादाद्भवन्ति ॥

हिन्दी पद्य

तुम शिव-सुखमय प्रगट करत प्रभु चिन्तन तेरो, मैं भगवान-समान भाव यों वरतै मेरो ।
यदपि झूठ है, तदपि तृप्ति निश्चल उपजावै, तुव प्रसाद सकलंकजीव वांछित फल पावै ॥

१८

मिथ्यावादं मलमपनुदन् सप्तभङ्गी-तरङ्गैः
वागम्भोधिर्भुवनमखिलं देव पर्येति यस्ते ।
तस्यावृत्तिं सपदि विबुधाश्चेतसैवाचलेन
व्यातन्वन्तः सुचिरममृतासेवया तृप्नुवन्ति ॥

हिन्दी पद्य

वचन-जलधि तुव देव सकल त्रिभुवनमें व्यापै, भंगतरंगिनि विकथवाद-मल मलिन उथापै ।
मन-सुमेरु सों मथैं ताहि जे सम्यकज्ञानी, परमामृत सों तृपत होंहिं ते चिरलों प्रानी ॥

१९

आहार्येभ्यः स्पृहयति परं यः स्वभावादहृद्यः,
शस्त्रग्राही भवति सततं वैरिणा यश्च शक्यः ।
सर्वाङ्गेषु त्वमसि सुभगस्त्वं न शक्यः परेषां
तत्किं भूषा-वसन-कुसुमैः किं च शस्त्रैरुदस्त्रैः ॥

हिन्दी पद्य

जो कुदेव छवि-हीन, वसन भूषण अभिलाषै, वैरी सों भय-भीत होय सो आयुध राखै ।
तुम सुन्दर सर्वांग, शत्रु समरथ नहिं कोई, भूषण वसन गदादि ग्रहण काहे को होई ॥

२०

इन्द्रः सेवां तव सुकुरुतां किं तया श्लाघनं ते,
तस्यैवेयं भव-लय-करी श्लाघ्यतामातनोति ।
त्वं निस्तारी जनन जलधेः सिद्धिकान्तापतिस्त्वं
त्वं लोकानां प्रभुरिति तव श्लाघ्यते स्तोत्रमित्थम् ॥

हिन्दी पद्य

सुरपति सेवा करैं कहा प्रभु प्रभुता तेरी, सो शलाघना लहै मिटै जासों जगफेरी ।
तुम भवजलधि-जिहाज, तो हि शिव-कंत उचरिये, तुही जगत-जनपाल नाथ थुति की थुति करिये ॥ ऐसे

२१

शक्तिर्वाचामपर-सदृशी न त्वमन्येन तुल्यः
स्तुत्युद्गाराः कथमिव ततस्त्वय्यमी नः क्रमन्ते।
मैवं भूवंस्तदपि भगवन् भक्ति-पीयूष-पुष्टाः
ते भव्यानामभिमतफलाः पारिजाता भवन्ति॥

हिन्दी पद्य

वचन-जाल जड़रूप, आप चिन्मूरति झांई, तातैं थुति-आलाप नांहिं पहुंचै तुम तांई।
तो भी निष्फल नाहिं भक्तिरस-भीने वायक, संतन को सुरतरु-समान वांछित वरदायक॥

२२

कोपावेशो न तव, न तव क्वापि देव प्रसादो
व्याप्तं चेतस्तव हि परमोपेक्षयैवानपेक्षम्।
आज्ञावश्यं तदपि भुवनं संनिधिर्वैरहारी
क्वैवंभूतं भुवन-तिलक प्राभवं त्वत्परेषु॥

हिन्दी पद्य

कोप कभी नहिं करो, प्रीति कबहूं नहिं धारो, अति उदास, बेचाह चित्त जिनराज तिहारो।
तदपि आन जग बहै, बैर तुव निकट न लहिये, यह प्रभुता जगतिलक कहां तुम बिन सरदहिये॥

२३

देव स्तोतुं त्रिदिव-गणिका-मण्डली गीतकीर्तिं
तोतूर्ति त्वां सकलविषयज्ञानमूर्तिं जनो यः।
तस्य क्षेमं न पदमटतो जातु जोहूर्ति पन्थाः
तत्त्वग्रन्थस्मरणविषये नैष मोमूर्ति मर्त्यः॥

हिन्दी पद्य

सुर-तिय गावैं सुयश सर्वगति ज्ञानस्वरूपी, जो तुमको थिर होहिं नमैं भवि आनंदरूपी।
ताहि क्षेमपुर चलन वाट बाकी नहिं हो है, श्रुति के सुमरन मांहि सो न कबहूं नर मोहै।

२४

चित्ते कुर्वन्निरवधि-सुख-ज्ञान-दृग्-वीर्यरूपं
देव त्वां यः समय-नियमादादरेण स्तवीति।
श्रेयोमार्गं स खलु सुकृती तावता पूरयित्वा
कल्याणानां भवति विषयः पञ्चधा पञ्चितानाम्॥

हिन्दी पद्य

अतुल-चतुष्टयरूप तुम्हें जो चित में धारै, आदरसों तिहुंकाल मांहि जग थुति विस्तारै।
सो सुकृति शिव-पंथ भक्ति-रचना करि पूरै, पंचकल्याणक ऋद्धि पाय निहचै दुख चूरै।

२५

भक्ति-प्रह्व-महेन्द्र-पूजित-पद त्वत्कीर्तने न क्षमाः
सूक्ष्मज्ञानदृशोऽपि संयमभृतः के हन्त मन्दा वयम्।
अस्माभिः स्तवनच्छलेन तु परस्त्वय्यादरस्तन्यते
स्वात्माधीन-सुखैषिणां स खलु नः कल्याण-कल्पद्रुमः॥

हिन्दी पद्य

अहो जगत-पति-पूज्य अवधिज्ञानी मुनि हारे,
तुम गुण-कीर्तन माँहि कौन हम मन्द विचारे।
शिव-सुख-पूरन हार कल्पतरु यही हमारे,
श्रुति छलसों तुव-विषैं देव आदर विस्तारे,

२६

वादिराजमनु शाब्दिकलोको वादिराजमनु तार्किकसिंहः।
वादिराजमनु काव्यकृतस्ते वादिराजमनु भव्यसहायः॥

हिन्दी पद्य

वादिराज मुनिराज शब्दविद्या के स्वामी,
वादिराज मुनिराज तर्कविद्यापति नामी।
वादिराज मुनिराज काव्य-कला अधिकारी,
वादिराज मुनिराज बड़े भविजन उपकारी।

दोहा —

मूल अर्थ बहुविध कुसुम, भाषा सूत्र मझार।
भक्ति माल 'भूधर' करी, करो कंठ सुखकार॥

—— x ——

विषापहार स्तोत्र

१

स्वात्मस्थितः सर्वगतः समस्त-व्यापार-वेदी विनिवृत्त-सङ्गः ।
प्रवृद्ध-कालोऽप्यजरो वरेण्यः पायादपायात्पुरुषः पुराणः ॥

हिन्दी पद्य

अपने आतम में ठहरा है, किन्तु सर्वगत कहलाता, सर्व व्यापार जानता है पर नहीं परिग्रह से नाता।
काल-मान से वृद्ध हुआ है, तो भी है अजरामर जो, दुख से हमको सदा बचाओ प्रभु पुराण परमेश्वर जो ॥

२

परैरचिन्त्यं युगभारमेकः स्तोतुं वहन् योगिभिरप्यशक्यः ।
स्तुत्योऽद्य मेऽसौ वृषभो न भानोः किमप्रवेशे विशति प्रदीपः ॥

हिन्दी पद्य

जिसने पर-कल्पनातीत युग-भार अकेले ही झेला,
जिसका गुण-गायन मुनिजन भी कर नहिं सके एक बेला।
आज दास यह उसी वृषभ की, विरद समाज यह रचता है,
जहां न जाय भानु, वहां क्या दीप प्रकाश न करता है।

३

तत्याज शक्रः शकनाभिमानं नाहं त्यजामि स्तवनानुबन्धम् ।
स्वल्पेन बोधेन ततोऽधिकार्थं वातायनेनेव निरूपयामि ॥

हिन्दी पद्य

शक्र सरीखे शक्तिवान ने, तजा गर्व गुण गाने का,
किन्तु मैं न अनुराग तजूंगा, विरदावली बनाने का।
प्रगटाऊंगा बहुत विषय, है अल्पज्ञान जो उस ही से,
सारा नगर दिखाता जैसे, घर की छोटी खिड़की से ॥

४

त्वं विश्वदृश्वा सकलैरदृश्यो विद्वानशेषं निखिलैरवेद्यः ।
वक्तुं कियान् कीदृश इत्यशक्यः स्तुतिस्ततोऽशक्तिकथाऽस्तु ॥

हिन्दी पद्य

तुम सब दर्शी देव, किन्तु नहिं तुम्हें देख सकता कोई,
तुम सबके हो ज्ञाता, पर नहिं तुम्हें जान पाता कोई।
'कितने हो', 'कैसे हो', यों कुछ कहा नहीं प्रभु जाता है,
'इससे निज अशक्ति बतलाना' ये ही तुव गुण-गाथा है ॥

५

व्यापीडितं बालमिवात्मदोषैरुल्लाघतां लोकमवापिपस्त्वम् ।
हिताहितान्वेषणमान्द्यभाजः सर्वस्य जन्तोरसि बालवैद्यः ॥

हिन्दी पद्य

बालक-सम अपने दोषों से, पीड़ित जो अति रहते हैं,
उन्हें आप होकर दयालु, भव-रोग-रहित नित करते हैं।
यों न अहित हित का विचार जो अपना कर सकने वाले,
बाल-वैद्य उन सबके तुम हो सदा स्वस्थ रखने वाले ॥

६

दाता न हर्ता दिवसं विवस्वानद्यश्व इत्यच्युत दर्शिताशः ।
सव्याजमेवं गमयत्यशक्तः क्षणेन दत्सेऽभिमतं नताय ॥

हिन्दीपद्य

शक्ति-रहित रवि कपट-कला से आज, काल, परसों करके,
देता लेता कुछ न दिनों को, खोता, आशा दिखला के।
हे अच्युत, जिनपति, वैसे तुम पल-भर भी नहिं खोते हो,
शरणागत नत भक्त जनों को त्वरित इष्टफल देते हो ॥

७

उपैति भक्त्या सुमुखः सुखानि, त्वयि स्वभावाद्विमुखश्च दुःखम् ।
सदावदातद्युतिरेकरूपस्तयोस्त्वमादर्श इवावभासि ॥

हिन्दीपद्य

भक्ति-भावसे सुमुख तुम्हारे रहते जो वे सुख पाते,
और विमुख दुख पाते सहजहिं राग द्वेष नहिं तुम लाते।
अमल सुद्युतिमय चारु आरसी सदा एक सी रहती ज्यों,
उसमें सुमुख विमुख दोनों ही देखें छाया ज्यों की त्यों ॥

८

अगाधताब्धेः स यतः पयोधिर्मेरोश्च तुङ्गा प्रकृतिः स यत्र ।
द्यावा-पृथिव्योः पृथुता तथैव, व्याप त्वदीया भुवनान्तराणि ॥

हिन्दीपद्य

गहराई निधि की, ऊंचाई गिरि की, नभ थल की चौड़ाई,
वहीं वहीं तक, जहां जहां निधि आदिक देते दिखलाई।
किन्तु नाथ, तेरी अगाधता और तुंगता, विस्तरता,
व्याप रही है तीन भुवन के बाहिर भी हे जगत्-पिता ॥

९

तवानवस्था परमार्थतत्त्वं त्वया न गीतः पुनरागमश्च ।
दृष्टं विहाय त्वमदृष्टमैषीर्विरुद्धवृत्तोऽपि समञ्जसस्त्वम् ॥

हिन्दी पद्य

अनवस्था को परमतत्त्व तुमने अपने मत में गाया,

किन्तु बड़ा अचरज यह भगवन्, पुनरागमन न बतलाया।
तथा आशा करके अदृष्ट की तुम सुदृष्ट फल को खोते,
यों तुव चरित दिखें उलटे से, किन्तु घटित सब ही होते ॥

१०

स्मरः सुदग्धो भवतैव तस्मिन्नुद्धूलितात्मा यदि नाम शम्भुः ।
अशेत वृन्दोपहतोऽपि विष्णुः किं गृह्यते येन भवानजागः ॥

हिन्दी पद्य

काम जलाया स्वामि, आपने, इसीलिए यह उसकी धूल,
निज शरीर में शम्भु रमाई, होय अधीर मोह में भूल।
विष्णु परिग्रह-युत सोते हैं, लूटे उन्हें इसी से काम,
तुम निर्ग्रन्थ जागते तब वह तुमसे छीने क्या धन-धाम ॥

११

स नीरजः स्यादपरोऽघवान्वा तद्दोषकीर्त्यैव न ते गुणित्वम् ।
स्वतोऽम्बुराशेर्महिमा न देव स्तोकापवादेन जलाशयस्य ॥

हिन्दीपद्य

और देव हों चाहे जैसे, पाप-सहित, अथवा निष्पाप,
उनके दोष दिखाने से ही, गुणी कहे नहिं जाते आप।
जैसे स्वयं सरित-पति की अति महिमा ~~महत~~ दिखाती है,
जलाशयों के लघु कहने से वह न बड़ाई पाती है ॥

१२

कर्मस्थितिं जन्तुरनेकभूमिं नयत्यमुं सा च परस्परस्य ।
त्वं नेतृभावं हि तयोर्भवाब्धौ जिनेन्द्र नौ-नाविकयोरिवाख्यः ॥

हिन्दीपद्य

कर्मस्थिति को जीव निरन्तर, विविध थलों में पहुंचाता,
और कर्म इन जग-जीवों को नाना गति में ले जाता।
यों नौका-नाविक के जैसे इस गहरे भव-सागर में,
जीव कर्म के नेता हो प्रभु, पार करो कर कृपा हमें ॥

१३

सुखाय दुःखानि गुणाय दोषान्, धर्माय पापानि समाचरन्ति ।
तैलाय बालाः सिकतासमूहं निपीडयन्ति स्फुटमत्वदीयाः ॥

हिन्दी पद्य

गुण के लिए लोग करते हैं अस्थि-धारणादिक बहु दोष,
धर्म-हेतु पापों में पचते पशु-वधादि को कह निर्दोष।

त्यों ही सुख-हित निज तन देते गिरि-पातादि दुःख में ढेल,
यों जो तुव मत-बाह्य मूढ़ वे बालू पेल निकालें तेल ॥

१४

विषापहारं मणिमौषधानि मन्त्रं समुद्दिश्य रसायनं च,
भ्राम्यन्त्यहो न त्वमिति स्मरन्ति पर्यायनामानि तवैव तानि ॥

हिन्दी पद्य

विष-नाशक मणि मन्त्र रसायन औषधि के अन्वेषण में,
देखो तो ये भोले प्राणी, फिरें भटकते वन वन में।
समझ तुम्हें ही मणि-मंत्रादिक, स्मरण न करते सुखदायी,
क्योंकि तुम्हारे ही हैं ये सब नाम दूसरे पर्यायी ॥

१५

चित्ते न किञ्चित् कृतवानसि त्वं देवः कृतश्चेतसि येन सर्वम्।
हस्ते कृतं तेन जगद्विचित्रं सुखेन जीवत्यपि चित्तबाह्यः ॥

हिन्दी पद्य

अपने मन में हे जिनेश तुम नहीं किसी को लाते हो,
पर जिस किसी भाग्यवाले के मन में तुम आ जाते हो।
वह निज कर में कर लेता है सकल जगत को निश्चय से,
तुव मन से बाहिर रह कर भी, अचरज है रहता सुख से ॥

१६

त्रिकालतत्त्वं त्वमवैस्त्रिलोकी-स्वामीति सङ्ख्या-नियतेरमीषाम्।
बोधाधिपत्यं प्रति नाभविष्यंस्तेऽन्येऽपि चेद् व्याप्स्यदमूनपीदम् ॥

हिन्दी पद्य

त्रिकालज्ञ त्रिजगत के स्वामी ऐसा कहने से जिनदेव,
ज्ञान और स्वामीपन की सीमा निश्चित होती स्वयमेव।
यदि इससे भी ज्यादा होती काल जगत की गिनती और,
तो उसको भी व्यापित करते ये तुव दोनों गुण सिर-मौर ॥

१७

नाकस्य पत्युः परिकर्म रम्यं नागम्यरूपस्य तवोपकारि।
तस्यैव हेतुः स्वसुखस्य भानोरुद्-बिभ्रतच्छत्रमिवादरेण ॥

हिन्दी पद्य

हे अगम्य जिनराज तुम्हारी, करता हरि सेवा प्यारी,
सो उपकारी नहीं तुम्हें, उस ही को देती सुख भारी।
जैसे रवि के आगे करता छत्र बड़े आदर से देव,
करने वाले को ही होता, सुखकर आतप-हर स्वयमेव ॥

१८

उपेक्षकस्त्वं क्व सुखोपदेशः स चेत् किमिच्छा-प्रतिकूलवादः।
क्वासौ क्व वा सर्वजगत्प्रियत्वं तन्नो यथातथ्यमवेविचं ते॥

हिन्दी पद्य

कहां तुम्हारी वीतरागता, कहां सौख्यकारी उपदेश,
हो भी तो कैसे बन सकता, इन्द्रिय-सुख-विरुद्ध आदेश।
और जगत की प्रियता भी तब संभव हो सकती कैसे,
नहीं समझ में आता प्रभु, ये गुण रहते तुम में कैसे॥

१९

तुङ्गात्फलं यत्तदकिञ्चनाच्च प्राप्यं समृद्धान्न धनेश्वरादेः।
निरम्भसोऽप्युच्चतमादिवाद्रेर्नैकापि निर्याति धुनी पयोधेः॥

हिन्दी पद्य

तुम समान ऊंचे निर्धन से, रहित परिग्रह से ~~नाना नदी निकलती हैं~~ स्वयमेव,
जो फल मिल सकता है सो नहिं धनद आदि धनिकों से देव।
जल-विहीन ऊंचे गिरिवर से नाना नदी निकलती हैं,
किन्तु विपुल जल भरे जलधि से नहीं एक भी झरती है॥

२०

त्रैलोक्य-सेवा-नियमाय दण्डं दध्रे यदिन्द्रो विनयेन तस्य।
तत्प्रातिहार्यं भवतः कुतस्त्यं तत्कर्मयोगाद्यदि वा तवास्तु॥

हिन्दी पद्य

करो जगत जन जिन-सेवा यों, समझाने को सुरपति ने,
दण्ड विनय से लिया इसलिए प्रातिहार्य पाया उसने।
किन्तु तुम्हारे प्रातिहार्य वसुविध हैं सो आये कैसे,
हे जिनेन्द्र, यदि कर्मयोग से, तो वे कर्म भये कैसे॥

२१

श्रिया परं पश्यति साधु निःस्वः श्रीमान्न कश्चित् कृपणं त्वदन्यः।
यथा प्रकाशस्थितमन्धकारस्थायीक्षतेऽसौ न तथा तमःस्थम्॥

हिन्दी पद्य

निर्धन विचारे तो सब ही धनिकों को भला देखते हैं,
पर तुम बिन श्रीमान न कोई धन-हीनों को लखते हैं।
देखे उजियाले वाले को अन्धकार-वासी जैसे,
हे जिन, उजियाला वाला जन, नहिं तम वाले को जैसे॥

२२

स्ववृद्धि-निःश्वास-निमेषभाजि प्रत्यक्षमात्मानुभवेऽपि मूढः।
किं चाखिल-ज्ञेय-विवर्ति-बोधस्वरूपमध्यक्षमवैति लोकः॥

हिन्दी पद्य

निज शरीर की वृद्धि, श्वास-उच्छ्वास और पलकें झपना,
ये प्रत्यक्ष चिह्न हैं जिसमें, ऐसा भी अनुभव अपना।
कर न सकें जो तुच्छबुद्धि जन, वे क्या जिनवर, तेरा रूप,
इन्द्रिय-गोचर कर सकते हैं, सकल ज्ञेयमय ज्ञान-स्वरूप॥

२३

तस्यात्मजस्तस्य पितेति देव, त्वां येऽवगायन्ति कुलं प्रकाश्य।
तेऽद्यापि नन्वाश्मनमित्यवश्यं पाणौ कृतं हेम पुनस्त्यजन्ति॥

हिन्दी पद्य

'उनके पिता', 'पुत्र हैं उनके', कर प्रकाश यों कुल की बात,
नाथ, आपकी गुणगाथा जो गाते हैं रट-रट दिन-रात।
चारु चित्त-हर चामीकर को सचमुच ही वे बिना विचार,
उपल-शकल से उपजा कहकर अपने कर से देते डार॥

२४

दत्तस्त्रिलोक्यां पटहोऽभिभूताः सुरासुरास्तस्य महान् स लाभः,
मोहस्य मोहस्त्वयि को विरोद्धुर्मूलस्य नाशो बलवद्विरोधः॥

हिन्दी पद्य

हुए पराजित सभी सुरासुर, किया मोह ने यह आदेश,
तीन लोक में ढोल बजाकर, मिला विजय यह उसे विशेष।
किन्तु नाथ, यह निबल आपसे, कर सकता था कहां विरोध,
'वैर ठानना बलवानों से, खो देता है जड़ से खोद'॥

२५

मार्गस्त्वयैको ददृशे विमुक्तेश्चतुर्गतीनां गहनं परेण।
सर्वं मया दृष्टमिति स्मयेन त्वं मा कदाचिद् भुजमालुलोक॥

हिन्दी पद्य

तुमने केवल एक एक मुक्ति का मार्ग निहारा सुखकारी,
पर औरों ने चार गती के गहन पंथ देखे भारी।
इससे 'सब कुछ देखा हमने', यह अभिमान ठान करके,
हे जिनवर, नहिं ~~कभी~~ निरखा कबहूं अपनी भुजा उठा करके॥

२६

स्वर्भानुरर्कस्य हविर्भुजोऽम्भः कल्पान्तवातोऽम्बुनिधेर्विघातः।
संसार-भोगस्य वियोगभावो विपक्षपूर्वाभ्युदयास्त्वदन्ये ॥

हिन्दी पद्य

रवि को राहु रोकता है, पावक को वारि बुझाता है,
प्रलयकाल का प्रबल पवन सरिता-पति को विचलाता है।
ऐसे ही भव-भोगों को, उनका वियोग हरता स्वयमेव,
तुम्हें छोड़ सब की बढ़ती पर घातक लो हुए यों देव ॥

२७

अजानतस्त्वां नमतः फलं यत्तज्जानतोऽन्यं न तु देवतेति,
हरिन्मणिं काचधिया दधानस्तं तस्य बुद्ध्या वहतो न रिक्तः ॥

हिन्दी पद्य

बिन जाने भी तुम्हें नमन करने से जो फल फलता है,
वह औरों को देव मान नमने से भी नहिं मिलता है।
ज्यों मरकत को काच मान कर करगत करने वाला नर,
समझ सुमणि जो काच गहे उसके सम रहे न खाली कर ॥

२८

प्रशस्तवाचश्चतुराः कषायैर्दग्धस्य देवव्यवहारमाहुः,
गतस्य दीपस्य हि नन्दितत्वं दृष्टं कपालस्य च मङ्गलत्वम् ॥

हिन्दी पद्य

विशद मनोज्ञ बोलने वाले पंडित जो कहलाते हैं,
औपचारिक से जले हुओं को, वे यों 'देव' बताते हैं।
जैसे 'बुझे हुए दीपक को', बढ़ा हुआ सब कहते हैं,
और कपाल विघट जाने को 'मंगल हुआ' समझते हैं ॥

२९

नानार्थमेकार्थमदस्त्वदुक्तं हितं वचस्ते निशमय्य वक्तुः,
निर्दोषतां के न विभावयन्ति, ज्वरेण मुक्तः सुगमः स्वरेण ॥

हिन्दी पद्य

नय-प्रमाण-युत अति हितकारी, वचन आपके कहे हुए,
सुन कर श्रोता जन तत्त्वों के परिशीलन में लगे हुए।
वक्ता का निर्दोषिपना नहिं, जानेंगे क्यों हे गुणमाल,
ज्वर-विमुक्त जाना जाता है स्वर पर से सहजहिं तत्काल ॥

३०

न क्वापि वाञ्छा ववृते च वाक्ते काले क्वचित् कोऽपि तथा नियोगः।
न पूरयाम्बुधिमित्युदंशुः स्वयं हि शीतद्युतिरभ्युदेति ॥

हिन्दी पद्य

यद्यपि जगके किसी विषयमें अभिलाषा तुव रही नहीं,
तौ भी निर्मल वाणि तव खिरती, सदा कदाचित् कहीं कहीं ।
ऐसा ही कुछ है नियोग यह, जैसे पूर्णचन्द्र जिनदेव,
ज्वार बढ़ाने को न उगता, किन्तु उदित होता स्वयमेव ॥

३१

गुणा गभीराः परमाः प्रसन्ना बहुप्रकारा बहवस्तवेति ।
दृष्टोऽयमन्तः स्तवने न तेषां गुणो गुणानां किमतः परोऽस्ति ॥

हिन्दी पद्य

हे प्रभु, तेरे गुण प्रसिद्ध हैं, परमोत्तम है, गहरे हैं,
बहु प्रकार हैं, पार रहित हैं, निज स्वभावमें ठहरे हैं ।
स्तुति करते करते यों देखा, छोर गुणोंका आखिर में,
इनमें जो नहिं कहा रहा वह, और कौन गुण जाहिर में ॥

३२

स्तुत्या परं नाभिमतं हि भक्त्या स्मृत्या प्रणत्या च ततो भजामि ।
स्मरामि देवं प्रणमामि नित्यं केनाप्युपायेन फलं हि साध्यम् ॥

हिन्दी पद्य

किन्तु न केवल स्तुति करने से मिलता है निज अभिमत फल,
इससे प्रभु को भक्तिभावसे भजता हूं प्रतिदिन प्रतिपल ।
स्मृति करके सुमरन करता हूं, नम्र होय कर नमता हूं,
किसी यत्न से भी अभीष्ट साधन की इच्छा रखता हूं ॥

३३

ततस्त्रिलोकीनगराधिदेवं नित्यं परं ज्योतिरनन्तशक्तिम् ।
अपुण्य-पापं पर-पुण्यहेतुं नमाम्यहं वन्द्यमवन्दितारम् ॥

हिन्दी पद्य

इसीलिए शाश्वत तेजोमय शक्ति अनन्तवन्त अभिराम,
पुण्य-पाप बिन परम पुण्य के कारण परमोत्तम गुणधाम ।
वन्दनीय पर जो न और की करैं वन्दना कभी मुनीश,
ऐसे त्रिभुवन-नगर-नाथ को करता हूं प्रणाम धर शीस ॥

३४

अशब्दमस्पर्शमरूपगन्धं त्वां नीरसं तद्विषयावबोधम् ।
सर्वस्य मातारममेयमन्यैर्जिनेन्द्रमस्मार्यमनुस्मरामि ॥

हिन्दीपद्य

जो नहिं स्वयं शब्द रस सपरस, अथवा रूप गन्ध कुछ भी,
पर इन सब विषयों के ज्ञाता जिन्हें केवली कहें सभी ।
सब पदार्थ जो जानें, पर नहिं कोइ जान सकता जिनको,
स्मरण में न आसकते हैं जो करता हूं सुमरन उनको ॥

३५

अगाधमन्यैर्मनसाऽप्यलङ्घ्यं निष्किञ्चनं प्रार्थितमर्थवद्भिः ।
विश्वस्य पारं तमदृष्टपारं पतिं जनानां शरणं व्रजामि ॥

हिन्दी पद्य

औरों के मन से भी जो नहिं लंघ्य और गहरे अतिशय,
धन-विहीन जो स्वयं, किन्तु करते जिनसा धनवान विनय ।
जो इस जग के पार गये, पर पाया जाय न जिनका पार,
ऐसे जिनपति के चरणों की लेता हूं मैं शरण उदार ॥

३६

त्रैलोक्यदीक्षा-गुरवे नमस्ते यो वर्धमानोऽपि निजोन्नतोऽभूत् ।
प्राग्गण्डशैलः पुनरद्रिकल्पः पश्चान्न मेरुः कुलपर्वतोऽभूत् ॥

हिन्दी पद्य

मेरु बड़ा सा पत्थर पहले, फिर छोटा सा शैल-स्वरूप,
और अन्त में हुआ न कुलगिरि, किन्तु सदा से उन्नत रूप ।
इसी तरह जो वर्धमान है, किन्तु न क्रम से हुआ उदार,
सहजोन्नत उस त्रिभुवनगुरु को नमस्कार है बारंबार ॥

३७

स्वयंप्रकाशस्य दिवा निशा वा, न बाध्यता यस्य न बाधकत्वम् ।
न लाघवं गौरवमेकरूपं वन्दे विभुं कालकलामतीतम् ॥

हिन्दी पद्य

स्वयं प्रकाशमान जिस प्रभु को रात दिवस नहिं रोक सकें,
लाघव गौरव भी नहिं जिसको बाधक होकर रोक सकें ।
एक रूप जो रहै निरन्तर काल-कला जिस पर न चले,
भक्ति-भार से झुककर उसकी करूं वन्दना विघ्न टलै ॥

३८

इति स्तुतिं देव विधाय दैन्याद्वरं न याचे त्वमुपेक्षकोऽसि ।
छायातरुं संश्रयतः स्वतः स्यात्कश्छायया याचितयाऽऽत्मलाभः ॥

हिन्दी पद्य

इस प्रकार गुण-कीर्तन करके दीन भाव से हे भगवान,
वर न मांगता हूं मैं कुछ भी, तुम्हें वीतरागी वर जान ।
वृक्ष तले जो जाता है, उस पर छाया होती स्वयमेव,
छांह-याचना करने से फिर कौन लाभ होता है देव ॥

३९

अथास्ति दित्सा यदि वोपरोधस्त्वय्येव सक्तां दिश भक्तिबुद्धिम् ।
करिष्यते देव तथा कृपां मे को वाऽऽत्मपोष्ये सुमुखो न सूरिः ॥

हिन्दी पद्य

और होय यदि देने की ही इच्छा वा कुछ आग्रह हो,
तो निज चरण-कमल-रत निर्मल बुद्धि दीजिए नाथ अहो ।
अथवा कृपा करोगे ही प्रभु, इसमें क्या कुछ कहना है ?
कौन सुधी नहिं करता अपने प्रिय सेवक पर करुना है ॥

४०

वितरति विहिता यथाकथञ्चिज्जिन विनताय मनीषितानि भक्तिः ।
त्वयि नुति विषया पुनर्विशेषाद्दिशति सुखानि यशो 'धनंजयं' च ॥

हिन्दी पद्य

यथाशक्ति कैसे ही हो, की हुई भक्ति श्री जिनवर की,
भक्तजनों को मन-चाही सामग्री देती जगभर की ।
गूंथी हुई स्तवन में पुनि अति शुद्ध भावना से प्यारी,
'प्रेमी' देती है सुख यश को, तथा 'धनंजय' को भारी ॥

—o—

भक्तामर-मण्डल विधान
पूर्व पीठिका

श्रीमन्नाभानयं जिनेन्द्रदेवं परं पवित्रं वृषभं गणेशं,
स्याद्वादधारं निधिचन्द्रबिम्बं भक्तामरस्यार्चनिमात्मसिद्ध्यै।
वक्ष्ये सुवीरं करुणार्णवं च श्रीभूषणं केवलज्ञानरूपं,
अलक्ष्यलक्ष्यं प्रणमाम्यलं वै भक्तामरं सिद्धवधूप्रियं वै ॥१॥

आदौ भव्यजनेनैवं गत्वा चैत्यालयं प्रति।
प्रणम्य परया भक्त्या सर्वज्ञः शुद्धलक्षणः ॥२॥
ततः सद्गुरुमानम्य विनयानतचेतसा।
प्रार्थना सुकृत्वा भव्यैः पूजार्थं भावशुद्धितः ॥३॥
दीयतां सुगुरो! आज्ञा पूजां कर्तुं शुभां वराम्।
इत्युक्ते गुरुणाऽभाणि विधिर्भक्तामरस्य वै ॥४॥
श्रीखण्डागुरुकर्पूर-नालिकेर-फलानि च।
प्रचुराक्षत-पुष्पौघानक्षतां चरुसञ्चयान् ॥५॥
मेलयित्वा प्रमोदेन चन्द्रोपम-ध्वजादिकान्।
दीपान् धूपान् महावाद्य-गीतराव-चिरा[illegible]तान् ॥६॥
तोरणैर्मणि-सन्तैः रुज्ज्वलैश्चामरैस्तथा।
मण्डपैः पञ्चवर्णैश्च द्रव्यैर्मङ्गलसूचकैः ॥७॥
वसुदेवमिते कोष्ठे वर्तुलाकारमण्डिते।
रचयेद् वेदिकां तत्र श्री जिनार्चनहेतवे ॥८॥
नातिवृद्धो न हीनाङ्गो न कोपी न च बालकः।
मलिनो न च मूर्खश्च सर्वव्यसनवर्जितः ॥९॥
कलाविज्ञानसम्पूर्णो वाचालः शास्त्रवाक्पटुः।
पण्डितो पूज्यते तत्र करुणारसपूरितः ॥१०॥
सर्वाङ्गसुन्दरो वाग्मी सकलीकरणक्षमः।
स्पष्टाक्षरश्च मन्त्रज्ञो गुरुभक्तो विशेषतः ॥११॥
श्रावकान् श्राविकाश्चैव योगिनश्चार्यिकास्तथा।
चतुर्विधं परं संघं समाह्वयेत सुभक्तितः ॥१२॥
पूजा करण-शुद्धेन कार्या सर्वज्ञसद्मनि।
ततोऽर्चनं श्रुतस्यापि गुरोः पादार्चनं ततः ॥१३॥
कार्यं सर्वज्ञपूजायाः प्रारम्भे सर्वसिद्धिदम्।
अनेन विधिना भव्यैः पूजा कार्या निरन्तरम् ॥१४॥
रचयन्नर्हतां पूजा पीठिकां पुण्यमाप्नुयात्।
फलन्ति सर्वकार्याणि विघ्नराशिः क्षयं व्रजेत् ॥१५॥

—०—

श्रीऋषभदेव-स्तवन

श्रीमद्देवेन्द्रवन्द्यौ जिनवरचरणौ ज्ञानदीपप्रकाशौ,
लोकालोकावकाशौ भवजलधिहरौ संततं भव्यपूज्यौ।
नत्वा वक्ष्ये सुभुजां ऋषभजिनपतेः प्राणिनां मुक्तिहेतुं
यस्मात् संसार-पारं श्रयति स मनुजो भक्तियुक्तः सदा यः ॥१॥
श्रीनाभिराजतनुजं शुभमिष्टिनाथं पापापहं मनुज-नाग-सुरैश्च पूज्यम्।
संसार-सागर-सुपोतसमं पवित्रं वन्दामि भव्यसुखदं ऋषभं जिनेशम् ॥२॥
यस्यात्र नामजपतः पुरुषस्य लोके पापं प्रयाति विलयं क्षणमात्रतो हि।
सूर्योदये सति यथा तिमिरस्तथा तं वन्दामि भव्यसुखदं ऋषभं जिनेशम् ॥३॥
सर्वार्थसिद्धि-निलयाद् भुवि यस्य पुण्याद् गर्भावतार-करणेऽमरकोटिवर्गैः।
वृष्टिः कृता मणिमयी पुरुदेशतस्तं वन्दामि भव्यसुखदं ऋषभं जिनेशम् ॥४॥
जन्मावतारसमये सुरवृन्दवन्द्यैर्भक्त्याऽऽगतैः परमहर्षितया नतस्तैः।
नीत्वा सुमेरुमभिवन्द्य सुपूजितस्तं वन्दामि भव्यसुखदं ऋषभं जिनेशम् ॥५॥
षट्-कर्म-युक्ति-भवदर्श दयां विधाय सर्वाः प्रजाः जिनधरे[illegible]रेण येन।
संजीविताः सविधिना विधिनायकं तं वन्दामि भव्यसुखदं ऋषभं जिनेशम् ॥६॥
दृष्ट्वा सकारणमरं प्रभुदीक्षिताङ्गं कृत्वा तपः परममोक्षपदाप्तिहेतुम्।
कर्मक्षयः परिकृतः भुवि येन तं हि वन्दामि भव्यसुखदं ऋषभं जिनेशम् ॥७॥
ज्ञानेन येन कथितं सकलं सुतत्त्वं दृष्ट्वा स्वरूपमखिलं परमार्थसत्यम्।
तद्दर्शितं सदसि येन समं जनेभ्यो वन्दामि भव्यसुखदं ऋषभं जिनेशम् ॥८॥
इन्द्रादिभिः रचितमिष्टिविधिं यथोक्तं सत्प्रातिहार्यममलं सुखिनं मनोज्ञम्।
यस्योपदेशवशतः सुखता नरस्य वन्दामि भव्यसुखदं ऋषभं जिनेशम् ॥९॥
पञ्चास्तिकाय-षड्द्रव्य-सुसप्ततत्त्व-त्रैलोक्यकादि-विविधानि विकासितानि।
स्याद्वादरूपकुसुमानि हि येन तं च वन्दामि भव्यसुखदं ऋषभं जिनेशम् ॥१०॥
कृत्वोपदेशमखिलं जिन वीतरागो मोक्षं गतो गतविकार-पर-स्वरूपः।
सम्यक्त्व-मुख्य-गुणकाष्टकसिद्धकस्तं वन्दामि भव्यसुखदं ऋषभं जिनेशम् ॥११॥
विविध-विभव-कर्ता पापसन्तापहर्ता शिवपद-सुखभोक्ता स्वर्गलक्ष्म्यादि-दाता।
गणधर-मुनिसेव्यः सोमसेनेन पूज्यो ऋषभजिनपतिः श्रीं वाञ्छितां मे प्रदद्यात् ॥१२॥

—०—

अथ स्थापना

मोक्षसौख्यस्य कर्तारं भोक्तारं शिवसम्पदाम्।
आह्वाननं प्रकुर्वेऽहं जगच्छान्तिविधायिनाम् ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं बीजाक्षरसम्पन्न श्रीवृषभजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्, आह्वाननम्।

देवाधिदेवं वृषभं जिनेन्द्रमिक्ष्वाकुवंशस्य परं पवित्रम्।
संस्थापयामीह पुरःप्रसिद्धं जगत्सुपूज्यं जगतां पतिं च ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं बीजाक्षरसम्पन्न ! श्रीवृषभजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

कल्याणकर्ता शिवसौख्यभोक्ता मुक्तेःसुदाता परमार्थयुक्तः।
यो वीतरागो गतरोषदोषस्तमादिनाथं निकटं करोमि ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं बीजाक्षरसम्पन्न ! श्रीवृषभजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्, सन्निधीकरणम्।

अथाष्टकम्

गाङ्गेया यमुना हरित्सुसरितां सीता नदीया तथा
क्षीराब्धि-प्रमुखाब्धितीर्थमहिता नीरस्य हैमस्य च।
अम्भोजीय-पराग-वासित-महद्-गन्धस्य धारा सती,
देया श्रीजिनपादपीठकमलस्याग्रां सदा पुण्यदा ॥१॥

ॐ ह्रीं परमशान्तिविधायकाय श्रीवृषभजिन-चरणाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीखण्डाद्रिगिरौ भवेन गहने वृक्षैः सुवृक्षोद्भवैः,
श्रीखण्डेन सुगन्धिना भवभृतां सन्ताप-विच्छेदिना।
काश्मीरप्रभवैश्च कुङ्कुमरसैः घृष्टेन नीरेण वै
श्रीमाहेन्द्र-नरेन्द्र-सेवितपदं सर्वादिदेवं यजे ॥२॥

ॐ ह्रीं परमशान्तिविधायकाय श्रीवृषभजिनचरणाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीशाल्युद्भवतन्दुलैः सुविलसद्-गन्धैर्जगल्लोभकैः
श्रीदेवाब्धि-सरस-हार-धवलैर्नेत्रैर्मनोहारिभिः।
सौधौतै रति शुक्ति-जात-मणिभिः पुण्यस्य भागैरिव;
चन्द्रादित्यसमप्रभं प्रभुमहो संचर्चयामो वयम् ॥३॥

ॐ ह्रीं परमशान्तिविधायकाय श्रीवृषभजिनचरणाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मन्दाराब्ज-सुवर्णजाति-कुसुमैः सेवन्तीयश्चतोद्भवैः,
येषां गन्धविलुब्ध-मत्तमधुपैः प्राप्तं प्रभो दास्यदम्।
मालाभिः प्रविराजिभिः जिन विभो देवाधिदेवस्य ते,
संचर्चे चरणारविन्दयुगलं मोक्षार्थिनां मुक्तिदम् ॥४॥

ॐ ह्रीं परमशान्तिविधायकाय श्रीवृषभजिनचरणाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥

शाल्यन्नं घृतपूर्णसर्पिसहितं चक्षुर्मनोरञ्जकं,
सुस्वादुं त्वरितोद्भवं मृदुतरं क्षीराज्यपक्वं परम्।
क्षुद्रोगादिहरं सुबुद्धिजनकं स्वर्गापवर्गप्रदं
नैवेद्यं जिनपादपद्मपुरतः संस्थापयेऽहं मुदा ॥ ५॥

ॐ ह्रीं परमशान्तिविधायकाय श्रीऋषभजिनचरणाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञानादि-तमोविनाशनकरैः कर्पूरदीपैर्वरैः,
नाभीशस्य विवर्तिकाग्रविहितैर्दीपैः प्रभाभासुरैः।
विद्युत्कान्तिविशेष-संशयकरैः कल्याणसम्पादकैः,
कुर्यादार्तिहरार्तिकां जिन विभो पादाग्रतो मुदितः ॥ ६॥

ॐ ह्रीं परमशान्तिविधायकाय श्रीऋषभजिनचरणाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीकृष्णागुरु-देवदारु-जनितैर्धूमध्वजोद्धूतिभिः
आकाशं प्रतिव्याप्तधूमपटलैराच्छादितैः
यः शुद्धात्मविशुद्धकर्मपटलोच्छेदेन जातो जिन-
स्तस्यैव क्रमपद्मयुग्मपुरतः सन्धूपयामो वयम् ॥ ७॥

ॐ ह्रीं परमशान्तिविधायकाय श्रीऋषभजिनचरणाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नारिङ्गाम्र-कपित्थ-पूग-कदली-द्राक्षादि जातैः फलैः,
चक्षुश्चित्तहरैः प्रमोदजनकैः पापापहैर्देहिनाम्।
वर्णाद्यैर्मधुरैः सुरेशतरुजैः खर्जूरपिण्डैस्तथा,
देवाधीश-जिनेश-पादयुगलं सम्पूजयामि क्रमात् ॥ ८॥

ॐ ह्रीं परमशान्तिविधायकाय श्रीऋषभजिनचरणाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरैश्चन्दन-तन्दुलैः सुसघनैः पुष्पैः प्रमोदास्पदैः,
नैवेद्यैर्नवरत्नदीपनिकरैर्धूपैस्तथा धूपजैः।
अर्घ्यं चारुफलैश्च मुक्तिफलदं कृत्वा जिनाङ्घ्रिद्वये,
भक्त्या श्रीमुनिसोमसेनगणिना मोक्षो मया प्रार्थितः ॥ ९॥

ॐ ह्रीं परमशान्तिविधायकाय श्रीऋषभजिनचरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला —

अखण्ड-प्रचण्ड-प्रताप-स्वभावं निराकारमुच्चैरनन्तस्वभावम्।
स्वभावानुभावं क्षतोद्यद्विभावं स्वभावाय वन्दे वरं देवमाद्यम् ॥ १॥
महामोह-सन्दोह-संरोहदारं विकार-प्रसार-प्रहारं विचारम्।
अनल्पं विकल्पं च सङ्कल्पकल्पं त्यजन्तं यजेऽ ह्यादिमुद्दन्तजल्पम् ॥ २॥
विकायं विमायं सदा निष्कषायं ज्वलद्-राग-रोषादि-दोषव्यपायम्।
अलोकं च लोकं च समालोकयन्तं भजे नाभिसूनुं समुद्योतमन्तम् ॥ ३॥
जरा-जन्म-मृत्यु-व्यपेतं गुणेतं समुद्भूतकर्माणमर्थैः समेतम्।
नियोगं विरोगं वियोग-व्यतीतं भजे नाभिसूनुं सुशर्मप्रतीतम् ॥ ४॥

लसद्-द्रव्य-पर्याय-रूपं चरन्तं यथाख्यातचारित्रमुच्चैश्चरन्तम् ।
चिदानन्दकन्दं जगत्तापकन्दं भजे नाभिसूनुं मुदे शक्र-भद्रम् ॥५॥
गतध्यानमालं स्फुरच्चिद्विशालं जितारातिजालं विनष्टान्तकालम् ।
मुनिध्येयरूपं त्रिलोकैकभूपं भजे नाभिसूनुं सुखागाधकूपम् ॥६॥
अमेय-प्रमेय-प्रमातृ-प्रमाणं सहायानपेक्षं विधूतप्रमाणम् ।
अनेकं सदेकं प्रसर्पद्विवेकं भजे नाभिसूनुं गुणारामसेकम् ॥७॥
जगत्तापवल्ली-सदाह्ला-हुताशं महःसूर-भापूर-सम्पूरिताशम् ।
असम्बन्धबन्धं शिवाली-निबन्धं भजे नाभिसूनुं विशेषप्रबन्धम् ॥८॥
भवोद्भूत-भावव्यपाय-स्वभावं भवाभाव-भाव-प्रभाव-प्रभावम् ।
स्वात्मप्रतिष्ठं प्रतिष्ठत्प्रतिष्ठं भजे नाभिसूनुं गरिष्ठं वरिष्ठम् ॥९॥
यजध्वं भजध्वं बुधाः सम्बुध्वं निषिध्वं हृदिध्वं विशुद्धादिनाथम् ।
चिदानन्दकन्दं स्वरूपोपलब्धिं यदीहध्वमन्ते निषीधध्वमेनम् ॥१०॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवाधिदेवाय जयमालार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

[illegible] जिनपूजा

पूजनके अन्तमें

'ओं ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीऋषभनाथ आदिदेवाय नमः'

इस मंत्रका १०८ बार जाप करे ।

—— ० ——

पूजनके पश्चात्, जिस कार्य-विशेष के लिए जिस ~~[illegible]~~ श्लोक और उसके ऋद्धिमंत्रका जाप करना अभीष्ट हो उस काव्यके नीचे लिखे पद्यको पढ़कर अर्घ्य चढ़ाकर उस ऋद्धि-मंत्रका जाप प्रारम्भ करे ।

— ० —

आवश्यक सूचना – यदि पूजन एवं जप करनेके समय भक्तामर-यन्त्र का स्थापन किया जावे तो आगे दी गई भक्तामर-यन्त्र पूजा अवश्य करे ।

—•—

अथ जयमाला

शुभदेश-शुभङ्कर-कौशलकं पुर-पत्तन-मध्य-सरोजसमम्।
वृषनाभि-नरेन्द्र-सुतं सुधियं प्रणमामि सदा वृषभादिजिनम्॥१॥
कृत-कारित-मोदन-मोदधरं मनसा वचसा शुभकार्य-परम्।
दुरितापहरं च्यामोदकरं प्रणमामि सदा वृषभादिजिनम्॥२॥
तव देव सुजन्मदिने परमं वर-निर्मित-मङ्गल-प्रक्कशुभम्।
कनकाद्रिसुपाण्डुक-पीठगतं प्रणमामि सदा वृषभादिजिनम्॥३॥
भ्रतभूषण-भूरि-विशोभतनुं कर-कङ्कण-कज्जल-नेत्र-चणम्।
मुकुटाब्ज-विराजित-चारुमुखं प्रणमामि सदा वृषभादिजिनम्॥४॥
ललितास्य-सुराजित-चारुमुखं मरुदेवि-समुद्भव-जातसुखम्।
सुरनाथ-सुताण्डव-नृत्यधरं प्रणमामि सदा वृषभादिजिनम्॥५॥
वर-भक्त-सरोज-गजाश्वपदं रथ-भृत्यदलं चतुरङ्गनदम्।
शिव-भीरु-शुभोग-सुयोग-धरं प्रणमामि सदा वृषभादिजिनम्॥६॥
गतराग-सुदोष-विराग-कृतिं सुतपोबल-साधित-सुनिगतिम्।
अलंकार
सुख-सागर-सदानिलयं प्रणमामि सदा वृषभादिजिनम्॥७॥
सुसमोसरणे रति-रोग-हरं परिलक्ष्य-सुगम-सुदिव्यध्वनिम्।
कृतकेवलज्ञान-विकाशतनं प्रणमामि सदा वृषभादिजिनम्॥८॥
उपदेश-सुतत्त्व-प्रकाशकरं कमलाकर-लक्षण-पूर्ण-भरम्।
भवि-त्रासित-कर्म-कलङ्कहरं प्रणमामि सदा वृषभादिजिनम्॥९॥
जिन, देहि सुमोक्षपदं सुखदं घन-घाति-घनाघन-वायुपदम्।
परमोत्सव-कारित-जन्मदिनं प्रणमामि सदा वृषभादिजिनम्॥१०॥
संसार-सागरोत्तीर्णं मोक्षसौख्य-पद-प्रदम्।
नमामि सोमसेनार्च्यमादिनाथं जिनेश्वरम्॥११॥

ॐ ह्रीं समागत-विघ्न-भय-निवारणाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय
श्री आदिपरमेश्वराय जयमालार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स जयति जिनदेवः पञ्चकल्याणनाथः,
कलिमल-मल-सुहर्ता विश्वविघ्नौघहन्ता।
शिवपद-सुखहेतुः नाभिराजस्य सूनुः
भव-जलनिधि-पोतो विश्वमोक्षाय नाथः॥१२॥
(इत्याशीर्वादः)

—०—

भक्तामर-यन्त्र-पूजा

करोमि विघ्नौघ-विनाशहेतुमाह्वानन-स्थापन-सन्निधानम् ।
यन्त्रस्य पूजां विधिना करोमि रक्षाभिधानस्य मनो मुदे मे ॥ १ ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा रक्ष रक्ष, यन्त्रराज एहि एहि संवौषट्, आह्वाननम् ।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा रक्ष रक्ष, यन्त्रराज, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, स्थापनम् ।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा रक्ष रक्ष, यन्त्रराज, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्, सन्निधापनम्

श्रीमत्कनत्काञ्चन निर्मितोरु-भृङ्गार-नालाद् गलितैः पयोभिः ।
यन्त्रस्य विघ्नौघशमाय सर्व-रक्षाभिधानस्य करोमि पूजाम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं नमः । ॐ ह्रीं भगवते ह्म्ल्व्र्यूं क्ष्वीं क्रौं यन्त्राधिपतये वैतरि-मारि-शाकिनी-कृद्गति-घोरोपसर्ग-ग्रह-राक्षस-भूत-प्रेत-पिशाचादीन् अपनय अपनय, सर्वरोगापमृत्यु-विनाशनाय हूं फट्, आयुष्यं वर्धय वर्धय, मम सर्वरक्षां कुरु कुरु, लक्ष्मीप्रभावोदित-तुष्टि-पुष्टिं आयुरारोग्य-क्षेम-कल्याण-विभव-वितरणोपेत-वरप्रसादाय सद्धर्मसिद्ध्यर्थं ऐश्वर्यं शान्त्यर्थं यन्त्रराजाय जलं समर्पयामि स्वाहा ।

पटीरपङ्कैर्वरसारसारैः सौरभ्य-सम्पूरित-विश्व-लोकैः ।
यन्त्रस्य विघ्नौघशमाय सर्व-रक्षाभिधा[illegible]करोमि पूजाम् ॥ ३ ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः .... यन्त्रराजाय गन्धं समर्पयामि स्वाहा ।

शाल्यक्षतैः क्षीरपयोधि-फेन-पिण्डोपमैरक्षत-भुक्ति-लक्ष्म्यै ।
यन्त्रस्य विघ्नौघशमाय सर्व-रक्षाभिधानस्य करोमि पूजाम् ॥ ४ ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः .... यन्त्रराजाय अक्षतान् समर्पयामि स्वाहा ।

मन्दार-जाती-बकुलादि-मुक्त-कुन्दादि-पुष्पैः सुरभीकृताशैः ।
यन्त्रस्य विघ्नौघशमाय सर्व-रक्षाभिधानस्य करोमि पूजाम् ॥ ५ ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः .... यन्त्रराजाय पुष्पं समर्पयामि स्वाहा ॥

शाल्यन्न-पक्वान्न-समस्तशाकैः क्षीरान्नयुक्तैश्चरुभिर्विचित्रैः ।
यन्त्रस्य विघ्नौघशमाय सर्व-रक्षाभिधानस्य करोमि पूजाम् ॥ ६ ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः .... यन्त्रराजाय नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा ।

कर्पूर-पारी-ज्वलितैः प्रदीपैर्निःशोषिताशेष-दिगन्धकारैः ।
यन्त्रस्य विघ्नौघशमाय सर्व-रक्षाभिधानस्य करोमि पूजाम् ॥ ७ ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः .... यन्त्रराजाय दीपं समर्पयामि स्वाहा ।

पापप्रणाशैर्घन-धूप-धूम्रैर्धूपैः सुकालागुरु-चन्दनोत्थैः ।
यन्त्रस्य विघ्नौघशमाय सर्व-रक्षाभिधानस्य करोमि पूजाम् ॥ ८ ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः .... यन्त्रराजाय धूपं समर्पयामि स्वाहा ।

नारङ्ग-पूगाम्र-सुमातुलिङ्ग-कल्हार-मोचादि-फलैर्मनोज्ञैः ।
यन्त्रस्य विघ्नौघशमाय सर्व-रक्षाभिधानस्य करोमि पूजाम् ॥ ९ ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः .... यन्त्रराजाय फलं समर्पयामि स्वाहा ।

तद्यम्बु-गन्धाक्षत-पुष्पमुख्यैर्द्रव्यैः कृतं चार्घ्यमिदं ददेऽहम् ।
यन्त्रस्य विघ्नौघशमाय सर्व-रक्षाभिधानस्य करोमि पूजाम् ॥ १० ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः .... यन्त्रराजाय अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।

— ० —

(P.T.O.)

सर्व-शान्ति-मंत्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्वतीर्थङ्कराय श्रीमद्-रत्नत्रय रूपाय दिव्य तेजोमूर्तये प्रभामण्डलमण्डिताय द्वादशगण-परिवेष्टिताय अनन्तचतुष्टयसहिताय समवशरण-केवलज्ञानलक्ष्मीशोभिताय अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंशद्-गुणसंयुक्ताय परमपवित्राय सम्यग्ज्ञानाय स्वयंभुवे सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रैलोक्यमहिताय अनन्तसंसारचक्रपरिमर्दनाय अनन्तज्ञान-दर्शन-वीर्य-सुखास्पदाय त्रैलोक्यवशङ्कराय सत्यब्रह्मणे उपसर्गविनाशनाय घातिकर्म-क्षयङ्कराय अजराय अभवाय अस्माकं श्रमणिका-श्रावक-श्राविकाप्रमुखचतुःसङ्घोपसर्ग-विनाशनाय अघातिकर्मविनाशनाय देवाधिदेवाय नमो नमः।

भक्तामर-ऋद्धि-मन्त्र-यन्त्र पूजन-प्रसादात् सर्वोपसर्ग-विघ्न-राज-चौर-दुष्ट-जन-भयविनाशो भवतु। इहलोक-परलोकाकस्मात्-मरण-वेदनाशरणा-त्राणभय विनाशो भवतु। सर्वक्षयरोग-कुष्टरोग-ज्वरातिसारादिरोगविनाशो भवतु। सर्वनर-गज-गो-महिष-धान्य-वृक्ष-गज-पत्र-पुष्प-फलमारि-राष्ट्र-देशमारि-विश्वमारि-विनाशो भवतु। सर्वमोहनीय-ज्ञानावरणीय-दर्शनावरणीय-अन्तराय-वेदनीय-नाम-गोत्र-आयुःकर्म विनाशो भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं परमोहिजिणाणं शिरोरोग विनाशनं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहिजिणाणं कर्णरोग विनाशनं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं बीजबुद्धीणं ममात्मनि विवेकज्ञानं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदानुसारीणं परस्पर-विरोधविनाशनं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्णसोदराणं श्वासरोग विनाशनं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धाणं प्रतिवादि विद्याविनाशनं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धाणं कवित्वं पाण्डित्यं च भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धाणं पूर्णश्रुतज्ञानं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं परमनोविज्ञानं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं मनःपर्ययज्ञानं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं दशपूर्वज्ञानं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउद्दसपुव्वीणं चतुर्दशपूर्वज्ञानं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं जीवित-मरणादिविज्ञानं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वणइड्ढिपत्ताणं कामितवस्तुप्राप्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं उपदेश-प्रदेशमात्रज्ञानं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं नष्टपदार्थचिन्ताज्ञानं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं आयुष्यावसानज्ञानं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामिणं अन्तरिक्षगमनं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं विद्वेषपरिहरं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं स्थावर-जंगमकृतविषविनाशनं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं पर-वचःस्तम्भनं भवतु।

(P.T.O.)

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं परसेनास्तम्भनं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं अग्निस्तम्भनं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं जलस्तम्भनं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं विष-रोगादिविनाशनं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दुष्टमृगादिभय विनाशो भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणपरक्कमाणं लूतागर्भाग्निज्वालावलि विनाशो भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुण बंभचारीणं भूत-प्रेतादिभयविनाशो भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खिल्लोसहिपत्ताणं सर्वापमृत्यु विनाशो भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं जन्मान्तर-वैरभावविनाशनं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं अपस्मार-प्रलापन-चिन्ताविनाशनं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहिपत्ताणं गो-अज-गजादि-मारि-विनाशनं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं मनुष्य-देवोपसर्गविनाशनं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणोबलीणं मम मनोबलविनाशनं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं मम वचनबलविनाशनं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं मम कायबल विनाशनं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं अष्टादशकुष्ट-गण्डमालादिविनाशनं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं समस्तशीतज्वरादिविनाशनं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुसवीणं सर्वव्याधिविनाशनं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं समस्तोपसर्ग विनाशनं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहानसाणं मम अक्षीण महानसऋद्धिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणसंवासाणं मम अक्षीणसंवास-ऋद्धिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं राजपुरुषादि भयविनाशनं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो महदि-महावीर-वड्ढमाण-बुद्धिरिसीणं समाधिसुखं भवतु, सर्वशान्तिर्भवतु, तुष्टिः पुष्टिश्च भवतु, धन-धान्यसमृद्धिर्भवतु; सर्वकल्याणं भवतु।

शान्तिः स्याज्जिनशासनस्य सुखदा, शान्तिर्नृपाणां सदा,
शान्तिः सुप्रजसां तपोभरभृतां शान्तिर्मुनीनां सदा।
शान्तिः स्यात्पठतां प्रयत्नव्याख्यातृकाणां पुनः
शान्तिः शान्तिरघाग्नि-जीवनमुचः श्री सज्जनानां तथा॥

—•—

भक्तामर-स्तोत्र-मन्त्र-माहात्म्य

१

भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणामुद्योतकं दलितपापतमोवितानम्।
सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादावालम्बनं भवजले पततां जनानाम्॥१

हिन्दी पद्य (गिरिधरशर्मा-रचित)

हैं भक्त देव-नत-मौलि-मणि-प्रभाके उद्योत-कारक, विनाशक पापके हैं।
आधार जो भव-पयोधि-पड़े जनोंके, अच्छी तरा नम उन्हीं प्रभुके पदोंको ॥१॥

ऋद्धि-मंत्र, मंत्र और साधन-विधि

ऋद्धि - ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं, णमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

मंत्र - ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं ब्लूं क्रौं ॐ ह्रीं नमः (स्वाहा)।

यंत्र-निर्माण-विधि - वर्गाकृतिमध्ये ह्रींकारोपरि ह्रींकारं स्थापयित्वा चतुर्षु दिक्षु श्रींकारान् लिखेत्। ततस्तेषामुपरि ऋद्धिमंत्रस्य रचनां कुर्यात्। पश्चादष्टचत्वारिंशत् ॐकारैः सह कंकारान् विलिख्य ... तें प्ररयेत्।

यथा -

ॐ ह्रीं प्रणतदेवसमूह-मुकुटाग्रमणि[illegible] महापापान्धकार-विनाशनाय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

नम्रासुरासुर-नरनाथ-शिरांसि यस्य संबिम्बितानि नखविंशति दर्पणेऽस्मिन्।
तं विश्वनाथमभिवन्द्य सुपूजयामि पक्वान्न-पुष्प-जल-चन्दन-तन्दुलाद्यैः॥१॥

विधि - श्वेत वस्त्र पहिनकर, श्वेत आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर पवित्र भावोंके साथ प्रतिदिन प्रातः १०८ बार उक्त काव्य, ऋद्धि तथा मंत्र को जपने और यंत्रको पास में रखने से सर्व उपद्रव नष्ट होते हैं, सौभाग्य की प्राप्ति और लक्ष्मीका लाभ होता है।

यंत्रको भोजपत्र पर लिखकर अनारकी कलमसे दशांग धूपसे धूपित कर तावीज आदि में बन्द कर गला या भुजामें बांधकर रखे।

२३४

49

यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधादुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥२॥

हिन्दी पद्य

श्री आदिनाथ विभुकी स्तुति मैं करूँगा, की देवलोकपतिने स्तुति है जिन्होंकी।
अत्यन्त सुन्दर जगत्त्रय-चित्तहारी, सुस्तोत्रसे सकल शास्त्र-रहस्य पाके ॥२॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन विधि

ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं।
मंत्र – ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं नमः।
यंत्र –

अर्घ्यम् –

स्तोत्रैः सुसंस्तवन-कोटिभिरादरेण, देवैः स्तुतो विविधशास्त्रयुतैर्जिनो यः।
संसार-सागर-सुतारण-नौसमानं पूजामि वारि-नाक-चन्दन-पुष्प-तोयैः ॥२॥

ॐ ह्रीं अर्हम् – गणधर-चारण-समस्त ऋषीन्द्र-चक्रादित्य-सुरेन्द्र-नरेन्द्र-व्यन्तरेन्द्र-नागेन्द्र-चतुर्विध मुनीन्द्र स्तुत नमस्कार विन्दाय श्री आदिनाथ जिनेश्वराय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

विधि – काले वस्त्र पहिन कर, काली माला लेकर काले आसन पर पूर्वाभिमुख दण्डासन से बैठकर २१ दिन तक प्रतिदिन १०८ बार, अथवा ७ दिन तक प्रतिदिन १००० बार ऋद्धि तथा मंत्रका जाप करे।

आराधकको मंत्र-साधन करते समय कुन्दरू से होम करना और एक बार भोजन करना चाहिए। इससे शत्रु-भय और शिर-पीड़ा दूर होती है। दृष्टिबन्ध-(नजर-) दोष दूर होता है। यंत्रको भोजपत्र पर काले रंग से लिखकर पास में रखे।

३

बुद्ध्या विनापि विबुधार्चितपादपीठ स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम्।
बालं विहाय जलसंस्थितमिन्दुबिम्बमन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम्॥

हिन्दी पद्य

हूं बुद्धिहीन, फिर भी बुधपूज्यपाद, तैयार हूं स्तवन को निर्लज्ज होके।
है और कौन जगमें तज बालकोंको, लेना चहे सलिल-संस्थित-चन्द्रबिम्ब॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन-विधि -

ऋद्धि - ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं।

मंत्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिद्धेभ्यो बुद्धेभ्यः सर्वसिद्धिदायकेभ्यो नमः स्वाहा। ॐ नमो भगवते परमतत्वाय आत्मार्थसिद्धैः ह्रौं ह्रीं ह्रूं ह्रः असिआउसाय नमः।

विधि - कमलगट्टे की माला से ऋद्धि और मंत्र का ७ दिन तक १०८ बार प्रतिदिन जाप करे, सुगंधित धूप से होम करे, गुलाब के फूल चढ़ावे, चुल्लू भर पानी मंत्र कर २१ दिन तक मुख पर छींटने से सब लोग प्रसन्न होते हैं और यंत्र पास रखने से शत्रु की नजर बन्द होती है, एवं दृष्टि दोष दूर होता है।

यंत्र

अर्घ्यम् -

युक्त्या क्रियास्तवनमादिजिनस्य मूढो मत्या विनापि बुधसेवित-पादकस्य।
सम्पादयामि मनसीह कृतो विचारः पूजारतः सुचिरतः सुखदायकस्य ॥३॥

~~अर्घ्यम् - ॐ ह्रीं त्रिभुवनगुण समुद्र चन्द्रकान्ति मणि ते ... मुन श्री आदि परमेश्वराय अर्घ्यम् नि० स्वाहा।॥३॥~~

~~अर्घ्यम्~~ - ॐ ह्रीं विगतबुद्धि गर्वापहार सहित श्रीमन्मानतुङ्गाचार्य-भक्ति-सहिताय श्री आदि परमेश्वराय अर्घ्यम् नि० स्वाहा॥३॥

वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र शशाङ्क-कान्तान् कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ।
कल्पान्तकालपवनोद्धतनक्रचक्रं को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥

हिन्दी पद्य

होवे बृहस्पति-समान सुबुद्धि तो भी है कौन जो गिन सके तव सद्-गुणों को
कल्पान्त-वायु-वश सिन्धु अलंघ्य जो है, है कौन जो तिर सके उसको भुजा से ॥४

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन-विधि—

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं ।

मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं जलयात्रा- जलदेवताभ्यो नमो नमः स्वाहा ।

विधि- उक्त ऋद्धि और मंत्र का श्वेत माला से ७ दिन तक प्रतिदिन १००० बार जाप करे, श्वेत फूल चढ़ावे, एक बार भोजन करे और भूमि पर सोवे। यंत्र पास रखकर तथा २१ कंकरियों को लेकर प्रत्येक कंकरी ७ बार मंत्र कर जल में डालने से मछलियाँ और जल-जन्तु जाल में नहीं फंसते हैं, मंत्र-साधक पानी में नहीं डूबता और तेज बहाव वाले पानी में [illegible] निकलता है।

यंत्र- .

अर्घ्यम्-

चन्द्रस्य कान्ति सदृशान् परमान् गुणौघान्, कोऽसौ पुमान् तव विभो गदितुं समर्थः ।
तस्माद् विधाय जिनपूजनमेव कार्यं, मुक्तिं व्रजामि वरभक्ति-वशाद्धि देव ॥४॥

~~अर्घ्यम्~~- ॐ ह्रीं त्रिभुवन गुण समुद्र चन्द्र कान्ति मणि तेज शरीर सम्यक्-
[illegible] स्वाहा ॥४॥

नेत्र-पीड़ा-निवारक

५

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः।
प्रीत्याऽऽत्मवीर्यमविचार्य मृगी मृगेन्द्रं नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम्

हिन्दी पद्य

हूं शक्ति-हीन, फिर भी करने लगा हूं, तेरी प्रभो स्तुति, हुआ वश भक्ति के मैं।
क्या मोह के वश हुआ शिशु को बचाने, है सामना न करता मृग, सिंह का भी ॥५॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन विधि—

ऋद्धि — ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं

मंत्र — ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रौं सर्वसंकटनिवारणेभ्यः सुपार्श्वयक्षेभ्यो नमो नमः स्वाहा।

विधि — पीला वस्त्र पहिनकर ७ दिन तक १००० जाप करे, पीले पुष्प चढ़ावे, और कुन्दरू की धूप-दहन करे।

मंत्र को पास में रखने और काव्य ऋद्धि मंत्र-द्वारा मं[illegible] जल को कुंए में डालने से पानी में लाल रंग के कीड़े पैदा नहीं होते। जिसकी आंखों में दर्द हो, भयानक पीड़ा हो, उसे सारे दिन भूखा रखकर शाम को मंत्र-द्वारा २१ बार बतासों को मंत्रित कर और जल में घोलकर पिलाने आंखों पर छींटने से आंखों का दुःख-दर्द दूर होता है।

अर्घ्य मंत्र —

दृष्टोऽप्यहं जिन गुणेषु सदानुरक्तो भक्तिं करोमि मतिहीन उदार-बुद्ध्या।
कार्यस्य सिद्धिमुपयाति सदैव पुण्यात्, तस्माद् यजामि जिनराज-पदारविन्दम् ॥५॥

ॐ ह्रीं समस्त गणधरादि-मुनिवर-प्रतिपालक श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि॰ स्वाहा।

६

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति तच्चाम्रचारुकलिकानिकरैकहेतुः ॥

हिन्दी पद्य

हूं अल्पबुद्धि, बुधमानव की हंसीका, हूं पात्र, भक्ति तव है मुझको बुलाती ।
जो बोलता मधुर कोकिल है मधू में, है हेतु आम्रकलिका बस एक उसका ॥६॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन- विधि-

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो कुट्ठबुद्धीणं ।

मंत्र- ॐ ह्रीं श्रां श्रीं श्रूं श्रः हं सं थ थ थः ठः ठः सरस्वती भगवती विद्याप्रसादं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि- पवित्र होकर लाल वस्त्र पहिने, यंत्र स्थापित कर पूजन करे, पुनः लाल आसन पर बैठकर २१ दिन तक प्रतिदिन ऋद्धि और मंत्रका १००० बार जाप करे । हर बार कुंदरू की धूप खेवे, दिन में [illegible] भोजन करे और रात्रि में भूमि पर सोवे ।

उक्त मंत्रके जापसे तथा यंत्रको पासमें रखनेसे स्मरण शक्ति बढ़ती है, विद्याकी प्राप्ति शीघ्र होती है और बिछुड़े हुए व्यक्तिसे मिलाप होता है।

यंत्र

अर्घ्य-

ये सन्ति शास्त्रसबला प्रहसन्ति ते मां, भक्त्या तथापि जिन भक्तिवशात् करोमि ।
पूजाविधिं जिनपतेः सुरचित्त-चोरं, स्वापवर्गसुखदं परमं गुणौघम् ॥६॥
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रचन्द्रभक्तेभ्यः सर्वसौख्यदायकाय श्री आदि जिनेश्वराय अर्घ्यं नि० ।

त्वत्संस्तवेन भवसन्ततिसन्निबद्धं पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ।
आक्रान्तलोकमलिनीलमशेषमाशु सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥७॥

हिन्दी पद्य

तेरी किये स्तुति विभो बहुजन्मके भी, होते विनाश सब पाप मनुष्यके हैं ।
भौंरे समान अति श्यामल ज्यों अंधेरा, होता विनाश रविके करसे निशाका ॥७॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन-विधि —

ऋद्धि - ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं ।

मंत्र - ॐ ह्रीं हं सं श्रां श्रीं क्रौं क्लीं सर्वदुरित-संकट-क्षुद्रोपद्रव-कष्ट-निवारणं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि - हरे रंगकी मालासे २१ दिन तक १०८ बार [illegible] मंत्रको जपनेसे और यंत्रको गलेमें बांधनेसे सर्पका [illegible] दूर होता है और किसी भी प्रकार का विष व्याप्त नहीं होता । इसके अतिरिक्त ऋद्धि-मंत्र-द्वारा १०८ बार कंकरी मंत्र कर सर्पके सिर पर मारनेसे सर्प कीलित हो जाता है । यंत्रको भोजपत्र पर हरे रंगसे लिखे और लोबानकी धूप खेवे ।

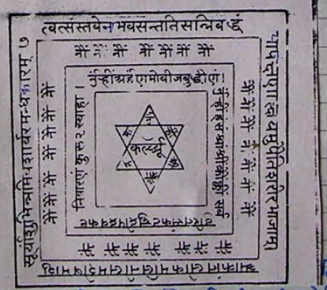

[illegible] ति पठतां भवतां नरस्य ।
मुक्तेः सुखं स हि भुनक्ति निवार्य कष्टं पूजां करोमि सततं च ततो जिनस्य ॥७॥
ॐ ह्रीं अनन्तभव-पातक-विनाशकाय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि० स्वाहा ।

मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेदमारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः ॥

हिन्दी पद्य

यों मान कर स्तुति शुरू की मुझ अल्पधीने, तेरे प्रभाव-वश नाथ वही हरेगी ।
सल्लोकके हृदयको, जल-बिन्दु भी तो, मोती समान नलिनी दल पै सुहाते ॥८॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन-विधि-

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो पादाणुसारीणं ।
मंत्र- ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः 'अ सि आ उ सा' अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ॐ
झ्रौं झ्रौं स्वाहा । ॐ क्लीं लक्ष्मण-रामचन्द्र देव्यै नमो नमः स्वाहा ।

विधि- अरीठे के बीजकी मालासे ४९ दिन तक १०८ बार ऋद्धि तथा मंत्रका जाप करते हुए घृत-मिश्रित गुग्गुल की धूप खेवे, और नमक की डलीसे होम करे ।

यंत्रको पास में रखने से तथा ऋद्धि-मंत्र के आराधनसे सर्व प्रकारके अरिष्ट (आपत्ति, विपत्ति पीड़ा आदि) दूर होते हैं। नमक की ७ डली लेकर एक एक को १०८ बार मंत्रित कर किसी पीड़ित अंगको झाड़ने से पीड़ा दूर होती है)

यंत्र-

ज्ञात्वा मया सुरचितां जिननाथ पूजां पूजां विधाय पुरुषः शिवधाम याति ।
सम्यक्त्व मुख्य गुणकाष्टकधारि सिद्धः सिद्धो भवेत् स भविनां भवतापहारी ८॥
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रस्तवन-सत्पुरुष-चित्तचमत्काराय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि० स्वाहा ।

९

आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति ।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि ॥

हिन्दी पद्य

निर्दोष दूर हो तव स्तुति का बनाना, तेरी कथा तक हरे जग के अघोंको ।
हो दूर सूर्य, करती उसकी प्रभा ही, अच्छे प्रफुल्लित सरोजनि को करों में ॥९॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र, साधनविधि-

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो संभिण्णसोदराणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः फट् स्वाहा ।

मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं क्रौं क्लीं र: र: हं ह: नम: (स्वाहा) ।

विधि- चार कंकरियों को १०८ बार मंत्र कर चारों दिशाओं में फेंकने से और यंत्र पास रखने से मार्ग कीलित हो जाता है, मार्ग में चलते हुए चोर डाकू आदि का भय नहीं रहता ।

यंत्र

अर्घ्यम्-

तव गुणावलि-गान-विधायिनी भवति दूरतरं दुरितास्पदम् ।
तव कथापि शिवाप्य-विधायिका कुरु जिनार्चन वै शुभदायकम् ॥९॥

ॐ ह्रीं श्री जिन-पूजन-स्तवन-कथाश्रवणतो जगत्त्रय भव्यजीव-पापौघविनाशकाय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

नात्यद्भुतं भुवनभूषण भूतनाथ भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा भूत्याऽऽश्रितं य इह नात्मसमं करोति॥

हिन्दी ~~अनुवाद~~ पद्य

आश्चर्य क्या भुवनरत्न भले गुणोंसे, तेरी किये स्तुति, बनें तुमसे मनुष्य।
क्या काम है जगत में उन मालिकों का, जो आत्म-तुल्य न करें निज आश्रितों को॥१०॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन-विधि -

ऋद्धि - ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धीणं।

मंत्र - ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रः श्रां श्रीं श्रूं श्रः सिद्ध बुद्ध कृतार्थो भव भव वषट्।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो भानुविनाशनाय जय-पराजय-उपसर्ग हराय नमः।

विधि - पीले रंगके वस्त्र धारण कर पीले रंगकी मालासे १० दिन तक १०८ बार प्रतिदिन ऋद्धि-मंत्रका कुंदरूकी धूप खेते हुए जाप करनेसे तथा यंत्रको पास रखनेसे कुत्तेके काटनेका विष उतर जाता है। न ‥ नौ ‥ ऊपी लेकर प्रत्येक को १०८ बार मंत्र कर खाने या खिलानेसे कुत्तेका विष असर नहीं करता।

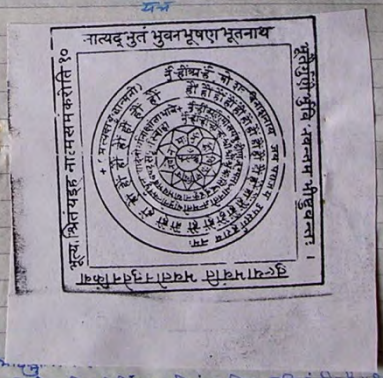

यंत्र

न हि कि ‥ प्रभु ‥

जिनवराच्चितोऽर्चितार्चितं फलमिदं भविता कथितं जिनैः॥१०॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यानुपम-गुणमण्डित-समस्तोपमासहिताय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि०।

२१

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्वा पयः शशिकरद्युति दुग्धसिन्धोः क्षारं जलं जलनिधे रसितुं क इच्छेत्॥

हिन्दी पद्य

अत्यन्त सुन्दर विभो, तुमको विलोक, अन्यत्र आँख लगती नहि मानवों की।
क्षीराब्धि का मधुर सुन्दर वारि पीके, पीना चहे जलधि का जल कौन खारा॥२१॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन-विधि-

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धाणं।

मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रां श्रीं कुमतिनिवारिण्यै महामायायै नमः स्वाहा।

ॐ नमो भगवते प्रसिद्धरूपाय भक्तियुक्ताय सां सीं सौं हुं ह्रीं ह्रौं श्रें श्रौं नमः।

विधि- पवित्र होकर श्वेत वस्त्र धारण कर शुद्ध भावों से मन्दिर में पूजन करे, पश्चात् एकान्त स्थान में बैठकर श्वेत रंग की माला से या लाल रंग की माला से २१ दिन तक प्रतिदिन ऋद्धि मंत्र का १०८ बार जाप कुंदरू की धूप खेते हुए करना चाहिए। यंत्र को पास में रखने से जिसे बुलाना चाहें वह आ जाता है। मुट्ठी भर श्वेत सरसों को उक्त मंत्र से १२००० बार मंत्र कर ऊपर उछाल कर फेंकने से नियम से जलवर्षा होती है।

यंत्र-

अर्घ्यम्-

भवति दर्शनमेव विभो सति भवति यादृश एव सुतोषकः।
न हि तथा परतः क्वचिदेव तत्, सततमेव करोमि तवार्चनम्॥२१॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदर्शनतोऽनन्तभवसंचित-पापसमूहविनाशकाय श्रीआदि-
परमेश्वराय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

२२

यैः शान्तरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं निर्मापितस्त्रिभुवनैक ललामभूत।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति॥

हिन्दी पद्य

जो शान्ति के सुपरमाणु प्रभो, तनू में; तेरे लगे, जगत में उतने, वही थे।
सौन्दर्यसार जगदीश्वर चित्तहर्ता, तेरे समान इससे नहि रूप कोई॥२२॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन विधि-

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धाणं।

मंत्र- ॐ आं अं अः सर्वराजा-प्रजा मोहिनि सर्वजननवश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ नमो भगवते अतुलबलपराक्रमाय आदीश्वरयक्षाधिष्ठिताय ह्रां ह्रीं नमः।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं निजधर्मविजयाय फ्रौं क्रौं रं ह्रीं नमः।

विधि- पवित्र हो लालरंग के वस्त्र धारण कर लाल रंग की माला से ४२ दिन तक प्रतिदिन १००० बार ऋद्धि-मंत्र का जाप दशांग धूप खेते हुए करना चाहिए। पश्चात् यंत्र को पास रखने से तथा उक्त मंत्र द्वारा १०८ बार तेल को मंत्रित करके हाथी को पिलाने से उसका मद उतर जाता है। बारबार मंत्र-स्मरण से रूठकर पीहर गई पत्नी वापिस आ जाती है।

यंत्र

अर्घ्यम्-

जिन विभो तव रूपमिव क्वचिन्न भवतीह जने विभवान्विते।
भवति पापलयं जिन-दर्शनाज्जिन सदार्चनितं प्रकरोमि ते॥२२॥

ॐ ह्रीं त्रिभुवनशान्तिस्वरूप-त्रिभुवन-तिलकाय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि०

चौर-भय-निवारक

२३

वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम् ।
बिम्बं कलङ्कमलिनं क्व निशाकरस्य यद् वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम् ॥

हिन्दी पद्य

तेरा कहां मुख, सुरादिक-नेत्र-रम्य, सर्वोपमान-विजयी, जगदीश, नाथ ।
त्यों ही कलंकित कहां वह चन्द्र-बिम्ब, जो हो पड़े दिवसमें द्युति-हीन फीका ॥२३॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन-विधि-

ऋद्धि - ॐ ह्रीं अर्हं णमो उज्जुमदीणं ।

मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं हं सः ह्रौं ह्रां ह्रीं द्रां द्रीं द्रौं द्रः मोहिनि सर्वजनवश्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि- पवित्र होकर पीले वस्त्र धारण कर पीली मालासे [illegible] दिन तक प्रतिदिन १००० बार ऋद्धि तथा मंत्र का जाप कुंदरुकी धूप [illegible] हुए करना चाहिए। दिनमें एक बार भोजन करे और रात्रिमें भूमिपर सोवे। मंत्रके स्मरणसे तथा यंत्र पास रखने से तथा ७ कंकरी लेकर प्रत्येकको १०८ बार मंत्रित कर चारों दिशा ओं में फेंकने से चोर चोरी नहीं कर पाते और मार्गमें किसी भी प्रकार का भय नहीं रहता।

यंत्र

सुर-नरोरग-मान-संहारकं सुवदनं शशि-तुल्य-मतं त्वकम् ।
जगति नाथ, जिनस्य तवाग्र भो, परियजे विधिनाऽत्र जिनं मुदा ॥ २३ ॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यरूपातिशायि-अनन्तचन्द्रतेज-जेतृ-सदातिलेजविराजमानाय श्री आदि परमेश्वराय अर्घ्यं नि० स्वाहा ।

१४

सम्पूर्णमण्डलशशाङ्क कलाकलापशुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति ।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर नाथमेकं कस्तान् निवारयति सञ्चरतो यथेष्टम् ॥

हिन्दी पद्य

अत्यन्तसुन्दर कलानिधि की कलासे, तेरे मनोज्ञ गुण नाथ, फिरें जगों में ।
है आसरा त्रिजगदीश्वर का जिन्होंको, रोके उन्हें त्रिजगमें फिरते न कोई ॥१४॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन विधि

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं ।

मंत्र- ॐ नमो भगवती गुणवती महामानसी स्वाहा ।

विधि- पवित्र होकर श्वेत वस्त्र धारण कर स्फटिक मणि की माला द्वारा प्रति-दिन त्रिकाल १०८ बार ऋद्धि, मंत्र की साधना करे, दीपक जलावे, धूप खेवे, गुग्गुल, केशर, कपूर, शिलाजीत, अगर, तगर, धूप घी आदि से प्रति दिन होम करें, तथा यंत्र को पास रखने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है, बुद्धि का विकास होता है और सरस्वती देवी प्रसन्न होती है। कंकरी लेकर प्रत्येक को २१ बार मंत्रित कर चारों ओर फेंकने से आधि, व्याधि और शत्रु का भय नहीं रहता ।

यंत्र

अर्घ्यम्-

तव गुणान् हृदि धारक-मानवो, भ्रमति निश्चितो भुवि देववत् ।
शशिसमैर्जल-चन्दन-मुख्यकैः परियजामि नतो जिन-पादुकाम् ॥१४॥

ॐ ह्रीं शुभ्रगुणातिशयसकलविराजमानाय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि॰ स्वाहा ।

२५

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभिर्नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम्।
कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥

हिन्दी पद्य

देवाङ्गना हर सकीं मनको न तेरे, आश्चर्य नाथ, इसमें कुछ भी नहीं है।
कल्पान्तके पवन से उड़ते पहाड़, पै मन्दराद्रि हिलता तक है कभी क्या ॥२५॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधनविधि -

ऋद्धि - ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं।

मंत्र - ॐ नमो भगवती गुणवती सुसीमा पृथ्वी वज्रशृंखला मानसी महामानसी स्वाहा। ॐ नमो अचिन्त्यबलपराक्रमाय सर्वार्थकामरूपाय ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रीं नमः।

विधि - पवित्र होकर, लाल वस्त्र धारण कर, उदित लाल रंगकी माला से २००० बार ऋद्धि, मंत्र का स्मरण करते हुए दशांग धूप खेवें और एकाशन करे। पुनः कस्तूर तेलको मंत्रित करके मुख पर लगा कर राजदरबार में जानेसे प्रभाव बढ़ता है, सन्मान प्राप्त होता है और लक्ष्मी प्राप्त होती है। इस ऋद्धि मंत्रके सोते समय स्मरण करनेसे तथा भुजा पर यंत्र बांधनेसे वीर्यकी रक्षा होती है और स्वप्न दोष नहीं होता।

यंत्र -

अमर-नारि-कटाक्ष-शरासनैर्न चलितो वृषभः स्थिर-मेरुवत्।
शिवपुरे उषितं च जिनैर्नुतं परियजे स्तवनैश्च जलादिभिः ॥२५॥
ॐ ह्रीं मेरुवदचलशील शिरोमणये चतुर्विध-वनिता-विकार-रहिताय शील-समुद्राय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

२६

निर्धूमवर्तिरपवर्जित तैलपूरः कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥

हिन्दी पद्य

बत्ती नहीं, न हि धुंआ, न हि तैलपूर, भारी हवा तक नहीं सकती बुझा है ।
सारे त्रिलोक जिन है करता उजेला, उत्कृष्ट दीपक विभो, स्तुतिकारि तू है ॥२६॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन-विधि

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं ।
मंत्र- ॐ नमः सुमङ्गला सुसीमा नामदेवी सर्वसमीहितार्थं सर्व वज्रशृङ्खलां कुरु कुरु स्वाहा ।
विधि- पवित्र होकर ८ दिन तक हरे रंगकी मालासे १००० बार ऋद्धि मंत्र का स्मरण करते हुए कुंदरू की धूप खेवे । तत्पश्चात् यंत्रको पास में रखने से तथा १०८ बार ऋद्धि मंत्रका स्मरण कर राज-दरबार में पहुंचने पर प्रतिपक्षी पराजित होता है और शत्रु का भय नहीं रहता । तथा इसी ऋद्धि-मंत्र-द्वारा जल-मंत्रित कर अग्नि पर छिड़कने से वह शान्त हो जाती है ।

यंत्र-

अर्घ्यम् -

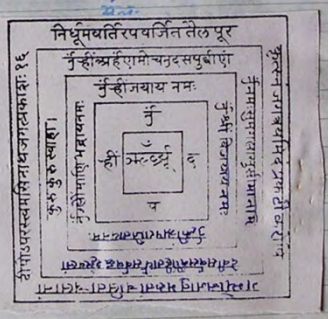

जगति दीपक इव जिन-देवराट्, प्रकटितं सकलं भुवनत्रयम् ।
पद-सरोज-युगं तु समर्चये, विमल-नीरसुगन्धादिभिस्तव ॥२६॥
ॐ ह्रीं धूम्र-स्नेह-वर्त्यादि विघ्न-रहित-त्रैलोक्य-परमकेवलदीपकाय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि० स्वाहा ।

२७

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति ।
नाम्भोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः सूर्यातिशायि महिमासि मुनीन्द्र लोके ॥

हिन्दी पद्य

तू हो न अस्त, तुमको गहता न राहू, पाते प्रकाश तुमको जग एक साथ ।
तेरा प्रभाव रुकता न हि बादलोंसे, तू सूर्यसे अधिक है महिमा-निधान ॥२७॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन-विधि

ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हं अट्ठंग महानिमित्तकुसलाणं ।

मंत्र – ॐ णमो णमिऊण अट्ठे मट्ठे क्षुद्रविघट्ठे क्षुद्रपीडां जठरपीडां भंजय भंजय सर्वपीडां (भंजय भंजय) सर्व रोग-निवारणं कुरु कुरु स्वाहा ।

ॐ नमो अजितशत्रु-पराजयं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि– पवित्र होकर ७ दिन तक श्वेत मालासे १०८ बार प्रतिदिन ऋद्धि-मंत्रका जाप करते हुए चन्दनकी धूप खेवे । यंत्रको बांधने तथा अद्भुत शुद्ध जल ऋद्धिमंत्र-द्वारा २१ बार मंत्रितकर पिलानेसे उदरकी असाध्य पीडा, वायुगोला और वायुशूल आदि सर्व उदर-रोग दूर होते हैं ।

अर्घ्यम्–

स्थिर रक्त जिनो जिमनायको दुरितराशि-घनान्धतमोऽपहः ।
स्वजनपद्म-विकास-विधायकः स्तवन-पूर-जलेश यजामि तम् ॥२७॥

ॐ ह्रीं राहु-चन्द्र-प्रजित-निरावरण ज्योतिरूप-लोकालोकित-सदोदयाय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि० स्वाहा ।

शत्रु-सैन्य-स्तम्भक

१८

नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं गम्यं न राहु वदनस्य न वारिदानाम् ।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति विद्योतयज्जगदपूर्वशशाङ्क-बिम्बम् ॥

हिन्दी पद्य

मोहान्धकार हरता, रहता उगा हो, जाता न राहु-मुखमें, न छिपे घनोंसे ।
अच्छा प्रकाशित करे जगको, सुहावे, अत्यन्त कान्तिधर नाथ, मुखेन्दु तेरा ॥१८॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन-विधि-

ऋद्धि - ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वण इड्ढि पत्ताणं ।

मंत्र- ॐ नमो भगवते जय विजय मोहय मोहय स्तम्भय स्तम्भय स्वाहा ।

ॐ नमो भगवते शास्त्रज्ञानबोधनाय परमर्द्धिप्राप्त जयंकराय ह्रं ह्रीं क्रौं श्रीं नमः ।

ॐ नमो भगवते शत्रुसैन्य निवारणाय यं यं यं क्षुरु विध्वंसनाय नमः क्लीं ह्रीं नमः ।

विधि- पवित्र होकर लाल रंगकी माला द्वारा ७ दिन तक १००० बार ऋद्धि-मंत्रका जाप करते हुए दशांग धूप खेवे और एकाशन करे । यंत्रको पासमें रखनेसे तथा १०८ बार ऋद्धि-मंत्रके स्मरणसे शत्रु-सेनाका स्तम्भन होता है । इस मंत्रकी साधना करनेवालेके मनमें व्यर्थके संकल्प-विकल्प पैदा नहीं होते । चिन्ता, क्रोध, दुर्ध्यान आदिका नाश होता है और धर्मध्यानमें चित्त स्थिर होता है ।

जिन शशी प्रकरोति विभासकं सकल भव्य-सुपद्मवन घनम् ।
निशि-दिनं तिमिर-प्रतिघातको वरमहं सुयजामि जलादिकैः ॥१८॥

ॐ ह्रीं नित्योदयरूपाय राहु-अगम्याय त्रिभुवनसकलविराजमानाय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् नि० स्वाहा ।

पर-मंत्रोच्छेदक

१९

किं शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा युष्मन्मुखेन्दु दलितेषु तमःसु नाथ ।
निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥

हिन्दी पद्य

क्या भानुसे दिवसमें; निशिमें शशीसे, तेरे प्रभो सुमुखसे तम नाश होता ।
अच्छी तरा पक गया जग-बीच धान, है काम क्या जल भरे इन बादलोंसे ॥१९

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन-विधि-

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं ।

मंत्र- ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः यः क्षः ह्रीं वषट् फट् नमः स्वाहा ।

विधि- प्रतिदिन प्रातःकाल शुद्ध होकर ऋद्धि-मंत्रको १०८ बार जपने और यंत्र को अपने पास रखने से अपने पर प्रयोग किये हुए दूसरे के मंत्र, विद्या, टोटका, जादू, मूठ आदिका असर नहीं होता और उच्चाटनका भी भय नहीं रहता ।

यंत्र

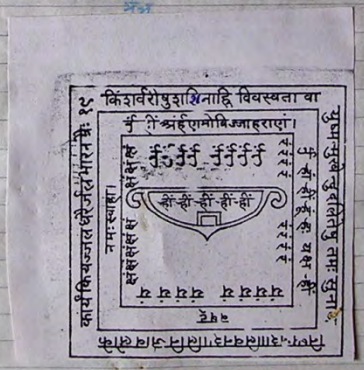

अर्घ्यम्-

जिनमुखोद्भवकान्ति-विकासितो निखिललोक इतीह दिवाकरः ।
किमथवा सुरनदः प्रदिमानर्थं भवतु स वृषभः शुभ सेवया ॥१९॥

ॐ ह्रीं चन्द्र-सूर्योदयास्त-रजनी-दिवा-रहित-परम केवलोदय-सदादीप्ति-विराजमानाय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि० स्वाहा ।

२०

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं नैवं तथा हरि-हरादिषु नायकेषु ।
तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्वं नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥

हिन्दी पद्य

जो ज्ञान निर्मल विभो, तुझमें सुहाता, भाता नहीं वह कभी पर-देवता में।
होती मनोहर छटा मणि-मध्य जो है, सो कांच में नहिं, पड़े रवि-बिम्ब के भी ॥२०॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन-विधि

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं ।

मंत्र- ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रः शत्रुभयनिवारणाय ठः ठः (नमः) स्वाहा ।
ॐ नमो भगवते पुत्रार्थसौख्यं कुरु कुरु स्वाहा, ह्रीं नमः ।

विधि- पवित्र होकर प्रतिदिन प्रातः ऋद्धि-मंत्रका १०८ बार जाप करनेसे, यंत्र पास रखने से सन्तानकी प्राप्ति, लक्ष्मीका लाभ, सौभाग्यकी वृद्धि, विजय-प्राप्ति और बुद्धिका विकास होता है।

अर्घ्यम् -

त्वयि प्रभो प्रतिभाति यथा शुचिः, नहि तथा हरिमुख्य सुरादिषु ।
वसतु स प्रभुरादिजिनेश्वरो मम मनः सरसीव मुहंसवत् ॥२०॥
ॐ ह्रीं हरि-हरादिष्वसम्भावि-परमज्योति केवलज्ञानसहिताय
श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि० स्वाहा ।

मन्ये वरं हरि-हरादय एव दृष्टा दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः कश्चिन्मनो हरति नाथ भवान्तरेऽपि ॥

हिन्दी पद्य

देखे भले, अयि विभो, पर-देवता ही, देखे जिन्हें हृदय आ तुममें रमे ये ।
तेरे विलोकन किये फल क्या प्रभो जो, कोई रमै न मनमें पर-जन्ममें भी ॥२१॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन-विधि-

ऋद्धि - ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं ।

मंत्र - ॐ नमः श्री माणिभद्र जय विजय अपराजित सर्वसौभाग्यं सर्वसौख्यं कुरु कुरु स्वाहा । ॐ नमो भगवते शत्रुभयनिवारणाय नमः ।

विधि - पवित्र होकर लाल वस्त्र धारण कर लाल माला द्वारा ४२ दिन तक १०८ बार ऋद्धि-मंत्र का जाप करने और यंत्र को पास में रखने से सभी स्वजन परिजन अपने अधीन होते हैं और शत्रु भय दूर होता है।

अर्घ्यम्-

तव शुभं वर दर्शनमञ्जसा, हरति पापसमूहकमेव तत् ।
भवतु ते चरणाब्जयुगं प्रभो, स्थिरकरं मम चित्त-शुचेः करम् ॥२१॥

ॐ ह्रीं त्रिभुवनमनोमोहकानुपमरूपधारकाय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि० ।

२२

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान् नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं प्राच्येव दिग् जनयति स्फुरदंशुजालम्॥

हिन्दी पद्य

माँऐं अनेक जनती जगमें सुतोंको, हैं, किन्तु वे न तुमसे सुतकी प्रसूता।
सारीं दिशा धर रही नक्षत्र-गणको, पै एक पूरब दिशा रविको उगाती॥२२॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन-विधि-

ऋद्धि - ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामिणं।

मंत्र - ॐ अर्हं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं जम्भय जम्भय, मोहय मोहय, स्तम्भय स्तम्भय अवधारणं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि - प्रतिदिन प्रातः १०८ बार ऋद्धि-मंत्रका जाप करते रहे, यंत्रको गलेमें बांधने से भूत-प्रेतादिकी बाधाएं नहीं होती हैं तथा जिसे डाकिनी शाकिनी चुड़ैल आदि लगी हो, उसे हल्दीकी गांठको २१ बार मंत्रित कर खिलाने से और यंत्र गलेमें बांधनेसे डाकिनी आदि भाग जाती हैं।

यंत्र

अर्घ्यम् -

सुवनिता जनयन्ति सुतान् बहून्, तव समो न हि नाथ, महीतले।
तनुवरं सुखदं सुरभासुरं मनसि तिष्ठतु मे स्मरणं तु ते॥२२॥

ॐ ह्रीं अनुपमजगदम्बा-जनिताय दिग्भास्करकेवलज्ञानतेजो विराजमानाय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

२३

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांसमादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात्।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र पन्थाः॥

हिन्दी पद्य

योगी तुम्हे परम पूरुष हैं बताते, आदित्य वर्ण, मल-हीन, तमिस्त्र-हारी।
पाके तुम्हें जय करें सब मौतको भी, है और ईश्वर नहीं वर मोक्षमार्ग प्रद॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन-विधि

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं।

मंत्र- ॐ नमो भगवती जयावती मम समीहितार्थं मोक्षसौख्यं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वसिद्धाय श्रीं नमः।

विधि- पवित्र होकर श्वेत वस्त्र धारण कर श्वेत माला द्वारा १०८ बार ऋद्धि-मंत्र को सिद्ध करे। पुनः अपने शरीर की रक्षा के लिए १०८ बार मंत्र पढ़कर जिसे भूत-प्रेतादि की बाधा हो, उसे झाड़ा देकर यंत्र बांधे तो प्रेत-बाधा दूर हो जाती है।

यंत्र-

अर्घ्य-

पद-युगस्य सुसंस्मरणान्नरः शिवपदं लभतेऽति सुखप्रदम्।
परियजे वर-पादयुगं मुदा, जिन, ददातु सुवाञ्छितमत्र मे॥२३॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्य-पावनादित्यवर्णाय परमाष्टोत्तरशत लक्षण-नवशत व्यञ्जनोपेताय श्री अर्हत् परमेश्वराय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम् ।
योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥

योगीश, अव्यय — हिन्दी पद्य

अचिन्त्य, अनङ्गकेतु, ब्रह्मा असंख्य परमेश्वर, एक नाना ।
ज्ञानस्वरूप विभु निर्मल, योग-वेत्ता, यों आद्य सन्त तुमको कहते अनन्त ॥२४॥

ऋद्धि, यंत्र, मंत्र और साधन-विधि

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं ।

मंत्र- स्थावर-जङ्गम-वायकृत्रिमं सकलविषं यद्भक्तेः अप्रणमितायये दृष्टि-विषा मुनयस्ते वड्ढमाणस्वामी सर्वहितं कुरु कुरु स्वाहा ।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा क्ष्रौं क्ष्रौं स्वाहा । क्रों ।

विधि- पवित्र होकर गेरुआ रंग के वस्त्र धारण कर ७ दिन तक १००० और जप कर मंत्र सिद्ध करे । यंत्र पास रखे और तेल को १०८ बार मंत्रित कर शिर पर लगाने से अर्धशिरपाली (आधे शिर की पीड़ा) दूर होती है। शिर-रोग सर्व रोग दूर होते हैं उस जल से मंत्रित कर प्रसूता को पिलाने से प्रसूति-पीड़ा दूर होती है और प्राणान्तक रोग नहीं होते ।

त्वमिह ... श्वरः ।
त्वादि ... नसम् ॥२४॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मा-विष्णु-महेशादिनामधेयाय त्रिभुवनदेवत्वसहिताय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि० स्वाहा ।

पाठभेद- दृष्टिविषान् मुनीन् ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा क्ष्रौं क्ष्रौं नमः ।
ॐ नमो भगवते वड्ढमाणस्वामिने सर्वजीवहितं कुरु कुरु स्वाहा ॥

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात् त्वं शङ्करोऽसि भुवनत्रयशङ्करत्वात् ।
धाताऽसि धीर शिवमार्गविधेर्विधानाद् व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥

हिन्दी पद्य

तू बुद्ध है विबुध-पूजित बुद्धिवाला, कल्याण-कर्तृत्व शंकर भी तु ही है।
तू मोक्षमार्ग-विधि-कारक है विधाता, है व्यक्त नाथ पुरुषोत्तम भी तुही है ॥२५॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन-विधि—

ऋद्धि— ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं ।

मंत्र— ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा ।

ॐ नमो भगवते जय विजयापराजिते सर्व सौभाग्यं सर्वसौख्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि— उक्त ऋद्धि-मंत्रके प्रतिदिन १०८ बार जाप करने से और यंत्र पासमें रखनेसे धीज उतरती है, दृष्टि दोष दूर होता है, अग्नि और शत्रुका भय नहीं रहता ।

यंत्र

अर्घ

बुद्धः प्रबुद्धो वर-बुद्धराजो मुक्तेर्विधानाद् भविनां विधाता ।
सौख्यप्रयोगार्जित, शङ्करोऽसि सर्वेषु मर्त्येषु सदोत्तमस्त्वम् ॥२५॥

ॐ ह्रीं बुद्ध-शङ्कर-~~रोगापहारि~~ विष्णु प्रसन्नात्मा ब्रह्मादि~~सम्पत्सार्थकिवारस्य~~ सार्थकनामधारकाय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि॰ स्वाहा ।

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय तुभ्यं नमो जिन भवोदधिशोषणाय ॥

हिन्दी पद्य

त्रैलोक्य-आर्तिहर नाथ तुम्हे नमूं मैं, हे भूमिके विमल रत्न तुम्हे नमूं मैं ।
हे ईश, सर्वजगके तुमको नमूं मैं, मेरे भवोदधि-विनाशि, तुम्हे नमूं मैं ॥२६॥

ऋद्धि मंत्र यंत्र और साधन-विधि-

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्त तवाणं ।

मंत्र- ॐ नमो ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रूं ह्रूं परजन-शान्तिव्यवहारे जयं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि - पवित्र होकर लाल वस्त्र धारण कर उत्तराभिमुख यंत्र स्थापित कर आरती उतारें, यंत्र का पूजन करें । पश्चात् अर्धरात्रि से अपराह्न तक १२००० बार ऋद्धि मंत्र को जप कर मंत्र सिद्ध करें ।

लाभ- यंत्र को समीप रखने से तथा ऋद्धि-मंत्र-द्वारा १०८ बार तेल मंत्रित कर शिर पर लगाने से आधे शिरकी पीड़ा दूर होती है । मंत्रित तेलकी मालिश करने से तथा मंत्रित जल को पिलाने से प्रसूता की पीड़ा दूर होती है । इस मंत्रके प्रभावसे प्राणान्तक रोगों से मनुष्य पीड़ित नहीं होता ।

यंत्र

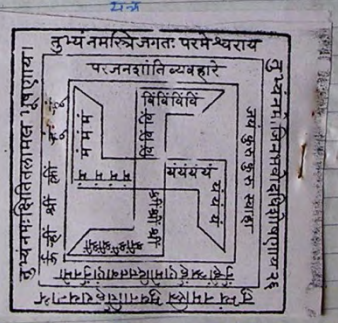

अर्घ्यम्-

लोकार्त्तिनाशाय नमोऽस्तु तुभ्यं, नमोऽस्तु तुभ्यं जिनभूषणाय ।
त्रैलोक्यनाथाय नमोऽस्तु तुभ्यं, नमोऽस्तु तुभ्यं भव-तारणाय ॥२६॥

ॐ ह्रीं त्रिभुवनार्त्तिहर-क्षितितलामलभूषण-भवोदधि-शोषक-परमेश्वराय
श्रीआदिजिनेश्वराय अर्घ्यं नि० स्वाहा ।

~~को विस्मयो ऽत्र यदि नाम गुणैरशेषैस्त्वं संश्रितो निरवकाश तया मुनीश ।~~
दोषैरुपात्तविविधाश्रय जातगर्वैः स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥

हिन्दी पद्य

आश्चर्य क्या गुण सभी तुझ में समाये, अन्यत्र क्योंकि न मिली उनको जगा ही।
देखा न नाथ, मुख भी तुझ स्वप्न में भी, पा आसरा जगत का सब दोष ने तो ॥२७॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र तथा साधन-विधि

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं ।

मंत्र- ॐ नमो चक्रेश्वरी देवी चक्रधारिणी चक्रेण अनुकूलं साधय साधय, शत्रून् उन्मूलय उन्मूलय घे घे स्वाहा। ॐ नमो भगवते सर्वार्थसिद्धाय सुखाय ह्रीं श्रीं नमः।

विधि- पवित्र होकर काले वस्त्र पहिन कर लाल-चन्दन से यंत्र लिख कर स्थापित कर उसकी पूजन करे। पश्चात् २१ दिन तक काले रंग की माला से १०८ बार ऋद्धि-मंत्र का जाप करते हुए १०८ पुष्प चढ़ावे, बिना नमक का एक बार भोजन करे और काली मिर्च की धूप से होम करे।

लाभ- यंत्र को पास में रखने तथा ऋद्धि-मंत्र का स्मरण करते रहने से शत्रु कोई बाधा नहीं पहुंचा सकता। उल्टा वह पराजित हो जाता है।

यंत्र-

अर्घ्य -

किमद्भुतं दोषसमुच्चयेन कृत्वाऽत्र गर्वं जिन, संश्रितोऽसि।
स्वप्नेऽपि न त्वं गुणराशिधामा दोषाश्रितो मर्त्य-समाश्रयेण ॥२७॥

ॐ ह्रीं परमगुणाश्रित- अवगुणासंश्रित श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि० स्वाहा ।

उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूखमाभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ।
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं बिम्बं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥

हिन्दी पद्य-

नीचे अशोक-तरुके तन है सुहाता, तेरा विभो, विमलरूप प्रकाश-कर्ता ।
फैली हुई किरणका, तमका विनाशी, मानों समीप घनके रवि-बिम्ब ही है ॥२८॥

ऋद्धि. मंत्र. यंत्र और साधन-विधि-

ऋद्धि- ऊँ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं ।

मंत्र- ऊँ नमो भगवते जय विजय जृम्भय जृम्भय, मोहय मोहय, सर्वसिद्धि-सम्पत्ति-सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि- पवित्र होकर पीले वस्त्र धारण कर पूर्व या उत्तर मुख यंत्र स्थापित कर उसकी पूजन करे। पीले पीले आसन पर बैठकर पीली मालासे प्रतिदिन १००० बार ऋद्धिमंत्रका साधन कर १२००० जाप पूरा करे। पीले फूल चढावे।

लाभ- यंत्र पासमें रखने तथा प्रतिदिन उक्त काव्य और ऋद्धि मंत्रका आराधन करते रहने से व्यापार में लाभ, सुख-समृद्धि, यश, विजय, सन्मान तथा राज-दरबारमें प्रतिष्ठा बढती है ।

यंत्र-

अर्घ्यम् -

अशोकवृक्षाः सुकृताः विचित्राः छाया-घना नाथ, सुपुण्ययोगात् ।
तवोपरि प्रीतजनेषु नित्यं सुख-प्रदाः स्युः परमार्थशोभाः ॥२८॥

ऊँ ह्रीं अशोकवृक्षप्रातिहार्यसहिताय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि० स्वाहा ।

सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ।
बिम्बं वियद्विलसदंशुलतावितानं तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥

हिन्दी पद्य -

सिंहासन स्फटिक-रत्न जड़ा उसीमें, भाता विभो, कनक-कान्त शरीर तेरा ।
ज्यों रत्नपूर्ण उदयाचल-शीश पै जा, फैला स्वकीय किरणें रवि-बिम्ब सोहे ॥२९॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन-विधि -

ऋद्धि - ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं ।

मंत्र - ॐ णमो णमिऊण पार्स विसहर फुलिंग मंतो विसहर नाम रक्खर मंतो सर्वसिद्धिमीहे इह सुयसमरंताणं मण्णे जागरई कप्पदुमच्चं सर्वसिद्धिः ॐ नमः स्वाहा ।

विधि - शुचि होकर नीले रंगके वस्त्र धारण कर उत्तर-मुख यंत्र स्थापित करे, आरती उतारे, मालतीके फूल चढ़ावे, यंत्र का पूजन करे, मंत्र सिद्धि-पर्यन्त प्रतिदिन १००० बार ऋद्धि-मंत्र की आराधना करे ।

लाभ - यंत्र पासमें रखने तथा ऋद्धि-मंत्र-द्वारा १०८ बार मंत्रित जल पिलानेसे नशीली वस्तुओं का नशा दूर हो जाता है, नेत्र-पीड़ा दूर होती है और बिच्छू का विष भी उतर जाता है ।

यंत्र

अर्घ्य -

सिंहासनं प्राणि-हितङ्करं यत्, सुशोभते हेममयं विचित्रम् ।
सहस्रपत्रोपरि कर्णिकायां विराजते जैनतनुः सुशोभः ॥२९॥

ॐ ह्रीं सिंहासनप्रातिहार्यसहिताय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि० स्वाहा ।

कुन्दावदातचलच्चामरचारुशोभं विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम् ।
उद्यच्छशाङ्कशुचिनिर्झरवारिधारमुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥

हिन्दी पद्य -

तेरा सुवर्णसम देह विभो, सुहाता, है श्वेतकुन्द-सम चामर के उड़े से ।
सो है सुमेरु गिरि, कांचन-कान्ति-धारी, ज्यों चन्द्रकान्ति-धर निर्झर के बहे से ॥३०॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन-विधि -

ऋद्धि - ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं ।

मंत्र - ॐ नमो अट्ठे मट्ठे क्षुद्रविघट्टे क्षुद्रान् स्तम्भय, स्तम्भय रक्षां कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि - शुद्ध होकर, श्वेत वस्त्र धारण कर ऊपर दिए हुए यंत्र स्थापित करे, उसकी पूजन करे, श्वेत पुष्प चढ़ाये, आरती उतारे। पश्चात् श्वेत आसन पर पद्मासन बैठकर स्फटिक की माला द्वारा प्रतिदिन १००० बार ऋद्धि-मंत्र का आराधन कर उसे सिद्ध कर लेवे।

लाभ - उक्त ऋद्धि-मंत्र के बारम्बार स्मरण करने तथा यंत्र को पास रखने से शत्रु का स्तम्भन होता है, भयंकर वन में सिंह, चोर आदि का भय नहीं रहता और सर्व प्रकार के भय दूर भाग जाते हैं।

यंत्र -

अर्घ्य -

गङ्गा-तरङ्गाभ-विराजमानं विभ्राजते चामर-चारु-युग्मम् ।
सुदर्शनाद्रौ गतनिर्झरं वा तनोति देवोऽत्र महाविकाशम् ॥३०॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि-चामर प्रातिहार्य सहिताय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि० स्वाहा ।

छत्रत्रयं तव विभाति शशाङ्क-कान्तमुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम् ।
मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं प्रख्यापयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥

हिन्दी पद्य -

मोती मनोहर लगे जिनमें सुहाते, नीके हिमांशु-सम सूरज-ताप-हारी ।
हैं तीन छत्र शिरपै अतिरम्य तेरे, जो तीन-लोक-परमेश्वरता बताते ॥३१॥

ऋद्धि-मंत्र-यंत्र और साधन-विधि-

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणपरक्कमाणं

मंत्र- ॐ उवसग्गहरं पासं पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ।
विसहर विसणिण्णासं मंगलकल्लाण आवासं ॥ ॐ ह्रीं नमः स्वाहा ।

विधि- पवित्र होकर लाल वस्त्र धारण कर यंत्र स्थापित कर उसकी पूजा करे । पुनः उत्तर मुख हो लाल आसन पर बैठकर पद्मासनसे प्रतिदिन ऋद्धि-मंत्रका जाप करते हुए ७५०० सौ जाप पूर्ण करे ।

लाभ- प्रतिदिन १०८ बार ऋद्धि-मंत्रका जाप करने और यंत्र पासमें रखनेसे राज-दरबारमें सम्मान मिलता है, राजा वशमें होता है और सर्व प्रकारके चर्म-रोगोंसे छुटकारा मिलता है ।

यंत्र-

अर्घ्य-
त्रैलोक्यराज्यं कथितं प्रमाणं छत्रत्रयं चन्द्र-समान-कान्ति ।
मुक्ताफलैः संयुतकं सुशोभं विराजते नाथ, तवोपरिष्टात् ॥३१॥
ॐ ह्रीं छत्रत्रयप्रातिहार्यसहिताय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि० स्वाहा ।

गम्भीरताररवपूरितदिग्विभागस्त्रैलोक्यलोकशुभसङ्गमभूतिदक्षः।
सद्धर्मराजजयघोषणघोषकः सन् खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी ॥

हिन्दी पद्य

गम्भीर नाद भरता दश ही दिशा में, सत्संग की त्रिजग को महिमा बताता।
धर्मेश की कर रहा जय-घोषणा है, आकाश-बीच बजता यश का नगारा ॥३२॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन-विधि-

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणबंभचारीणं।

मंत्र- ॐ नमो ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्वदोषनिवारणं कुरु कुरु स्वाहा। सर्वसिद्धिं वृद्धिं वांछापूर्णं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि- पवित्र होकर पीले वस्त्र धारण कर यंत्र स्थापित कर उसकी पूजन करे, पीछे पद्मासन से पूर्वमुख बैठकर पीली माला से १००८ बार ऋद्धिमंत्र का जाप कर मंत्र सिद्ध करे।

लाभ- कुंवारी कन्या द्वारा काते हुए कच्चे धागे को उक्त ऋद्धि-मंत्र द्वारा १०८ बार मंत्रित कर गले में बांधने से, तथा यंत्र को पास में रखने से संग्रहणी आदि सर्वप्रकार के उदर-विकार दूर होते हैं।

यंत्र-

अर्घ्य-

वादित्र-नादो ध्वनतीह लोके, घनाघन-ध्वान-समप्रसिद्धः।
आज्ञां त्रिलोके तव विस्तराद्यां पूज्यां करोम्यत्र जिनेश्वरस्य ॥३२॥

ॐ ह्रीं अष्टादशकोटि वादित्र प्रातिहार्यसहिताय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

३३

मन्दारसुन्दर-नमेरु-सुपारिजात-सन्तानकादिकुसुमोत्करवृष्टिरुद्धा।
गन्धोदबिन्दुशुभमन्दमरुत्प्रपाता दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा॥

हिन्दी पद्य-

गन्धोद-बिन्दु-युत मारुतकी गिराईं, मन्दारकादि तरुकी कुसुमावली की-
होती मनोरम महा सुरलोक से हैं वर्षा मनो तुव उसे वचनावली है॥३३॥

ऋद्धि-मंत्र-यंत्र और साधना-विधि-

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं।

मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ध्यानसिद्धपरमयोगीश्वराय नमो नमः स्वाहा।

विधि- पवित्र होकर श्वेत वस्त्र धारण कर पूर्वोक्त यंत्र स्थापित कर उसकी पूजन करे। पश्चात् श्वेत आसन पर उत्तर मुख बैठकर श्वेत माला से घृत-मिश्रित गुग्गुलकी धूप खेते हुए १०८ बार ऋद्धि-मंत्रका जापकर उसे सिद्ध करे।

लाभ- कुंआरी कन्या-द्वारा काते हुए कच्चे धागेका गंडा बनाकर और उसे २१ बार ऋद्धि-मंत्रसे मंत्रित कर बांधने से, झाड़ा देने से, और यंत्र पास में रखने से एकान्तर, ताप-ज्वर, तिजारी आदि सर्व प्रकार के ज्वर दूर होते हैं।

यंत्र-

अर्घ्य-

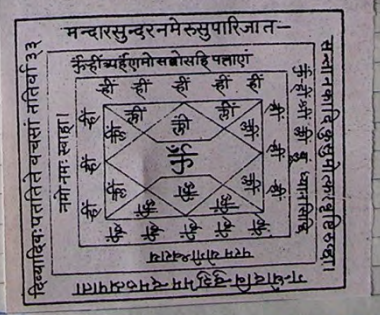

मन्दार-कल्पद्रुम-पारिजात-चम्पाब्ज-सन्तानक-पुष्पवृष्टिः।
मरुत्प्रयाता जलबिन्दु-युक्ता यस्य प्रभावाच्च तमर्चयामि॥३३॥
ॐ ह्रीं समस्त पुष्पजाति वृष्टि प्रातिहार्य सहिताय श्री आदि परमेश्वराय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

शुम्भत्प्रभावलयभूरिविभा विभोस्ते लोकत्रये द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती।
प्रोद्यद्दिवाकर निरन्तरभूरिसङ्ख्या दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोमसौम्याम्॥

हिन्दी पद्य

त्रैलोक्य की सब प्रभामय वस्तु जीती, भामण्डल प्रबल है तुम नाथ ऐसा।
नाना प्रचण्ड रवि-तुल्य सुदीप्ति-धारी, है जीतता शशि सुशोभित रात को भी॥३४॥

ऋद्धि, यंत्र, मंत्र और साधनविधि-

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो खिल्लोसहिपत्ताणं।

मंत्र- ॐ नमो ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ह्रौं ऐं पद्मावतीदेव्यै नमो नमः स्वाहा।

ॐ प च य म हूँ ह्रीं नमः।

विधि- पवित्र होकर श्वेत रेशमी वस्त्र धारण कर, उत्तरमुख मंत्र स्थापित कर उसकी पूजन करे। पीछे श्वेत आसन पर पूर्व मुख पद्मासनसे बैठकर स्फटिक की मालासे १२००० बार ऋद्धि-मंत्र जप २० से सिद्ध करे।

प्रभाव- केशरिया रंगसे रंगे हुए धागेको १०८ बार ऋद्धिमंत्रसे मंत्रितकर, गुग्गुलकी धूनी देकर, गले में या कमरमें बांधनेसे और मंत्र पासमें रखनेसे गर्भका स्तम्भन होता है और असमयमें गर्भका पतन नहीं होता।

अर्घ्य

भामण्डलं सूर्यसहस्रतुल्यं चक्षुर्मनोऽह्लादकरं नराणाम्।
सम्बाधिताज्ञान-तमोवितानं तत्संयुतं देव, सुपूजयामि॥३४॥

ॐ ह्रीं कोटिभास्कर-प्रभामण्डित-भामण्डलप्रातिहार्यसहिताय
श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

स्वर्गापवर्गगममार्गविमार्गणेष्टः सद्धर्मतत्त्वकथनैकपटुस्त्रिलोक्याः।
दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थसर्वभाषास्वभावपरिणामगुणैः प्रयोज्यः॥

हिन्दी पद्य-

है स्वर्ग-मोक्ष-पथ-दर्शन की सुनेता, सद्धर्म के कथन में पटु है जगों के।
दिव्यध्वनि प्रकट अर्थमयी प्रभो, है, तेरी, लहे सकल मानव बोध जिससे॥३५॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन-विधि-

ऋद्धि - ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं।

मंत्र - ॐ नमो जये विजये अपराजिते महालक्ष्मी अमृतवर्षिणि अमृतस्राविणि अमृतं भव भव वषट् सुधायै स्वाहा।

ॐ नमो गजगमने सर्वकल्याणमूर्ते रक्ष रक्ष नमः स्वाहा।

विधि - पवित्र होकर पीले रंग के वस्त्र धारण कर उत्तरमुख यंत्र स्थापित कर उसकी पूजा करे और पीले फूल चढ़ावे। पीछे पीले आसन पर बैठकर पीले रंग की माला से ४००० बार ऋद्धि-मंत्र का जाप कर उसे सिद्ध करे।

लाभ - प्रतिदिन १०८ बार ऋद्धि-मंत्र का जाप करने से रोग, मरी, मृगी, दुर्भिक्ष, राजभय आदि दूर होते हैं, व्यापार में लाभ होता है, राज्य में मान्यता मिलती है और वचन-प्रामाणिकता प्राप्त होती है।

यंत्र

अर्घ्य -

दिव्यध्वनिर्येजिनमात्रशब्दो गम्भीर-मेघोद्भव-गर्जनाकः।
सर्वप्रभाषात्मक-धीर-नादो यः संस्तुतो देव, तवाऽऽस्यभूतः॥३५॥

ॐ ह्रीं जलधर-पटल-गर्जन-रूप सर्वभाषात्मक दिव्यध्वनि सहिताय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

३६

उन्निद्रहेमनवपङ्कजपुञ्जकान्ती पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र धत्तः पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥

हिन्दी पद्य-

फूले हुए कनकके नव पद्मकैसे, शोभायमान नख की किरणप्रभा से ।
तूने जहां पग धरे अपने विभो, हैं, नीचे वहां विबुध पंकज कल्पते हैं ॥३६॥

ऋद्धि, यंत्र, मंत्र और साधन-विधि-

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहि पत्ताणं । -

मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड दण्डस्वामिन्, आगच्छ आगच्छ, आत्ममंत्रान् आकर्षय आकर्षय, आत्ममंत्रान् रक्ष रक्ष, परमंत्रान् छिन्द छिन्द, मम समीहितं कुरु कुरु फट् स्वाहा ।

विधि- पवित्र होकर पीले वस्त्र धारण कर उत्तर मुख यंत्र स्थापित कर पीले फूलोंसे उसकी पूजा करे, पीले पीले आसन पर पद्मासनसे बैठकर पीली माला द्वारा १२००० जपकर मंत्र सिद्ध करे ।

लाभ- यंत्र को पास में रखने और प्रतिदिन १०८ बार ऋद्धि-मंत्र का जाप करने से सुवर्णादि धातुओं के व्यापार में लाभ होता है, राज्य-मान्यता प्राप्त होती है और पंच-पंचायत में बात प्रामाणिक मानी जाती है ।

यंत्र

अर्घ्य-
विहारकाले रचयन्ति देवाः पद्मानि पादं प्रति सप्त सप्त ।
सम्प्राप्य पुण्यं शिव-शं व्रजन्ति तव प्रभावेन करोमि पूजाम् ॥३६॥
ॐ ह्रीं विहारकाले हेमकमलोपरि गमनाय देवकृतातिशयसहिताय
श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि० स्वाहा ।

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा तादृक् कुतो ग्रहगणस्य विकासिनोऽपि॥

हिन्दी पद्य

तेरी विभूति इस भांति विभो हुई जो, सो धर्म के कथन में न हुई किसी की।
होते प्रकाशित, परन्तु तमिस्त्र-हर्ता, होता न तेज रवि-तुल्य कहीं ग्रहों का॥37॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन-विधि

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहि पत्ताणं।

मंत्र- ॐ नमो भगवते अप्रतिचक्रे ऐं क्लीं ब्लूं ॐ ह्रीं मनोवांछित सिद्ध्यै नमो नमः अप्रतिचक्रे ह्रीं ठः ठः स्वाहा।

विधि- शुद्ध होकर श्वेत वस्त्र धारण कर उत्तर मुख हो यंत्र स्थापित कर पूजन करे। पीछे श्वेत आसन पर बैठकर गुग्गुल कपूर केशर, कस्तूरी मिश्रित 108 गोली बनावे और ऋद्धि-मंत्र का जाप करते हुए एक एक गोली अग्नि में छोड़ता जावे। इस प्रकार मंत्र-साधन कर सिद्ध कर लेवे।

लाभ- यंत्र पास में रखने तथा उक्त काव्य और ऋद्धि-मंत्र से 21 बार जल मंत्रित कर मुख पर छिड़कने से दुष्ट पुरुषों के दुर्वचनों का स्तम्भन होता है, दुर्जन वश में होते हैं, तथा कीर्ति और यश की वृद्धि होती है।

यंत्र

अर्घ्य-

लक्ष्मीर्विभो देव, यथा तवाऽस्ति, तथा न हर्यादिषु नायकेषु।
तेजो यथा सूर्य-विमानकस्य, तारागणस्य प्रभवतीह नो वा॥37॥

ॐ ह्रीं धर्मोपदेशसमये समवशरण-विभूतिमण्डिताय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि०।

३८

श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥

हिन्दी पद्य-

दोनों कपोल झरते मदसे सने हैं, गुंजार खूब करती मधुपावली है ।
ऐसा प्रमत्त गज होकर क्रुद्ध आवे, पावें न किन्तु भय आश्रित लोक तेरे ॥३८॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन-विधि

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं ।

मंत्र- ॐ नमो भगवते अष्ट महानागकुलोच्चाटिनी कालदंष्ट्र मृतकोत्थापिनी परमंत्र प्रणाशिनी देवि शासनदेवते ह्रीं नमो नमः स्वाहा ।

ॐ ह्रीं शत्रुविजय रणरणाग्रे ग्रां ग्रीं ग्रूं ग्रः नमो नमः स्वाहा ।

विधि- पवित्र होकर पीले वस्त्र धारण करके उत्तर मुख यंत्र स्थापित कर उसका पूजन करे । पुनः पीले आसन पर बैठकर पीली माला-द्वारा १०८ बार ऋद्धि-मंत्र का जाप करते हुए मंत्र सिद्ध करे ।

लाभ- यंत्रको पासमें रखनेसे तथा मंत्रका स्मरण करनेसे मदोन्मत्त हाथी वशमें होता है और सम्पत्तिका लाभ होता है ।

यंत्र

अर्घ्य-

मत्तोऽपि हस्ती मदलीलया च, नायाति नाम्ना निवसन्मुखे हि ।
संसार-पाथोनिधि-तारकस्य, देवाधिदेवस्य जिनस्य भर्तुः ॥३८॥

ॐ ह्रीं मस्तक गलित मदोद्धुत गजेन्द्र-भय विनाशकाय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि०।

३९

भिन्नेभकुम्भगलदुज्ज्वलशोणिताक्त मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः।
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते॥

हिन्दी पद्य

नाना-करीन्द्र-दल-कुम्भ विदारन्दे, की पृथ्वी सुरम्य जिसने जग मोतियों से।
ऐसा मृगेन्द्र तक चोट करै न उसपै, तेरे पदाद्रि जिसका शुभ आसरा है॥३९॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन-विधि

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं।

मंत्र- ॐ नमो एषु वनेषु घोरेषु बध्यमान तत्र भयहर वृत्तिवर्णा येषु मंत्राः पुनः स्मर्तव्याः; अतो नापर मंत्रनिवेदनाय नमः स्वाहा।

विधि- पवित्र होकर पीले वस्त्र धारण करके पूजित यंत्र स्थापित कर उसका पूजन करे पुनः पीले आसन पर बैठकर उत्तर मुख हो पीली माला द्वारा १००८ बार ऋद्धि-मंत्रका जाप करते हुए प्रत्येक मंत्रके बाद गुग्गुल, केशर, कपूर, कस्तूरी, घृत-मिश्रित धूपको खेते रहना चाहिए।

लाभ- यंत्रको पासमें रखने से तथा मंत्रका स्मरण करनेसे मार्गमें सिंह, व्याघ्र, सर्प आदि हिंसक क्रूर प्राणियोंका भय नहीं रहता, विस्मृत मार्ग मिल जाता है और यात्री अभीष्ट मार्गको बिना किसी कष्टके प्राप्त कर लेता है।

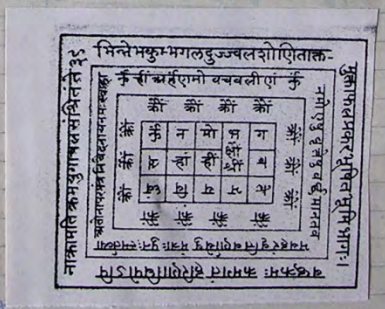

अर्घ्य

उत्तुङ्गपुच्छेन विराजमानः, आरक्तनेत्रैः रदनैर्विशिष्टः।
यो केसरी देव, सुनाममात्रात्, करोति क्रीडां तु बिडालवत्सः॥३९॥

ॐ ह्रीं महासिंहभयविनाशकाय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

४०

कल्पान्तकालपवनोद्धतवह्निकल्पं दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम्
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥

हिन्दी पद्य

झालें उठें, चहुं उड़ें जलते अंगारे, दावाग्नि जो प्रलय-वह्नि-समान भासे।
संसार-भस्म करने हित पास आवे, त्वत्कीर्ति-गान शुभ वारि उसे शमावे ॥४०॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधनविधि-

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं।

मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रां ह्रीं अग्नि मुपशमनं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

? ॐ सौं ह्रीं क्रौं ग्लौं ब्लौं सुन्दरपाद नमः।

विधि- पवित्र होकर लाल वस्त्र धारण कर पूर्वमुख यंत्र स्थापित करि उसका पूजन करे। पुन: लाल आसन पर बैठकर पूर्वमुख हो लाल रंग की माला से ऋद्धि-मंत्र का १२००० बार जाप करके मंत्र सिद्ध कर लेना चाहिए।

लाभ- यंत्र को पास में रखने से, तथा ऋद्धि और मंत्र से २१ बार जल मंत्रित कर चारों ओर छिड़कने से अग्नि का भय दूर होता है।

यंत्र-

अर्घ्यम्-

त्वन्नामतोयेन कृता सुधारा, वह्नि-प्रतापं हरति क्षणात् सा।
भवाग्नि-ताप-प्रलयङ्करस्त्व मतस्तवेष्टिं विदधे वरार्घ्यैः॥४०॥

ॐ ह्रीं विश्वभक्षण-समर्थ-महावह्नि-भय विनाशकाय
श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

रक्तेक्षणं समदकोकिलकण्ठनीलं क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम्।
आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशङ्कस्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः॥

हिन्दी पद्य

रक्ताक्ष क्रुद्ध पिक-कण्ठ-समान काला, फुंकार सर्प, फण को कर उच्च धावे।
निःशंक हो नर उसे पग से उलांघे, त्वन्नाम-नागदमनी जिसके हिये हो॥४१॰

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधनविधि

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं।

मंत्र- ॐ नमो श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः जलदेवि कमले पद्म-ह्रदनिवासिनि पद्मोपरि-संस्थिते सिद्धिं देहि, मनोवांछितं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ ह्रीं आदिदेवाय ह्रीं नमः।

पूर्वांश भक्तामर मंत्र ... २६ (margin note)

विधि- पवित्र हो श्वेत वस्त्र धारण कर पूर्वाभिमुख यंत्र स्थापित कर उसका पूजन करे, दीपक जलावे, आरती उतारे। पश्चात् श्वेत आसन पर बैठकर स्फटिक मणि की माला-द्वारा ऋद्धि, मंत्र का १२००० बार जाप करके मंत्र सिद्ध करे।

लाभ- यंत्र को पास में रखने से तथा उक्त काव्य और ऋद्धि-मंत्र का स्मरण करने से राज-सन्मान मिलता है, प्रतिष्ठा बढ़ती है और काव्य, ऋद्धि-मंत्र बोलते हुए सर्प-दष्ट स्थान को २१ बार झाड़ने से विष उतर जाता है। कांस्य-पात्र में जल भरकर १०८ बार मंत्र का मंत्रित जल पिलाने से विष का प्रभाव दूर हो जाता है।

अर्घ्य पद-

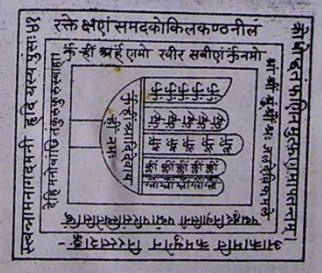

क्रोधेन युक्तः फणिराजसर्पः क्रोधं परित्यज्य प्रलापवान् सः।
करोति दूरं नर-देव-नाम्ना नानाविध-प्राण-निधान दानात्॥४१॥

ॐ ह्रीं भक्तामरपद्म-क्रोधोद्धत-कृष्णसर्पभयविनाशकाय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

४२

वल्गत्तुरङ्ग-गजगर्जितभीमनादमाजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् ।
उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥

हिन्दी पद्य-

घोड़े जहाँ हिन हिनें, गरजे गजाली, ऐसे महाप्रबल सैन्य धराधिपों के ।
जाते सभी बिखर हैं तुव नाम गाये, ज्यों अन्धकार उगते रवि के करों से ॥४२॥

ऋद्धि, यंत्र, मंत्र और साधन विधि-

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं ।

मो. ४१५ सोमवार (margin note)

मंत्र- ॐ नमो नमिऊण विसहर-विस-प्पणासन-रोग-शोक-दोष-ग्रह-कप्प-दुमच्चजायई सुहनाम गहण सकल सुहदे ॐ नमः स्वाहा । हहे ।

विधि- पवित्र होकर धवल वस्त्र पहिन कर रक्तचंदन से लिखे यंत्र को पूर्वाभिमुख स्थापित करे, यंत्र की पूजा करे, दीपक जलावे, आरती उतारे। पश्चात् एक आसन पर उत्तराभिमुख बैठकर लाल रंग की माला द्वारा १२५०० बार ऋद्धि-मंत्र का जाप जपे तथा मंत्र सिद्ध करे ।

लाभ- यंत्र को भुजा में बांधने तथा ऋद्धि मंत्र का स्मरण करते रहने से भयंकर युद्ध में भी भय उत्पन्न नहीं होता। राजा का क्रोध शान्त होता है और वह पीठ दिखाकर भाग जाता है। चंदा की चांदनी सी कीर्ति चारों ओर फैलती है।

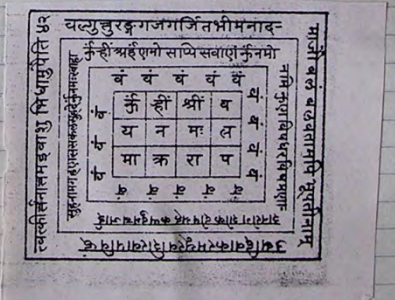

अर्घ्यम्- संग्रामभूमौ मृतभूरिजीवे मातङ्ग-चक्राश्व-पदातिमध्ये ।
युद्धेन चाप्नोति विजित्य शत्रून् सदा मनोऽब्जे मुदितो भजे त्वम् ॥

ॐ ह्रीं महासंग्रामभयविनाशकाय सर्वाङ्गरक्षाकराय श्रीआदिदेवाय अर्घ्यं नि० ।

कुन्ताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाहवेगावतार तरणातुर योधभीमे ।
युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षास्त्वत्पादपङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥

हिन्दी पद्य-

बर्छे लगे, जहँ रहे गज रक्त के हैं- तालाब से, विकल हैं तरणार्थ योद्धा।
जीते न जायें रिपु-संगर-बीच ऐसे तेरे प्रभो चरण-सेवक जीतते हैं ॥४३॥

ऋद्धि मंत्र यंत्र और साधन विधि

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुसंपाणं (सवीणं)।

मंत्र- "ॐ नमो चक्रेश्वरी देवी चक्रधारिणी जिन-शासन-सेवाकारिणी क्षुद्रोपद्रव विनाशिनी धर्मशान्तिकारिणी नमः शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।"

विधि - स्नान करके शुद्ध स्वच्छ सफेद वस्त्र धारण कर पूर्वाभिमुख यंत्र स्थापित कर यंत्र की पूजा करना चाहिये पश्चात् उत्तराभिमुख सफेद आसन पर बैठकर सफेद माला द्वारा १२५०० बार ऋद्धि मंत्र का आराधन कर मंत्र सिद्ध करे।

लाभ - ४३वां काव्य, ऋद्धि तथा मंत्र के स्मरण करने और यंत्र की पूजा करने व उसे पास में रखने से सब प्रकार के भय दूर होते हैं। संग्राम में अस्त्र शस्त्रों की चोटें नहीं लगतीं तथा राजा द्वारा धन लाभ होता है।

यंत्र -

अर्घ्यम् - कुन्ताग्र-भिन्नेषु सुमस्तकेषु परस्परं यत्र गजाश्वयुद्धे।
मनुष्य आयाति सुकौशलेन त्वन्नाम-मंत्र-स्मरणाज्जिनेश ॥४३॥

ॐ ह्रीं महारिपुयुद्धे जय-विजयकराय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

अम्भोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्रपाठीनपीठभयदोल्वणवाडवाग्नौ ।
रङ्गत्तरङ्गशिखरस्थितयानपात्रास्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ॥

हिन्दी पद्य-

हैं काल-नृत्य करते मकरादि जन्तु, त्यों वाडवाग्नि अति भीषण सिन्धु में है।
तूफान में पड़ गये जिनके जहाज, वे भी प्रभो, स्मरण से तुव, पार होते ॥४४॥

ऋद्धि मंत्र, यंत्र और साधन विधि

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमीयसवीणं ।

मंत्र- "ॐ नमो रावणाय, विभीषणाय कुम्भकरणाय लंकाधिपतये महाबल- पराक्रमाय मनश्चिन्तितं कार्यं कुरु कुरु स्वाहा ।"

विधि- स्नानान्तर सफेद स्वच्छ वस्त्र धारण कर उत्तराभिमुख यंत्र स्थापित कर यंत्र की पूजा करे, मंगल कलश रखे, दीपक जलावे, आरती उतारे पश्चात धवलासन पर बैठकर स्फटिकमणि की माला द्वारा १००८ बार ऋद्धि मंत्र का आराधन कर मंत्र सिद्ध करना चाहिये।

लाभ- ४४ वां काव्य, ऋद्धि, मंत्र की आराधना से तथा यंत्र को अपने पास रखने से आपत्तियां दूर होती हैं। समुद्र में तूफान का भय नहीं होता। आसानी से समुद्र पार कर लिया जाता है।

यंत्र -

अर्घ्यम् - कल्पान्त वातेन गतं विकारं सन्चक्रमकादिक-जीवपूर्णम्।
अब्धिं समुत्तीर्य नरो भुजाभ्यां प्रयाति शीघ्रं तव पाद-चित्तः ॥४४॥
ॐ ह्रीं महासमुद्र-चलित- महावात-प्रेरित- पोतस्थ-जीवभय निवारकाय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि० स्वाहा ।

उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्नाः शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः।
त्वत्पादपङ्कजरजोऽमृतदिग्धदेहा मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः॥

हिन्दी पद्य-

अत्यन्त पीड़ित जलोदर-भारसे हैं, है दुर्दशा, तज चुके निज-जीविताशा।
वे भी लगा तुव पदाब्ज-रजः-सुधा को, होते प्रभो, मदन-तुल्य सुरूप देही॥४५॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन विधि

ऋद्धि - "ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण-महाण-साणं"।

मंत्र - "ॐ नमो भगवती क्षुद्रोपद्रव-शान्तिकारिणी रोग कष्ट-ज्वरोपशमनं-शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ ह्रीं भगवते भयभीषणहराय नमः।"

विधि - पवित्र होकर पीले रंग के वस्त्र पहिनकर दक्षिण दिशा की ओर यंत्र स्थापित कर यंत्र की पूजा करें पश्चात् पीले आसन पर बैठकर पीले रंग की माला द्वारा १००८ बार ऋद्धि मंत्र का स्मरण कर मंत्र सिद्ध करना चाहिये।

लाभ - इस ऋद्धि तथा मंत्र जपने और यंत्र को पास में रखने से तथा उसकी त्रिकाल पूजा करने से अनेक प्रकार की व्याधियों की पीड़ा शान्त होती है और महाभयानक मरण-भय-जलोदर, भगन्दर, गलित कोढ़ आदि शान्त होते हैं तथा उपसर्ग दूर होते हैं।

यंत्र -

अर्घ्यम् - जलोदरैः कुष्ट-कुशूल-रोगैः, शिरोव्यथा-व्याधि-बहुप्रकारैः।
सुपीड़ितानां भवति क्षणे हि, विरोगिता त्वत्स्मरणात् प्रभो च॥४५॥

ॐ ह्रीं जलोदर-कुष्ट-सन्निपातादि महारोग-विनाशकाय श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

आपादकण्ठमुरुशृङ्खलवेष्टिताङ्गा गाढं बृहन्निगडकोटि निघृष्टजङ्घा।
त्वन्नाम मन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः सद्यः स्वयं विगतबन्धभया भवन्ति॥

हिन्दी पद्य -

सारा शरीर जकड़ा दृढ़ सांकलोंसे, बेड़ी पड़े छिल गईं जिनकी भुजायें।
त्वन्नाम-मंत्र जपते जपते उन्हींके, जल्दी स्वयं झर पड़ें सब बन्ध बेड़ी॥४६॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन विधि

ऋद्धि - "ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं।"

मंत्र - "ॐ नमो ह्रां ह्रीं श्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ठः ठः जः जः क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्षयः स्वाहा।"

विधि - स्नानान्तर पीले रंग के वस्त्र पहिनकर पूर्वाभिमुख यंत्र स्थापित कर पीले फूलों से यंत्र की पूजा करना चाहिये। मंगल-कलश की स्थापना भी करे, दीपक जलाकर आरती उतारे पश्चात् पीले आसन पर उत्तराभिमुख बैठकर पीली माला द्वारा ऋद्धि मंत्र का १२००० बार जप पूरा करे तो मंत्र सिद्ध होवे।

लाभ - संकट आने पर सतत इस ऋद्धि तथा मंत्र को जपने और यंत्र को पास में रखने से तथा उसकी त्रिकाल पूजा करने से कारागार में लौह श्रंखलाओं से बंधा हुआ शरीर बन्धन मुक्त हो जाता है और कैद से छुटकारा होता है। राजा आदि का भय नहीं रहता।

यंत्र -

अर्घ्यम् - केनापि दुष्टेन नृपेण धर्मी, सम्बन्धितः शृङ्खलया नरश्च।
स त्वां जपं मुञ्चति बन्धतोऽपि, संसार-पाश-प्रलयं नमामि॥४६॥

ॐ ह्रीं शृङ्खलादि बन्धन बद्धकारागार-निबद्ध-मुक्तिकराय
श्री आदि परमेश्वराय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

मत्तद्विपेन्द्र-मृगराज-दवानलाहि-संग्राम-वारिधि-महोदर-बन्धनोत्थम्।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते॥

हिन्दी पद्य

जो बुद्धिमान इस सुस्तवन को पढ़ें हैं, होके भीत उनसे भय भाग जाता।
दावाग्नि-सिन्धु-अहि का, रण-रोग का त्यों, पञ्चास्य-मत्तगज का, सब बन्धनों का॥४७॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन विधि

ऋद्धि – "ॐ ह्रीं अर्हं णमो लोए सव्व सिद्धायदणाणं वड्ढमाणाणं।"

मंत्र – "ॐ नमो ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः य क्षः श्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।"

ॐ नमो भगवते उन्मत्त भय हराय नमः।

विधि – स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहिनकर उत्तर दिशाभिमुख यंत्र स्थापित कर उसकी पूजा-अर्चा करना चाहिए। पश्चात धवल आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर सफेद माला द्वारा ६००० बार ऋद्धि मंत्र का आराधन कर मंत्र सिद्ध करना चाहिये।

लाभ – यंत्र को पास में रखने, यंत्र का अभिषेक कर उसकी पूजा-अर्चा करके इस ऋद्धि तथा मंत्र का १०८ बार पवित्र भावों के साथ स्मरण करने से विपक्षी शत्रु पर चढ़ाई करने वाले को विजय लक्ष्मी प्राप्त होती है, शत्रु का नाश स और उसके सभी हथियार भोथरे हो जाते हैं, बन्दूक की गोली, बरछी आदि के घाव नहीं होते। इसके अतिरिक्त मदोन्मत्त हस्ती, सिंह, दावानल, भयंकर सर्प, समुद्र, महान रोग तथा अनेक प्रकार के बन्धनों से छुटकारा हो जाता है।

यंत्र –

अर्घ्य – रोग-... विघ्ना:।
शीघ्रं ... ॥४७॥

ॐ ह्रीं गजेन्द्र-सिंहाग्नि-सर्प-युद्ध-समुद्र-रोग-बन्धन-छेदकाय
श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धां भक्त्या मया रुचिर वर्णविचित्रपुष्पाम्
धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः॥४८॥

हिन्दी पद्य -

तेरे मनोज्ञ गुणसे स्तव-मालिका ये, गूंथी प्रभो, विविध-वर्ण-सुपुष्पवाली ।
मैंने सभक्ति, जन कण्ठ धरे इसे जो, सो मानतुंग-सम प्राप्त करे सुलक्ष्मी ॥४८॥

ऋद्धि, मंत्र, यंत्र और साधन विधि -

ऋद्धि - " ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्व साहूणं ॐ णमो भयवदो महदि महावीर वड्ढमाणं बुद्धिरिसीणं ।"

मंत्र - ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा क्ष्रौं क्ष्रौं स्वाहा ।

चेरधारिणस्स ॐ नमो बंभ चारिणे अट्ठारह सहस्स सीलांग रथ धारिणे नमः स्वाहा ।

विधि - स्नान करके पीले रंग के वस्त्र धारण कर उत्तराभिमुख यंत्र स्थापित कर पीले पुष्पों से यंत्र की पूजा करके पीले आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर पीले रंग की माला द्वारा १२५०० बार अथवा १००००० बार ऋद्धि मंत्र का आराधन ७ महिने में पूर्ण कर मंत्र सिद्ध करना चाहिये ।

लाभ - प्रति दिन १०८ बार २१ दिन तक अथवा ४६ दिन तक ऋद्धि मंत्र

तथा ४८वां काव्य का स्मरण करने और यंत्र को पास में रखने से मनोवांछित कार्य की सिद्धि होती है । जिसको अपने आधीन करना हो उस व्यक्ति का नाम चिन्तन करने से वह व्यक्ति अपने वश में हो जाता है ।

यंत्र -

अर्घ्यम् - भक्तामराख्यं स्तवनं यजामि, श्रीमानतुङ्गेन कृतं विचित्रम् ।
कवित्वहीनो मति-शास्त्रहीनो भक्त्यैकया प्रेरित-सोमसेनः॥

ॐ ह्रीं स्तोत्र-पठन-पाठन-संश्रवणकारक समस्तजीवकल्याणदाय श्री आदि परमेश्वराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

— ० —

नाना विघ्नहरं प्रताप-जनकं संसार-पार-प्रदम्,
संस्तुत्यं श्रीदं करोमि सततं श्री सोमसेनोऽप्यहम् ।
पूर्णार्घ्येन सुभव्य-सुलब्धं मादीश्वरारव्यापरं,
हीरापण्डितसूपरोधवशतः स्तोत्रस्य पूजाविधिम् ॥४९॥

ॐ ह्रीं मन्त्र-यन्त्र-समन्वित श्री ऋषभदेव-स्तवन-नामधेय-भक्तामर-
काव्याय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वर सुगन्ध-सुतन्दुल-पुष्पक-प्रवर-मोदक-दीपक-धूपकैः,
फलभरैः परमात्मपद-प्रदं प्रवियजे जयदं वृषभं जिनम् ॥५०॥

ॐ ह्रीं क्लीं बीजाक्षर-सहिताय श्री वृषभ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

जल-गन्धाद्यष्टभिर्द्रव्यैर्युगादिपुरुषं यजेत्,
सोमसेनेन संसेव्यं तीर्थेशनार-चर्चितम् ॥५१॥

—०—

श्री शुभचन्द्राचार्य-विरचित
गणधर-वलय-पूजाविधान

यन्त्रोद्धार :

षट्कोणचक्रमध्ये तु क्ष्मामधः श्रीं च मस्तके ।
अर्हं भवीं ह्रीं लिखेत् पार्श्वे दक्षिणे वामतः क्रमात् ॥१॥
श्री दक्षिण सप्रणवाऽसि आ उ सा सहोमकम् ।
कोणेष्वप्रतिचक्रे फट् सव्येन स्थापयेत् क्रमात् ॥२॥
कोणान्तरे विचक्राय स्वाहा षड् बीजमालिखेत् ।
कोणाग्रेषु लिखेत् श्री ह्री धृति कीर्तिमतीन्दिराः ॥३॥
वसु द्व्यष्ट त्रिरष्टेषु पत्रेषु ऋद्धिमन्त्रकान् ।
लिखित्वा मायया वेष्ट्य क्रों रुद्धं गणधारकम् ॥४॥
यन्त्रं भूमण्डलोपेतं लिखित्वा स्थापयेत्सुधीः ।
स्वर्णे रूप्येऽथवा ताम्रे भूर्जे संसिद्धिकारकम् ॥५॥

(गणधर-वलय-यन्त्र पृथक् दिया गया है । तदनुसार ताम्र पत्र पर उत्कीर्ण करके निम्न प्रकार से उसका अभिषेक करें ।)

अथ गणधर-वलय-यन्त्र-स्थापनम् –

नत्वा सिद्धं विशुद्धेद्धं चिन्मात्रं लोकमूर्ध्वगम् ।
तदग्रे स्थापये कुम्भं वारिपूरं हिरण्यजम् ॥१॥

(इति कलश स्थापनम्)

गङ्गादि वर पानीयैर्हिमचन्दन शीतलैः ।
शुद्धात्मपदमारूढं स्नपयामि गणेशिनम् ॥२॥

ॐ ह्रीं नमो भगवते गणधर-वलयाय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः, गङ्गादितीर्थपवित्रतरजलेन स्नपयामि स्वाहा ।

(इति तीर्थजलाभिषेकः)

जलगन्धाक्षतपुष्पैर्नैवेद्यैर्दीपधूपफलनिचयैः ।
चार्चे गणधर-वलयं कर्माष्टकभावनिर्मुक्त्यै ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री गणधर-वलयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पुण्ड्रेक्षुनालिकेरादिरसै रम्यैः शुभावहैः ।
शुद्धात्मपदमारूढं स्नपयामि गणेशिनम् ॥४॥

ॐ ह्रीं नमो भगवते गणधर-वलयाय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः, पवित्रतरेक्ष्वादि रसेन स्नपयामि स्वाहा ।

(इति इक्ष्वादिरसाभिषेकः)

जलगन्धाक्षतपुष्पैर्नैवेद्यैर्दीपधूपफलनिचयैः।
चार्चये गणधरवलयं कर्माष्टकभावनिर्मुक्त्यै॥
ॐ ह्रीं श्रीगणधरवलयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सर्वाङ्गपुष्टिदै रम्यै राज्यै घ्राणादितृप्तिदैः।
शुद्धात्मपदमारूढं स्नपयामि गणेशिनम्॥५॥
ॐ ह्रीं नमो भगवते गणधरवलयाय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय क्रौं क्रौं नमः, पवित्रतरघृतेन स्नपयामि स्वाहा।
जलगन्धाक्षतपुष्पैर्नैवेद्यैर्दीपधूपफलनिचयैः।
चार्चये गणधरवलयं कर्माष्टकभावनिर्मुक्त्यै॥६॥
ॐ ह्रीं श्रीगणधरवलयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शुभ्रैः स्निग्धैर्वरक्षीरैः शुक्लध्यानोज्ज्वलैः परैः।
शुद्धात्मपदमारूढं स्नपयामि गणेशिनम्॥७॥
ॐ ह्रीं नमो भगवते गणधरवलयाय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय क्रौं क्रौं नमः, पवित्रतरदुग्धेन स्नपयामि स्वाहा।
जलगन्धाक्षतपुष्पैर्नैवेद्यैर्दीपधूपफलनिचयैः।
चार्चये गणधरवलयं कर्माष्टकभावनिर्मुक्त्यै॥८॥
ॐ ह्रीं श्रीगणधरवलयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पुण्यपिण्डैरिवाखण्डैः स्थिरैर्दधिभिरुत्तमैः।
शुद्धात्मपदमारूढं स्नपयामि गणेशिनम्॥९॥
ॐ ह्रीं नमो भगवते गणधरवलयाय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय क्रौं क्रौं नमः, पवित्रतरदध्ना स्नपयामि स्वाहा।
जलगन्धाक्षतपुष्पैर्नैवेद्यैर्दीपधूपफलनिचयैः।
चार्चये गणधरवलयं कर्माष्टकभावनिर्मुक्त्यै॥१०॥
ॐ ह्रीं श्रीगणधरवलयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
लवङ्गैलागुरुकर्पूरचूर्णैः पूर्णैः सुगन्धिभिः।
उद्वर्तयामि सद्भक्त्या गणेशं कर्महानये॥११॥
ॐ ह्रीं नमो भगवते गणधरवलयाय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय क्रौं क्रौं नमः, पवित्रतरसर्वौषधिभिः स्नपयामि स्वाहा।
जलगन्धाक्षतपुष्पैर्नैवेद्यैर्दीपधूपफलनिचयैः।
चार्चये गणधरवलयं कर्माष्टकभावनिर्मुक्त्यै॥१२॥
ॐ ह्रीं श्रीगणधरवलयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्भिर्गैरिवोद्भूतैश्चतुष्क कलशाम्बुभिः।
शुद्धात्मपदमारूढं स्नपयामि गणेशिनम् ॥२३॥

ॐ ह्रीं नमो भगवते गणधरवलयाय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः पवित्रतर चतुःकलशैः स्नपयामि स्वाहा।

जलगन्धाक्षतपुष्पैर्नैवेद्यैर्दीपधूपफलनिचयैः।
चाये गणधरवलयं कर्माष्टकभावनिर्मुक्त्यै ॥२४॥

ॐ ह्रीं श्री गणधरवलयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूरचन्दनद्रव्यव्यक्तैर्गन्धोदकैः शुभैः।
शुद्धात्मपदमारूढं स्नपयामि गणेशिनम् ॥२५॥

ॐ ह्रीं नमो भगवते गणधरवलयाय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः पवित्रतर गन्धोदकेन स्नपयामि स्वाहा।

जलगन्धाक्षतपुष्पैर्नैवेद्यैर्दीपधूपफलनिचयैः।
चाये गणधरवलयं कर्माष्टकभावनिर्मुक्त्यै ॥२६॥

ॐ ह्रीं श्रीगणधरवलयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यदङ्गसङ्गितो येन याति पापं नृणां क्षणात्।
तदर्प्ये निजे मूर्ध्नि चं तिष्ठति कथं मम ॥२७॥

(इति गन्धोदकवन्दनम्)

स्नपयित्वेति ये भक्त्या चायन्ते गणनायकम्।
भुक्त्वा स्वर्भूपदं मुक्तौ सुखायन्ते सुखैषिणः ॥२८॥

(इति पुष्पाञ्जलिक्षेपणम्)

अथ गणधर-वलय-स्तवनम् (वसन्ततिलका)

बुद्ध्यौषधीरससुविक्रियदेशवीर्य-व्योमक्रियर्द्धितपसा सहितान् मुनीशान्।
सत्केवलावधिमनःपरिगान् सुबीजसत्कोष्ठबुद्धिपदसारितया प्रसिद्धान् ॥१॥
श्रोत्तॄन् सुभिन्नगवां लघुदूरलोक-स्पर्शश्रवोरसनिकावरनासिकानाम्।
वेत्तॄन् सुगोन्धरगणान् दशसर्वपूर्व-वेत्तॄन् निमित्तकुशलान् स्तुमहे महर्षीन् ॥२॥
प्रत्येकबुद्धवरवादिगणान् प्रधीकान् बुद्धयर्धियुक्तिकलितान् द्वि-नव स्तवीमि।
विट्खिल्लजल्लपरमामसु सर्वतश्च रोगापहान् वसुविधान् वरदृष्टिचक्रैः ॥३॥

(शार्दूलविक्रीडितम्)

कुर्वीते लघु वाग्दृशो सुभविनां मृत्युं विषेण क्रुधा,
यत्पाणावपि दुग्धमध्वमृतसात्-प्राज्यप्रभं जायते।
दुर्भोज्यं गदितायकैः सुपतितं गृह्णन्ति वाचो नरां-
स्तद्वस्तान् मुखदृग्विषामृतघृताद्यास्राविणो नौम्यहम् ॥४॥

(आर्या)

लघिमा-गरिमा-महिमा-प्राकाम्यैश्वर्य-कामरूपित्वैः।
अप्रतिहति-वश्य-घातैः स्तौमि मुनीन् विक्रियर्द्धिगतान् ॥५॥

(शार्दूलविक्रीडितम्)

भुक्तं यत्र दिने गृहे यतिजनैर्न क्षीयते तद्दिने,
तच्छेषं च सुभोजितेऽखिलनरे यत्र स्थितं तत्र ये।
सर्वे नाकि-नरादयः सुखतया तिष्ठन्ति तुच्छावनौ,
तेऽक्षीणादिमहानसालयगुणा भान्तूभये सर्वतः ॥६॥

(उपजातिः)

अन्तर्मुहूर्तेन श्रुतं समस्तं ध्यायन्ति ये कष्टविचारमुक्ताः।
पठन्ति लोकं न्यसितुं क्षमांश्चां गुत्वा त्रिधा ते बलिनो भवन्तु ॥७॥

(आर्या)

दिवि जल-फल-दल-कुसुम-बीजाग्निशिखासु जन्तुपङ्क्तिगताः।
चारणनाम्न इमे विक्रियर्द्धियुक्तान् नमामि च वैतान् ॥८॥

(उपजातिः)

उग्रं तपो दीप्ततपस्तपन्तु तप्तं तपो घोरतपो महच्च।
ये सप्तधा घोरपराक्रमाश्च ब्रह्मापि ते सन्तु विदे त्रिगुप्ताः ॥९॥

(वसन्ततिलका)

नानातपोऽतिशयलब्धमहर्धिमुख्याः,
सूर्यादयो मुनिवरा जगतां प्रशान्ताः।
कुर्वन्तु ऋद्धिनिचयं शुभचन्द्रकस्य,
सङ्घस्य दुष्टदुरितानि हरन्तु सन्तः ॥१०॥

इति गणधरवलय स्तवनं समाप्तम्।

अथ समुच्चयपूजा

(उपजातिः)

वसुप्रभद्-ऋद्धि-समृद्धिसिद्धं यन्त्रं स्फुरन्मन्त्रसुतन्त्रमेव।
संस्थापये श्रीगणधारचक्रं ज्वरातिसारादिरुजापहारम् ॥

ॐ ह्रीं गणधरसमूह! अत्र एहि एहि संवौषट् (आह्वाननम्)
ॐ ह्रीं गणधरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनम्)
ॐ ह्रीं गणधरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधापनम्)

(द्रुतविलम्बितम्)

विमलशीतलसज्जलधारया सविधुबन्धुरकेशरसारया।
गणधरान् गुणधारणभूषणान् यज इमान् बहुभेदसुऋद्धिगान् ॥१॥

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः, जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मसृण कुङ्कुम चन्दन सुद्रवैः सुरभितागुरु मृगमद सद्-द्रवैः।
गणधरान् गुणधारणभूषणान् यज इमान् वसुभेद सुकष्टद्विगान् ॥२॥
ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः, गन्धं निर्वपामीति स्वाहा।

विपुलनिर्मलितन्दुलसञ्चयैः कृत सुमौक्तिक कल्पतरूच्चयैः।
गणधरान् गुणधारणभूषणान् यज इमान् वसुभेद सुकष्टद्विगान् ॥३॥
ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः, अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कुसुमचम्पकपङ्कज कुन्दकैः सह सुजात सुगन्ध विमोहकैः।
गणधरान् गुणधारणभूषणान् यज इमान् वसुभेद सुकष्टद्विगान् ॥४॥
ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः, पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल लोक विमोदनकारकैश्चरुवरैः सुसुधाकृति धारकैः।
गणधरान् गुणधारणभूषणान् यज इमान् वसुभेद सुकष्टद्विगान् ॥५॥
ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः, नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तरलतार सुकान्ति सुमण्डनैः सदनरत्नमयैरघखण्डनैः।
गणधरान् गुणधारणभूषणान् यज इमान् वसुभेद सुकष्टद्विगान् ॥६॥
ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः, दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगुरुधूपगणेन सुगन्धिना भ्रमरकोटि समिन्द्रिय बन्धिना।
गणधरान् गुणधारणभूषणान् यज इमान् वसुभेद सुकष्टद्विगान् ॥७॥
ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः, धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरसपक्व सुशोभन सत्फलैः क्रमुक निम्बुक मोच सुलाङ्गलैः।
गणधरान् गुणधारणभूषणान् यज इमान् वसुभेद सुकष्टद्विगान् ॥८॥
ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः, फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवरागमसद्गुरुमुख्यकान् प्रविभजे गुरुसद्गुणमुख्यकान्।
शुभचन्द्रतरान् कुसुमोत्करैः संभयसारपरान् सुखसागरैः ॥९॥
ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रथमवलयपूजा

(अनुष्टुप्-)

रसाद्यष्टसुकष्ठ्वीशं भावव्यक्तिकरं परम्।
आह्वाननादिसिद्ध्यर्थं क्षिपामि कुसुमाक्षतान्॥

ॐ ह्रीं अर्हं नमः अष्टचत्वारिंशत्कोष्ठसुकल्पवल्लीपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

(उपजातिः-)

विसूचिकादोषविनाशदक्षा विपक्षकर्मान्तकराः समृद्धाः।
सद्देश-साकल्यविदश्च ये तान् भजामि भूमीश्वरसेव्यपादान्॥१॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(द्रुतविलम्बित-)

अवधिबोधवरान् जिननायकान् ज्वरगदादिकशान्तिकरान् मुनीन्।
जलज-चन्दनदीपसुधूपकै रहमिह प्रयजामि जगद्-गुरून्॥२॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चतुष्पदिका-)

परमावधिनिधिसद्-गुणयुक्तान् जनताऽभयकरशीर्षविरोगान्।
भयनाशनचरणान् जलगन्धैर्भजतां जिनपतिसन्मतिसाधून्॥३॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहिजिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मालिनी-)

श्रुतिगदमदतापयत्प्राणिमुख्यप्रपातृन्,
प्रणतनिखिलदेवानन्तबोधावधीद्धान्।
करणकलिकुठारान् पूजिताप्तान् मुनीन्द्रान्,
प्रयज इह सुखाढ्यान् दुष्टकर्मारिहन्तृन्॥५॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहिजिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(उपजातिः-)

यन्नाममन्त्राच्चानता भवन्ति कुशूल-गुल्मोदर-रोगमुक्ताः।
तान् कोष्ठबुद्धीन् जिनपान् जलाद्यैर्महामि नानार्थविदः समर्थान्॥६॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षिरोगरिपुतापविभेत्तॄन् लोकमध्यगतमूर्तसुद्रव्य-
वेदकान् प्रयियजे खलु सर्वावधीन् जिनवरान् जितपापान्॥४॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहिजिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मन्दाक्रान्ता-)

हिक्का-श्वास-ग्रहणिगदजिद् भावरूपा यतीन्द्राः,
सद्-बीजं ये प्रमदभदहाः प्राप्य शास्त्रस्य नूनम्।
जानन्तीह त्रिजगति गतं सर्वलोकार्थसार्थं
शास्त्रं भक्त्या यतिवरतरान् बीजबुद्धीन् यजामि॥७॥

ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(उपजातिः-)

पदं समाश्रित्य विदन्ति शास्त्रं विनाशयन्तश्च परस्परोत्थम्।
वैरं यजे तान् प्रयजे यतीशान् सद्-द्वादशाङ्गीयपदानुसारीन्॥८॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पादाणुसारीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अनुष्टुप्-)

इति पूर्णार्घ्यसम्पन्ना जिनावधिमुखा जिनाः।
पदानुसारिपर्यन्ता भवन्तु भवशान्तये॥९॥
ॐ ह्रीं णमो जिणाणं प्रभृति पादानुसारिपर्यन्तर्धिप्राप्तेभ्यो गणधरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ द्वितीयवलयपूजा

(उपजातिः-)

संभिन्नशब्दश्रुतिपेशला ये गजाश्व-मनुष्य-महर्द्धिशब्दम्।
पृथग् विदन्तो नरकास-हन्तॄन् यायजम्यहं तान् जलचन्दनाद्यैः॥१॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्णसोदाराणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कथित्न-वादित्वविधायिनो ये तत्सेवकानां निरपेक्षबुद्ध्या।
गुरोर्गिरि प्राप्तमहानुभावा यायजम्यहं तान् जलचन्दनाद्यैः॥२॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संवीक्ष्य चोल्काभ्रगणप्रयातं बुद्धाः प्रशस्ताः सुखकारिणश्च।
प्रवादिविद्यामदभेदिनो ये यायजम्यहं तान् जलचन्दनाद्यैः॥३॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हितादिभाजाकुशलेरुपायैर्ये ज्ञाततत्त्वा बुधबोध्यमानाः।
चौरादिभीतिपरिपन्थिनश्च यायजम्यहं तान् जलचन्दनाद्यैः॥४॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमर्त्यलोकस्थितभाववेत्तॄन् ऋजुप्रचेतःस्थितभावबुद्ध्या।
शान्तिं जनानां विधिवद् विधातॄन् यायजम्यहं तान् जलचन्दनाद्यैः॥५॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कौटिल्यचेतोगतभाववेत्तॄन् मनुष्यलोके बहुशास्त्रदातॄन्।
चतुर्थबोधान् बहुभाक्तिकानां यायजम्यहं तान् जलचन्दनाद्यैः॥६॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समस्तशास्त्रार्थविदो मनुष्या येषां प्रभावाद् दशपूर्ववेत्तॄन्।
भवाङ्गभोगेषु विरक्तचित्तान् यायजम्यहं तान् जलचन्दनाद्यैः॥७॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

येषां प्रभावात् स्व-परार्थशास्त्रवेत्ता भवेन्ना सकलार्थवेदी।
चतुर्दशापूर्वसुपूर्वविज्ञान् यायजम्यहं तान् जलचन्दनाद्यैः॥८॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
विदन्ति भूव्योमनिमित्तलक्ष्म स्वरव्यञ्जनच्छिन्नशरीररूपम्।
ये कुर्वते जीवित-मृत्युवित्त्वं यायजम्यहं तान् जलचन्दनाद्यैः॥९॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंग महा णिमित्तकुसलाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
विक्रियर्द्धि लघिमा-गरिमादिं प्राप्ताः सुकामाप्तिकरा नराणाम्।
मुनीश्वरान् साधविधौ समर्थान् यायजम्यहं तान् जलचन्दनाद्यैः॥१०॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वणइड्ढिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कुलागतश्रीगुरुदत्तविद्याः पाठेन सिद्धाश्च तपःप्रसिद्धाः।
येषां नभोगत्वकृता नराणां यायजम्यहं तान् जलचन्दनाद्यैः॥११॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
यत्पादभक्तो नर एव वस्तु सुमुष्टिगं चित्तगतं च वेत्ति।
तच्चारणान् निर्गतभूमिचर्यान् यायजम्यहं तान् जलचन्दनाद्यैः॥१२॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ये साङ्गपूर्वश्रुतसारबुद्धाः समायुतोऽनादिविदा नरेण।
सेव्याः समस्तार्थविदः समिद्धाः यायजम्यहं तान् जलचन्दनाद्यैः॥१३॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्हसमणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सन्तो व्रजन्त्यम्बरदेश एव कुयोजनं यन्मुनिपादसङ्गात्।
हिता नभश्चारिण एव मुख्यान् यायजम्यहं तान् जलचन्दनाद्यैः॥१४॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दंष्ट्रादिपीडां कथमप्यपास्तद्वेषा विदध्युर्म्रियतां स्वयं ये।
विद्वेषणं वारयतो रिपूणां यायजम्यहं तान् जलचन्दनाद्यैः॥१५॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
यद्दृष्टिमात्रेण नरा म्रियन्ते ये घ्नन्ति हालाहलकं च नृणाम्।
उच्छेदयन्तो भुवि शोकमेकं यायजम्यहं तान् जलचन्दनाद्यैः॥१६॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
(आर्या-)
दृष्टिविषान्ता मुनयः संभिन्नश्रोतृतः समारभ्य।
पूर्णार्घैः परिचरिताः संघस्य श्रेयसे सन्तु॥१७॥
ॐ ह्रीं अर्हं संभिन्नश्रोतृप्रभृतिदृष्टिविषान्तर्द्धिप्राप्तेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ ऋद्धिमण्डलपूजा

(आर्या-)

विदधाति वार्ता स्तम्भं कुधियां संसारभावनिर्विण्णाः।
नानोग्रतपस्तप्तास्तेषामिह पूजनं विदधे ॥१॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मालिनी-)

विदधाति किरणा हि ध्वान्तनाशं परं वै,
विविधमिह यतीनां सत्तपःप्राप्तभानाम्।
विदधाति खलु नृणां स्तम्भनं सद्बलस्य
शुचिरुचिजलमुख्यैः पूजये तान् मुनीन्द्रान् ॥२॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वसन्ततिलका-)

सन्तप्तलोहगतवारिवदत्र देहे,
भुक्तान्नमेव विलयं सहसा प्रयाति।
शान्त्यग्निदीप्तिकरवारणमेव नृणां,
चार्चे मुनीन् सुखदतप्ततपःप्रभावान् ॥३॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(इन्द्रवज्रा-)

षष्ठाष्टपक्षादितपःप्रभावा ये क्षीणदेहा बहुभिस्तपोभिः।
स्तम्भन्ति पाथोवरमन्त्रपुम्सां तान् संभजे सच्चरितान् मुनीशान् ॥४॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वसन्ततिलका-)

क्रोधोद्धतैर्हरिगणै र्न हि विक्रियन्ते,
ये योगिनो मतियुताः सुविशुद्धिभाजः।
क्ष्वेडाऽऽस्यरोगफणिबन्धनशान्तिहेतून्,
भेजे यतीन् परमघोरतपोऽभियुक्तान् ॥५॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोधक-)

ये यतयो जठरात्तिविरागैर्नो विरताः स्वगुणैः शमयन्ति।
काच सुकोमलचित्तकलूता योगिवरान् भज घोरगुणांश्च ॥६॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(उपजातिः-)

येषां पराक्रान्तिरिह प्रसिद्धा विभेदने कर्मरिपोः स्वस्य।
पञ्चास्यभीतिप्रतिभेदिनस्तान् स्तैर्यजे घोरपराक्रमांश्च ॥७॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणपरक्कमाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ तृतीयवलयपूजा

(आर्या-)

विदधति वार्ता स्तम्भं क्षुधियां संसारभावनिर्विण्णाः।
नानोग्रतपस्तप्तास्तेषामिह पूजनं विदधे ॥१॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मालिनी-)

विदधति किरणा हि ध्वान्तनाशं परं वै,
विविधमिह यतीनां सत्तपःप्राप्तभानाम्।
विदधति खलु नृणां स्तम्भनं सद्बलस्य
शुचिरुचिजलमुख्यैः पूजये तान् मुनीन्द्रान् ॥२॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वसन्ततिलका-)

सन्तप्तलोहगतवारिवदत्र देहे,
भुक्तान्नमेव विलयं सहसा प्रयाति।
शान्त्यग्निदीप्तिकरवारणमेव नृणां,
चार्चे मुनीन् सुखदतप्ततपःप्रभावान् ॥३॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(इन्द्रवज्रा-)

षष्ठाष्टपक्षादितपःप्रभावा ये क्षीणदेहा बहुभिस्तपोभिः।
स्तम्भन्ति पाथोवरमन्त्रपुम्सां तान् संभजे सच्चरितान् मुनीशान् ॥४॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वसन्ततिलका-)

क्रोधोद्धतैर्हरिगणैर्न हि विक्रियन्ते,
ये योगिनो मतियुताः सुविशुद्धिभाजः।
क्ष्वेडाऽऽस्यरोगफणिबन्धनशान्तिहेतून्,
भजे यतीन् परमघोरतपोऽभियुक्तान् ॥५॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोधक-)

ये यतयो जठरार्त्तिविरागैर्नो विरताः स्वगुणैः शमयन्ति।
काच सुकामलचित्तकलूता योगिवरान् भज घोरगुणांश्च ॥६॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(उपजातिः-)

येषां पराक्रान्तिरिह प्रसिद्धा विभेदने कर्मरिपोः स्वस्से।
पञ्चास्यभीतिप्रतिभेदिनस्तान् ह्यर्चैर्भजे घोरपराक्रमांश्च ॥७॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणपरक्कमाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पंक्तिच्छन्दः-)

ये विवहन्ते देवगणोत्थं सिंहजम्भिगिणं सुमहान्तः।
भूतप्रेतपिशाचभुभीतिं संविभ्यो तान् चारणदक्षान् ॥८॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणबंभयारीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(उपजातिः-)

आमौषधीशाः सकलस्य जन्तोः रुजो निवारं विदधत्यवश्यम्।
जन्मान्तरीया हितवैरनाशं संपूजये तान् मुनिनायकांश्च ॥९॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(आर्या-)

येषां निष्ठीवनतो रोगा नाशं प्रयान्ति मनुजानाम्।
अपमृत्युनाशकांस्तान् प्रभजे खेलौषधिं प्राप्तान् ॥१०॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मन्दाक्रान्ता-)

चेतोजातं भ्रममपनुदत्याशु जन्तुः प्रभावाद्,
येषां व्यालप्रमुखविमुखः सम्मुखो जायते वै।
सर्वाङ्गीणं मलमपि नृणां हन्ति यद्-रोगजालं,
चेक्रीयेऽहं यतिवरतरान् मन्दकन्दाभिमुक्तान् ॥११॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वसन्ततिलका-)

यद्-ब्रह्मबिन्दुभिरपि प्रथिमान एव,
रोगाः क्षिणन्ति विषमा बहुदुःखदा वै।
यन्नाममन्त्रनिचया मरकीं गजानां
चाये रसादिनिचयैर्मुनिमुख्यपादान् ॥१२॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोधक-)

दन्त-नखादिमलं मनुजानां रोगगणं हरते च यदीयम्।
वृश्चिकनागविषं नरमारीं पूजय तान् शमकान् वरमन्त्रैः ॥१३॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(उपजातिः-)

येऽन्तर्मुहूर्तेन विदन्ति शास्त्रं हृदाश्रमातीतहृदः समस्तम्।
दुरङ्गमारी प्रलयं प्रगच्छेद् भजे च तान् मानससत्त्वसारान् ॥१४॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यद्-वाचो निखिलं श्रुताब्धिमभ्रान्तं गदितुं सुसमर्थाः।
मेघमृतापहनो मुनिमुख्यान् गीर्बलिनो भज भोगसुभेदन् ॥१५॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शार्दूलविक्रीडितम्-)

लोकं चालयितुं क्षमाः श्रममयास्तीव्रव्रतभ्राजिनो
येऽकुल्या सुरभूधराब्धिसहितं श्रान्तातिगाः योगिनः।
गोमारीं त्वरितं हरन्ति मनुजा यन्नामतस्तान् भजे
सम्प्राप्तान् गुरुगात्रसत्त्वममलं शार्दूलविक्रीडितम् ॥१६॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोधक-)

येषां पाणिपुटे गतमन्नं विषमपि दुग्धतया प्रभवेच्च।
कुष्ठ-क्षय-गद-गण्डकमाला-तापहरान् प्रयजे मुनिमुख्यान् ॥१७॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(लीलाखेल-)

येषां पाणावन्नं भुक्तं सर्पिःशुद्धं संयाति,
एक-द्वि-त्र्यन्तःसन्तापं शामं शामं सल्लोकाः।
चान्तर्मुक्तं सेवन्ते वै सातं सारं यद्-भक्त्या-
ध्याये तान् वै पानीयाद्यैः कामक्रीडानिर्मुक्तान् ॥१८॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वसन्ततिलका-)

यत्पाणिपात्रगतभक्तमपि क्षणेन,
माधुर्यतां व्रजति सज्जनतासमानम्।
पित्तादिदूषणहरान् प्रयजामि भक्त्या,
तान् योगिनो मधुरभुक्तिकृतो विविक्तान् ॥१९॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

येषां वचोऽमृतमिव प्रगुणं च भोज्यं,
पाणिस्थितस्मृतिरपि प्रथयत्यमोघम्।
सर्वोपसर्गहरणान् भुवि भाविकानां
तान् सन्धिनोमि रस-गन्धमुखैः सुभव्यैः ॥२०॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मालिनी-)

यतिवरजनमुख्यैः यन्न भुक्तं गृहेषु,
नरपति-पशुवृन्दैर्भुक्तिमन्नं न याति।

क्षान्तिमपि दिवसे वै तत्र योविदृशं वै
विदधति नरनाथा यत्प्रभावाद् भजे तान् ।२१।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहानसाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
(वसन्ततिलका-)
श्रीवर्धमानविभवा धृतवर्धमानाः,
सद्धर्धमानमनुजान् विदधत्यवश्यम् ।
ये संश्रितान् सुगति साधन वर्धमानाः,
वर्धापयामि जलजैर्मुनिनाथ पादान् ।।२२।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
(आर्या-)
नृपतिर्वशिमेति पुंसां विनता यन्नामतः सद्यः ।
सिद्धायतनान् भक्त्या परिसेवे तान् जलप्रमुखैः ।। २३।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायदणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
भगवति महति सुवीरे शुद्धे बुद्धे सुवर्धमानाङ्के ।
त्वयि नमतां सिद्धिचयः संविभजाम्यङ्घ्रि युगलं ते ।।२४।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो महदि महावीर वड्ढमाणबुद्धिरिसीणं
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
उग्रतपःप्रभृतिप्रभु भगवन्महदादिनामपर्यन्ताः ।
पूर्णार्घमाचिता वः शिवदास्तु महर्षयः सन्तु ।।२५।।
ॐ ह्रीं अर्हं उग्रतपः प्रभृति महावीर-वड्ढमाण पर्यन्तार्द्धि प्राप्तेभ्यो
गणधरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
(वसन्ततिलका-)
सर्वान् महर्षीन् निखिलतापहरान् भजामि,
पूर्णार्घदानवशतः परमान्य चित्तान् ।
निःशेष शोकगुरुतापहरान् परांश्च
संसिद्धि वृद्धिवर बुद्धि समृद्धिदातॄन् ।।२६।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं
नमः स्वाहा ।
(जपमन्त्रः-)
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं
नमः स्वाहा ।
(उक्त मंत्र का १०८ बार जाप करे)

जयमाला —
(घत्ता —)

जय जय गणधारण दुरितनिवारण पापभीति-मद-दारणक ।
वसुकर्धिकृद्धीश्वर परममुनीश्वर पञ्च-भेद-भव-वारणक ॥१॥

(पद्धतिका —)

जय पापताप-जलद-प्रकाश, जय मोह-मान-रति-भीति-नाश ।
जय सार वार भुवि चिद्विलास, जय भावनष्ट बहुमोहपाश ॥२॥
जय पुत्र-मित्र-धनद-स्वभाव, जय मुक्त दोष-मद-मान्द्य-भाव ।
जय लोक-शोक-हरणार्थ-राव, जय कर्म-मर्म-वन वार दाव ॥३॥
जय सार्वभौम-नुत-पुण्यपाद, जय नष्ट-दुष्ट-वञ्चनापवाद ।
जय मुक्ति सुक्त हत-दुःप्रमाद, जय नीति-वीत कुमताद्यवाद ॥४॥
जय सप्त-कर्द्धि कृतसिद्धिसङ्ग, जय तत्त्वसङ्ग सुगर्वा कुरङ्ग ।
जय वाघातघ्ननवभोगभङ्ग, जय कीर्ति-मूर्ति सततात्तरङ्ग ॥५॥
जय राम-काम-रमणीय रूप, जय शान्ति चित्त-रस-भोगभूप ।
जय तूर्णतीर्ण सुमदान्धकूप, जय सिद्ध बुद्ध घन चित्स्वरूप ॥६॥
जय योगिवर्ग कृतपादसेव, जय नम्र कम्र रमणी सुदेव ।
जय सुप्रमाणपदपाद्य जीव, जय पूर्ण वर्ण शुभरूक् सदैव ॥७॥
जय चिन्तावित्त वशकार मन्त्र, जय नाशनाप्त भव-पात-यन्त्र ।
जय धाम नाम मित मुक्ति तन्त्र, जय दीप्त-तप्त-तपसा पवित्र ॥८॥
जय मार-वार-मद-हार-दक्ष, जय सर्व पूर्वधिरत भव्य-रक्ष ।
जय बुद्धि-बुद्ध बुधसिद्धपक्ष, जय मूर्त मूर्ति विकसत्सनक्ष ॥९॥
जय देह-दीप्ति-हत-सत्तमिश्र, जय दिव्य-नव्य-वर-योग-मिश्र ।
जय खेद-भेद-मद-तामशास्त्र, जय वीर्यधैर्य गुणसूर्यचित्र ॥१०॥
जय कोष्ठबुद्धि-गत-षड्वियोग, जय जल्ल-खिल्ल-हत-निश्वरोग ।
जय बीजबुद्धि चिततात्मयोग, जय चित्त देहसनि-विप्रयोग ॥११॥

(मालिनी —)

इति यतिपति-भावाः कर्मकक्षान्त-दावाः,
गणधर-गणमुख्याः प्राप्तजीवाधिरक्षाः ।
धन-जन-शुभचन्द्रा ध्वस्तमोहारितन्द्रा
भवतु सुखसमृद्ध्यै यूयमेवात्र सिद्ध्यै ॥१२॥

ॐ ह्रीं भवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः, जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(वसन्ततिलका —)

आयुः-सुकाय-मति-सन्तति-मुक्ति-कीर्ति-
सौभाग्य-भाग्य-सुगतित्व-सुसङ्गतश्च ।

चक्रेन्द्र-भोगि-जिननाथ-पदानि नित्यं
भूयासुरस्तु गणनाथ-पद-प्रसादात् ॥२३॥
(इत्याशीर्वादः)

नित्यं यो गणभृन्मन्त्रं विशुद्धः सन् पठत्यमुम्।
आस्रवस्तस्य पुण्यानां निर्जरा पापकर्मणाम् ॥२४॥
न स्यादुपद्रवः कश्चिद् व्याधिभूतविषादिभिः।
सदसद्वीक्षणं स्वप्ने समाधिश्च भवेन्मृतौ ॥२५॥

—o—

१. विशूचिका-(हैजा) विनाशक मन्त्र—
ॐ णमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः, अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

२. ज्वर-विनाशक-मन्त्र—
ॐ णमो ओहिजिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः, अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

३. शिरोरोग-विनाशक मन्त्र—
ॐ णमो परमोहिजिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः, अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

४. नेत्ररोग-विनाशक मन्त्र—
ॐ णमो सव्वोहिजिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः, अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

५. कर्णरोग-विनाशक मन्त्र—
ॐ णमो अणंतोहिजिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः, अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

६. उदररोग-विनाशक मन्त्र—
ॐ णमो कोट्ठबुद्धीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

७. हिक्का (हिचकी) आदि रोग-विनाशक मन्त्र—
ॐ णमो बीजबुद्धीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं असि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

८. विरोध-विनाशक मन्त्र—
ॐ णमो पदाणुसारीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

९. श्वास-विनाशक मन्त्र-

ॐ णमो संभिण्णसोदाराणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा क्ष्रौं क्ष्रौं स्वाहा।

१०. प्रतिवादि-विद्या-छेदन मन्त्र-

ॐ णमो पत्तेयबुद्धाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा क्ष्रौं क्ष्रौं स्वाहा।

११. पाण्डित्य-कारक मन्त्र-

ॐ णमो सयंबुद्धाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा क्ष्रौं क्ष्रौं स्वाहा।

१२. एकवार सुनकर स्मरण रखनेका मन्त्र-

ॐ णमो बोहियबुद्धाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा क्ष्रौं क्ष्रौं स्वाहा।

१३. सर्वशान्ति-कारक मन्त्र-

ॐ णमो उजुमदीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा क्ष्रौं क्ष्रौं स्वाहा।

१४. महापाण्डित्य-कारक मन्त्र-

ॐ णमो विउलमदीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा क्ष्रौं क्ष्रौं स्वाहा।

१५. ~~ॐ णमो~~ सर्व अंग श्रुत जाननेका मन्त्र-

ॐ णमो दसपुव्वीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा क्ष्रौं क्ष्रौं स्वाहा।

१६. स्वसमय-परसमयके शास्त्रोंके जाननेका मन्त्र-

ॐ णमो चउदसपुव्वीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा क्ष्रौं क्ष्रौं स्वाहा।

१७. जीवन-मरण आदि जाननेका मन्त्र-

ॐ णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा क्ष्रौं क्ष्रौं स्वाहा।

१८. इष्ट वस्तु प्राप्त करनेका मन्त्र-

ॐ णमो विउव्वणइड्ढिपत्ताणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा क्ष्रौं क्ष्रौं स्वाहा।

१९. उपदेश-ग्राहक मन्त्र-

ॐ णमो विज्जाहराणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा क्ष्रौं क्ष्रौं स्वाहा।

२०. नष्ट वस्तु-शोधक मन्त्र-

ॐ णमो चारणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा क्ष्रौं क्ष्रौं स्वाहा।

२१. मरण-समयको जानने का मन्त्र-

ॐ णमो पण्हसमणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा क्ष्रौं क्ष्रौं स्वाहा।

२२. आकाश-गमन का मन्त्र-

ॐ णमो आगासगामीणं ह्रां ह्री ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा क्ष्रौं क्ष्रौं स्वाहा।

२३. शत्रुता-विनाशक मन्त्र-

ॐ णमो आसीविसाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा क्ष्रौं क्ष्रौं स्वाहा।

२४. विष-विनाशक मन्त्र-

ॐ णमो दिट्ठिविसाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा क्ष्रौं क्ष्रौं स्वाहा।

२५. वाणी-स्तम्भक मन्त्र-

ॐ णमो उग्गतवाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा क्ष्रौं क्ष्रौं स्वाहा।

२६. सेना स्तम्भक मन्त्र-

ॐ णमो दित्ततवाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा क्ष्रौं क्ष्रौं स्वाहा।

२७. जल तथा अग्नि-स्तम्भक मन्त्र-

ॐ णमो तत्ततवाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा क्ष्रौं क्ष्रौं स्वाहा।

२८. जल-स्तम्भक मन्त्र-

ॐ णमो महातवाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा क्ष्रौं क्ष्रौं स्वाहा।

२९. विष-ज्वररोगादि-विनाशक मन्त्र-

ॐ णमो घोरतवाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा।

३०. दुष्टजन्तु-भय-निवारक मन्त्र-

ॐ णमो घोरगुणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा क्ष्रौं क्ष्रौं स्वाहा।

३१. कानखजूरा और मकड़ी आदिके विषका निवारक मन्त्र–

ॐ णमो घोरगुणपरक्कमाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

३२. ब्रह्मराक्षसादि-भय-निवारक मन्त्र–

ॐ णमो घोरगुणबंभयारीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

३३. अपमृत्यु-विनाशक मन्त्र–

ॐ णमो खेल्लोसहिपत्ताणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

३४. पराभव-निवारक मन्त्र–

ॐ णमो आमोसहिपत्ताणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

३५. मृगी आदि रोग-विनाशक मन्त्र–

ॐ णमो जल्लोसहिपत्ताणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

३६. गजमारी-विनाशक मन्त्र–

ॐ णमो विप्पोसहिपत्ताणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

३७. उपसर्ग-विनाशक मन्त्र–

ॐ णमो सव्वोसहिपत्ताणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

३८. अपस्मार-विनाशक मन्त्र–

ॐ णमो मणबलीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

३९. अजमारी-विनाशक मन्त्र–

ॐ णमो वचिबलीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

४०. गौमारी-विनाशक मन्त्र–

ॐ णमो कायबलीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

४१. कुष्ट आदि रोग-विनाशक मन्त्र–

ॐ णमो खीरसवीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

४२. श्रीतज्वर-विनाशक मन्त्र-

ॐ णमो सप्पिसवीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

४३. सर्वरोग-विनाशक मन्त्र-

ॐ णमो महुरसवीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

४४. सर्वउपसर्ग-निवारक मन्त्र-

ॐ णमो अमियसवीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

४५. स्त्री-आकर्षण मन्त्र-

ॐ णमो अक्खीणमहाणसाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

४६. वैभव-वृद्धि मन्त्र-

ॐ णमो वड्ढमाणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

४७. नृपति-वशीकारक मन्त्र-

ॐ णमो सिद्धायदणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

४८. समाधि-सुख-कारक मन्त्र-

ॐ णमो भयवदो महदि महावीर वड्ढमाण बुद्धरिसीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्, विचक्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

आवश्यक सूचना- उक्त गणधर-वलय के ४८ मन्त्रों में से जिस मंत्र का जाप करना अभीष्ट हो, उसका २१ दिन तक ब्रह्मचर्यपूर्वक शारीरिक शुद्धि के साथ १०८ बार प्रतिदिन जाप करे।

विशेष- नं० २ के ज्वरनाशक मंत्र को चमेली के पुष्पों से जाप करे।
नं० १४ के महापाण्डित्यकारक मंत्र को नमक और खटाई के खाने का त्याग कर जाप करे।
नं० २६ के सेनास्तम्भक मंत्र को रविवार के दिन मध्याह्न समय जपे,
नं० ४१ के कुष्ट आदि रोगनाशक मंत्र को नियत समय तक जपते हुए केवल गाय या बकरी का दूध पीवे।

'ॐ ह्रीं ह्रं क्लीं क्लीं नमः, ह्रं नमोऽर्हं स्वाहा' इस मंत्र को पार्श्वनाथ की प्रतिमा के सन्मुख बैठकर सवा लाख जाप करे। पीछे महावीर की प्रतिमा के आगे बैठकर चमेली के फूलों से बारह हजार जाप करे, तो साधक के सभी अभीष्ट कार्य लीलामात्र से सिद्ध होते हैं। (विद्यानुशासन. पत्र १३५ आरा- सरस्वती भवन की प्रति)

कलिकुण्ड दण्ड पार्श्वनाथ कल्प:

कलिकुण्डं नमस्कृत्य पार्श्वनाथाभिधायकम्।
कलिकुण्ड प्रभेदानां वक्ष्ये साराधना क्रमम् ॥१॥

१. परविद्या-छेदन कलिकुण्ड यन्त्र-

हूंकारं ब्रह्मरुद्धं स्वरपरिकलितं वज्ररेखाष्टभिन्नं
वज्रस्याग्रान्तराले प्रणवमनुपममानाहतं सस्टर्भिं च।
वर्णान्ताद्यान् सपिण्डान् हभमरघझसखान् वेष्टयेतद्धदन्ते,
वज्राणां यन्त्रमेतत्सरकृत परविद्याविनाशे प्रयुक्तम् ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीं जैनबीजं तदुपरि कलिकुण्डेति दण्डाधिपाय,
स्फ्रां स्फ्रीं स्फ्रूं स्फ्रैं ततः स्फ्रौं स्फ्र इति चतुरतो ऽप्यात्मविद्यां च।
रक्ष रक्षेत्यन्यस्य विद्यां स्फुरतिमनुपमं छिन्द भिन्द द्वयान्ते,
हुं फट् स्वाहेति मन्त्रं जपतु दृढमना अन्यविद्याविनाशे ॥३॥

मन्त्रोद्धार: —

ॐ ह्रीं श्रीं ह्रें कलिकुण्डदण्डस्वामिन् अतुलबलवीर्यपराक्रम, दण्डाधिप स्फ्रां स्फ्रीं स्फ्रूं स्फ्रैं स्फ्रौं स्फ्रः आत्मविद्यां रक्ष रक्ष, पर विद्यां छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द हुं फट् स्वाहा।

२. ज्वरोपशमन कलिकुण्ड यन्त्र —

एते पिण्डाः समर्थाः झ ह भ म य र घा क्ष्म युक्ता;
प्रकुर्यु मर्त्यानां सर्वदाहज्वर भरहरणं सर्व पीडाविनाशम्।
यन्त्रं श्रीखण्डलिप्ते लिखितसुविशदे कांस्यपात्रे त्रिमुष्टी:,
प्रोक्तत्या दर्भयष्ट्या विविधगुणयुतो मन्त्रवादी समर्थ: ॥४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं च बीजं तदुपरि कलिकुण्डेति दण्डाधिपं च, ~~मत्रो~~
दाहोपेतोग्रपैत्य ज्वरतरहरणं सर्वपीडादि नाशम्।
कुर्यादात्मान्यविद्यानिवहमनुदिनं रक्षा छिन्द द्वयान्ते
श्रीं ह्रीं ऐं द्वे बीजं तदुपरि विलिखोच्चाट बीजं च होमम् ॥५॥

मन्त्रोद्धार: —

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रें कलिकुण्डदण्डस्वामिन् अतुलबलवीर्यपराक्रम मम (अमुकस्य) दाहज्वराद्युपशान्तिं कुरु कुरु, आत्मविद्यां रक्ष रक्ष, परविद्यां छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द, श्रीं ह्रीं ऐं हुं फट् स्वाहा।

शाकिन्यादि भयहरण कलिकुण्ड यन्त्र —

१

सर्वैः पिण्डैः प्रसिद्धैः क्ष ह भ म य र घैर्जान्तकान्तैश्च टान्तैः,
लान्तै बिन्दूर्ध्व रेफैः, परिमलवर यूंकार युक्तैः समर्थैः।
शाकिन्यो यान्ति नाशं वरलक सहजातैश्च संवेष्टये तान्,
ब्रह्मण्या द्वयैश्च वेष्ट्या प्रमितभुवनपाद्यैस्तुतैश्चान्त होमैः ॥६॥

मन्त्रोद्धार: —

ॐ ह्रीं क्ष्म्ल्व्र्यूं ह्म्ल्व्र्यूं भ्म्ल्व्र्यूं म्म्ल्व्र्यूं ~~घ~~ य्म्ल्व्र्यूं र्म्ल्व्र्यूं घ्म्ल्व्र्यूं झ्म्ल्व्र्यूं स्म्ल्व्र्यूं ख्म्ल्व्र्यूं क्ल्व्र्यूं वं रं लं कं सं हं जं भं स्वाहा।

२

ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय फणिपतिमतस्ताद्वयटान्त पिण्डं,
क्ष्मां क्ष्मीं क्ष्मूं क्ष्मैं क्ष्मः एतत् क्ष्मौं इति च कलिकुण्डेति दण्डाधिपायाम्।
हुं फट् स्वाहान्तमन्त्रो जनयति च भयं शाकिनीनां विधत्ते,
भूर्यविच्छा च यो ना जपतु दृढमनाः सर्वकार्य प्रसिद्ध्यै ॥७॥

मन्त्रोद्धार: —

ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय धरणेन्द्रपद्मावती सहिताय ह्म्ल्व्र्यूं क्ष्मां क्ष्मीं क्ष्मूं क्ष्मौं क्ष्मं क्ष्मः कलिकुण्डदण्डस्वामिन् अतुलबलवीर्यपराक्रम मम (अमुकस्य) शाकिन्यादि भयोपशमनं कुरु कुरु, आत्मविद्यां रक्ष रक्ष, परविद्यां छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द हुं फट् स्वाहा।

साधक एकान्त स्थान में उत्तर की ओर मुख करके कांसे के बरतन में डाभ की बनी तीन मुट्ठी लम्बी कलम से यन्त्र को लिखकर श्री पार्श्वनाथ की प्रतिमा के सम्मुख सुगन्धित श्वेत चमेली के पुष्पों से १०८ जाप करे। पुनः यन्त्र का ~~पहले~~ लिखी विधि से पूजन कर यन्त्र के जल को पिलाने पर ज्वर, भूत-प्रेत, शाकिनी डाकिनी आदि की पीडा दूर होती है। तथा दूसरे के द्वारा प्रयुक्त मंत्रों का छेदन और अपने मंत्रों का रक्षण होता है। गर्भिणी सुख पूर्वक प्रसव करती है। मृतवत्सा के बच्चे जीते हैं। वंध्या को पुत्र प्राप्त होता है। राज व जन वश्य होता है।

कलिकुण्डदण्ड यन्त्राभिषेक–

संसाध्याखिल कल्याण मालोद्वेलोदय: श्रिये।
कलिकुण्ड यन्त्रात्माऽभीष्टमारोपयाम्यहम् ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं र्हं कलिकुण्डदण्डस्वामिन्, अतुलबलवीर्यपराक्रम, अत्र अवतर अवतर, अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् (आह्वाननम्)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं र्हं कलिकुण्डदण्डस्वामिन्, अतुलबलवीर्यपराक्रम, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनम्)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं र्हं कलिकुण्डदण्डस्वामिन्, अतुलबलवीर्यपराक्रम, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधीकरणम्)

सत्पुष्पदाम्ना प्रविराजितेन घटेन पूर्णेन सपल्लवेन।
सन्मङ्गलार्थं कलिकुण्डदेव पदाग्रभूमौ समलं करोमि ॥२॥
(इति चतुःकलश स्थापनम्)

शुद्धेन शुद्ध हृद पल्लवकूपवापी-गङ्गातटाकादि समाहृतेन।
शीतेन तोयेन सुगन्धिनाऽहं भक्त्याऽभिषिञ्चे कलिकुण्डयन्त्रम् ॥३॥
(इति कलश स्नपनम्)

नीरैः सुगन्धैः कलमाक्षतौघैः पुष्पैर्हविर्भिः वर दीपधूपैः।
भास्वत्फलौघैः कलिकुण्डयन्त्रं संपूजयामीष्टफलाय भक्त्या ॥४॥
ॐ ह्रीं कलिकुण्डदण्डयन्त्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये चोच-मोचादि सदिक्षुजा ये द्राक्षा-रसालादिफलोद्भवा ये।
एभिर्रसैः स्वैरमृतोपमानैर्भक्त्याऽभिषिञ्चे कलिकुण्डयन्त्रम् ॥५॥
(इति चोचादि रस स्नपनम्)

गोरोचना-पिङ्गल(सद्)बला सुरारोग्य पुष्ट्यादिकृता नराणाम्।
द्राघीयसा सद्-घृतधारयाऽहं भक्त्याऽभिषिञ्चे कलिकुण्डयन्त्रम् ॥६॥
(इति घृतस्नपनम्)

कुन्दावदातोत्पलसिन्दुवार-चन्द्रांशुमाला इव माहसद्भिः।
गव्यैः पयोभिः किमु माहिषैश्च भक्त्याऽभिषिञ्चे कलिकुण्डयन्त्रम् ॥७॥
(इति दुग्धस्नपनम्)

ग्राहीष्टगन्धेन कुठार-लोठ्य-काठिन्यभाजा करसुगमकेन।
स्निग्धेन सच्चास्ततरेण दध्ना भक्त्याऽभिषिञ्चे कलिकुण्डयन्त्रम् ॥८॥
(इति दधिस्नपनम्)

नीरैस्त्रीभिर्विविधापगाद्या नीतैर्हिमामोदिभृता लिवर्गैः।
आपूरितैः कोणघटैश्चतुर्भिर्भक्त्याऽभिषिञ्चे कलिकुण्डयन्त्रम् ॥९॥
(इति कोणघटस्नपनम्)

सुगन्धवस्तूत्करमिश्रयद्भिः सन्तापहृद्भिर्जगतां पवित्रैः ।
गन्धोदकैर्गन्धनरान्धरन्ध्रैः भक्त्याऽभिषिञ्चे कलिकुण्डयन्त्रम् ॥१०॥
(इति गन्धोदक स्नपनम्)

भक्त्याऽभिषिञ्चन्ति यजन्ति भक्त्या ये विघ्नघातैः कलिकुण्डयन्त्रम् ।
स्तुता हिताशाम्बरकीर्तिनिस्ते यान्त्यष्टकर्मक्षयरूप मुक्तिम् ॥११॥
(इति गन्धोदक वन्दनम्)

अथ कलिकुण्ड दण्डयन्त्रपूजा –

चञ्चत्काञ्चन रत्नरश्मि रुचिर भृङ्गार नालोच्छलत् –
कर्पूरोल्वणगन्धधावदलिभिः सत्तीर्थवार्भिर्वरम् ।
तेजस्त्वत्परमाहिमादिभिरहं घोरोपसर्गापहं
चाये श्रीकलिकुण्डपार्श्वमसमं स्वाभीष्टसंसिद्धये ॥१॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्डपार्श्वनाथाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीखण्डद्रवकुङ्कुमामलमिलत्कर्पूरपूरादिभिः
सद्गन्धैर्मधुमत्तभृङ्गमुखोत्थ मधुरारावैर्मनोहारिभिः ।
तेजस्त्वत्परमाहिमादिभिरहं घोरोपसर्गापहं
चाये श्रीकलिकुण्डपार्श्वमसमं स्वाभीष्टसंसिद्धये ॥२॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्डदण्डपार्श्वनाथाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रोद्यच्छरदचारुचन्द्रकिरणश्रीस्पर्धिगन्धाक्षतैः,
शालीयैरमलैर्विशालकलमैः क्रोडोद्यतै रक्षतैः ।
तेजस्त्वत्परमाहिमादिभिरहं घोरोपसर्गापहं
चाये श्रीकलिकुण्डपार्श्वमसमं स्वाभीष्टसंसिद्धये ॥३॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्डदण्डपार्श्वनाथाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्पैश्चम्पकपारिजातकनकाम्भोजैर्मिलन्माधवै –
र्मन्दारामलमल्लिकाप्रविकसत्पुन्नागपुष्पैरपि ।
तेजस्त्वत्परमाहिमादिभिरहं घोरोपसर्गापहं
चाये श्रीकलिकुण्डपार्श्वमसमं स्वाभीष्टसंसिद्धये ॥४॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्डदण्डपार्श्वनाथाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्फूर्जत्स्फारसुधाविशुद्धमधुरान्नाज्येक्षुनिर्यासजै –
र्नैवेद्यैः सुसुवर्णपात्रभरणाभ्यासैर्गुणज्ञोपमैः ।
तेजस्त्वत्परमाहिमादिभिरहं घोरोपसर्गापहं
चाये श्रीकलिकुण्डपार्श्वमसमं स्वाभीष्टसंसिद्धये ॥५॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्डदण्डपार्श्वनाथाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ध्वान्तध्वंससमुद्यतोच्छतशिखा व्याप्तान्तरालैरलं
दीपैर्नव्यदिवाकरभ्रमकरैर्माणिक्यभाभासुरैः।
तेजस्तत्वरमार्हमादिभिरहं घोरोपसर्गापहं
चाये श्रीकलिकुण्डपार्श्वमसमं स्वाभीष्टसंसिद्धये ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड(दण्ड)पार्श्वनाथाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूरागुरुदेवदारुदहनोद्यद्दिव्यधूपैर्मिलद्-
भृङ्गारावकशीकृताभरवरस्तोत्रैर्मनोहारिभिः।
तेजस्तत्वरमार्हमादिभिरहं घोरोपसर्गापहं
चाये श्रीकलिकुण्डपार्श्वमसमं स्वाभी(ष्ट)संसिद्धये ॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्डदण्डपार्श्वनाथाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

खर्जूरापरमातुलिङ्गकदलीसन्नालिकेरोद्भवैः,
स्निग्धस्वादुरसातिरेकविलसत्प्राढ्यैः फलैर्निस्तुलैः।
तेजस्तत्वरमार्हमादिभिरहं घोरोपसर्गापहं
चाये श्रीकलिकुण्डपार्श्वमसमं स्वाभीष्टसंसिद्धये ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्डदण्डपार्श्वनाथाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याराध्याम्बुगन्धाक्षतकुसुमनिवेद्योल्लसद्दीपधूप-
प्रेङ्खत्सन्नालिकेराभलफलनिकरौघैरनर्घैरनर्घ्यम्।
पादौ दिव्याम्बुगन्धाक्षतकुसुमयुतं प्रोक्षियाम्यञ्जलिं श्री-
पार्श्वस्याखण्डकीर्तिच्छविकलकलिकुण्डाकृतेरिष्टपुष्ट्यै ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्डदण्डपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(निम्न लिखित मन्त्र का १०८ बार जाप करे—)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्डदण्डस्वामिन् अतुलबलवीर्यपराक्रम आत्मविद्यां रक्ष रक्ष, परविद्यां छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द, स्फ्रां स्फ्रीं स्फ्रूं स्फ्रैं स्फ्रौं स्फ्रः हुं फट् स्वाहा। —— प्रत्येक पिण्ड पूजा

नोट— सर्पत्सर्पेशदर्पोत्स्फुटतरलतरोत्तारफूत्कारबेला— गानी है)
संवर्तोत्पत्तिवाताहतशठकमठोद्भूतजीमूतजातान्।
खेलत्स्वर्गापवर्गोज्ज्वलजनितलसल्लोलडिण्डीरपिण्ड-
व्याजाच्छ्री पार्श्वराजोज्ज्वलविजययशो राजहंसोऽवताद् वः ॥१०॥
(इत्याशीर्वादः)

ओ मो मादि समाराध्य माराध्याराध्यतां ययुः।
चिदस्तमित्यहमिह कलिकुण्डश्रियं श्रिये ॥११॥
कलिकुण्ड चिदानन्दाखण्डपिण्ड नमोऽस्तु ते।
पाखण्डखण्डनोद्दण्डवृत्तये कृतकृत्तये ॥१२॥

तत्त्वान्तर्वर्तिने नत्वा तत्त्वबोधेद्धसिद्धये।
तुभ्यं सुधाब्धिचिदानन्दसम्पदे सम्पदे नमः॥२३॥
संसाध्या सिद्धसंसिद्धिः सिद्धसंसाध्यसिद्धये।
श्रीमते कलिकुण्डाय नमस्ते शुद्धबुद्धये॥२४॥
कलिकुण्ड सुधाकुण्डे निमज्जन्मनसां त्वयि।
चित्पिण्डाखण्डसौभाग्यमहोच्चैर्नोपसर्पति॥२५॥
नरामराहीश्वरभूतयस्त्वयि मयि प्रसन्ने सुलभा न दुर्लभाः।
यत्त्वत्प्रसादाद्भवतस्स भोग्यपि प्रभो विभोगीश्वरभोग्यभोग्यदि॥२६॥
विघ्नविघ्नक विभूतिभूषणं त्वामुपैति विनिरत्नभूषणम्।
कानि कानि कलिकुण्डदण्डिनं वाञ्छितानि न [illegible]जन्ति भाक्तिकाः॥२७॥
पद्मावती पाणिपयोजपूज्यां पयोजपूजाङ्घ्रिपयोजयुग्मम्।
त्वां तोष्टुमीष्टे कलिकुण्डदण्डस्वामिन् कथं मादृग्लब्धबोधाः॥२८॥
तथापि मम चेतसि स्फुरति पद्मनन्दिप्रभोः
पदाम्बुजयोगी ततोऽमलमतिः समुन्मीलति।
ततस्तव समुद्भवो भवतु वर्धमानश्रिया
ततोऽयमनिशं स्तुतं विमलमूलसङ्घेऽनघः॥२९॥
(इति स्तुतिः)

अथ जयमाला—

प्रोद्यत्सन्मणिनागनायकफटाटोपोल्लसन्मण्डपं
सद्भक्त्या नमदिन्द्रमौलिमणिभिर्भास्वत्पदाम्भोरुहम्।
प्रोन्मीलन्नवनीरदालिपटलीसंकालमुत्पादकं
ध्याये श्री कलिकुण्डदण्डविलसच्चण्डोग्रपार्श्वप्रभुम्॥१॥
सुसिद्ध विशुद्ध विबोध निधान, विकासित विश्व विवेक विधान।
विडम्बितकाम जगज्जय-चण्ड, सदा सदयोदय जय कलिकुण्ड॥२॥
पयोधि पयोधर धीर निनाद, निराकृत दुर्मति दुर्मद वाद।
असत्य पथैकपतत्पविदण्ड, सदा सदयोदय जय कलिकुण्ड॥३॥
निराकुल निर्मलशील निरीह, निराश निरञ्जन जिन नरसिंह।
विपाटित दुष्टमदद्विपदण्ड, सदा सदयोदय जय कलिकुण्ड॥४॥
कषाय-चतुष्टय काष्ठकुठार, निरामय नित्य नरामरसार।
विदीर्णघनाघन विघ्नकरण्ड, सदा सदयोदय जय कलिकुण्ड॥५॥
अनल्प विकल्प विहीन विकल्प, विशल्य त्रिशूल विसर्प विदर्प।
विरोग विभोग विखण्ड विमुण्ड, सदा सदयोदय जय कलिकुण्ड॥६॥

फणीश नरेश महीश दिनेश, सुभेश गणेश मुनीश सुरेश।
चिदर्क विकासित शतदलतुण्ड, सदा सदयोदय जय कलिकुण्ड ॥७॥
विशोक विशङ्क विमुक्तकलङ्क, विकाशितविश्व विदूरितपङ्क।
कलाकुल केवल चिन्मय पिण्ड, सदा सदयोदय जय कलिकुण्ड ॥८॥
निकन्दितमोह-महीरुह-कन्द, वरप्रद सत्पद सम्पदमनन्द।
त्रिदण्ड-विखण्डित-माय-विखण्ड, सदा सदयोदय जय कलिकुण्ड ॥९॥

कलिल-मलन-दक्षं योगि-योग्योपलक्षं
त्यविकलकलिकुण्डोद्दण्ड पार्श्व प्रचण्डम्।
शिवसुखशुभसम्पद्-वासवल्ली वसन्तं
प्रतिदिनमहमीडे वर्धमानर्धिसिद्धयै ॥१०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्डदण्डपार्श्वनाथाय जयमालार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिलद्दलिजलमलयज-तन्दुल-कुसुमोरुपरिमलामलाम्।
कलिकुण्डाय समृद्धयै ददामि कुसुमाञ्जलिं भक्त्या ॥११॥
(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

कलिकुण्ड यन्त्र-पूजा-माहात्म्य—

देवाधिदेवं जिनभावयातं देवाधिपैश्चार्चितपादपद्मम्।
नत्वा जिनेन्द्रं शिवसौख्यसिद्धयै स्तोष्ये पवित्रं कलिकुण्डयन्त्रम् ॥१॥
पूजां प्रकुर्वन्ति नराः सुभक्त्या यन्त्रस्य ये श्रीकलिकुण्ड नाम्नः।
तेषां नराणामिह सर्वविघ्नाः नश्यन्त्यवश्यं भुवि तत्प्रसादात् ॥२॥
चित्ताम्बुजे ये स्वगुरूपदेशाद् ध्यायन्ति नित्यं कलिकुण्डयन्त्रम्।
सिंहादयो दुष्टमृगास्तु लोके पीडां न कुर्वन्ति नृणां च तेषाम् ॥३॥
भक्त्या स्तुवन्ति कलिकुण्डयन्त्रं सर्वेशदोषापहमुत्तमं तम्।
मोक्षाख्यलक्ष्मी वरचारुसौख्य-प्राप्तिस्तु तेषां भवतीह सत्यम् ॥४॥
यन्त्रस्य चिन्ता हृदयेऽस्ति यस्याः सद्धर्मरता व्रतशील युक्ताः।
वन्ध्यापि सत्पुत्रवती भवेत्सा लोके क्रमात्स्वर्गसुखं प्रयाति ॥५॥
स्मरन्ति यन्त्रस्य विधानमेनं नरा अहिंसादि गुणप्रयुक्ताः।
ज्वर-ग्रहण्यादिरुजोऽत्र तेषां प्रयान्ति नाशं कलिकुण्डयन्त्रात् ॥६॥
सुरासुरेन्द्रैरपि सेव्यमानं समस्तदोषोज्झितबीजमालम्।
यन्त्रं नरा ये कलिकुण्डमेतन्नित्यं भजन्त्यत्र भयं न तेषाम् ॥७॥
सर्वाग्नि-तोयारि-विषाहिविघ्ना यान्ति क्षयं यस्य वरप्रसादात्।
तथा जिनेन्द्रस्य सरोजजातं नित्यं नमः श्रीकलिकुण्डयन्त्रम् ॥८॥

इति कलिकुण्डयन्त्रकल्पः समाप्तः।

ह्रींकार-रहस्य
ऋषिमण्डल स्तोत्र

'ह्रीं'कार में आचार्यों ने चौबीस तीर्थंकरों की स्थापना रूप कल्पना की है। चौबीस तीर्थंकरों में चन्द्रप्रभ और पुष्पदन्त धवल वर्ण के हुए हैं। पद्मप्रभ और वासुपूज्य लाल वर्ण के थे। सुपार्श्व और पार्श्वनाथ हरे वर्ण के थे। मुनिसुव्रत और नेमिनाथ नील या कृष्ण वर्ण के थे। शेष १६ सोलह तीर्थंकर तपाये हुए सुवर्ण जैसी कान्ति वाले थे। इन विभिन्न वर्ण वाले तीर्थंकरों का समावेश 'ह्रीं' के भीतर किया गया है। मंत्र-शास्त्र की परिभाषा में 'ह्रीं' को मायाबीज कहा गया है। इसका कारण यह प्रतीत होता है कि सूर्य, चन्द्र आदि नवग्रहों के जो वर्ण ज्योतिष शास्त्र में माने गये हैं, उनकी ग्रह शान्ति के लिए उस उस वर्ण के शरीर वाले तीर्थंकरों की पूजन का विधान एवं जाप जैनाचार्यों ने किया है। जिसका विशेष विवेचन नवग्रह-शान्ति विधान में किया गया है।

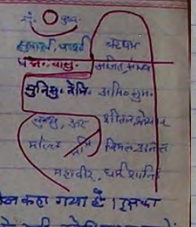

ऋषिमण्डल स्तोत्र दो प्रकार के उपलब्ध हैं — १ श्री गुणनन्दि मुनीन्द्र-रचित और २ विद्याभूषण सूरि-विरचित। दोनों में ही ह्रींकार के भीतर चौबीस तीर्थंकरों का समावेश कर उनका स्तवन, ८ हजार जाप और ६ मास तक प्रतिदिन पाठ करने का विधान है। इस 'ह्रीं' कार का भी नाभिकमल, हृदयकमल और ललाट-कमल पर ध्यान करने का माहात्म्य 'ओं' कार के समान माना गया है। प्रतिदिन ऋषिमंडल स्तोत्र के पाठ से भूत, प्रेत, ईति, भीति और आधि-व्याधियों से मनुष्य पीड़ित नहीं होता और सर्व प्रकार से सुरक्षित रहता है। 'ह्रीं' बीज ऋषिमण्डल विधान का मूल मंत्र है।

विद्याभूषण सूरि कृत ऋषिमण्डल स्तोत्र की अपेक्षा गुणनन्दि मुनीन्द्र-कृत ऋषिमण्डल स्तोत्र प्राचीन है और अनुष्टुभ् श्लोकों में रचित होने से अर्थ समझने में सुगम भी है, अतः उसे ही यहाँ दिया जाता है।

ऋषिमण्डल के मूल मंत्र को जो आगे दिया गया है, उसकी सिद्धि के पूर्व उसका स्तवन और पूजन करना आवश्यक है। उसके पश्चात् मंत्र का ८ हजार जाप करे। दशमांश हवन करे। इस प्रकार मंत्र सिद्ध करने के पश्चात् ऋषिमण्डल स्तोत्र का प्रतिदिन पाठ और मंत्र की एक माला (१०८) जाप करते रहना चाहिए। यद्यपि स्तोत्र के अन्त में ६ मास के पश्चात् जिनेन्द्र के प्रत्यक्ष बिम्ब-दर्शन का चमत्कार लिखा है और उसके दर्शन होने पर सातवें भव में उसके निश्चय रूप से मुक्ति भी उल्लेख किया है, तो भी सर्वसाधारण को नित्य प्रति उसका पाठ करते रहना चाहिए।

ऋषिमण्डल स्तोत्रम् —

आद्यन्ताक्षर संलक्ष्यमक्षरं व्याप्य संस्थितम्।
अग्निज्वाला समं नादं बिन्दुरेखा समन्वितम् ॥१॥
अग्निज्वाला समाक्रान्तं मनोमल विशोधनम्।
देदीप्यमानं हृत्पद्मे तत्पदं नौमि निर्मलम् ॥२॥
ॐ नमोऽर्हद्भ्य ईशेभ्यः, ॐ सिद्धेभ्यो नमो नमः।
ॐ नमः सर्वसूरिभ्यः ॐ उपाध्यायेभ्यो नमो नमः ॥३॥
ॐ नमः सर्वसाधुभ्यस्तत्त्वदृष्टिभ्यः ॐ नमः।
ॐ नमः शुद्धबोधेभ्यश्चारित्रेभ्यो नमो नमः ॥४॥
श्रेयसेऽस्तु श्रियेऽस्त्वेतदर्हदाद्यष्टकं शुभम्।
स्थानेष्वष्टसु संन्यस्तं पृथग्बीजसमन्वितम् ॥५॥
आद्यं पदं शिरो रक्षेत् परं रक्षतु मस्तकम्।
तृतीयं रक्षेन्नेत्रे द्वे तुर्यं रक्षेच्च नासिकाम् ॥६॥
पञ्चमं तु मुखं रक्षेत् षष्ठं रक्षतु जिह्विकाम् (घण्टिकाम्)।
सप्तमं रक्षेन्नाभ्यन्तं पादान्तं चाष्टमं पुनः ॥७॥

मंत्र बनाने की विधि —

पूर्वं प्रणवतः सान्तः सरेफो द्वि-त्रि-पंचषान्।
सप्ताष्टदशसूर्याङ्कान् श्रितो बिन्दुस्वरान् पृथक् ॥८॥
पूज्यनामाक्षराद्यास्तु पञ्च दर्शन-बोधनम्।
चारित्रेभ्यो नमो मध्ये ह्रीं सान्तसमलङ्कृताम् ॥९॥

मूल मंत्र —

ओं ह्रां ह्रिं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो ह्रीं ह्रं नमः।

जम्बूवृक्षधरो द्वीपः क्षारोदधिसमावृतः।
अर्हदाद्यष्टकैरष्टकाष्ठाधिष्ठैरलङ्कृतः ॥१०॥
तन्मध्ये संगतो मेरुः कूटलक्षैरलङ्कृतः।
उच्चैरुच्चैस्तरस्तार-तारामण्डलमण्डितः ॥११॥
तस्योपरि सकारान्तं बीजमध्यास्य सर्वगम्।
नमामि बिम्बमार्हन्त्यं ललाटस्थं निरञ्जनम् ॥१२॥
अक्षयं निर्मलं शान्तं बहुलं जाड्यतोज्झितम्।
निरीहं निरहङ्कारं सारं सारतरं घनम् ॥१३॥
अनुद्धतं शुभं स्फीतं सात्विकं राजसं मतम्।
तामसं विरसं बुद्धं तैजसं शर्वरीसमम् ॥१४॥
साकारं च निराकारं सरसं विरसं परम्।
परापरं परातीतं परं परपरापरम् ॥१५॥

सकलं निष्कलं तुष्टं निर्वृतं भ्रान्तिवर्जितम् ।
निरञ्जनं निराकाङ्क्षं निर्लेपं वीतसंशयम् ॥१६॥
ब्रह्माणमीश्वरं बुद्धं शुद्धं सिद्धमभंगुरम् ।
ज्योतीरूपं महादेवं लोकालोकप्रकाशकम् ॥१७॥
अर्हदाख्यः सवर्णान्तः सरेफो बिन्दुमण्डितः ।
तुर्यस्वरसमायुक्तो बहुध्यानादिमालितः ॥१८॥
एकवर्णं द्विवर्णं च त्रिवर्णं तुर्यवर्णकम् ।
पञ्चवर्णं महावर्णं सपरं च परापरम् ॥१९॥
अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे ऋषभाद्याः जिनोत्तमाः ।
वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ताः ध्यातव्यास्तत्र सङ्गताः ॥२०॥
नादश्चन्द्रसमाकारो बिन्दुर्नीलसमप्रभः ।
कलाऽरुणसमा सान्तः स्वर्णाभः सर्वतोमुखः ॥२१॥
शिरः संलीन ईकारो विलीनो वर्णतः स्मृतः ।
वर्णानुसारि संलीनं तीर्थकृन्मण्डलं नमः ॥२२॥
चन्द्रप्रभ-पुष्पदन्तौ नादस्थितिसमाश्रितौ ।
बिन्दुमध्यगतौ नेमि-सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥२३॥
पद्म-प्रभ-वासुपूज्यौ कलापदमधिश्रितौ ।
शिर ईस्थितिसंलीनौ पार्श्व-मल्ली जिनोत्तमौ ॥२४॥
शेषास्तीर्थकराः सर्वे रहःस्थाने नियोजिताः ।
मायाबीजाक्षरं प्राप्ताश्चतुर्विंशतिरर्हताम् ॥२५॥
गतराग-द्वेष-मोहाः सर्वपापविवर्जिताः ।
सर्वदा सर्वलोकेषु ते भवन्तु जिनोत्तमाः ॥२६॥
आचाम्लादितपः कृत्वा पूजयित्वा जिनावलीम् ।
अष्टसाहस्रिको जाप्यः कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥२७॥
शतमष्टोत्तरं प्रातः ये पठन्ति दिने दिने ।
तेषां न व्याधयो देहे प्रभवन्ति च सम्पदः ॥२८॥
इदं स्तोत्रं महास्तोत्रं स्तवानामुत्तमं परम् ।
पठनात्स्मरणाज्जाप्याल्लभते पदमव्ययम् ॥२९॥

—०—

ऋषिमण्डल-मंत्र के जाप करने के पूर्व इस स्तोत्र को प्रतिदिन अवश्य पढ़ना चाहिए । यदि समय हो तो आगे लिखी यंत्र-पूजन भी करे । अन्यथा ८ हजार जाप के ८ दिनों में तो यंत्र-पूजन अवश्य ही करनी चाहिए ।

यंत्रस्थ-चतुर्विंशति तीर्थंकर-पूजा

ये जित्वा निजकर्मकेशरिपून् कैवल्यमाभेजिरे,
दिव्येन ध्वनिनाऽवबोध्य निखिलं चङ्क्रम्यमाणं जगत् ।
प्राप्ता निर्वृतिमक्षयामतितरामन्तादिगामादिगाम्
यक्ष्ये तान् वृषभादिकान् जिनवरान् वीरावसानानहम् ॥

ॐ ह्रीं वृषभादि-वर्धमानान्तास्तीर्थंकरपरमदेवा अत्र अवतरत, अवतरत, संवौषट् ।

ॐ ह्रीं वृषभादि-वर्धमानान्तास्तीर्थंकरपरमदेवा अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः, स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं वृषभादि-वर्धमानान्तास्तीर्थंकरपरमदेवा अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट्, सन्निधीकरणम् ।

कर्पूर-पङ्कज-पराग-सुगन्धशीतैराकाशशाङ्कविमलैः सलिलैः जलौघैः ।
सन्मित्रतामुपगतैर्मधुरैर्लघिष्ठैर्द्विर्द्वादशप्रमजिनाङ्घ्रियुगं महामि ॥
ॐ ह्रीं वृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।
काश्मीरपूर-घनसारगतैर्घभावैर्बाह्यान्तरङ्गपरिताप हरैः पवित्रैः ।
श्रीचन्दनोत्कटरसैः सुरसैः सुभक्त्या द्विर्द्वादशप्रमजिनाङ्घ्रियुगं महामि ॥
ॐ ह्रीं वृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यश्चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।
माधुर्यगन्धनिवहान्वितदिव्यदेहैः कुन्देन्दु-सागरकफोज्ज्वल-चारुशोभैः ।
शाल्यक्षतैः सुभगपात्रगतैरखण्डैर्द्विर्द्वादशप्रमजिनाङ्घ्रियुगं महामि ॥
ॐ ह्रीं वृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्योऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।
मन्दार-कुन्द-कमलान्वित-पारिजात-जाती-कदम्ब-मल्लिकातिसत्प्रसूनैः ।
गन्धागतभ्रमर-जात-रवप्रशस्तैः द्विर्द्वादशप्रमजिनाङ्घ्रियुगं महामि ॥
ॐ ह्रीं वृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।
नानारसैर्जिनवरैरिव चारुरूपैः श्रीकामदेवनिवहैरिव भव्यजातैः ।
सद्-व्यञ्जनैः स्वरवरैरिव लक्षणौघैर्द्विर्द्वादशप्रमजिनाङ्घ्रियुगं महामि ॥
ॐ ह्रीं वृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
दीपव्रजैरमलकीलकलापसारैर्निर्धूमतामुपगतैः सरलं ज्वलद्भिः ।
पीतद्युतिप्रचयनिर्जितजातरूपैर्द्विर्द्वादशप्रमजिनाङ्घ्रियुगं महामि ॥
ॐ ह्रीं वृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।
कृष्णागुरुप्रमुखसारसुगन्धद्रव्य-प्रोद्भूतमूर्तिभिरलं वरधूपजालैः ।
धूमध्वजप्रमुदितादितिनन्दनौघैर्द्विर्द्वादशप्रमजिनाङ्घ्रियुगं महामि ॥
ॐ ह्रीं वृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।
नारङ्ग-पूग-कदलीफल-नालिकेर-सन्मातुलिंगकरकप्रमुखैः फलौघैः ।
शाखालुपात्र्यमधिगम्य थिरत्नभिन्नैर्द्विर्द्वादशप्रमजिनाङ्घ्रियुगं महामि ॥
ॐ ह्रीं वृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल-गन्धाक्षतैः पुष्पैश्चरुभिर्दीप-धूपकैः।
फलैरर्घ्यं विधायाशु श्रीजिनेभ्यो ददे मुदा॥
ॐ ह्रीं वृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
चतुर्विंशति तीर्थेशाः पूर्णार्घ्यं प्रापितास्तराम्।
शान्तिं श्रियं च कल्याणं कुर्वन्तु जिनभाजिनाम्॥
ॐ ह्रीं वृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ह-भ-म-र-घ-झं-स-खाः पिण्ड वर्णादि संयुताः।
पूर्णार्घ्यं प्रापिताः सन्तु शान्तये शिवशर्मणे॥
ॐ ह्रीं पिण्डस्थ-बीजवर्णेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इष्ट प्रार्थना –

ह-भ-म-र-घ-झ-स-खाः पिण्डवर्णादिसंयुताः।
~~पूर्णार्घ्यं प्रापिताः~~ जलाद्यैः पूजिताः, सन्तु श्रियै रक्षायै समृद्धये॥
(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अर्हत्सिद्धगुरुदृष्टि-ज्ञान-चर्याः सुपूजिताः।
पूर्णार्घ्यं प्रापिताश्चेह सन्तु क्षेमाय शर्मणे॥
ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा-सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
भावनेशादिकाः शक्राः श्रुतावध्यादियोगिनः।
शिवं दिशन्तु भक्तेभ्यः प्राप्ताः पूर्णाहुतिं पराम्॥
ॐ ह्रीं चतुःषष्टि-ऋद्धिप्राप्त-ऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इष्ट-प्रार्थना –

भावनेशादिकाः शक्राः श्रुतावध्यादि योगिनः।
शान्तिं पुष्टिं च कुर्वन्तु श्रियं मानववासिनीम्॥
(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्र्यादिकाः सकलाः देव्यः शान्तिं तन्वन्तु पूजिताः।
जल-गन्धाक्षतैः पुष्पैश्चरु-दीप-फलादिकैः॥
ॐ ह्रीं श्र्यादि-चतुर्विंशतिदेवताभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला –

(जयमाला पढ़ने के पूर्व ऋषिमण्डल-मंत्र का १०८ बार जाप करे)
मंत्र – ॐ ह्रां ह्रिं ह्रुं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो ह्रीं ह्रं नमः।

पणविवि जिणदेवहं सुर-कय-सेवहं णासिय-जम्म-जरा-मरहं।
सिव-सुह-कयरायहं गयभयरायहं णियभत्तिए जुत्तिए थुणमि॥१॥
जय आइणाह कम्मारि वाह, जय अजिय जिणेसर मोह-दाह।
जय संभव गयभव रायडंभ, जय अहिणंदण जिण परमबंभ॥२॥

जय सुमइ सुमइ-गयराय देव, जय पउमप्पय सुरविहिय-सेव।
जय जय सुपास मणहर सुभास, जय चंदप्पह जिय चंद हास॥३॥
जय पुप्फयंत जिय पुप्फयंत, जय सीयल णिरसिय सीयकंत।
जय सेय देय कय भव्वसेव, जय वासुपुज्ज सुर-किय-सिसेव॥४॥
जय विमल जिणेसर विमलणाण, जय जिण सर्णत गय परमठाण।
जय धम्म धम्म-देसण-समत्थ, जय संति संति-गय-गंथ-सत्थ॥५॥
जय कुंथु सामि गय कम्म पंक, जय अर अर सामिय समिय-संक।
जय मल्लि सामि णिय सत्तभंग, जय मुणिसुव्वय तय जिय अणंग॥६॥
जय णमि जिण णिरसिय सव्वसंग, जय णेमि मुक्क-रायमई- संग।
जय पासदेव फणिवइ-वरिट्ठ, जय वड्ढमाण गुण-गण-गरिट्ठ॥७॥

घत्ता-

इय थुणिवि जिणेसर, महि परमेसर, णासिय कम्म कलंकभरं।
सुरवइ नुसंसिय भवगय-भंजिय, उत्तारिज्जइ अग्घवरं॥८॥

ॐ ह्रीं वृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमालार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इष्ट प्रार्थना-

निःशेषामर-शेखरार्चितपद द्वन्द्वोल्लसत्सन्नख-
भ्रातप्रोद्गतकान्ति संहति हत प्रव्यक्त भक्त्या स्वनत्।
गीर्वाणेश महोत्सवाङ्ग मुकुट प्रस्फूर्तिमद्रत्नभाः
सत्सिद्धिं वृद्धिमनारतं जिनवरा कुर्वन्तु मे सर्वदा॥१॥
अशेषकर्मारि विनाशजात प्रस्पष्ट दृग्ज्ञप्ति सुखस्वरूपाः।
शान्तिं धृतिं शर्म शिवं च सिद्धास्तन्वन्तु नो वाञ्छितदान दक्षाः॥२॥
ये चारयन्ति च चरन्ति मलव्यतीतं पञ्चागमाचरणमात्रविनेयवर्गान्।
ते सन्तु चारुगिर आनतदेववर्गाः सौख्याय चारुमतयो गुरवस्त्रिधापि॥३॥
भावनेशादिकाः शक्राः दिव्या हि ह्यादिकाः वराः।
अन्येऽपि च सुपर्वाणो विघ्नघाताय सन्तु नः॥४॥
(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अथ शान्तिमंत्रः-

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदातप विनाशनाय ह्रीं शान्तिनाथाय नमः। ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय [1] अशोकतरु सत्प्रातिहार्य मण्डिताय शोभनपदप्रदाय ह्मल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः। ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय [3] सुरपुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य मण्डिताय सुरपुष्पवृष्टि शोभन-पदप्रदाय भ्मल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः। ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय [3] दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्य मण्डिताय दिव्यध्वनि शोभन पदप्रदाय म्मल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः। ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय ~~स्मल्व्र्यूं बीजाय~~ [4] चतुःषष्टिचामर-वीज्यमान सत्प्रातिहार्य मण्डिताय चामरवीज्यमान शोभनपदप्रदाय

र्म्ल्व्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः। ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय [५]भामण्डलसत्प्रातिहार्यमण्डिताय भामण्डलशोभनपदप्रदाय घ्म्ल्व्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः। ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय [६]दुन्दुभिसत्प्रातिहार्यमण्डिताय दुन्दुभिशोभनपदप्रदाय झ्म्ल्व्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः। ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय [७]छत्रत्रयसत्प्रातिहार्यमण्डिताय छत्रत्रयशोभनपदप्रदाय स्म्ल्व्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः। ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय [८]दिव्यासनसत्प्रातिहार्यमण्डिताय दिव्यासनपदप्रदाय र्म्ल्व्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः। ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय प्रातिहार्याष्टकसहिताय बीजाष्टकमण्डनमण्डिताय सर्वविघ्नविनाशकाय नमः। तव भक्तिप्रसादात् लक्ष्मी-पुर-राज्य-गेह-पदभ्रष्टोपद्रव-दारिद्र्योद्भवोपद्रव-स्वचक्र-परचक्रोद्भवोपद्रव-प्रचण्डपवनानलजलोद्भवोपद्रव-शाकिनी-डाकिनी-भूत-पिशाचकृतोपद्रव-दुर्भिक्ष-व्यापार-वृद्धिरहितोपद्रवाणां विनाशनं भवतु। सम्पूर्णकल्याण-मङ्गलरूपमोक्षपुरुषार्थश्च भवतु।

अथ विसर्जनम् -

ॐ समाहूताः सर्वे देवाः स्वस्थानं गच्छत गच्छत ।

—०—

(यदि समय हो और आकुलता न हो तो निम्न लिखित पाठ पढ़े)

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु पन्नगाः॥१॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु नागिनी॥२॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु गोनसाः॥३॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु वृश्चिकाः॥४॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु काकिनी॥५॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु डाकिनी॥६॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु शाकिनी॥७॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु राकिनी॥८॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु लाकिनी॥९॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु साकिनी॥१०॥

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु हाकिनी॥११॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु राक्षसाः॥१२॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु व्यन्तराः॥१३॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु भेकसाः॥१४॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु ते ग्रहाः॥१५॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु तस्कराः॥१६॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु वह्नयः॥१७॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु श्रृङ्गिणः॥१८॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु दंष्ट्रिणः॥१९॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु रेलपाः॥२०॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु पक्षिणः॥२१॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु मुद्गलाः॥२२॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु जृम्भकाः॥२३॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु तोयदाः॥२४॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु हिंसकाः॥२५॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु सिंहकाः॥२६॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु शूकराः॥२७॥

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु चित्रकाः॥२८॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु हस्तिनः॥२९॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु भूमिपाः॥३०॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु शत्रवः॥३१॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु ग्रामिणः॥३२॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु दुर्जनाः॥३३॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु व्याधयः॥३४॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाऽऽच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसन्तु सर्वतः॥३५॥
श्रीगौतमस्य या मुद्रा तस्या या भुवि लब्धयः।
ताभिरभ्यधिकं ज्योतिरर्हः सर्वनिधीश्वरः॥३६॥
पातालवासिनो देवाः देवाः भूपीठवासिनः।
स्वःस्वर्गवासिनो देवाः सर्वे रक्षन्तु मामितः॥३७॥
देशावधिलब्धयो ये तु परमावधिलब्धयः।
ते सर्वे मुनयो दिव्याः मां संरक्षन्तु सर्वतः॥३८॥
ॐ श्रीः ह्रीश्च धृतिर्लक्ष्मी गौरी चण्डी सरस्वती।
जयाऽम्बा विजया क्लिन्नाऽजिता नित्या मदद्रवा॥३९॥
कामाङ्गा कामबाणा च सानन्दा नन्दमालिनी।
माया मायाविनी रौद्री कला काली कलिप्रिया॥४०॥
एताः सर्वा महादेव्यो वर्तन्ते या जगत्त्रये।
मह्यं सर्वाः प्रयच्छन्तु कान्तिं लक्ष्मीं धृतिं मतिम्॥४१॥
दुर्जना भूत-वेताला पिशाचा मुद्गलास्तथा।
ते सर्वे उपशाम्यन्तु देवदेवप्रभावतः॥४२॥
दिव्यो गोप्यः सुदुष्प्राप्यः श्रीऋषिमण्डलस्तवः।
भाषितस्तीर्थनाथेन जगत्त्राणकरोऽनघः॥४३॥
रणे राजकुले वह्नौ जले दुर्गे गजे हरौ।
श्मशाने विपिने घोरे स्मृतो रक्षति मानवम्॥४४॥

स्तोत्र-फलवर्णनम्-

राज्यभ्रष्टा निजं राज्यं पदभ्रष्टा निजं पदम्।
लक्ष्मीभ्रष्टा निजां लक्ष्मीं प्राप्नुवन्ति न संशयः॥४५॥
भार्यार्थी लभते भार्यां पुत्रार्थी लभते सुतम्।
धनार्थी लभते वित्तं नरः स्मरणमात्रतः॥४६॥

यंत्र-लेखन-विधि-

स्वर्णे रूप्येऽथवा कांस्ये लिखित्वा यस्तु पूजयेत्।
तस्यैवेष्टमहासिद्धिः गृहे वसति शाश्वती॥४७॥
भूर्जपत्रे लिखित्वेदं गलके मूर्ध्नि वा भुजे।
धारितः सर्वदा दिव्यं सर्वभीतिविनाशनम्॥४८॥

भूतैः प्रेतैर्ग्रहैर्यक्षैः पिशाचैर्मुद्गलैस्तथा।
वात-पित्त-कफोद्रेकैर्मुच्यते नात्र संशयः॥४९॥
भूर्भुवःस्वस्त्रयीपीठवर्तिनः शाश्वता जिनाः।
तैः स्तुतैर्वन्दितैर्दृष्टैर्यत्फलं तत्फलं स्मृतेः॥५०॥
(मंत्र गोप्य रखें-)
एतद् गोप्यं महामंत्रं न देयं यस्य कस्यचित्।
मिथ्यात्ववासिनो देये बालहत्या पदे पदे॥५१॥

मंत्र-साधन-विधि-

आचाम्लादितपः कृत्वा पूजयित्वा जिनावलिम्।
अष्टसाहस्रिको जाप्यः कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे॥५२॥

प्रतिदिन १०८ बार जाप एवं स्तोत्र पाठ का फल-

इदमष्टोत्तरं प्रातः ये पठन्ति दिने दिने।
तेषां न व्याधयो देहे प्रभवन्ति च सम्पदः॥५३॥
अष्टमासावधिं यावत् प्रतिप्रातस्तु यः पठेत्।
स्तोत्रमेतन्महातेजस्त्वर्हद्बिम्बं स पश्यति॥५४॥
दृष्टे सत्यार्हते बिम्बे भवे सप्तमके ध्रुवे।
पदं प्राप्नोति विश्रस्तं परमानन्दसम्पदाम्॥५५॥
विश्ववन्द्यो भवेद् ध्याता कल्याणान्यपि सोऽश्नुते।
गत्वा स्थानपरं सोऽपि भूयस्तु न निवर्तते॥५६॥
इदं स्तोत्रं महास्तोत्रं स्तवानामुत्तमं परम्।
पठनात् स्मरणाज्जाप्याल्लभते पदमव्ययम्॥५७॥

—o—

नवग्रह - शान्तिकारक - मन्त्र -

१. सूर्यग्रह-शान्तिकारक मंत्र - 'ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं' दश हजार जाप करे।
२. चन्द्रग्रह-शान्तिकारक मंत्र - ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं' दश हजार जाप करे।
३. मंगलग्रह-शान्तिकारक मंत्र - ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं' दश हजार जाप करे।
४. बुधग्रह-शान्तिकारक मंत्र - ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं दश हजार जाप करे।
५. गुरुग्रह-शान्तिकारक मंत्र - ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं दश हजार जाप करे।
६. शुक्रग्रह-शान्तिकारक मंत्र - ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं दश हजार जाप करे।
७. शनिग्रह-शान्तिकारक मंत्र - ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं दश हजार जाप करे।
८. राहुग्रह-शान्तिकारक मंत्र - ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं दश हजार जाप करे।
९. केतु-शान्तिकारक मंत्र - ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं दश हजार जाप करे।

आवश्यक सूचना - जब तक जिस ग्रह की दशा रहे तब तक उस ग्रह का शान्तिकारक मंत्र की १ माला प्रतिदिन तब तक फेरे - जब तक कि दश हजार संख्या पूर्ण न हो।

अथवा -

१. सूर्यग्रह-शान्ति के लिए - श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः का दश हजार जाप करे।
२. चन्द्रग्रह-शान्ति के लिए - 'श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः' " "
३. मंगलग्रह की शान्ति के लिए - श्री वासुपूज्याय नमः' " "
४. बुधग्रह की शान्ति के लिए - श्री विमल-अनन्त-धर्म-शान्ति-कुन्थु-अर-नमि-वर्धमान जिनेन्द्रेभ्यो नमः' का दश हजार जाप करे
५. गुरुग्रह की शान्ति के लिए - श्री ऋषभ-अजित-संभव-अभिनन्दन-सुमति-सुपार्श्व-शीतल-श्रेयान्स जिनेन्द्रेभ्यो नमः का दश हजार जाप करे।
६. शुक्रग्रह की शान्ति के लिए - श्री सुविधिनाथाय नमः का दश हजार जाप करे।
७. शनिग्रह की शान्ति के लिए - श्री मुनिसुव्रताय नमः' का दश हजार जाप करे।
८. राहुग्रह की शान्ति के लिए - श्री नेमिनाथाय नमः,
अथवा - श्री अरिष्टनेमये नमः' का दश हजार जाप करे।
९. केतुग्रह की शान्ति के लिए - श्री मल्लिनाथाय नमः का दश हजार जाप करे।

नवग्रहों के जाप

१. ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं सूर्यग्रहारिष्टनिवारक-श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय नमः, शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा। इस मंत्र का ७००० जाप करे

२. ॐ ह्रीं क्रौं श्रीं क्लीं चन्द्रारिष्ट-निवारक-श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमः, शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा। इस मंत्र का ११००० जाप करे।

३. ॐ आं क्रौं ह्रीं श्रीं क्लीं भौमारिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः, शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा। इस मंत्र का ११००० जाप करे

४. ॐ ह्रीं क्रौं आं श्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्री विमल-अनन्त-धर्म-शान्ति-कुन्थु-अर-नमि-वर्धमान जिनेन्द्रेभ्यो नमः, शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा। इस मंत्र का ८००० जाप करे।

५. ॐ आँ क्रौं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं गुरुअरिष्टनिवारक-श्रीवृषभ-अजित-संभव-अभिनन्दन-सुमति-सुपार्श्व-शीतल-श्रेयान्स जिनेन्द्रेभ्यो नमः, शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा। इस मंत्र का १९००० जाप करे।

६. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं शुक्र-अरिष्टनिवारक-श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय नमः, शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा। इस मंत्र का १६००० जाप करे।

७. ॐ ह्रीं क्रौं ह्रीं श्री शनिग्रहारिष्टनिवारक-श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय नमः, शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा। इस मंत्र का २३००० जाप करे।

८. ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं हूं राहुग्रहारिष्टनिवारक-श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय नमः, शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा। इस मंत्र का १८००० जाप करे।

९. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं केतु-अरिष्टनिवारक-श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय नमः, शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा। इस मंत्र का ७००० जाप करे।

नवग्रह-शान्तिस्तोत्र

जगद्-गुरुं नमस्कृत्य श्रुत्वा सद्गुरुभाषितम्।
ग्रहशान्तिं प्रवक्ष्यामि लोकानां सुखहेतवे ॥१॥
जिनेन्द्राः खेचरा ज्ञेया पूजनीया विधिक्रमात्।
पुष्पैर्विलेपनैर्धूपैर्नैवेद्यैस्तुष्टिहेतवे ॥२॥
पद्मप्रभस्य मार्तण्डश्चन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च।
वासुपूज्यस्य भूपुत्रो बुधश्चाष्टजिनेशिनाम् ॥३॥
विमलानन्त धर्मेशाः शान्तिः कुन्थुर्नमिस्तथा।
वर्धमान जिनेन्द्रस्य पादपद्मं बुधो नमेत् ॥४॥
ऋषभाजित सुपार्श्वाः साभिनन्दन-शीतलौ।
सुमतिः संभवस्वामी श्रेयान्सेषु बृहस्पतिः ॥५॥
सुविधिः कथितः शुक्रे सुव्रतश्च शनैश्चरे।
नेमिनाथो भवेद् राहोः केतुः श्रीमल्ल-पार्श्वयोः ॥६॥
जन्मलग्नं च राशिं च यदि पीडयन्ति खेचराः
तदा सम्पूजयेद् धीमान खेचरान् सह तान् जिनान् ॥७॥
आदित्य-सोम-मङ्गल-बुध-गुरु शुक्रे शनिः।
राहु-केतु मेवाग्रे या जिनपूजाविधायकः ॥८॥
जिना नमोग्रतयो हि ग्रहाणां तुष्टिहेतवे।
नमस्कारशतं भक्त्या जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥९॥
भद्रबाहु गुरुर्वाग्मी पञ्चमः श्रुतकेवली।
विद्यानुवादतः पूर्वाद् ग्रहशान्तिविधिः कृता ॥१०॥
यः पठेत् प्रात उत्थाय शुचिर्भूत्वा समाहितः।
विपत्तितो भवेच्छान्तिः क्षेमं तस्य पदे पदे ॥११॥

—०—

श्रीकल्याणमन्दिर स्तोत्र-पूजन

श्रीमद्-गीर्वाणसेव्यं प्रबलतर महामोह मल्लातिमल्लं,
कान्तं कल्याणनाथं कठिनशठ मनोजात मत्तेभसिंहम्।
नत्वा श्रीपार्श्वदेवं कुमुदविधुकृतो रम्यकल्याणधाम्नः,
स्तोत्रस्योच्चैर्विशालं विधिवदनुपमं पूजनं रच्यतेऽत्र ॥
(पुष्पाञ्जलि-क्षेपणम्)

स्थापना

प्राणतस्वः समायातं फणिलाञ्छन-संयुतम्।
वामामातृसुतं पार्श्वं यजेऽहं तद्-गुणाप्तये ॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षर सम्पन्न, श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र देव! मम हृदये अवतर अवतर, संवौषट् (इत्याह्वाननम्)
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षर सम्पन्न, श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र देव! मम हृदये तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनम्)
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षर सम्पन्न, श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र देव, मम हृदये सन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधिकरणम्। पुष्पाञ्जलिक्षेपणम्)

अथाष्टकम्

वियद्-गङ्गासिन्धु-प्रमुखशुचितीर्थाम्बुनिवहैः,
शरच्चन्द्राभासैः कनकमयभृङ्गार निहितैः।
यजेऽहं पार्श्वेशं सुर-नर-खगाधीश महितं,
चिदानन्दप्राज्ञं कमठ-शठ-रचितोपद्रवजितम् ॥१॥
ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
स्फुरद्-गन्धाहूत-प्रचुर-फणिसंरुद्ध-तरुजैः,
रसैः कर्पूराद्यैर्निबिड-भव-सन्तापहरणैः।
यजेऽहं पार्श्वेशं सुर-नर-खगाधीश महितं,
चिदानन्दप्राज्ञं कमठ-शठ-रचितोपद्रवजितम् ॥२॥
ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्री पार्श्वनाथाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
अखण्डैः शालीयैरपगततुषैरक्षतमयैः
प्रपुञ्जैरानन्दप्रणयजनकैर्नेत्र-मनसाम्।
यजेऽहं पार्श्वेशं सुर-नर-खगाधीश महितं,
चिदानन्दप्राज्ञं कमठ-शठ-रचितोपद्रवजितम् ॥३॥
ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
मरुद्वारुकूलैर्विकचसरसीजात-बकुलैः,
लवङ्गैरामोद-भ्रमर-मिलितैः पुष्पनिचयैः।
यजेऽहं पार्श्वेशं सुर-नर-खगाधीश महितं,
चिदानन्दप्राज्ञं कमठ-शठ-रचितोपद्रवजितम् ॥४॥
ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

*** माड़ना—श्रीकल्याणमन्दिर पूजा ***

सदन्नैरापूर्ण-प्रचुर-घृत-पक्वान्न सहितैः,
रसाढ्यैर्नैवेद्यै रतुल काञ्चन पात्र विधृतैः।
भजेऽहं पार्श्वेशं सुर-नर-खगाधीश महितं
चिदानन्द प्राज्ञं कमठरचितोपद्रवजितम् ॥५॥

ओं ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छविर्जातैः रम्यैर्विदलितदिशाकीर्ण तमसैः,
प्रदीप्तैर्माणिक्यैर्विशदकलधौतार्चिरमलैः।
भजेऽहं पार्श्वेशं सुर-नर-खगाधीश महितं,
चिदानन्द प्राज्ञं कमठ-रचितोपद्रवजितम् ॥६॥

ओं ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुकर्पूरोत्पन्नैरमरतरु-सच्चन्दनभवैः,
सुधूपोघैः श्लाघ्यैर्मिलदलिगणागुञ्जितरवैः।
भजेऽहं पार्श्वेशं सुर-नर-खगाधीशमहितं,
चिदानन्द प्राज्ञं कमठरचितोपद्रवजितम् ॥७॥

ओं ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्री पार्श्वनाथाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुपक्वैर्नारङ्ग-क्रमुक-शुचिकूष्माण्ड-कदलैः,
फलैर्मोचाम्राद्यैर्विबुध शिवसम्पद्-वितरणैः।
भजेऽहं पार्श्वेशं सुर-नर-खगाधीशमहितं
चिदानन्द प्राज्ञं कमठरचितोपद्रवजितम् ॥८॥

ओं ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्री पार्श्वनाथाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलैर्गन्धद्रव्यैर्विशदसदकैः पुष्प-चरुकैः,
सुदीपैः सद्-धूपैर्बहुफलयुतैरर्घनिकरैः।
भजेऽहं पार्श्वेशं सुर-नर-खगाधीश महितं
चिदानन्द प्राज्ञं कमठरचितोपद्रवजितम् ॥९॥

ओं ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला —

शताब्दजीवी समशत्रु-मित्रो हरित्प्रभाङ्गो हतमारदर्पः।
सपादचापद्वयतुङ्गकायो यस्तं सदा पार्श्वजिनं नमामि ॥१॥

निराभूषशोभं परिध्वस्त लोभं चिदानन्दरूपं नतानेकभूपम्।
स्तुवे पार्श्वदेवं भवाम्भोधिनाथं त्रिषड्दोषहीनं जगत्पूज्यमानम् ॥२॥

शिवं सिद्धकार्यं वरानन्ततुर्यं रमानाथमीशं जितानङ्गपाशम्।
स्तुवे पार्श्वदेवं भवाम्भोधिनाथं त्रिषड्दोषहीनं जगत्पूज्यमानम् ॥३॥

शतेन्द्रार्च्यपादं स्फुरद्दिव्यनादं गणाधीशमाद्यं लसद्देववाद्यम्।
स्तुवे पार्श्वदेवं भवाम्भोधिनाथं त्रिषड्दोषहीनं जगत्पूज्यमानम् ॥४॥

हरं विश्वनेत्रं त्रिशुभ्रातपत्रं क्षुधावह्निनीरं द्विधासङ्गदूरम् ।
स्तुवे पार्श्वदेवं भवाम्भोधिनाथं त्रिषड्दोषहीनं जगत्पूज्यमानम् ॥५॥
दिशान्चेलवन्तं वरं मुक्तिकान्तं निरस्तारि मोहं प्रुरं सौख्यगेहम् ।
स्तुवे पार्श्वदेवं भवाम्भोधिनाथं त्रिषड्दोषहीनं जगत्पूज्यमानम् ॥६॥
जरा-जन्ममुक्तं वरानन्दयुक्तं हतक्रोधमानं कृतज्ञानदानम् ।
स्तुवे पार्श्वदेवं भवाम्भोधिनाथं त्रिषड्दोषहीनं जगत्पूज्यमानम् ॥७॥
अविद्यापहारं सुविद्यागभीरं स्वयं दीप्तिमूर्तिं जगत्प्राप्तकीर्तिम् ।
स्तुवे पार्श्वदेवं भवाम्भोधिनाथं त्रिषड्दोषहीनं जगत्पूज्यमानम् ॥८॥
यतिवरवृषचन्द्रं चित्कलापूर्णचन्द्रं विमलगुणसमुद्रं नम्रनागामरेन्द्रम् ।
जिनपतिमाहिधारं दुःखसन्तापहारं भजति नमति सारं सौख्यसारं लभेत ॥९॥

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय जयमालार्घं नि० स्वाहा ।

सर्वजीवदयायुक्तः सर्वलोकान्तिकार्चितः ।
पार्श्वदेवः श्रियं दद्यात् , नित्यं पूजाविधायिनाम् ॥१०॥

इत्याशीर्वादः ।

<u>सूचना</u>- पूजन के अन्त में निम्न-लिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें -
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसम्पन्नाय श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः ।

इति पार्श्वनाथ पूजनं समाप्तम् ।

अथ पार्श्वनाथ मण्डल विधानम् -
(अष्टदलकमल पूजा)

मण्डलविधान करनेवालों को चाहिए कि वे पांच वर्ण के रंगे हुए चांवलों के चूर्ण से प्रथम आठ दल का कमल बनावें। पुनः उसे घेर कर सोलह दल की स्थापना करें। तत्पश्चात् उसे घेर कर बीस दल की स्थापना करे। पुनः पूर्व-लिखित पूजन करके निम्न-लिखित मण्डल विधान प्रारम्भ करे।

अष्ट दल कमल पूजा

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि भीताभयप्रदमनिन्दितमङ्घ्रिपद्मम्।
संसारसागरनिमज्जदशेषजन्तु-पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य॥
सन्मङ्गलालयमुदासि कलङ्कहारि, संसारभीतमनसामभयप्रदायि।
जन्माब्धिमध्यगा अनुमतारि यत्पदाब्जं तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥१॥

ओं ह्रीं भवसमुद्रपतज्जन्तुतारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम्।
तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतोस्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये॥
वाचस्पतिर्न गुरुवारिनिधेः समर्थः, कर्तुं धिया स्तवमनन्तगुणस्य यस्य।
तीर्थाधिपस्य कमठोद्धतगर्वहर्तुस्तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥२॥

ओं ह्रीं अनन्तगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूपमस्मादृशः कथमधीश भवन्त्यधीशाः।
धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः॥
संक्षेपतोऽपि भुवि विस्तरितुं महत्त्वं दक्षा भवन्ति न हि तुच्छधियो यदीयम्।
घूका जडा दिनकरस्य यथा स्वरूपं तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥३॥

ओं ह्रीं चिद्रूपाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ मर्त्यो नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत।
कल्पान्तवान्तपयसः प्रकटोऽपि यस्मान्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः॥
निर्मोहि, कोऽपि मनुजो गुणसंहतेर्नो सङ्ख्यां करोति गहनार्थपदस्य यस्य।
रत्नस्य वा प्रलयवायुहतस्य वार्धेस्तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥४॥

ओं ह्रीं गहनगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ, जडाशयोऽपि कर्तुं स्तवं लसदसङ्ख्यगुणाकरस्य।
बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाम्बुराशेः॥
इच्छन्ति मन्दमतयः स्तवनं विधातुं यस्य प्रकृष्टगुणिनः शिशवो यथात्र।
विस्तीर्य बाहुयुगलं जलधेः प्रमाणं तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥५॥

ओं ह्रीं परमोन्नतगुणाय क्लीं बीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश, वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः।
जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि॥
यस्या गुणा यदि महद्भुवां न यस्य, तत्रावकाश इह तुच्छधियां कथं स्यात्।
गायन्ति पक्षिण इवात्र जनास्तथापि तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥६॥
ओं ह्रीं अगम्यगुणाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं नि० स्वाहा।
आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन संस्तवस्ते, नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति।
तीव्रातपोपहतपान्थजनान्निदाघे प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि॥
स्तुत्या भवन्ति मनुजाः सुखिनोऽत्र किं न, नाम्नैव यस्य नलिनाकरस्य।
सूर्यातपार्तपथिकाः शिशिरं यथा नु तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥७॥
ओं ह्रीं स्तवनार्हाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं नि० स्वाहा।
हृद्वर्तिनि त्वयि विभो. शिथिलीभवन्ति जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्मबन्धाः।
सद्यो भुजङ्गमया इव मध्यभागमभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य॥
यस्मिन् स्थिते हृदि विनाशमुपैति बन्धः पापस्य शुद्धमनसो भविनो भयेरे॥
संरुद्धचन्दनगोऽहिरिवात्र याते तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥८॥
ओं ह्रीं कर्मबन्धविनाशकाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

अथ षोडश-दल-कमल पूजा –

मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र, रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि।
गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः॥
दृष्टे पलाशनपराः किल भूतवर्गाः, यस्मिन् विमुच्य मनुजानिह संगृहीतान्।
दोषाचराः पशुपताविव गोसमाजं तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥९॥
ओं ह्रीं दुष्टोपद्रव विनाशकाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं नि० स्वाहा।
त्वं तारको जिन, कथं भविनां त एव, त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः।
यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नूनमन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः॥
संसारिणां भवति यो हृदि संस्थितोऽपि, संतारकः किल निरन्तरचिन्तकानाम्।
भस्त्रागतो मरुदिवाम्बुनिधौ समर्थस्तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥१०॥
ओं ह्रीं सुध्येयाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं नि० स्वाहा।
यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन।
विध्यापिता हुतभुजः पयसाऽथ येन पीतं न किं तदपि दुर्धर-वाडवेन॥
येनाहतं हरि-हरादिमहत्वमुच्चैः सोऽनन्तको जिनवरेण हतो हि येन।
वारांनिधेरिव जलं बडवानलेन तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥११॥
ओं ह्रीं अनङ्गमथनाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामिन्ननल्पपरिमाणमपि प्रपन्नास्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः।
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः॥
यं वाहका हृदि जनाः कथमुत्तरन्ति, संसारवारिधिमहो गुरुमप्यतुल्यम् ।
चिन्त्यो न जातु महतां महिमाऽत्र लोके, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥२२॥
ओं ह्रीं अतिशयगुरवे क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
क्रोधस्त्वया यदि विभो प्रथमं निरस्तो, ध्वस्तास्तदा वद कथं किल कर्मचौराः।
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरापि लोके नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी॥
जित्वा क्रुधं पुनरलं शठमोहदस्युर्येन प्रणाशित उदारगुणेन चित्रम् ।
सौम्येन कर्दमजमत्र हिमेन वाऽऽशु तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥२३॥
ओं ह्रीं जितक्रोधाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं नि० स्वाहा ।
त्वां योगिनो जिन सदा परमात्मरूपमन्वेषयन्ति हृदयाम्बुजकोशदेशे ।
पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा किमन्यदक्षस्य सम्भवपदं ननु कर्णिकायाः॥
यं साधवो हृदयतामरसे विकासे ध्यायन्ति शुद्धमनसो यत ईड्यमानम् ।
चित्ताहृतेन हि पदं वपुषीह पूतं तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥२४॥
ओं ह्रीं महन्मृग्याय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं नि० स्वाहा ।
ध्यानाज्जिनेश भवतो भविनः क्षणेन, देहं विहाय परमात्मदशां व्रजन्ति ।
तीव्रानलादुपलभावमपास्य लोके चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदाः॥
यस्येह मानव उपैति पदं गरिष्ठं सद्ध्यानतो झटिति संहननं विसृज्य ।
हैमं यथानलवशाद्धि दृषद्विशेषं तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥२५॥
ओं ह्रीं कर्मकिट्टिदहनाय क्लीं बीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं नि० स्वाहा।
अन्तःसदैव जिन यस्य विभाव्यसे त्वं भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ।
एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्तिनो हि यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः॥
योऽन्तर्गतोऽपि भविनो वपुरत्र वेगान्निर्नाशयत्यखिलदुःखमयं विचित्रम् ।
माध्यस्थिकः कलिमिवाशु महात्मः स्वं तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥२६॥
ओं ह्रीं देह-दैहिककलहनिवारकाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुद्ध्या ध्यातो जिनेन्द्र भवतीह भवत्प्रभावः।
पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं किं नाम नो विषविकारमपाकरोति॥
विशुद्धिरत्र यदभिन्नधियात्मा सञ्चिन्तितं फलति मुक्तिपदं हि सद्यः।
मान्यं प्रबोधेति सलिलं विषनाशनं वा तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥२७॥
ओं ह्रीं संसार-विष-सुधोपमाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि, नूनं विभो हरिहरादिधिया प्रपन्नाः।
किं काचकामलिभिरीश सितोऽपि शङ्खो नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण॥
ये ध्वस्तमोहतिमिरं कुपथप्रलग्नाः कृष्णादिबुद्धिमनुदारमुपाश्रयन्ति।
नेत्रामया इव यथार्थविवेकहीनास्तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥१८॥
ओं ह्रीं सर्वजिनवन्द्याय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं नि० स्वाहा।
धर्मोपदेशसमये सविधानुभावादास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः।
अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः॥
सद्धर्मजिनवनविधौ वसुधारुहोऽपि शोकातिरिक्त इह यस्य किमन्यवक्तव्यम्।
भानूदये सति यथा किल वारिजातं तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥१९॥
ओं ह्रीं अशोकवृक्षविराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
चित्रं विभो कथमवाङ्मुखवृन्तमेव विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः।
त्वद्-गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश, गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि॥
रेजे सुरप्रसवसन्ततिवृष्टिरुद्धा स्वामोदवासितदिशावलया यदीया।
यत्पादमाश्रितजना भृशमूर्ध्वगाः स्युस्तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥२०॥
ओं ह्रीं सुरपुष्पवृष्टिशोभिताय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
स्थाने गभीरहृदयोदधिसम्भवायाः पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति।
पीत्वा यतः परमसम्मदसङ्गभाजो भव्या व्रजन्ति तरसाऽप्यजरामरत्वम्॥
गम्भीरहृज्जलधिजातवचो हि यस्य, प्रीणाति चारु जनतामम‍ृतोपमं तत्।
निःस्वाद्य गच्छति जनः किल मोक्षधाम, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥२१॥
ओं ह्रीं दिव्यध्वनिविराजिताय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं नि० स्वाहा।
स्वामिन् सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः।
येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुङ्गवाय, ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः॥
यस्य प्रकीर्णकयुगं वदतीव लोकान्, दुग्धाब्धिफेनधवलं सुरवीज्यमानम्।
वन्दारुरुन्नगतिरेव जिनं स्वदेति, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥२२॥
ओं ह्रीं सुरचामरविराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्यामं गभीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न-सिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्त्वाम्।
आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चैश्चामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम्॥
सद्धेमरत्नमयकेशरिविष्टरस्थं यं भव्यकेकिन अभीक्ष्य नटन्त्यजस्रम्।
जाम्बूनदाचलशिखाघनमन्यमानास्तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥२३॥
ओं ह्रीं पीठत्रयनायकाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

उद्गच्छता तव शितिद्युतिमण्डलेन लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव।
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग, नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि॥
श्यामप्रभावलयतोऽतिविचित्रकान्तिः रेजे ह्यशोकतरुरच्युतभोऽपि यस्य।
संसर्गितो भवति रागयुतो न कोऽत्र, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥२४॥
ओं ह्रीं भामण्डलमण्डिताय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ विंशतिदल-कमल-पूजा –

भो भो प्रमादमवधूय भजध्वमेनमागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाहम्।
एतन्निवेदयति देव जगत्त्रयाय, मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते॥
गीर्वाणदुन्दुभिरतीव वदत्यजस्रमेनं निषेवय जिनं प्रविहाय मोहम्।
यस्य त्रिविष्टपजनाय नदन्नभीक्ष्णं, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥२५॥
ओं ह्रीं देवदुन्दुभिनादाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं नि॰ स्वाहा।
उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ, तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः।
मुक्ताकलापकलितोल्लसितातपत्र-व्याजात् त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः॥
येन प्रकाशित इहेत्य कृतत्रिरूपो लोकत्रयी धवलछत्रमिषेण चन्द्रः।
सोडुग्रहः किमिव यस्य करोति सेवां तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥२६॥
ओं ह्रीं छत्रत्रयसहिताय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं नि॰ स्वाहा।
स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिण्डितेन कान्तिप्रतापयशसामिव सञ्चयेन।
माणिक्य-हेम-रजतप्रविनिर्मितेन सालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि॥
यः शोभते मणि-सुवर्ण-सुरौप्यजेन, तेजःप्रभावशुचिकीर्तिसमुच्चयेन।
शालत्रयेण दिवि चामरनिर्मितेन, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥२७॥
ओं ह्रीं शालत्रयाधिपतये क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं नि॰ स्वाहा।
दिव्यस्रजो जिन नमत्त्रिदशाधिपानामुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबन्धान्।
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र त्वत्सङ्गमे सुमनसो न रमन्त एव॥
मान्यं सुभक्तिभरनम्रसुराधिपानां सन्त्यज्य चारुमुकुटं पदभाजितं हि।
यस्यानिशं सुमनसां महदेव सेव्यं तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥२८॥
ओं ह्रीं भव्यजनावनतिपराय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्वं नाथ जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोऽपि, यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान्।
युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव, चित्रं विभो यदसि कर्मविपाकशून्यः॥२
यत्तारयत्यनुरङ्गमतो विचित्रं, संसारवार्धिविमुखोऽपि सुभक्तियुक्तान्।
यन्नास्तिकामय इवात्र घटोऽम्बुराशौ, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥२९॥
ओं ह्रीं निजपृष्ठलग्नभव्यतारकाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं, किं वाक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश ।
अज्ञानवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतु ॥
यः सर्वलोकजनताधिपतिर्दरिद्रो व्यक्ताक्षरोऽप्यलिपिरित्युदितो महद्भिः ।
ज्ञानी किलाज्ञ इति विस्मयनीयमूर्त्तिस्तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः ॥३०॥
ओं ह्रीं विस्मयनीयमूर्तये श्रीं महाबीजाक्षरसहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं नि० स्वाहा ।

प्राग्भारसम्भृतनभांसि रजांसि रोषादुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि ।
छायापि तैस्तव न नाथ हता हताशो ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥
या लोकमूर्ध्व वितता हि खलेन कोपादुत्थापिता कमठपूर्वचरेण धूलिः ।
आच्छादिता तनुरहो न तयापि यस्य, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः ॥३१॥
ओं ह्रीं कमठोत्थापितधूल्युपद्रवजिताय श्रीं महाबीजाक्षरसहिताय
श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

यद्गर्जदूर्जितघनौघमदभ्रभीमं भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारम् ।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे तेनैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम् ॥
नीरं विमुक्तमसुरेण सवज्रपातं वर्षाभवं घनतरं यदुपद्रवाय ।
तस्यासुरस्य वत दुःखदमेव जातं तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः ॥३२॥
ओं ह्रीं कमठकृतजलधारोपसर्गनिवारकाय श्रीं महाबीजाक्षरसहिताय
श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ध्वस्तोर्ध्वकेश-विकृताकृति-मर्त्यमुण्ड-प्रालम्बभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः ।
प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो यः, सोऽस्याभवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः ॥
पैशाचिको गण उपद्रवभूरियुक्तो दैत्येन यं प्रति नियोजित उद्धतेन ।
तद्दैत्यकस्य पुनरुग्रभयप्रदोऽभूत्, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः ॥३३॥
ओं ह्रीं कमठकृतपैशाचिकोपद्रवजयनशीलाय श्रीं महाबीजाक्षरसहिताय
श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

धन्यास्त एव भुवनाधिप ये त्रिसन्ध्यमाराधयन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः ।
भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः पादद्वयं तव विभो भुवि जन्मभाजः ॥
पादारविन्दयुगलं प्रणमन्ति भक्त्या यस्य प्रशान्तमनसः किल धर्मवित्ताः ।
सत्कृत्यः परिहृताखिलगेहकार्यास्तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः ॥३४॥
ओं ह्रीं धार्मिकवन्दिताय श्रीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं नि० स्वाहा ।

अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश, मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि ।
आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमन्त्रे, किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति ॥
यन्नाम नैव श्रुतमत्र जनेन येन, स प्रायशो हि भववारिनिधौ निमग्नः ।
श्रुत्वा गतः शिवपुरं बहवस्त्रिशुद्ध्या तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः ॥३५॥
ओं ह्रीं पवित्रनामधेयाय श्रीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्मान्तरेऽपि तव पादयुगं न देव, मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम् ।
तेनेह जन्मनि मुनीश पराभवानां जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥
यत्पादपङ्कजमलं न हि येन पूतं, सम्पूजितं जगति संसरणान्तरेऽसि ।
दुःखाश्रितां भवति सोऽग्रचरः सदैव, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः ॥३६॥
ओं ह्रीं पूतपदाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं नि० स्वाहा ।
नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं विभो सकृदपि प्रविलोकितोऽसि ।
मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः प्रोद्यत्प्रबन्धगतयः कथमन्यथैते ॥
मोहान्धकारपटलावृतचक्षुषा यो नैवेक्षितो भुवि जवञ्जवकूपगेन ।
येनात्र तस्य मनुजत्वमलं निरर्थं, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः ॥३७॥
ओं ह्रीं दर्शनीयाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं नि० स्वाहा ।
आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या ।
जातोऽस्मि तेन जनबान्धव दुःखपात्रं, यस्मात् क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः ॥
किं वा श्रुतोऽपि यदि येन सुपूजितोऽपि, किं वीक्षितोऽपि हृदि भक्तिभराद् धृतो न,
यस्तस्य नैव फलदः खलु हीनभक्तेस्तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः ॥३८॥
ओं ह्रीं भक्तिहीनजनमाध्यस्थाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल हे शरण्य, कारुण्यपुण्यवसते वशिनां वरेण्य ।
भक्त्या नते मयि महेश दयां विधाय दुःखाङ्कुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥
वात्सल्यवान्, जननदुःखकदर्थितेषु यः प्रत्यहं नतजनेषु दयासमुद्रः ।
सद्भक्तिभावकलितेषु भवं शरण्यस्तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः ॥३९॥
ओं ह्रीं भक्तजनवत्सलाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं नि० स्वाहा ।
निःसंख्यसारशरणं शरणं शरण्यमासाद्य सादितरिपु प्रथितावदातम् ।
त्वत्पादपङ्कजमपि प्रणिधानवन्ध्यो वन्ध्योऽस्मि तद् भुवनपावन हा हतोऽस्मि ।
भूयिष्ठभाग्यसदनं मदनाग्निनीरं, यत्पादतामरसयुग्ममनल्पतेजः ।
सम्पूज्य गच्छति जनः शिवतामनर्घ्यं तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः ॥४०॥
ओं ह्रीं सौभाग्यदायकपदकमलयुगाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय अर्घ्यं नि० स्वाहा ।
देवेन्द्रवन्द्य विदिताखिलवस्तुसार, संसारतारक, विभो, भुवनाधिनाथ !
त्रायस्व देव करुणाह्रद, मां पुनीहि, सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः ॥
त्रैविष्टपनाथनुतपादपयोजयुग्मस्त्राता भवाम्बुनिधिमग्नशरीरभाजाम्,
यः सर्वलोकपरमार्थपदार्थवेदी तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः ॥४१॥
ओं ह्रीं सर्वपदार्थवेदिने क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं नि० स्वाहा ।
यद्यस्ति नाथ भवदङ्घ्रिसरोरुहाणां भक्तेः फलं किमपि सन्ततसञ्चितायाः ।
तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य भूयाः, स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥

यत्पूर्वजन्मकृतपुण्यवतां जनानां संभाव्यते भव-भवेऽपि हि यस्य सेवा।
उन्मार्गवासितवतां ननु पापभाजां तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥४२॥
ओं ह्रीं पुण्यबहुजनसेव्याय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं नि॰ स्वाहा।
इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र, सान्द्रोल्लसत्पुलककञ्चुकिताङ्गभागाः।
त्वद्बिम्बनिर्मलमुखाम्बुजबद्धलक्ष्याः ये संस्तवं तव विभो रचयन्ति भव्याः॥
यन्मूर्तिरम्यवदनाम्बुजदत्तनेत्रा, ये मानवाः स्तुतिसुधारसमापिबन्ति।
नूनं भवन्ति सततं मरणातिगास्ते, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥४३॥
ओं ह्रीं जन्ममृत्यु निवारकाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जननयनकुमुदचन्द्र-प्रभास्वराः स्वर्गसम्पदो भुक्त्वा।
ते विगलितमलनिचया अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते॥
ये लोकनेत्रकुमुदेन्दुनिभं प्रतुष्टाः सम्पूजयन्ति यमनन्तचतुष्टयाढ्यम्।
ते मोक्षमव्ययपदं ध्रुवमाप्नुवन्ति, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः॥४४॥
ओं ह्रीं कुमुदचन्द्रयतिसेवितपादाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काशीदेशे वाराणसीपुरीशो यो बालत्वे प्राप्तवैराग्यभावः।
देवेन्द्राद्यैः कीर्तितं तं जिनेन्द्रं पूर्णार्घेण प्रार्चये वाङ्मुखेन॥
ओं ह्रीं सर्वगुणसम्पन्नाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ समुच्चय जयमाला

शतमखनुतपादं शान्तकर्मारिचक्रं शम-दम-यमगेहं शङ्करं सिद्धकार्यम्।
सरसिजदलनेत्रं सर्वलोकान्तिकार्च्यं सकलगुणनिधानं संस्तवे पार्श्वदेवम्॥१॥

भवजलनिधिपतता सुतरणं देवमनन्तगुणं जनशरणम्।
चिद्रूपं बहुगुणसमुदायं सुनाम गुणगण-हतभवपाशम्॥२॥
रम्यारम्यगुणस्तवनीयं कर्मबन्धनिर्बन्धमजेयम्।
दुष्टोपद्रवनाशनवीरं सुध्येयं जितमन्मथशूरम्॥३॥
गरिमाक्रोधमहानलकुशदं हृदि ध्येयं महतामतिविशदम्।
कर्मदाह तीव्राग्निमतुल्यं गतपरमात्मपदं गतशल्यम्॥४॥
संसृतिविषहरणामृतकूपं पदनतनाग-नराभरभूपम्।
तुङ्गशोकमहीरुहसरितं मुकुटमरीचिरचितं सुरमहितम्॥५॥
योजनमितदिव्यध्वनिनिनदं सुरचामरवीज्यं हृतविपदम्।
पीठत्रयनायकमघमथनं हरिलविभावलयं गुणसदनम्॥६॥

यानवारि दुन्दुभि सद्ध्वानं श्वेतातपवारण गुणमानम्।
मणि हेमार्जुनशाल श्रितयं पदनतभक्तजनावनसुदयम्॥७॥
पृष्ठलग्नजनतारणदक्षं विस्मयनीयं हतमदकक्षम्।
हतकमठोत्थापित बहुधूलिं जितमुसलोपमजलधारालिम्॥८॥
हतलेशान्वितविप्लवजालं नतधर्मिष्ठजनं गुणमालम्।
पूतनामधेयं शिवभाजं वरपवित्रपादं जिनराजम्॥९॥
दर्शनीयमपहतघनपापं भक्तिहीनभविमध्यमरूपम्।
भक्तिनम्रजनवत्सलवन्तं भूरिभाग्यदायकमरिहन्तम्॥१०॥
लोकालोकपदार्थविवेचं, पदनतसुकृतिजनैरभिवन्द्यम्।
जन्म-जरा-मरणस्युतदेवं, कुन्दकुन्दयतिकृतपदसेव्यम्॥११॥

घत्ता

विश्वादिसेनान्वयव्योमतिग्मं, सद्रत्नवारां निधि धर्मचन्द्रम्।
देवेन्द्रसत्कीर्तितिपादयुग्मं श्रीपार्श्वनाथं प्रणमामि भक्त्या॥१२॥
ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं क्रूरकमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय
जयमालार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यः प्राग् विप्र इभोऽनु द्वादशदिवि, स्वर्गी ततः खेचरः,
पश्चादच्युतकल्पजो निधिपतिः ग्रैवेयके मध्यमे।
इन्द्रोऽभूत्तत ईशितां शुभवज्रः, आनन्दनामाऽऽनते,
गीर्वाणस्तत उग्रवंशतिलकः पार्श्वेट् स नो रक्षतात्॥१३॥
(इत्याशीर्वादः)

गुणे वेदाङ्कचन्द्राब्दे शाके फाल्गुनमासके।
कारंजाख्यपुरे नूनं पूजेयं सुविनिर्मिता॥१४॥

—०—

श्री कल्याणमन्दिर स्तोत्र

अभीप्सित-कार्य-सिद्धि दायक

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि भीताभयप्रदमनिन्दितमङ्घ्रिपद्मम् ।
संसारसागरनिमज्जदशेषजन्तुपोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥१॥
यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम् ।
तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतोस्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥२॥

हिन्दी पद्य~~नुवाद~~ —

कल्याण-धाम, भव-नाशक, पाप-हारी, ज्यों हैं जहाज भव-सिन्धु-पड़े जनों के ।
निन्द्य-विहीन, अतिसुन्दर, सौख्यकारी, पादारविन्द प्रभु के नमि के उन्हीं के ॥१॥
श्री पार्श्वनाथ विभु का स्तव मैं रचूंगा, जो नाथ हैं कमठ-विघ्न-विनाश-कर्ता ।
ज्यों हैं अशक्त जिनके स्तव को बताने, अत्यंत बुद्धि-धन श्री गुरु जो सुरों का ॥२॥

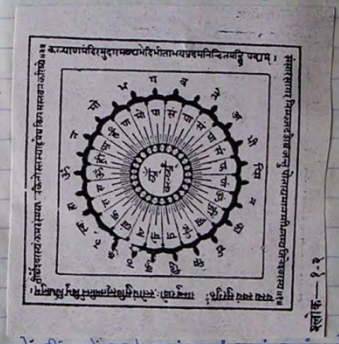

ऋद्धि — ओं ह्रीं अर्हं णमो पासं पासं पासं फणं । ओं ह्रीं अर्हं णमो ~~[illegible]~~ इट्ठकज्जसिद्धियराणं जिणाणं । ओं ह्रीं अर्हं सव्वं करणं ओहिजिणाणं ।

मन्त्र — ओं नमो भगवते अभीप्सित कार्यसिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा । ओं ह्रीं ~~[illegible]~~

फल — इस ऋद्धि-मंत्र के जाप से लक्ष्मी का लाभ और मनोवांछित कार्य सिद्ध होते हैं । वाद-विवाद में विजय होती है। प्रतिवादी की जबान बन्द होती है।

विधि — लाल वस्त्र धारण कर, लाल वर्ण की माला लेकर किसी ऊंचे स्थान पर लाल आसन के ऊपर बैठकर ६० दिन तक प्रतिदिन १००८ बार ऋद्धि-मंत्र का जाप करे, निर्धूम अग्नि में कपूर, चन्दन, शिलाजीत मिश्रित धूप खेवे । यंत्र पास रखे।

मंत्र-साधना के पश्चात् १०८ बार ऋद्धि मंत्र का जाप करके प्रतिवादी से वाद-विवाद करने पर विजय प्राप्त होती है और प्रतिवादी का मुख बन्द हो जाता है । यंत्र पास रखे।

ओं ह्रीं कमठस्मय धूमकेतूपमाय श्री जिनाय नमः ।

जल-भय-निवारक

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप मस्मादृशाः कथमधीश भवन्त्यधीशाः।
धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ॥३॥

हिन्दी पद्य—

तेरा स्वरूप कुछ भी कहने समर्थ, होवे प्रभो! किस तरह मुझ से मनुष्य।
हो धीठ भी किस तरह पर घूक बाल, या घूक ही कह सके रविका सुरूप ॥३॥

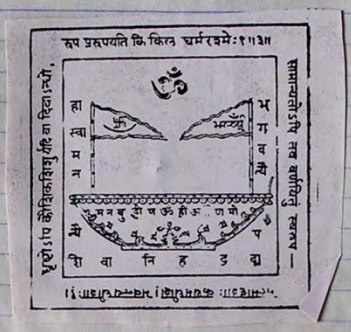

ऋद्धि- ओं ह्रीं अर्हं णमो समुद्दभयसायणबुद्धीणं परमोहिजिणाणं।
मंत्र- ॐ भगवत्यै पद्मह्रहानिवासिन्यै नमः स्वाहा।

फल — ऋद्धि-मंत्र के जाप करने से समुद्र में नाव या जहाज का और जल का भय दूर होता है।
विधि- मूंगा की माला लेकर एकान्त में पश्चिम की ओर मुख कर श्वेत आसन पर बैठकर २७ दिन तक प्रतिदिन १००८ बार ऋद्धि-मंत्र का जाप करे। निर्धूम अग्नि में गूगल, चन्दन, धूप-दशांग विशेष धूप खेवे। यंत्र पास रखे।

मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ मर्त्यो नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत ।
कल्पान्त वान्तपयसः प्रकटोऽपि यस्मान्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥४॥

हिन्दी ~~पद्यानुवाद~~

है जानता हृदय में गुण, मोह छूटे, तेरे मनी गिन नहीं सकता परन्तु ।
कल्पान्त में जलधि के सब रत्न दीखें, अन्दाज कौन सकता कर है उन्हों का ॥४॥

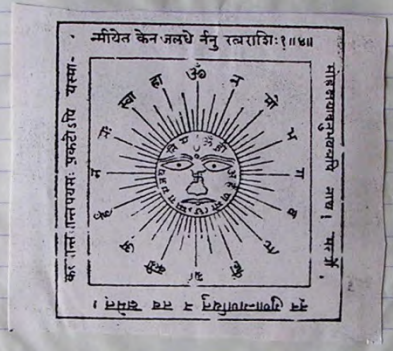

ऋद्धि - ओं ह्रीं अर्हं णमो अकालमिच्चुवारयाणं सव्वोहिजिणाणं ।
मंत्र - ओं नमो भगवते ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं नमः स्वाहा ।
फल - इस ऋद्धि-मंत्र के प्रभाव से गर्भपात या अकाल मरण नहीं होता और मनुष्य दीर्घजीवी होता है ।
विधि - एकान्त में पूर्व की ओर मुख कर पीले रंग के आसन पर बैठ कर प्रतिदिन प्रातःकाल १००८ बार ऋद्धि-मंत्र का जाप कमलगट्टे की माला से करे, निर्धूम अग्नि में गूगल, चन्दन, कपूर की मिश्रित धूप खेवे । प्रतिदिन एकाशन, भूमिशयन और ब्रह्मचर्य धारण करे ।

प्रच्छन्न-धन-प्रदर्शक

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ जडाशयोऽपि कर्तुं स्तवं लसदसंख्य गुणाकरस्य।
बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाऽम्बुराशेः॥५॥

हिन्दी पद्यानुवाद –

तू है असंख्य गुण-शोभित, मूढ़ हूँ मैं, तेरा तथापि रचने स्तव मैं खड़ा हूँ।
फैला भुजा स्व-मति के अनुसार क्या है – विस्तीर्णता जलधि की शिशु भी बताता॥५॥

ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हं णमो णोघणबुद्धिकराणं अणंतो हिजिणाणं।
मन्त्र – ॐ पाद्मिने नमः।
फल – इस ऋद्धि-मंत्र के जाप से चोरी गया हुआ, गुमा हुआ और भूमि में गड़ा हुआ धन प्राप्त होता है।
विधि – स्फटिक की माला लेकर श्वेत आसन पर पूर्व की ओर मुखकर पद्मासन से बैठ कर ४९ दिन तक प्रतिदिन १००८ बार ऋद्धि-मंत्र का जाप करे, निर्धूम अग्नि में गूगल, कुंदरु, कपूर, चन्दन मिश्रित धूप खेवे।

सन्तान-सम्पत्ति-प्रसाधक

ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः।
जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि॥६॥

हिन्दी पद्यानुवाद –

योगीश भी गिन नहीं सकते गुणों को, तेरे प्रभो! फिर भला मन क्या चलाऊँ?
मेरी हुई यह मनीषा बिना विचारी, या बोलते विहग भी अपनी गिरा से॥६॥

ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हं णमो कुट्ठ-बुद्धियाणं कोट्ठबुद्धीणं।
मंत्र – ॐ नमो भगवते ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं श्रां श्रीं क्षां क्षीं म्रौं ह्रौं नमः स्वाहा।
फल – उक्त ऋद्धि-मंत्र के जाप से सन्तान और सम्पत्ति की प्राप्ति होती है।
विधि – कमल गट्टे की माला लेकर दक्षिण की ओर मुख करके हरे रंग के आसन पर बैठकर ४० दिन तक प्रतिदिन ऋद्धि-मंत्र का जाप करे। गिरी, गूगल, चन्दन लवंग मिश्रित धूप खेवे।

अभीप्सित-जनाकर्षि

आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन संस्तवस्ते नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति।
तीव्रातपोपहतपान्थजनान् निदाघे प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥७॥

हिन्दी पद्यानुवाद-

माहात्म्य तो स्तवन का तव है अचिन्त्य, है नाम ही त्रिजग को भव से बचाता।
जो ग्रीष्म में पथिक आतप से सताये, देती उन्हें सुख सरोवर की हवा ही ॥७॥

ऋद्धि- ओं ह्रीं अर्हं णमो माहणे झाणाणं।

मंत्र - ॐ नमो भगवते शुभाशुभं कथयित्ते स्वाहा।

फल - उक्त ऋद्धि-मंत्र के जाप से परदेश गया स्वजन शीघ्र घर वापिस आता है, कुशल-समाचार मिलता है। मंत्र को पास रखने से साधक जिसकी इच्छा करता है, वह समीप आता है।

विधि- मूंगे की माला से नैऋत्य दिशा की ओर मुख कर रात्रि के समय भगवां रंग के आसन पर बैठकर २७ दिन तक प्रतिदिन १००८ जाप करें। अग्नि में गूगल, लोबान, चन्दन और प्रियंगुलता मिश्रित धूप खेवें।

(कुपितोपदंश-विनाशक, सर्प-वृश्चिक-विष-विनाशक

हृद्वर्तिनि त्वयि विभो शिथिलीभवन्ति जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्मबन्धाः ।
सद्यो भुजङ्गममया इव मध्यभागमभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य ॥८॥

हिन्दी पद्यानुवाद

तू लोक के हृदय में यदि हो, विभो! तो, ढीले तुरन्त पड़ते दृढ़ कर्म-बन्ध ।
आया मयूर वन का कि भुजंग जैसे, ढीले पड़ें तुरत चन्दन-बन्ध छोड़ ॥८॥

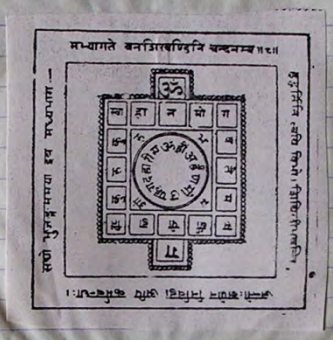

~~१-ऋद्धि~~

१ ऋद्धि — ओं ह्रीं अर्हं णमो उग्गहरहारीणं पादाणुसारीणं ।

मंत्र — ॐ नमो भगवते मम सर्वाङ्ग पीडा शांति कुरु कुरु स्वाहा ।

फल — उक्त ऋद्धि-मंत्र को पहले सिद्ध कर लेवे। पीछे इसे पढ़ते हुए साँप से काटे हुए ~~कुत्ता~~ व्यक्ति को १०८ बार झाड़ने से सर्प-विष दूर होता है। पित्तज्वर सर्व प्रकार के ज्वर शांत होते हैं।

विधि — चाँदी की माला लेकर ईशान कोण की ओर मुख करके डाभ के आसन पर बैठकर १४ दिन तक प्रतिदिन १००८ बार ऋद्धि-मंत्र का जाप करे। निर्धूम अग्नि में गूगल, कुन्दरू और श्वेत चन्दन मिश्रित धूप खेवे।

तस्कर-भय-
~~[illegible]~~ विनाशक

मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि।
गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥९॥

हिन्दी पद्य—

त्यागें अवश्य सहसा तुमको विलोक, लाखों उपद्रव महेश्वर! मानवों को
तेजस्वि गोपति विलोकन-मात्र से ही, ज्यों चोर छोड़ भगते पशु-वृन्द को हैं ॥९॥

ऋद्धि— ॐ ह्रीं अर्हं णमो को पं हं सः।

मंत्र— ॐ ह्रीं श्रीं ह्लीं त्रिभुवन हूं स्वाहा।

फल— उक्त ऋद्धि-मंत्र को सिद्ध करे। पीछे कहीं जाते समय २१ बार मंत्र बोलकर जाने से मार्ग में चोर आदि का एवं अन्य उपद्रवों का भय नहीं रहता।

विधि— रुद्राक्ष की माला से आग्नेय कोण की ओर मुख करके काले रंग के आसन पर पद्मासन से बैठकर दिवाली के दिन निराहार रहकर १४ हजार का दिवाली के दिन से १४ दिन तक प्रतिदिन १-१ हजार ऋद्धि-मंत्र का जाप करे। अग्नि में गूगल, राल, और सुन्दरस-मिश्रित धूप खेवे।

त्वं तारको जिन कथं भविनां त एव त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः।
यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेव नूनमन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः॥१०॥

हिन्दी पद्य

तू तारता किस तरा भवि मानवों को, वे ही तुम्हे हृदय में रखके तिराते।
या वारि में मशक जो तिरती किन्तु है, सो है प्रभाव बस भीतर की हवा का॥१०॥

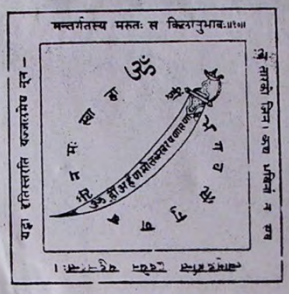

ऋद्धि - ओं ह्रीं अर्हं णमो तवुग्गतवाणं उग्गतवीणं।
१. मंत्र - ॐ ह्री भगवत्यै गुणवत्यै नमः स्वाहा।
२. मंत्र - ओं ह्रीं चक्रेश्वरि चक्रधारिणि जल-जलनिधि- पारोत्तारिणि जलं स्तम्भय स्तम्भय दुष्टान् दैत्यान् त्रासय त्रासय, अशिवोपशमं कुरु कुरु क्रौं ठः ठः ठः स्वाहा।
फल - मंत्र सिद्ध करने के पश्चात् जलादि का भय होने पर २१ बार मंत्र पढ़ने पर इस प्रकार का चोरादिक का जल-भय दूर होता है।
विधि - सोने की या पीले रंग की माला से वायव्य कोण की ओर मुख कर पीले रंग के आसन पर बैठ कर १८ दिन तक प्रतिदिन १ हजार ऋद्धि-मंत्र का जाप करें। अग्नि में गूगल, सार और कुन्दरू मिश्रित धूप खेवे।

जलाग्नि-भय-विनाशक

यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन।
विध्यापिता हुतभुजः पयसाऽथ येन पीतं न किं तदपि दुर्धरवाडवेन ॥११॥

हिन्दी पद्य

जिससे प्रभाव चलता न बड़े सुरों का, तूने किया वश, जिसे! उस काम को भी।
देता बुझा सलिल सो सब वह्नियों को, सो वाड़वाग्नि पर जोर चला न सकता ॥१२॥

ऋद्धि- ओं ह्रीं अर्हं णमो वारियाणल बुद्धीणं विउलमदीणं।

मंत्र- ॐ सरस्वत्यै गुणवत्यै नमः स्वाहा।

फल- यन्त्र पास में रखने से साधक पानी में नहीं डूबता है। अग्नि का भय नहीं रहता। बीमारी में ऋद्धि-मंत्र का स्मरण करने से कुदेव व आधि-व्याधियाँ दूर होती हैं।

विधि- श्वेत चन्दन की माला से ईशान कोण की ओर मुख कर श्वेत आसन पर बैठकर १९ दिन तक प्रतिदिन एक हजार जाप करे। चन्दन, नागरमोथा, कपूर कचरी और चीनी मिश्रित धूप खेवे।

अग्नि-भय-विनाशक

स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः।
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यति लाघवेन चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः॥ १२॥

हिन्दी पद्य—

अत्यन्त गौरव विभो! तुम में दिखाता, कैसे तुम्हें फिर धरें हिय में मनुष्य?
संसार-सिन्धु तरते श्रम के बिना ही, जाना प्रभाव नहिं जाय महा जनों का॥ १२॥

ऋद्धि— ओं ह्रीं अर्हं णमो अगासगामि वज्जेयाणं दसपुव्वीणं।

मंत्र— ~~ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः असि आ उसा मे वांछितं कुरु कुरु स्वाहा।~~

ॐ णमो भगवत्यै चण्डिकायै नमः स्वाहा।

फल— इस के प्रभाव से अग्नि-भय दूर होता है। उक्त ऋद्धि मंत्र से मंत्रित जल अग्नि पर डालने से वह शान्त हो जाती है। साधक समुद्र पार हो जाता है और उसी वांछित कार्य सिद्ध होते हैं।

विधि— स्फटिक की माला से नैऋत्य कोण की ओर मुख कर, श्वेत आसन पर पद्मासन से बैठकर ७ दिन तक प्रतिदिन तीन हजार या २१ दिन तक प्रतिदिन एक हजार जाप करे। अग्नि में मिश्री, कपूर, गूगल और घी-मिश्रित धूप खेवे।

जल-मिष्ट-कारक

क्रोधस्त्वया यदि विभो प्रथमं निरस्तो ध्वस्तास्तदा बत कथं किल कर्मचौराः।
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥ १३॥

हिन्दी पद्य

तूने प्रभो! प्रथम ही यदि रोष मारा, मारे बता किस तरह फिर कर्म-चोर।
या लोक में इस जगत नहिं नमा जलाता, पाला सुशीतल, हरे तरु के वनों को ॥ १३॥

ऋद्धि - ओं ह्रीं णमो दुक्ख भय वज्जेकाणं चोद्दस पुव्वीणं।

मंत्र - ॐ नमो भगवत्यै चामुण्डायै नमः स्वाहा।

फल - ऋद्धि-मंत्र से झारी को मंत्रित जल से भरकर (१०८ बार) खारे जल वाले कूप या बावड़ी में सात दिन तक लगातार डालने से पानी मीठा हो जाता है।

विधि - जायफल की माला लेकर पश्चिम की ओर मुख कर लाल रंग के आसन पर बैठकर ७ दिन तक प्रतिदिन तीन हजार जाप करे। अग्नि में गूगल, चन्दन और घी-मिश्रित धूप खेवे।

160 शत्रु-स्नेह-कारक 49

त्वां योगिनो जिन सदा परमात्मरूप मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुज कोश देशे ।
पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा किमन्यदक्षस्य संभवपदं ननु कर्णिकाया:॥१४॥

हिन्दी पद्य

स्वामिन्! सदा हृदय के बिच ढूंढ़ते हैं, योगीन्द्र भी तुम परात्पर देवता को ।
क्या कर्णिका तज कहीं दूसरी जगा पै, होता पवित्र अति निर्मल पद्म-बीज ? १४॥

ऋद्धि– ओं ह्रीं णमो भंसण भयरुवणाणं अट्ठंगमहाणिमित्त कुसलाणं ।
मंत्र– ओं नमो महारावि महाकाल नये नमः स्वाहा ।
फल– उक्त ऋद्धि-मंत्र के जापसे शत्रु मित्र बन जाता है।
विधि– रीठा की माला लेकर दक्षिण की ओर मुख करके काले रंग के आसन पर बैठकर मूल नक्षत्र से हस्त नक्षत्र पर्यन्त १५ दिन तक प्रतिदिन एक हजार बार ऋद्धि-मंत्र का जाप करे। अग्नि में गूगल, लाल मिर्च, गिरी, और नमक-मिश्रित धूप खेवे।

161 चोरित-गत-द्रव्य-दायक 50

ध्यानाज्जिनेश भवतो भविनः क्षणेन देहं विहाय परमात्म दशां व्रजन्ति।
तीव्रानलादुपलभावमपास्य लोके चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदा:॥१५॥

हिन्दी पद्य

हे नाथ! ध्यान करके भवि लोक तेरा, पाते तुरन्त तन छोड़ परेशता को ।
तीव्राग्नि-ताप-वश पत्थर-भाव छोड़, पाते सुवर्णपन धातु-विशेष ज्यों हैं ॥१५॥

ऋद्धि– ओं ह्रीं अर्हं णमो तत्तवर घोरतवाणं विउव्वणइड्डिपत्ताणं।
मंत्र– ॐ नमो गंधारिये: नम: श्रीं क्लीं ऐं ब्लूं हुं स्वाहा ।
फल– चोरी गई वस्तु वापिस मिलती है।
विधि– लाल सूत की माला से उत्तर की ओर मुख करके हरे रंग के आसन पर बैठकर १४ दिन तक प्रतिदिन ऋद्धि मंत्र का एक हजार जाप करे। अग्नि में कुन्दरू और गूगल-मिश्रित धूप खेवे।

विग्रह-विनाशक
गहन वन-पर्वत-भय-विनाशक

अन्तः सदैव जिन यस्य विभाव्यसे त्वं भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ।
एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्तिनो हि यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः॥८६॥

हिन्दी पद्य

ध्याते सुभव्य तुमको जिसमें सदा ही, कैसे विनाश करता उस देह का तू ?
मध्यस्थ का यह मनोहर रूप ही है, या नाथ! जो विकट विग्रह को नशावे ॥८६॥

ऋद्धि- ओं ह्रीं अर्हं णमो गहणवणभयप्पणासयाणं विज्जाहराणं ।
मंत्र- ~~विग्रह~~ ओं ह्रीं विग्रह निवारकाय श्रीपार्श्वनाथाय नमः ।
ओं ह्रीं नमो भौमै इन्द्राये वज्राये ह्रीं नमः स्वाहा ।
फल- गहन वन-पर्वतादि में भय दूर होता है और कलह-विग्रह की शान्ति होती है। वनादि में जाते समय ऋद्धि मंत्र का मनमें जाप करता जावे ।
विधि- स्फटिक की माला से वायव्य कोण की ओर मुख कर श्वेत आसन पर बैठ कर ७ दिन तक प्रतिदिन एक हजार जाप करे। अग्निमें गूगल, मेवा और चन्दन-मिश्रित धूप खेवे।

~~मुख-विग्रह~~-विष-विकार-नाशक

आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुद्ध्या ध्यातो जिनेन्द्र भवतीह भवत्प्रभावः ।
पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ॥८७॥

हिन्दी पद्य

तेरे समान जगदीश प्रभाववाला, आत्मा बने भज तुम्हें तज भिन्न भाव ।
पीयूष भाव धर मंत्रित वारि जो है, सो दूर क्या न करता विषके विकार ॥

ऋद्धि- ओं ह्रीं अर्हं णमो कुट्ठबुद्धिणाणं चारणाणं ।
मंत्र- ओं ह्रीं नमो धृति देव्यै ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं ऊं ऊं नमः ।
फल- मन्त्रित जल पिलाने ~~पानी देने~~ से विष-विकार दूर होता है
विधि- स्फटिक की माला से नैऋत्य कोण की ओर मुख कर श्वेत आसन पर बैठकर ४८ दिन तक ऋद्धि-मंत्र का एक हजार जाप प्रतिदिन करे। चन्दन, कपूर, इलायची और घी-मिश्रित धूप खेवे। सिद्ध करने वाला पुरुष स्थावर या जंगम-विष से पीड़ित मनुष्य को मंत्रित जल पिलावे।

त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि नूनं विभो हरि-हरादिधिया प्रपन्नाः ।
किं काचकामलिभिरीश सितोऽपि शङ्खो नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥२८॥

हिन्दी पद्य

तू वीतराग विभु है, भजते तुम्हे ही, नाना मती हरि-हरादिक भावसे हैं ।
हो दृष्टिभेद जिनके उनको विभो ज्यों, दीखता विविध रंगत का न शंखपास्त

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो ~~.........~~ पासे सीधा सुणांति ।
मंत्र- ॐ नमो सुमति देव्यै विषनिर्णाशिन्यै नमः स्वाहा ।
फल- सर्प-विष दूर करता है + मंत्रित जल छिड़कने व पीने से ।
विधि- चन्दन की मालासे आग्नेय कोण की ओर मुख कर काले रंग के आसन पर बैठकर ७ दिन तक प्रतिदिन एक हजार बार ऋद्धि मंत्र का जाप करे । अग्नि में गूगल और कुन्दरू-मिश्रित धूप खेवे ।

मंत्र सिद्ध कर सांपसे काटे मनुष्य को १०८ बार नीम की हरी टहनी से झाड़ने पर जहर उतर जाता है ।

नेत्र-रोगनिवारक-शोक-चिन्ता-विनाशक

धर्मोपदेशसमये सविधानुभावादास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः।
अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥१९॥

हिन्दी पद्य

धर्मोपदेश करता जब तू जनों को, क्या बात नाथ! बनता तरु भी अशोक।
होता प्रकाश जब सूरज का नहीं क्या, पाता प्रबोध तरु-संयुत जीव लोक ॥१९॥

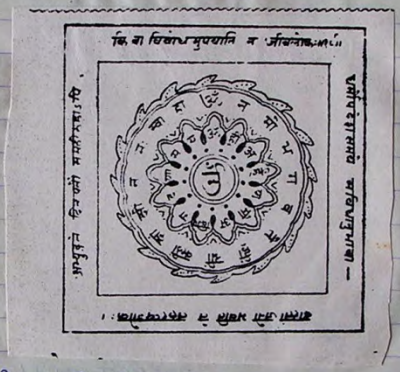

ऋद्धि- ओं ह्रीं अर्हं णमो अक्खिणमहाणसाणं आगासगामीणं।
मंत्र- ओं नमो भगवते ह्रीं श्रीं क्लीं सां क्षीं नमः स्वाहा।
फल- नेत्र-पीड़ा होने पर उक्त मंत्र से मंत्रित रसोंद घिसकर नेत्रों में आंजने से नेत्र-पीड़ा दूर होती है।
विधि- चन्दन की माला लेकर नैऋत्य कोण की ओर मुख कर हरे रंग के आसन पर बैठकर ७ दिन तक प्रतिदिन १०८ बार ऋद्धि-मंत्र का जाप करे। अग्नि में चन्दन अगर और घी मिश्रित धूप खेवे। मंत्र साधने के पश्चात् उसका उपयोग करे।

किमद्भुतं किमो कथमयाङ्मुखवृन्तमेव विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः।
त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि ॥२०॥

हिन्दी पद्य

आश्चर्य किस तरा सुर-पुष्पवृष्टि, स्वामिन् ! निरन्तर अवाङ्मुख हो रही है।
है या तुम्हे सुमन ये जब देख पाते, जाते तभी सकल बन्धन नाथ ! नीचे ॥२०॥

ऋद्धि- ओं ह्रीं अर्हं णमो गहिल गहणाणं आसीविसाणं।
मंत्र- ओं भगवत्यै ब्रह्माण्यै नमः स्वाहा।
फल- ऋद्धि-मंत्र की आराधना से दूसरे के द्वारा मंत्र-प्रयोग से किया गया उच्चाटन दूर होता है।
विधि- रुद्राक्ष की माला लेकर ईशान-कोण की ओर मुख कर भगवां रंग के आसन पर बैठकर ४९ दिन तक प्रतिदिन ऋद्धि-मंत्र का जाप करें। अग्नि में गूगल और सार-मिश्रित धूप खेवे।

स्थाने गभीरहृदयोदधिसम्भवायाः पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति।
पीत्वा यतः परमसम्मदसङ्गभाजो भव्या व्रजन्ति तरसाऽप्यजरामरत्वम् ॥२१॥

हिन्दी पद्य

'तेरी गिरा अमृत है' यह जो कहाता, है योग्य, क्योंकि हृदयोदधि से उठी है।
पीके तथा मद भरे जन भी उसे हैं, होते तुरन्त अजरामर सौख्य-धाम ॥२१॥

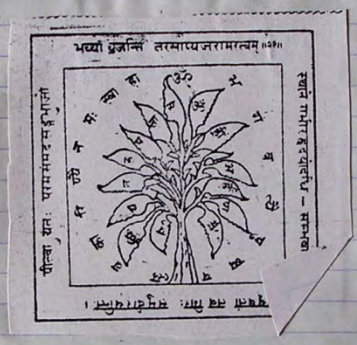

ऋद्धि - ओं ह्रीं अर्हं णमो पुष्फिय तरुपक्काणं दिट्ठि विसाणं।
मंत्र - ओं भगवत्यै पुष्प-पल्लवकारिण्यै नमः स्वाहा।
फल - सूखे हुए वृक्ष पुनः पल्लवित-पुष्पित होने लगते हैं।
विधि - तुलसी की माला से वायव्य कोण की ओर मुख करके डाभ के आसन पर बैठकर १४ दिन तक प्रतिदिन एक हजार बार ऋद्धि-मंत्र को जपने और अग्नि में गूगल-छार-छबीला घृत-मिश्रित धूप खेने से वाटिका के सूखे वृक्ष हरे-भरे हो जाते हैं।

वृक्ष-फलोत्पादक

स्वामिन् सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः।
येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुङ्गवाय ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः॥ २२॥

हिन्दी पद्य

हे नाथ! दूर नभके उड़ते हुए ये, मानों यही कह रहे सुर-चामरौघ।
'जो हैं प्रणाम करते इस नाथ को हैं' वे शुद्ध भाव बन के गति उच्च पाते॥ २२॥

ऋद्धि- ओं ह्रीं अर्हं णमो तरु-फलप्पयाणं उग्गतवाणं।
मंत्र- ओं ह्रीं नमो पद्मावत्यै म्म्ल्व्र्यूं नमः स्वाहा।
फल- वृक्ष अधिक फल देने लगते हैं।
विधि- तुलसी की माला से नैऋत्य कोण की ओर मुखकर हाथके आसन पर बैठकर २१ दिन तक प्रतिदिन १०८ बार ऋद्धि मंत्र का जाप करे। भूमि पर सोवे और एकाशन करे। अग्नि में गुग्गल, छार-छबीला और घी-मिश्रित धूप खेवे।

राजसन्मान-दायक

श्यामं गभीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न-सिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्त्वाम्।
आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चैश्चामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम्॥ २३॥

हिन्दी पद्य

तू श्याम है, शुच गिरा सुगभीर, तेरा- सिंहासन प्रचुर रत्न सुवर्णवाला।
देखे तुम्हे प्रणयि भव्य मयूर नीके, मानों सुमेरु-शिर पै नव मेघ गाजे॥ २३॥

ऋद्धि- ओं ह्रीं अर्हं णमो वज्जभयहरणाणं दित्ततवाणं।
मंत्र- ओं श्रीं क्लीं क्रां क्रीं क्रूं क्रः नमः स्वाहा।
फल- राज्य-सन्मान प्राप्त होता है (यंत्र पास में रखने से)।
विधि- लाल रंग की माला से लाल रंग के आसन पर पूर्व की ओर मुखकर बैठे, २७ दिन तक प्रतिदिन एक हजार बार ऋद्धि-मंत्र का जाप करे। अग्नि में चन्दन, शिलाजीत मिश्रित धूप खेवे।

शत्रु-विजय-राज्य-प्रदायक

उद्गच्छता तव शितिद्युतिमण्डलेन लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव ।
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि ॥२४॥

हिन्दी पद्य

भामण्डल प्रबल जो तुव नाथ फैला, भागा अशोक-तरु-पत्र छटा लुटा के।
तेरे समीप रह चेतन कौन है जो, हे वीतराग! धर ले न विरक्तता को ॥२४॥

ऋद्धि- ओं ह्रीं णमो रज्जप्पदायाणं आगासगामीणं।
मंत्र- ओं भ्रां भ्रीं षोडशभुजाये पद्मिन्यै प्रौं ह्रौं नमः स्वाहा।
फल- ऋद्धि- मंत्र के फल से गया राज्य वापिस प्राप्त होता है।
विधि- लाल रंग की माला से लाल रंग के आसन पर बैठकर पूर्व की ओर मुख करके २७ दिन तक प्रतिदिन एक हजार ऋद्धि-मंत्र का जाप करे। कपूर शिलाजीत और श्वेतचन्दन-मिश्रित धूप खेवे।

रोग-शोक-पीड़ा-विनाशक

भो भोः प्रमादमवधूय भजध्वमेनमागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाहम्।
एतन्निवेदयति देव जगत्त्रयाय मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते ॥२५॥

हिन्दी पद्य

जीवो प्रमाद तज दो, भज ईश को लो, है मार्ग-दर्शक यहां बस पास आओ।
ये बात तीन जग को बतला रहा है, आकाश-बीच सुर-दुन्दुभि-नाद तेरा ॥२५॥

ऋद्धि- ओं ह्रीं अर्हं णमो हिंडणमलणयाणं महातवाणं।
मंत्र- ओं धरणेन्द्र-पद्मावत्यै नमः स्वाहा।
फल- सर्वप्रकार के रोग, शोक और पीड़ा का विनाश होता है।
विधि- स्फटिक की माला से पश्चिम की ओर मुखकर, श्वेत रंग के आसन पर बैठकर २२ दिन तक प्रतिदिन एक हजार ऋद्धि-मंत्र का जाप करे। अग्नि में कपूर, चन्दन, इलायची कस्तूरी-मिश्रित धूप खेवे।

वचन-प्रतिष्ठा-कारक

उद्द्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः।
मुक्ताकलापकलितोल्लसितातपत्र व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः॥ २६॥

हिन्दी पद्य

तेरे प्रकाशित किये जगमें हुआ है, तारा-समेत अधिकार-विहीन चन्द्र।
मुक्ता-कलाप-परिशोभित छत्र रूप, हो तीन देहधर के ध्रुव पास आया॥ २६॥

ऋद्धि- ओं ह्रीं अर्हं णमो जयंदेयपासेवणाए।
मंत्र- ओं ह्रीं श्रां श्रीं श्रूं श्रः पद्मावै नमः स्वाहा।
फल- साधक के वचन सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं।
विधि- ~~सायं~~ प्रातः काल पूर्व दिशा की ओर मुख करके और सायंकाल पश्चिम की ओर मुख करके २१ दिन तक १०८ बार ऋद्धि-मंत्र का जाप करने से तथा अग्निमें दशांगधूप खेने से मंत्र सिद्ध होता है।

वैर-विरोधनिवारक

स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिण्डितेन कान्ति-प्रताप-यशसामिव सञ्चयेन।
माणिक्य-हेम-रजतप्रविनिर्मितेन शालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि॥ २७॥

हिन्दी पद्य

चांदी सुवर्ण मणि माणिक के बनाये, हैं तीन कोट भगवन्! चहुं ओर तेरे।
कीर्ति, प्रताप द्युति के समुदाय ने ही, मानों किये! त्रिजगतीतल व्याप्त हैं॥ २७॥

ऋद्धि- ओं ह्रीं अर्हं णमो खल्लदुद्ध णासयाणं घोरपरक्कमाणं।
मंत्र- ओं ह्रीं ~~अर्हं~~ श्रीं धरणेन्द्र-पद्मावतीबलपराक्रमाय नमः स्वाहा।
फल- शत्रु पराजय को प्राप्त होता है और वैर-विरोध शान्त होता है।
विधि- काले सूत की माला से पूर्व की ओर मुख कर काले ऊन के आसन पर बैठ कर २१ दिन तक प्रतिदिन ऋद्धि-मंत्र को ~~एक~~ हजार बार जपे। अग्नि में गूगल, गिरी, सेंधा नमक और घी-मिश्रित धूप खेवे। अन्तिम दिन भोजपत्र पर यंत्र लिखकर और उसे पंचामृत में मिलाकर नदी में प्रवाहित करे तो शत्रु पराजित होता है।

दिव्यस्रजो जिन नमत्त्रिदशाधिपानामुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबन्धान्।
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र त्वत्सङ्गमे सुमनसो न रमन्त एव ॥२८॥

हिन्दी पद्य

देव प्रणाम करते तुव दिव्य माला, रत्नों जड़े मुकुटको तजके उन्हों को।
तेरा पदाश्रय करे, रमते नहीं हैं – अन्यत्र या सुमन पाकर संग तेरा ॥२८॥

ऋद्धि – ओं ह्रीं अर्हं णमो उवद्दवजयाणं घोरगुणाणं।
मंत्र – ओं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्रौं वषट् स्वाहा।
फल – ऋद्धि-मंत्र के जाप से निरन्तर यश का विस्तार होता है।
विधि – पीले सूत की माला से दक्षिण की ओर मुख कर पीले रंग के आसन पर बैठकर २१ दिन तक प्रतिदिन एक हजार ऋद्धि-मंत्र को जपे। अग्नि में चन्दन, लवंग, कपूर, इलायची घी-मिश्रित धूप खेवे।

सर्वजन-प्रसन्न-कारक

त्वं नाथ जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोऽपि यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान्।
युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव चित्रं विभो यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥२९॥

हिन्दी पद्य

हे नाथ! तू विमुख जन्म-समुद्र से हो, पीछे पड़े मनुज के गण को तिराता।
है योग्य बात तुझ पार्थिव की अहो पै, तू है प्रभो! सकल कर्म-विपाक-शून्य ॥२९॥

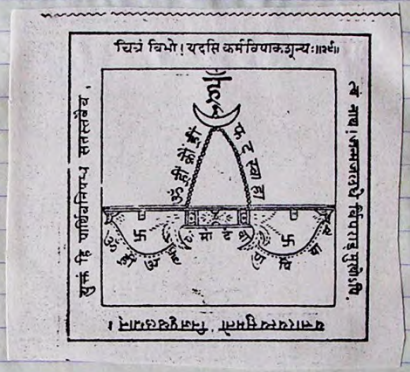

ऋद्धि – ओं ह्रीं अर्हं णमो देवाणुप्पियाणं घोरगुणबंभचारीणं।
मंत्र – ओं ह्रीं क्रौं ह्रीं हूं फट् स्वाहा।
फल – ऋद्धि-मंत्र के फल से सर्वजन प्रसन्न रहते हैं।
विधि – मूंगा की माला से पूर्व की ओर मुख कर लाल रंग के आसन पर बैठकर २९ दिन तक प्रतिदिन १०८ बार ऋद्धि-मंत्र का जाप करे, अग्नि में कस्तूरी, शिलाजीत, अगर और श्वेत चन्दन-मिश्रित धूप खेवे।

(176) २९६ ६५

दारिद्रता-विनाशक, सौभाग्य-कारक

विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं किं वाऽक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश।
अज्ञानवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकासहेतु ॥३०॥

हिन्दी पद्य

विश्वेश है, तदपि दुर्गत नाथ! है तू, है अक्षर-प्रकृति भी, अलिपि प्रभो! तू।
अज्ञान है कुछ, तथापि फुरे सदा ही, सुज्ञान नाथ! तुम में जग का विकाशी ॥३०॥

ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हं णमो भद्दाणं आमोसहिपत्ताणं।
मंत्र – ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं प्रौं हूं नमः स्वाहा।
फल – स्वप्न में भविष्य का शुभाशुभ दिखे।
विधि – रुद्राक्ष की माला लेकर पूर्व की ओर मुख कर काले रंग के आसन पर बैठकर ६० दिन तक प्रतिदिन ७०० बार ऋद्धि-मंत्र का जाप करे। अग्नि में गूगल, लोबान और घी-मिश्रित धूप खेवे।

(177) २७६ ६६

शुभाशुभ-स्वप्न-दर्शक, ~~उपद्रव-शान्ति-कारक~~

प्राग्भारसम्भृतनभांसि रजांसि रोषादुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि।
छायापि तैस्तव न नाथ हता हताशो ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥३१॥

हिन्दी पद्य

आंधी-चलाय रज-शैल उड़ा उड़ा के, जो क्रोध से कमठ ने नभ छा दिया है।
तेरी न छांह तक नाथ! हुई उन्होंने, उल्टा उसी कुटिल को घबरा दिया है ॥३१॥

ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हं णमो वीआवणं पत्ताणं खेलोसहिपत्ताणं।
१ मंत्र – ॐ नमो भगवति-चक्र धारिणि भ्रामय भ्रामय मम शुभाशुभं दर्शय दर्शय स्वाहा।
फल – पूछे गये शुभाशुभ प्रश्न का फल स्वप्न में दिखता है।
विधि – सूत की श्वेत माला से पूर्व की ओर मुख करके श्वेत वस्त्र के आसन पर बैठकर १८ दिन तक एक हजार ऋद्धि मंत्र का जाप करे। दशांग धूप घी-मिश्रित पीले सरसों को मिलाकर खेवे।

उपद्रव-विनाशक

यद्गर्जदूर्जितघनौघमदभ्रभीमं भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारम्।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे तेनैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम् ॥३२॥

हिन्दी पद्य

गर्जे महा कड़कें, बिजली पड़े त्यों-पानी गिरे मयद मूसल धार होके।
की दुष्ट ने कठिन दुस्तर वारि-वर्षा, उसके लिए वह हुई तरवारि-वर्षा ॥३२॥

ऋद्धि- ओं अर्हं णमो अट्ठमहाणासयाणं जल्लोसहिपत्ताणं।

मंत्र- ओं नमो भगवति मम शत्रून् बन्धय बन्धय, ताडय ताडय, उन्मूलय उन्मूलय, छिंद छिंद, भिंद भिंद स्वाहा।

फल- दुष्ट पुरुष का बल निर्बल होता है, उसका शस्त्र-प्रयोग व्यर्थ होता है और वह अपनी दुष्टता छोड़ देता है।

विधि- कमलगट्टे की माला से नैऋत्य कोण की ओर मुख कर काले रंग के आसन पर बैठ कर २७ दिन तक प्रतिदिन एक हजार जाप करें, अग्नि में गूगल, तगर, नागरमोथा और घी मिश्रित धूप खेवे।

यदि उपद्रव प्रबल हो तो २४ घंटे का मौन लेकर अखण्ड जाप करता हुआ दशांग धूप खेवे। उपद्रव अवश्य शान्त होगा।

ईतिभीति आदि ~~भूत-पिशाचादि~~ भय-विनाशक

ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृति-मर्त्यमुण्ड-प्रालम्बभृद्भयदवक्त्र विनिर्यदग्निः
प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो यः सोऽस्याभवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः "३३"

हिन्दी पद्य

अंगार को उगलता, नर-मुण्ड धारे, सूखे कुकेश, विकराल शरीरवाला ।
जो प्रेत-वृन्द तव नाथ! समीप भेजा, उसको हुआ वह भवों-भव दुःखदायी "३३"

~~ऋद्धि- ओं ह्रीं अर्हं णमो भूतबलि बहुरूपाणं विकुर्वणर्द्धि प्राप्तानं ।~~
ऋद्धि- ओं ह्रीं अर्हं णमो जविज्ञाय रिकाए ।
~~ओं ह्रीं अर्हं णमो असणि पातादि वारणं सर्वोसहि पत्ताणं ।~~
मंत्र- ओं ह्रीं श्री वृषभादि तीर्थङ्करेभ्यो नमः स्वाहा।
फल- उक्त ऋद्धि-मंत्र के जापसे अतिवृष्टि, अनावृष्टि, टिड्डी आदि का भय दूर होता है। ~~भूत-पिशाचादि का भय नहीं रहता~~।
विधि- रुद्राक्ष की माला से वायव्य कोण की ओर मुखकर काले रंग के आसन पर बैठकर २१ दिन तक प्रतिदिन १०८ बार ऋद्धि-मंत्र के जापके तथा कपूर, चन्दन, गिरी, इलायची से मिश्रित घी-धूप खेवे ।

(180) ६९

भूत-पिशाचादि-भय-विनाशक

धन्यास्त एव भुवनाधिप ये त्रिसन्ध्यमाराधयन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः।
भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः पादद्वयं तव विभो भुवि जन्मभाजः॥ ३४॥

हिन्दी पद्य

रोमांच गद्‌गद प्रफुल्लित देह होके, आराधना शुचि पदाम्बुज की महेश।
जो भक्ति-पूर्वक करें विधिसे त्रिकाल, वे धन्य हैं जगत में जन देहधारी॥ ३४॥

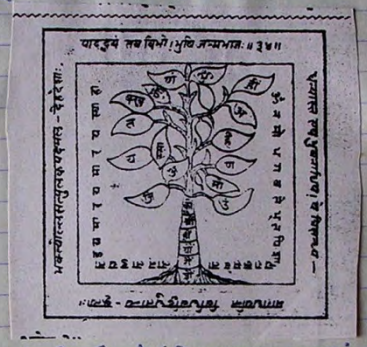

ऋद्धि- ओं ह्रीं अर्हं णमो उं जिअस्साय तवस्सणाणं।
मंत्र- ओं नमो भगवति भूत-पिशाच-राक्षस-वेतालान् ताडय ताडय मारय मारय स्वाहा।
फल- भूत-पिशाचादि का भय दूर होता है।
विधि- केवाच के बीजों की माला से वायव्य कोण की ओर मुख कर काले रंग के आसन पर बैठकर २१ दिन तक प्रतिदिन २१ बार ऋद्धि-मंत्र से मंत्रित सरसों पानी में डाले और गूगल, सरसों, लाल मिर्च एवं घी मिश्रित धूप खेवे

(181) २२१ ६०

मृगी-अपस्मारादि विनाशक

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या।
आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमन्त्रे किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति॥ ३५॥

हिन्दी पद्य

संसार-वारि-निधि में पड़ के कदाचित्, मैंने सुना न जगदीश्वर! नाम तेरा।
जो नाम-मंत्र सुनता अति ही पवित्र, आती विपद्-विषधरी किस भांति पास॥ ३५॥

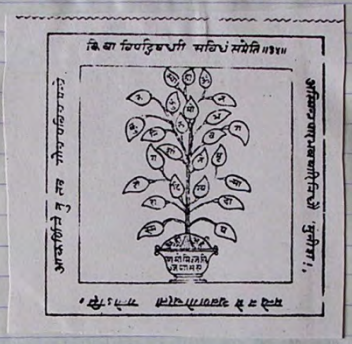

ऋद्धि- ओं ह्रीं अर्हं णमो विज्ज जिज्जणाणं।
~~ओं ह्रीं अर्हं णमो गिरीरोग्गपरणं………~~।
मंत्र- ओं नमो भगवते मृग्यादि-अपस्मार रोग-शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
फल- मृगी-अपस्मारादि रोग शान्त होते हैं।
विधि- चन्दन की माला से नैऋत्य कोण की ओर मुख करके हरे रंग के आसन पर बैठकर २१ दिन तक ७००० बार ऋद्धि-मंत्र का जाप करे। अग्नि में घी लोबान मिली धूप खेवे।

सर्प-कीलन-~~मंत्र~~

जन्मान्तरेऽपि तव पादयुगं न देव मन्ये मया महितमीहित दान दक्षम् ।
तेनेह जन्मनि मुनीश पराभवानां जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥३६॥

हिन्दी पद्य

हैं पूज्य वांछित फल-प्रद पांव तेरे, पूजे न पूर्व भवमें भगवान, मैंने ।
है बात सत्य, इससे उस जन्म में मैं, हूं जो पराभव-मनोरथ-भाव-भंग ॥३६

१-ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो णागवसीयरण कुसलाणं वत्थिकलीणं ।
२-ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो ग्रां ह्रुं फट् विचक्राये ।
मंत्र - ॐ ह्रीं अष्ट महा नाग कुल विष शान्तिकारिण्यै नमः स्वाहा ।
~~विधिफल~~ - उक्त ऋद्धि-मंत्र से मंत्रितकर सर्पके ऊपर ~~डालकर~~ फेंकने वह कीलित हो जाता है।
विधि- सन की मालासे ईशान कोण की ओर मुखकर हरे रंग के आसन पर बैठकर
७ दिन तक प्रतिदिन एक हजार जाप करे। अग्निमें कपूर घी मिश्रित धूप खेवे।

(183) ६०२

राजा-प्रजा वशकारक

नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन पूर्वं विभो सकृदपि प्रविलोकितोऽसि।
मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः प्रोद्यत्प्रबन्धगतयः कथमन्यथैते ॥३७॥

हिन्दी पद्य

मोहान्धकार-वश लोचन मूंद मैंने, तेरे न दर्शन किये पहले अवश्य।
जो बात है न यह तो, फिर क्यों सताते, ये मर्म-वेधक अखण्ड अनर्थ आके ॥३७॥

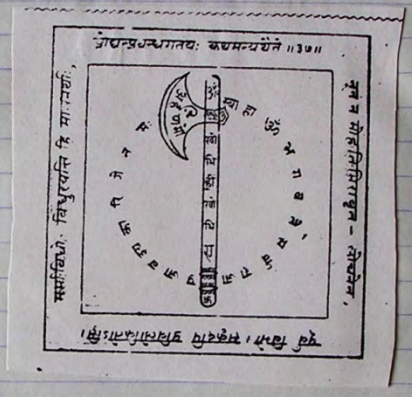

~~१ ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं सर्वराजा-प्रजा वशीकरण कुशलाणं कारकजीवं।~~
२ ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो खोमि ह्रीं खोमिए।
मंत्र- ॐ नमो भगवते सर्वराजा-प्रजा वश्य कारिणे नमः स्वाहा।
फल- राजा-प्रजा वश में हो, जवकि सम्मान मिले।
विधि- लाल रंग की माला से लाल रंग के आसन पर बैठकर २१ दिन तक १०८ बार लाल कनेर के फूलों द्वारा जाप करे। अग्नि में कपूर-मिश्रित धूप खेवे।

असह्य कष्ट-निवारक

~~आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या।~~
जातोऽस्मि तेन जनबान्धव दुःखपात्रं यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः ३८

हिन्दी पद्य

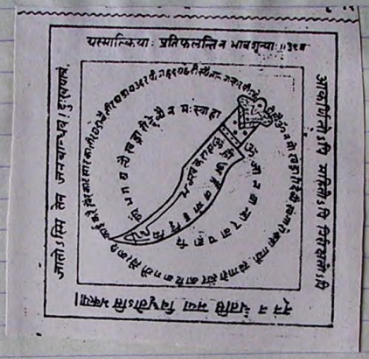

मैंने सुदर्शन किये, गुण भी सुने, की-पूजा, तथापि हिय में न तुम्हे बिठाया।
हूं दुःख-पात्र, जन-बान्धव! मैं इसी से, होती नहीं सफल भावबिना क्रियाएं ॥३८

1 ~~ऋद्धि- ओं ह्रीं अर्हं णमो दुःस्सह कष्ट निवारकाणं वीरस्वामिणं।~~
2 ऋद्धि- ओं ह्रीं अर्हं णमो ऋद्धि-सिद्धि-मकरन्दं करोए।
मंत्र- ओं ज्वाला हार वपहारिण्यै भगवत्यै खड्गारीदेव्यै नमः स्वाहा।
फल- नहरुआ, जलेबा, उदर और हृदय-पीड़ा को दूर करता है।
विधि- श्वेत वस्त्र पर बैठकर श्वेत काष्ठ की माला से पश्चिम दिशा की ओर मुख कर बैठके 16 दिन तक प्रतिदिन एक हजार जाप करे। अग्नि में गूगल, गरी और दीमिश्रित धूप खेवे।

सर्वज्वर-नाशक

त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल हे शरण्य कारुण्यपुण्य वसते वशिनां वरेण्य।
भक्त्या नते मयि महेश दयां विधाय दुःखाङ्कुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥३९॥

हिन्दी पद्य

हे दीन बन्धु! करुणाकर! हे शरण्य! स्वामिन्! जितेन्द्रिय! वरेण्य! सुपुण्यधाम!
हूं भक्ति से प्रणत मैं, करके दया तू, हे नाथ! नाश कर दे सब दुःख मेरे ॥३९॥

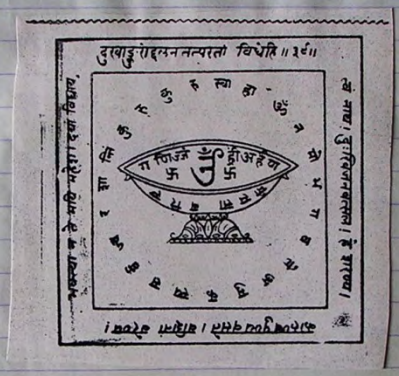

1 ~~ऋद्धि- ओं ह्रीं अर्हं णमो सव्वकुसंतिकराणं अविसवीणं।~~
2 " - ओं ह्रीं अर्हं सत्तावरिए णमिज्जो।
मंत्र - ओं नमो भगवते अमुकस्य सर्वज्वर शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
फल- सर्वज्वर तथा सन्निपात दूर होता है। भोजपत्र पर यंत्र लिख कर धूपित कर रोगी के कण्ठ में बांधे। मंत्र जपते समय (अमुकस्य) के स्थान पर रोगी का नाम बोले (साधक), भोजपत्र पर भी रोगी का नाम लिखे।
विधि- काली जगाई की माला से ईशान कोण की ओर मुख कर हरे रंग के आसन पर बैठके १४ दिन तक एक हजार जाप (प्रतिदिन) ऋद्धि-मंत्र का करे। अग्नि में गरी-गूगल मिश्रित धूप खेवे।

शीत-उष्णादि बाधा-विनाशक

निःसंख्यसार शरणं शरणं शरण्य मासाद्य सादितरिपु प्रथितावदातम् ।
त्वत्पादपङ्कजमपि प्रणिधानवन्ध्यो वन्ध्योऽस्मि तद् भुवनपावन हा हतोऽस्मि ॥४०॥

हिन्दी पद्य

माहात्म्यवान, शरणागत-शान्ति-दायी, शत्रु-प्रणाश-कर हैं तव पाद-पद्म ।
पाके उन्हें सफल जो न हुआ प्रभो! तो, हे लोक-पावन! मुनीश्वर! हा मरा मैं ॥४०॥

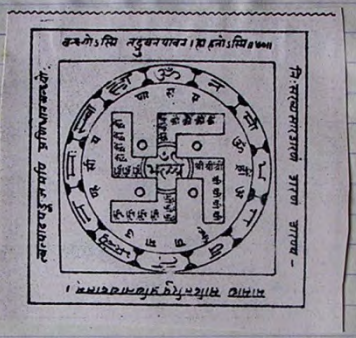

ऋद्धि— ओं ह्रीं अर्हं णमो उण्ह-सीय-वाहि विणासयाणं महुसवीणं ।
मंत्र— ओं नमो भगवते भ्म्ल्व्र्यूं नमः स्वाहा ।
फल— प्रचण्ड शीत या उष्ण ज्वर की पीड़ा दूर करता है ।
विधि— रुद्राक्ष की माला से ईशान कोण की ओर मुख कर हरे रंग के आसन पर बैठके १४ दिन तक प्रतिदिन एक हजार बार ऋद्धि-मंत्र का जाप करे । गरी गूगल-मिश्रित धूप खेवे । साधन में भोजपत्र पर यंत्र लिखकर रोगी की भुजा में बांधे ।

युद्ध में विजय-प्रदायक

देवेन्द्र वन्द्य विदिताखिलवस्तुसार संसार-तारक विभो भुवनाधिनाथ ।
त्रायस्व देव करुणाहृद मां पुनीहि सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः ॥४१॥

हिन्दी पद्य

सर्वज्ञ देव! सुर-नायक! पूजनीय, संसार-तारक! विभो! भुवनाधिनाथ!
मैं हूँ दयाधन! दुखी, मुझ को बचाओ, संसार से कर पवित्र मुझे तरा दो ॥४१॥

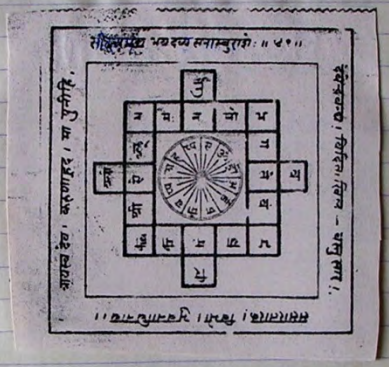

ऋद्धि — ओं ह्रीं अर्हं णमो वप्पलाइ कारयाणं अभियसवीणं ।
मंत्र — ओं नमो भगवते बंभयारि नमो ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ब्लूं नमः ।
फल — संग्राम में शत्रु के शस्त्र कुण्ठित होते हैं और साधक को घायल नहीं करते ।
विधि— काले सूत की माला से काले आसन पर बैठकर २१ दिन तक प्रतिदिन एक हजार जाप करे । अग्नि में नमक, मिर्च, गूगल और घी मिश्रित धूप खेवे । मंत्र-साधना के पश्चात् युद्ध में जावे ।

स्त्री प्रसूति सम्बन्धि रोग-शामक

यद्यस्ति नाथ भवदङ्घ्रि सरोरुहाणां भक्तेः फलं किमपि सन्तत सञ्चितायाः।
तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य भूयाः स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥४२॥

हिन्दी पद्य

मैंने विभो! सतत की तुव पाद-भक्ति, स्वल्प होय उसका फल जो प्रशस्ती।
है प्रार्थना बस यही, 'इस लोक में क्या, क्या अन्य लोक-विषै हो मम नाथ तू ही ॥४२॥

ऋद्धि- ओं ह्रीं अर्हं णमो दुत्थिरत्त रोअ णासयाणं अक्खीण महाणसाणं।
मंत्र- ओं नमो भगवते स्त्री प्रसूति रोगादि शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
फल- स्त्री के प्रसूति सम्बन्धी सर्व रोग शान्त होते हैं।
विधि- कदलीफल की माला के उत्तर की ओर मुख कर रंग-बिरंगे आसन पर बैठकर २१ दिन तक प्रतिदिन १०८ बार ऋद्धि मंत्र का जाप करे। अग्नि में सुगन्धित द्रव्यों से और घी से मिली धूप खेवे।

बंधन-मोचक एवं वैभव-वर्धक

इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र सान्द्रोल्लसत्पुलककञ्चुकिताङ्गभागाः।
त्वद्बिम्बनिर्मलमुखाम्बुजबद्धलक्ष्या ये संस्तवं तव विभो रचयन्ति भव्याः॥४३॥

हिन्दी पद्य

आनन्द में पुलक गद्गद कण्ठ होके, तेरे मुखाब्ज पर आंख लगा अनोखी।
जो चित्त को स्थिर किये विधि से महेश, सप्रेम यों स्तव रचे तुम भव्यजीव ॥४३॥

ऋद्धि – ओं ह्रीं अर्हं णमो वंदिमोअगाणं सव्वसिद्धायदणाणं।

मंत्र – ओं नमो सिद्धि-महासिद्धि जगत्सिद्धि-त्रैलोक्य सिद्धि-कठिनाय कारागार-बन्धनं मम रोगं छिन्द छिन्द, स्तम्भय स्तम्भय, जृम्भय जृम्भय, मनोवाञ्छित सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

फल – कैदी कैद से छूट जाता है, रोगी रोगमुक्त होता है और इष्ट कार्य सिद्ध होते हैं।

विधि – सूत की काली माला से आग्नेय कोण की ओर मुख कर काले ऊन के आसन पर बैठकर १८ दिन तक प्रतिदिन एक हजार बार जाप करे। अग्नि में चन्दन, गूगल और लोबान मिश्रित धूप खेवे।

लक्ष्मी-प्राप्ति, व्यापार-लाभ कारक

जननयनकुमुदचन्द्रप्रभास्वराः स्वर्गसम्पदो भुक्त्वा ।
ते विगलितमलनिचया अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥४४॥

हिन्दी पद्य

जन-नेत्र-कुमुदचन्द्र ! प्रभो ! सभी स्वर्ग सम्पदा नीकी ।
भोगें वे फिर जल्दी, निर्मल हो के मोक्ष को पावें ॥४४॥

ऋद्धि- ओं ह्रीं श्रीं क्लीं नमः ।

मंत्र- ओं नमो धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय श्रीं क्लीं ऐं अर्हं नमः स्वाहा ।

फल- लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ।

विधि- मूंगा की माला से पूर्व की ओर मुख कर लाल रंग के आसन पर बैठकर ४० दिन तक प्रतिदिन एक हजार ऋद्धि-मंत्र का जाप करे । अग्नि में चन्दन, शिलाजीत, कपूर मिश्रित धूप खेवे । मंत्र जपते तक एकाशन एवं भूमिशयन करे । यंत्र समीप रखे ।

1911

स्वस्ति मंगल पाठ[१]

(किसी भी यंत्र के पूजन-प्रारम्भ में निम्न-लिखित पाठ अवश्य पढ़ना चाहिए)

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

चत्तारि मंगलं- अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा- अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो,

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि - अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि

साहूसरणं पव्वज्जामि, केवलि- पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

स्वस्ति-मङ्गल-पाठ

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः। श्री सम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।

श्री सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः। श्री सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।

श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतलः। श्री श्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।

श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनन्तः। श्री धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शान्तिः।

श्री कुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरनाथः। श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।

श्री नमिः स्वस्ति श्री नेमिनाथः। श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वर्धमानः।

(प्रत्येक 'स्वस्ति' पद बोलते हुए पुष्प क्षेपण करे)

नित्याप्रकम्पाद्भुतकेवलौघाः स्फुरन्मनःपर्यय शुद्धबोधाः।

दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः [१]स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥१॥

कोष्ठस्थधान्योपममेकबीजं संभिन्नसंश्रोतृ पदानुसारि।

चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥२॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादनघ्राण-विलोकनानि।

दिव्यान्मतिज्ञानबलाद् वहन्तः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥३॥

प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धाः दश-सर्वपूर्वैः।

प्रवादिनोऽष्टाङ्ग निमित्त विज्ञाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥४॥

जङ्घावलि-श्रेणि-फलाम्बु-तन्तु-प्रसून-बीजाङ्कुर-चारणाह्वाः।

नभोऽङ्गणस्वैर-विहारिणश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥५॥

अणिम्नि दक्षाः कुशलाः महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।

मनो-वपु-र्वाग्बलिनश्च नित्यं स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥६॥

सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।

तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥७॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।

ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरन्तः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥८॥

आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशीर्विषं विषा दृष्टिविषं विषाश्च।

सखिल्ल-विड्-जल्ल-मलौषधीशाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥९॥

क्षीरं स्रवन्तोऽत्र घृतं स्रवन्तो मधुस्रवन्तोऽप्यमृतं स्रवन्तः।

अक्षीणसंवास-महानसाश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥१०॥

[१] प्रत्येक श्लोक के चतुर्थ चरण को बोलते हुए पुष्प क्षेपण करना चाहिए।

इस कल्पके प्रारंभ करने के पूर्व स्नान कर, पवित्र वस्त्र धारण कर, सकलीकरण करके शरीर- शुद्धि एवं मन: शुद्धि कर अंग- रक्षा करे। तत्पश्चात् पंचपरमेष्ठी के मंत्र का अभिषेक कर, गन्धोदक- वन्दन करके पंच परमेष्ठी की विधान अथवा संस्कृत या हिन्दी पूजन करे। यदि समभाव हो तो संस्कृत या हिन्दी की देव शास्त्र गुरुकी पूजन कर निम्न लिखित मंत्रों में से किसी एक अभीष्ट अर्थ- साधक मंत्र का निम्न विधि से जाप प्रारंभ करे। अन्तमें दशमांश हवन कर शान्ति विसर्जन करे।

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आयरीयाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं ॥१॥
एसो पंच णमुक्कारो सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥२॥
जिणसासणस्स सारो चउदस पुव्वाण जो समुद्धारो।
जस्स मणे णवकारो संसारो तस्स किं कुणइ ॥३॥
एसो मंगलणिलओ भव-विलओ सयल-संघ-सुह- जणओ।
णवकार परम मंतो चिंतिय अमित्तं सुहं देइ ॥४॥
अप्पुव्वो कप्पतरू चिंतामणी काम-कुंभ काम-गवी।
जो झायइ सयल कालं सो पावइ सिव-सुहं विउलं ॥५॥
णवकार इक्क अक्खर पावं फेडेइ सत्त अयराइं।
पण्णासं च पएणं सागर पणसय समग्गेण ॥६॥
जो गुणइ लक्खमेगं पूएइ विहीए जिण-णमुक्कारो।
तित्थयर-णाम-गोयं सो पावइ सासयं ठाणं ॥७॥
अट्ठेव अट्ठ सया अट्ठ सहस्सं च अट्ठ कोडीओ।
जो गुणइ णमुक्कारं सो तइय भवे लहइ मुक्खं ॥८॥
हरइ दुहं कुणइ सुहं जणइ जसं सोसए भव-समुद्दं।
इहलोए परलोए सुहाण मूलं णमोक्कारो ॥९॥
भोयण-समए सयणे विबोहणे पवेसणे भए वसणे।
पंच णमुक्कारं खलु समरिज्जा सव्वकाले वि ॥१०॥

अरिहंताणं णमोक्कारो सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥१॥
सिद्धाणं णमोक्कारो सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं बीयं हवइ मंगलं ॥२॥
आयरियाणं णमोक्कारो सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं तइयं हवइ मंगलं ॥३॥
उवज्झायाणं णमोक्कारो सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं चउत्थं हवइ मंगलं ॥४॥
साहूणं णमोक्कारो सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पंचमं हवइ मंगलं ॥५॥

(पीछे भी)

एसो पंच णमोक्कारो सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥६॥

णासेइ चोर सावय विस-हर जल- जलण- बंधण- भयाइं।
चिंतिज्जंतो रक्खस-रण-राय-भयाइं भावेण ॥७॥

अरिहंता मुज्झ मंगलं अरिहंता मुज्झ देवयं।
अरिहंते त्ति कित्तइस्सामि वोसरामि त्ति पावगं ॥८॥
सिद्धा मुज्झ मंगलं सिद्धा मुज्झ देवयं।
सिद्धे त्ति कित्तइस्सामि वोसरामि त्ति पावगं ॥९॥
आयरिया मुज्झ मंगलं आयरिया मुज्झ देवयं।
आयरिया त्ति कित्तइस्सामि वोसरामि त्ति पावगं ॥१०॥
उवज्झाया मुज्झ मंगलं उवज्झाया मुज्झ देवयं।
उवज्झाया त्ति कित्तइस्सामि वोसरामि त्ति पावगं ॥११॥
सव्व साहू मुज्झ मंगलं सव्व साहू मुज्झ देवयं।
सव्व साहू कित्तइस्सामि वोसरामि त्ति पावगं ॥१२॥
एसो पंच मुज्झ मंगलं एसो पंच मुज्झ देवयं।
एसो पंच त्ति कित्तइस्सामि वोसरामि त्ति पावगं ॥१३॥

णमिऊण असुर- सुर-गरुल-भुयंग - परिवंदियं।
गयकिलसे अरिहे सिद्धा आयरियं उवझाय सव्व साहू य ॥१४॥

आत्मशुद्धि- मंत्र

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं।
ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं।
ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं।
ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं॥

इस मंत्रका निष्काम भाव से १००८ बार जाप करने से सभी सांसारिक ~~सब~~ संकट दूर होते हैं और परमार्थ की भी सिद्धि होती है। शुद्ध पारमार्थिक दृष्टि से तो ॐ ह्रीं लगाने की भी आवश्यकता नहीं है।

मंत्राराधना के लिए निम्न-लिखित विधि करना आवश्यक है—

रत्नाह्वानन मंत्र– ॐ ह्रीं रत्नाधिपतये ॐ ह्राँ ह्रें ह्रूँ ह्रौं ह्रः हं क्षः।

इस मंत्र का २१ बार जाप करके अपने वस्त्र, आभूषण और सब सामग्री को शुद्ध करें।

कवच निर्मल मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं वद वद वाग्वादिन्यै नमः स्वाहा।

इस मंत्र से अपने शरीर को कवच-द्वारा सुरक्षित एवं निर्मल करे।

हस्त निर्मल मंत्र– ॐ णमो अरिहंताणं श्रुतदेवि प्रशस्तहस्ते हूँ फट् स्वाहा।

इस मंत्र-द्वारा अपने दोनों हाथों को धूप के धुंए से धूपित करे।

काय-शुद्धि मंत्र– ॐ णमो ॐ ह्रीं सर्वपापक्षयङ्करि ज्वाला सहस्रप्रज्वलिते मत्पापं जहि जहि, दह दह, क्षाँ क्षीं क्षूँ क्षौं क्षः क्षीरधवले अमृतसंभवे बधान बधान हूँ फट् स्वाहा।

इस मंत्र-द्वारा शरीर को शुद्ध करे

हृदय-शुद्धि मंत्र– ॐ वृषभेण पवित्रेणं पवित्री कृत्य आत्मानं पुनामहे स्वाहा।

इस मंत्र से अपने हृदय और आत्मा को पवित्र करे।

मुख-पवित्र-करण मंत्र– ॐ नमो भगवते श्रौं ह्रीं चन्द्रप्रभाय चन्द्र-महिताय चन्द्रमूर्तये सर्वसुखप्रदायिन्यै स्वाहा।

इस मंत्र-द्वारा अपने मुख को पवित्र करे।

चक्षु-पवित्र-करण मंत्र– ॐ ह्रीं क्षीं महामुद्रे कपिलशिखे हुं फट् स्वाहा।

इस मंत्र से अपने दोनों नेत्रों पर हाथ फेर कर पवित्र करे।

हृदय-मस्तक-शुद्धि मंत्र (शिरस्त्राण-)– ॐ नमो भगवति ज्ञानमूर्तिः सप्तशत क्षुल्लकादि महाविद्याधिपतिः विश्वरूपिणी ह्रीं हूं क्षीं क्षाँ ॐ शिरस्त्राण-पवित्रीकरणं ॐ णमो अरिहंताणं हृदयं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

इस मंत्र से शिरस्त्राण (शिर पर के दुपट्टे को और हृदय को शुद्ध करे

मस्तक-रक्षा मंत्र– ॐ णमो सिद्धाणं हर हर विशिरो रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

इस मंत्र से मस्तक की रक्षा करे—मस्तक पर धूप-धूपित हाथ फेरे।

शिखा-बन्धन मंत्र– ॐ णमो आयरियाणं शिखां रक्ष हूं फट् स्वाहा।

इस मंत्र से शिखा (चोटी) के ऊपर हाथ फेर कर उसकी रक्षा करे।

मुख-रक्षा मंत्र– ॐ णमो उवज्झायाणं एहि एहि भगवति वज्रकवचं वज्रिणि रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

इस मंत्र से मुख के भीतरी दांत आदि सर्व अवयवों की रक्षा करे।

इन्द्र-कवच मंत्र– ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं क्षिप्रं साधय साधय वज्रहस्ते शूलिनि दुष्टं रक्ष रक्ष, आत्मानं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

इस मंत्र से देव-भय या अन्य किसी उपद्रव के उपस्थित नहीं होने की भावना करे।

परिवार-रक्षा मंत्र– ॐ अरिहय सर्वं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

इस मंत्र से सर्व कुटुम्ब-परिवार के रक्षा की भावना करे, जिससे कि मंत्र-साधना के समय कोई कौटुम्बिक उपद्रव आदि उपस्थित न हो और मंत्र-साधना निर्विघ्न हो सके।

उपद्रव-शान्तिमंत्र– ॐ ह्रीं क्ष्वीं फट् स्वाहा, किटि किटि घातय घातय पर-विघ्नान् छिन्धि छिन्धि, पर-मंत्रान् भिन्धि भिन्धि, क्षः फट् स्वाहा।
इस मंत्र को पढ़कर सर्व दिशागत पर मंत्रों को और उपद्रवों को शान्त करने के लिए सर्व और सरसों फेंके।

महारक्षाकर-सर्वोपद्रव-शान्ति मंत्र–

णमो अरिहंताणं शिरस्कं, णमो सिद्धाणं मुखावरणे,
णमो आयरियाणं अङ्गरक्षायां, णमो उवज्झायाणं आयुधे।
णमो लोए सव्वसाहूणं मौर्वीए। एसो पंच णमुक्कारो पादतले।
वज्रशिला सव्वपावप्पणासणो। वज्रमय प्राकारं चतुर्दिक्षु।
मंगलाणं च सव्वेसिं खदिराङ्गार खातिका।
पढमं हवइ मंगलं प्राकारो परिवज्रमय ढक्कणं॥

उपर्युक्त सकलीकरण करके मंत्र-जाप प्रारम्भ करे, जिससे कि जाप करने के समय में कोई विघ्न या उपद्रव न आवे। एवं अभीष्ट सिद्धि हो।

द्वितीय रक्षा-महामंत्र–

ॐ णमो अरिहंताणं ॐ हृदयं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।
ॐ णमो सिद्धाणं ह्रीं शिरो रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।
ॐ णमो आयरियाणं ह्रूँ शिखां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।
ॐ णमो उवज्झायाणं ह्रौं एहि एहि भगवति वज्रकवचे वज्रपाणि रक्ष रक्ष, हूं फट् स्वाहा।
ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः क्षिप्रं साधय साधय वज्रहस्ते शूलिनि दुष्टान् रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।
एसो पंच णमुक्कारो वज्रशिलाप्राकारः,
सव्वपावप्पणासणो अम्मृतमयी परिखा।
मंगलाणं च सव्वेसिं महावज्राग्नि प्राकारः
पढमं हवइ मंगलं।

—o—

(२) **वशीकरण-मंत्र–**

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं,
ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं, ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं।
ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं। ॐ णमो णाणस्स।
ॐ णमो दंसणस्स। ॐ णमो चारित्तस्स।
अमुकं मम वशी कुरु कुरु स्वाहा।

नोट– 'अमुकं' के स्थान पर जिसे वश करना हो, उसका नाम लेवे। सवा लाख जाप करने के बाद २१ बार और जाप करे और प्रतिजाप किसी वस्त्र में गांठ देता जावे। वह व्यक्ति अवश्य अपने वश में होगा।

(२) वशीकरण-मंत्र-

ॐ णमो अरिहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आयरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाणं, ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं। ॐ णमो णाणस्स, ॐ णमो दंसणस्स। ॐ णमो चरित्तस्स। ॐ ह्रीं त्रैलोक्यवशंकरी ह्रीं स्वाहा।

इस मंत्रका सवा लाख जाप करके जलको उक्त मंत्रसे २१बार मंत्रित कर अभीष्ट व्यक्ति को पिलानेसे वह वशमें होजाता है।

(३) वशीकरण-मंत्र-

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं।

इस मंत्रका सवा लाख जाप कर २१बार इस मंत्रको पढ़कर किसी नवीन वस्त्रमें गाँठ देकर १०८बार उस वस्त्रको शिलापर फटकारनेसे वह व्यक्ति वशमें होजाता है।

(४) बन्दीगृह-मुक्ति-मंत्र-

णं हूसाव्वस एलो मो ण।
णं याज्झाव उ मो ण।
णं यारिय आ मो ण।
णं द्धा सि मो ण।
णं ता हं रिअ मो ण।

इस विपरीत णमोकार मंत्रका सवा लाख जाप करनेपर बन्दी व्यक्ति बन्दीगृहसे तत्काल मुक्त हो जाता है।

(५) संकट मोचन-मंत्र-

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं। ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं।
ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं। ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं।
ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं।
इस मंत्रका साढ़े बारह हजार जाप करके
'ॐ ह्रीं नमः अर्हं क्ष्वीं स्वाहा'

इस नवाक्षरी मंत्रका १०८बार जाप करनेसे दुष्ट लोगोंका भय नहीं रहता। महाभयके समय या मार्ग-गमनके समय इसे पढ़ता हुआ सर्वओर फूंक देते हुए जानेपर सभी प्रकारका भय दूर हो जाता है।

(६) सर्वसिद्धि-मंत्र-

ॐ अरिहंत-सिद्ध आयरिय उवज्झाय सव्वसाहू सव्वधम्मतित्थयराणं ॐ णमो भगवइए सुय देवयाए संतिदेवयाणं सव्वपवयण-देवाणं पंच लोग-पालाणं ॐ ह्रीं अरिहंत देवं नमः।

इस मंत्रका साढ़े बारह हजार जाप करने से सभी अभीष्ट सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। तथा किसी प्रकारका संकटका भय नहीं रहता।

(७) वैर-नाशक-मंत्र-

णं हुसाव्वस एलो मो ण।
णं याज्झाव उ मो ण।
णं यारिय आ मो ण।
णं द्धा सि मो ण।
णं ताहं रिअ मो ण।

इस विपरीत णमोकार मंत्रका सवा लाख जाप कर पहिले सिद्धकरले पश्चात् २१बार मंत्र पढ़ चतुर्थी या चतुर्दशीके दिन कर धूलिकी चुटकी भर कर शत्रुकी ओर फेंकने से उसका वैर-भाव मिट जायगा और प्रेम-भाव बढ़ेगा।

(८) मन-चिन्तित फल-दाता मंत्र-

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः।

इस मंत्रका सवा लाख जाप करके पहिले सिद्ध करलेवे। पीछे एक माला प्रतिदिन फेरते रहने से मन-चिन्तित वस्तुकी प्राप्ति होती है।

(९) अर्थ-लाभ-दायक-मंत्र-

ॐ णमो अरिहंताणं। ॐ णमो सिद्धाणं। ॐ णमो आयरियाणं। ॐ णमो उवज्झायाणं। ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः स्वा

इस मंत्रका सवा लाख जाप करके पहिले सिद्ध करले। पश्चात् एक माला प्रतिदिन फेरते रहने से धनका लाभ होता है।

(१०) अनुपम-मंत्र-

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रः अ सि आ उ सा स्वाहा।

इस मंत्रको धूप खेते हुए १०८बार प्रतिदिन जपने से अनुपम सिद्धि प्राप्त होती है।

(११) सर्वकार्य-सिद्धि-मंत्र-

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

इस मंत्रको धूप खेते हुए १०८ बार प्रतिदिन जपने से सर्व कार्य सिद्ध होते हैं।

(१२) बन्दी-मुक्ति मंत्र –

ॐ णमो अरिहंताणं झ्म्ल्व्र्यूं नमः।

ॐ णमो सिद्धाणं भ्म्ल्व्र्यूं नमः।

ॐ णमो आयरियाणं रम्ल्व्र्यूं नमः।

ॐ णमो उवज्झायाणं ह्म्ल्व्र्यूं नमः।

ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं क्ष्म्ल्व्र्यूं नमः।

'अमुकस्य' बन्दितो मोक्षं कुरु कुरु स्वाहा।

नोट – 'अमुक' के स्थान पर कैदी व्यक्तिका नाम लेवे। किसी धातुके पत्र पर उक्त मंत्र लिख या खोद कर उसे चौकी पर पार्श्वनाथ की प्रतिमाके आगे स्थापित कर सामने बैठकर, दीप-धूपादि दोनों ओर चौकी पर रखे और १०० श्वेत पुष्प लेकर एक बार मंत्र बोल कर १ पुष्प मंत्रके ऊपर चढ़ाता जावे। कुछ दिनों तक लगातार जाप करते रहने से कैदी बन्दीगृहसे छूट जायगा। यदि कैदी स्वयं उक्त मंत्रका जाप करनेमें असमर्थ हो तो उसका नजदीकी भाई बन्धुके भी जाप करने पर कैदी को छुटकारा मिल जाता है। जब मंत्र-जाप स्वयं करे तब 'अमुकस्य' के स्थान पर 'मम' पद बोलना चाहिए।

(१३) स्वप्नमें शुभाशुभ कथन करनेवाला मंत्र –

उपर्युक्त मंत्र को सोते समय (पांचों पदों को) खड़े होकर स्मरण कर मौनपूर्वक भूमि-शय्या पर पूर्व दिशाकी ओर मस्तक रखकर सो जाने पर स्वप्न में भावी शुभ-अशुभ फलका आभास मिलता है।

(१४) विद्याध्ययन-साधक मंत्र –

अरिहंत सिद्ध आयरिय उवज्झाय सव्व साहू।

इस मंत्रकी १ माला प्रतिदिन फेरते रहने से विद्याध्ययनमें सहायता मिलती है, स्मरणशक्ति बढ़ती है और पठित पाठ शीघ्र याद होने लगता है।

(१५) आत्मचक्षु-परचक्षु-रक्षामंत्र –

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं, पादौ रक्ष रक्ष।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, कटिं रक्ष रक्ष।

ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं, नाभिं रक्ष रक्ष।

ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं, हृदयं रक्ष रक्ष।

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं, ब्रह्माण्डं रक्ष रक्ष।

ॐ ह्रीं एसो पंच णमुक्कारो शिरस्त्रं रक्ष रक्ष।

ॐ ह्रीं सव्वपावप्पणासणो, आसनं रक्ष रक्ष।

ॐ ह्रीं मंगलाणंच सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं॥

इस मंत्र का ११ हजार जाप कर सिद्ध कर लेवे। पीछे २१ बार जाप करने से अभीष्ट कार्य सिद्ध हो जाता है।

(१६) पथिक-भय-हर-मंत्र –

ॐ णमो अरिहंताणं, नाभौ।

ॐ णमो सिद्धाणं, हृदये।

ॐ णमो आयरियाणं, कण्ठे।

ॐ णमो उवज्झायाणं, मुखे।

ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं, मस्तके।

सर्वाङ्गेषु आम्ह रक्ष रक्ष, हिलि हिलि, मातङ्गिनी स्वाहा।

ॐ णमो मोहिणी मोहिणी मोहय मोहय स्वाहा।

उक्त मंत्रको ११ हजार जाप कर सिद्ध कर लेवे। पश्चात् विकट मार्गमें जाते समय अथवा घरमें रहते हुए चोर-डाकू आदिका उपद्रव होने पर उक्त मंत्र का उच्चारण किया हुआ सर्व ओर पीले सरसों को फेंके तो चोर आदिका स्तम्भन होता है।

(१७) मोहन-मंत्र –

ॐ णमो अरिहंताणं, अरे अरिणि मोहिणि 'अमुकं मोहय मोहय स्वाहा।'

इस मंत्र का ११ हजार जाप २१ दिनमें श्वेत पुष्प चढ़ाते हुए करे। पीछे जिसे मोहित करना हो उसके ऊपर उक्त मंत्र से मंत्रित पुष्प क्षेपण करने से वह मोहित हो जाता है।

(१८) दुष्ट-स्तम्भन-मंत्र –

ॐ ह्रीँ अ सि आ उ सा सर्वदुष्टान् स्थम्भय स्थम्भय मोहय मोहय, अंधय अंधय, मूकय मूकय, कुरु कुरु ह्रीँ दुष्टान् ठः ठः ठः।

इस मंत्र का तीनों संध्याओंमें ११ सौ (ग्यारहसौ) जाप पूर्व दिशामें मुख करके करे। इस प्रकार २१ दिन तक जाप करनेसे मंत्र सिद्ध हो जाता है। तत्पश्चात् उक्त मंत्रसे मंत्रित पीले सरसों को सर्व ओर फेंकने से दुष्टजनों का स्तम्भन होता है।

(१९) भूत-प्रेत-बाधा-निवारक-मंत्र –

किसी व्यक्ति के ऊपर भूत-प्रेत-बाधा हो, या मकान आदिमें हो तो उपरि-लिखित दुष्ट-स्तम्भन मंत्रको ११०० सौ जाप प्रतिदिन विधि-पूर्वक करे, ईशान कोण में मुख कर बैठे और आठ रात तक अर्धरात्रिके समय साधना करे तो भूत-प्रेतादिकी सर्व बाधाएं दूर हो जाती हैं।

(२०) जीव-रक्षा-मंत्र-

ॐ णमो अरिहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आयरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाणं, ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं झुलु झुलु, कुलु कुलु, चुलु चुलु, मुलु मुलु स्वाहा।

मंत्र को तांबे की थाली में अष्ट गन्ध से लिख कर सवा लाख जाप करि सिद्ध करे पीछे पूजन-अर्चन करके १०८ बार जाप करने पर विपद्-ग्रस्त व्यक्ति की रक्षा होती है और कैदी भी कैद से छूट जाता है।

(२१) सम्पत्ति-दायक-मंत्र-

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अ सि आ उ सा चुलु चुलु, हुलु हुलु, कुलु कुलु, मुलु मुलु इच्छियं मे कुरु कुरु स्वाहा।

इस मंत्र का चौबीस हजार जाप २४ दिन में करे। पीछे पूजन-अर्चन करके एक माला प्रतिदिन फेरते रहने से सम्पत्ति का लाभ होता है।

(२२) सरस्वती का मंत्र-

ॐ अ सि आ उ सा नमोऽर्हं वाग्वादिनि सत्यवादिनि वाग्वादिनि वद वद, मम वक्त्रं व्याक्वान्चया ह्रीं सत्यं ब्रूहि सत्यं ब्रूहि, सत्यं वद सत्यं वद, अस्खलितप्रचारं तं देवं मनुजासुरसहसी ह्रीं अ सि आ उ सा नमः स्वाहा।

इस मंत्र का एक लाख जाप करने से सरस्वती सिद्ध होती है और लड़खड़ानेवाली बोली बोलनेवाला स्पष्ट बोली बोलने लगता है।

(२३) शान्ति-दाता मंत्र-

ॐ अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

इस मंत्र का नित्य एक हजार जाप करते रहने से चित्त को शान्ति प्राप्त होती है और गृह-कलह आदि दूर हो जाते हैं।

उक्त मंत्र में ॐ के बाद ह्रीं और जोड़ कर प्रतिदिन ग्यारहसौ जाप करते रहने से सम्पत्ति की प्राप्ति होती है।

(२४) मंगल-मंत्र-

अ सि आ उ सा नमः।

इस मंत्र की नित्य १० माला फेरते रहने से घर में सदा मंगल बना रहता है।

(२५) सर्वभय-रक्षा-मंत्र-

ॐ अर्हते उत्पत उत्पत स्वाहा। त्रिभुवनस्वामिनि ॐ धम्मेह जल-जलणादि-घोरुवसग्गं मम बाधणा सेउ स्वाहा।

इस मंत्र को किसी पात्र-थाली आदि में चन्दन-द्रव से लिखकर चौकी पर रखे। दीप-धूप सहित १०८ बार नित्य जाप करते रहने से आकस्मिक भय से रक्षा होती है।

(२६) तस्कर-स्तम्भन-मंत्र-

ॐ णमो अरिहंताणं धणुं धणुं महाधणुं महाधणुं स्वाहा।

इस मंत्र का ध्यान अपने लालाट में करे और किसी वस्त्र पर मंत्र लिखता जावे और बायें हाथ से मिटा कर मुट्ठी बांधता जावे। इस प्रकार १०८ बार लिखे, मिटावे और मुट्ठी बांधे। जाप पूर्ण होने पर सर्व दिशाओं में मुट्ठी खोलते हुए हाथ फटकारे तो चोर आदि का भय नहीं रहता। आता हुआ चोर डाकू आदि जहां का तहां रुक जाता है।

(२७) शुभाशुभ-दर्शक-मंत्र-

ॐ ह्रीं अर्हं नमः क्ष्वीं स्वाहा।

अपने हाथ को चन्दन-द्रव से लिप्त कर मंत्र का १०८ बार जाप कर मौन-पूर्वक भूमि पर सो जाने से स्वप्न में भावी शुभ या अशुभ का आभास होता है।

(२८) प्रश्नोत्तर-विजय मंत्र-

ॐ णमो भगवइ सुयदेवयाए सव्वसुयमायाए बारसंग-पवयण-जणणीए सरस्सईए सच्चवाइणि सुवण्णवण्णे अवतर अवतर, देवी मम सरीरे पविस, पुच्छंतस्स पविस, सव्वजण मणहरिए अरिहंत-सिरिए स्वाहा।

इस मंत्र को ग्यारह हजार जाप करके सिद्ध कर लेवे। पीछे किसी मुकद्दमे आदि के समय सवाल-जवाब करने से पूर्व २१ बार जपकर पूछे और पूछे का उत्तर देने से विजय प्राप्त होती है।

(२९) सर्वदा आत्म-रक्षक-मंत्र-

ॐ णमो अरिहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आयरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाणं, ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच णमुक्कारो सव्व-पावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं॥ ॐ ह्रीं हूं फट् स्वाहा।

इस मंत्र की १ माला प्रतिदिन फेरते रहने से सदा ही सर्व प्रकार से सुरक्षा बनी रहती है।

(२५) सर्वभय-रक्षा-मंत्र-

ॐ अर्हते उत्पत उत्पत स्वाहा। त्रिभुवनस्वामिनि ॐ घम्मेइ जल-जलणादि-घोरुवसग्गं मम वायणा सेउ स्वाहा।

इस मंत्रको किसी पात्र-थाली आदिमें चन्दन-द्रवसे लिखकर चौकी पर रखे। दीप-धूप सहित १०८ बार नित्य जाप करते रहनेसे आकस्मिक भय से रक्षा होती है।

(२६) तस्कर-स्तम्भन-मंत्र-

ॐ णमो अरिहंताणं धणुं धणुं महाधणुं महाधणुं स्वाहा।

इस मंत्रका ध्यान अपने ललाट में करे और किसी पट्ट पर मंत्र लिखता जावे और बायें हाथ से मिटा कर मुट्ठी बांधता जावे। इस प्रकार १०८ बार लिखे, मिटावे और मुट्ठी बांधे। जाप पूर्ण होने पर सर्व दिशाओं में मुट्ठी खोलते हुए हाथ फटकारे तो चोर आदिका भय नहीं रहता। आता हुआ चोर डाकू आदि जहां का तहां रुक जाता है।

(२७) शुभाशुभ-दर्शक-मंत्र-

ॐ ह्रीं अर्हं नमः क्ष्वीं स्वाहा।

अपने हाथको चन्दन-द्रवसे लिप्त कर मंत्रका १०८ बार जाप कर मौन-पूर्वक भूमि पर सो जानेसे स्वप्नमें भावी शुभ या अशुभ का आभास होता है।

(२८) प्रश्नोत्तर-विजय मंत्र-

ॐ णमो भगवइ सुयदेवयाए सव्व सुयमायाए बारसंग-पवयण-जणणीए सरस्सईए सच्चवाइणि सुवण्णवण्णे अवतर अवतर, देवी मम सरीरे पविस, पुच्छंतस्स पविस, सव्वजण मणहरिए अरिहंत-सिरिए स्वाहा।

इस मंत्र को ग्यारह हजार जाप करके सिद्ध कर लेवे। पीछे किसी मुकद्दमे आदिके समय सवाल-जवाब करने से पूर्व २१ बार जपकर पूछे और पूछे का उत्तर देनेसे विजय प्राप्त होती है।

(२९) सर्वदा आत्म-रक्षक-मंत्र-

ॐ णमो अरिहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आयरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाणं, ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच णमुक्कारो सव्व-पावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं॥ ॐ ह्रीं हूं फट् स्वाहा।

इस मंत्रकी १ माला प्रतिदिन फेरते रहनेसे सदा ही सर्व प्रकारसे सुरक्षा बनी रहती है।

(३०) द्रव्य-प्राप्ति और कल्याण-कारक मंत्र-

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं, सिद्धाणं, सूरीणं, आयरियाणं, उवज्झायाणं साहूणं मम ऋद्धि-वृद्धिं समीहितं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मंत्रको नित्य प्रति प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल ३२-३२ बार जाप करनेसे सर्व प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि होती है और घरमें मंगल बना रहता है।

(३१) नवीन ग्राम-प्रवेश-मंत्र-

ॐ णमो अरिहंताणं, णमो भगवइए-चंदाइए महाविज्जाए सत्तट्ठाए मिरे मिरे हुलु हुलु, चुलु चुलु, मयूर-वाहिनिए स्वाहा।

इस मंत्रका पौष कृष्णा दशमी के दिन उपवास करके १००८ बार जाप कर सिद्ध कर लेवे। पीछे किसी नवीन ग्राम-नगरादिमें प्रवेश करते समय जिस ओरका नासिका स्वर चलता हो - वही पांव पहिले उठाकर प्रवेश करने पर अर्थ-लाभ होता है।

(३२) शुभाशुभ-दर्शक-मंत्र -

ॐ णमो अरिह, ॐ भगवउ बाहुबलिस्स य इह समणस्स अमले विमले निम्मल-णाण-पयासिणि ॐ णमो सव्व भासइ अरिहा, सव्व भासइ केवली, एएणं सच्चवयणेणं सव्व होउ मे स्वाहा।

इस मंत्रका खड़े होकर १०८ बार जाप कर भूमि पर सोनेसे स्वप्नमें भावी शुभ-अशुभ का आभास होता है।

(३३) विवादे विजय-मंत्र-

ॐ हं सः, ॐ ह्रीं अ हे ऐं श्रीं अ सि आ उ सा नमः।

इस मंत्रको २१ बार मनमें स्मरण कर सामने वाले से वाद-विवाद करने पर विजय मिलती है।

(३४) उपवास-फल-मंत्र-

ॐ णमो, ॐ अर्हं अ सि आ उ सा णमो अरिहंताणं नमः।

इस मंत्रका १०८ बार जाप करनेसे एक उपवास का फल प्राप्त होता है।

उक्त ~~विजयदे~~

(३५) अग्नि-उपशमन-मंत्र-

उक्त विवादे विजय मंत्रको १००८ बार जाप कर सिद्ध कर लेवे। तत्पश्चात्

(३६) सर्प-भय-हर-मंत्र-

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत विजये अर्हं नमः।

इस मंत्रको दीपावली के दिन रात्रिके समय १००८ बार जाप कर सिद्ध करे। पीछे नित्य प्रति तीनों कालों में ७-७ बार स्मरण करे और प्रत्येक दीपावली की रात्रि में १०८ बार जपते रहनेसे यावज्जीवन सांप का भय नहीं रहता है। जहां पर सांप अधिक निकलते रहते हैं, वहां के रहनेवालों के लिए यह अति उपयोगी मंत्र है।

(३७) लक्ष्मी-प्राप्ति-मंत्र-

ॐ ह्रीं हूँ णमो अरिहंताणं ह्रौं नमः।

इसका नित्य प्रति १०८ जाप करने से लक्ष्मी प्राप्त होती है।

(३८) कार्य-सिद्धि-मंत्र-

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रौं ब्लूँ अर्हं नमः।

इसे पहिले २१ हजार जाप करके सिद्ध कर लेवे। पीछे प्रतिदिन १०८ बार जाप करते रहने से सर्व कार्य सिद्ध होते हैं।

(३९) शत्रु-भय-हर-मंत्र-

ॐ ह्रीं श्रीं अमुकं (नाम बोले) दुष्टं साधय साधय अ सि आ उ सा नमः।

इस मंत्र की २१ दिन तक प्रातः एक माला फेरे। पीछे जब कार्य हो तब इसका १०८ बार जाप करने से शत्रु का भय नहीं रहता।

(४०) रोग-क्षय-मंत्र-

ॐ णमो सव्वोसहिपत्ताणं।

ॐ णमो खेल्लोसहिपत्ताणं।

ॐ णमो जल्लोसहिपत्ताणं।

ॐ णमो सव्वोसहिपत्ताणं स्वाहा।

इस मंत्र की नित्य प्रति एक माला फेरने से सर्व प्रकार के रोग दूर होते हैं।

(४१) व्रण (घाव-) हर मंत्र-

ॐ णमो जिणाणं जावयाणं पुलोणिअं स्सणि सव्वावायेण वणमापच्छं उमायुष उमा फट् ॐ ॐ ठः ठः स्वाहा।

इस मंत्र से १०८ बार राख को मंत्रित कर घाव के ऊपर लगाने से घाव जल्दी भर जाता है। बच्चों के चेचक के दागों में भी यह लाभ-दायक है।

(४२) सूर्य-मंगल-ग्रह-शान्तिकर मंत्र-

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं।

इस मंत्र का प्रति दिन एक हजार आठ बार जाप तब तक करता रहे, जब तक कि उक्त ग्रह पीड़ाकर हों।

(४३) चन्द्र-शुक्र-ग्रह शान्तिकर मंत्र-

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं।

उक्त ग्रहों की पीड़ा रहने तक इस मंत्र का नित्य प्रति १००८ जाप करे।

(४४) बुध-ग्रह-शान्तिकर मंत्र-

ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं।

बुध ग्रह की पीड़ा रहने तक नित्य प्रति १००८ जाप जाप करे।

(४५) गुरु-ग्रह-शान्तिकर मंत्र-

ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं।

गुरु-ग्रह की पीड़ा रहने तक नित्य प्रति १००८ जाप करे।

(४६) शनि-राहु-केतु-शान्तिकर मंत्र-

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं।

उक्त ग्रहों की पीड़ा रहने तक नित्य प्रति १००८ बार मंत्र का जाप करे।

आवश्यक सूचना – जब तक जिस व्यक्ति के जिस ग्रह का योग रहे, तब तक उसे उक्त शान्तिकर मंत्रों का १००८ बार जाप करना चाहिए। इसके अतिरिक्त आगे दिये जानेवाले नवग्रह-शान्ति-विधान के अनुसार जब जिस ग्रह की दशा हो, तब उस ग्रह के वर्ण के अनुसार उन-उन तीर्थंकरों की पूजा करे, उन तीर्थंकरों के नाम का १०८ बार जाप करे। तदनुसार अन्न-भोजन एवं आभूषणादि भी धारण करे।

—०—

'ॐ' प्रणवाक्षर के ध्यान का माहात्म्य –

वैदिक सम्प्रदाय में 'ॐ' कार की कल्पना ब्रह्मा, विष्णु और महेश के रूप में की गई है। जैन सम्प्रदाय में तो ॐ कार को पंच परमेष्ठी का वाचक माना गया है और उसे 'ॐ' इस रूप में न लिखकर 'ओं' इस रूप में लिखने का रूप संस्कृत व्याकरण से सम्मत है। इस विषय की पुष्टि करने वाली गाथा इस प्रकार है –

{ अरिहंता असरीरा आयरिया तह उवज्झाय मुणिणो।
पढमक्खर-णिप्पण्णो ओंकारो पंचपरमेट्ठी॥

अर्थात् अरिहंत के आदि का अक्षर 'अ', अशरीरी सिद्ध के आदि का अक्षर 'अ' तथा आचार्य के आदि का अक्षर 'आ' ये तीनों 'अ+अ+आ = आ' संस्कृत व्याकरण के 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र के अनुसार 'आ' के रूप में परिणत हो जाते हैं। उपाध्याय का आदि अक्षर 'उ' आ+उ = 'ओ' 'आद्गुणः' सूत्र के नियम से मिलकर 'ओ' बन जाते हैं। साधु अर्थात् मुनि का आदि अक्षर 'म्' 'मोऽनुस्वारः' सूत्र के नियम से अनुस्वार में परिणत होकर 'ओम्' का 'ओं' यह रूप सिद्ध हो जाता है। इस प्रकार यह 'ओं' कार पंच परमेष्ठी का वाचक है। इसी प्रकार 'अ सि आ उ सा' ये पांचों अक्षर पंच परमेष्ठी के आदि अक्षर होने से संक्षेप रूप में पंच परमेष्ठी के वाचक जानना चाहिए।

'ओं' कार को मंत्र-शास्त्र में 'प्रणव' के नाम से उल्लेख किया गया है और इसे सर्व-सिद्धि-दायक कहा गया है। मंगलाचरण में बोले जाने वाले इस श्लोक में भी उसे 'कामद' अर्थात् सर्व सांसारिक कामनाओं को देने वाला और 'मोक्षद' मुक्ति को देने वाला कहा है।

यथा- ओंकारं बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमो नमः॥

'ओं' कार का ध्यान कुम्भक स्वर से अर्थात् बाहिर से भीतर की ओर श्वास खींचते हुए करना चाहिए। सांसारिक कार्यों में- यथा स्तम्भन करने में 'ओं' कार को पीत वर्ण का, वशीकरण में लाल वर्ण का, क्षोभ कार्य में हरे वर्ण का, और विद्वेष कार्य में काले वर्ण का चिन्तन करे। तथा कर्मों के विनाश के लिए एवं आत्मिक शान्ति के लिए इसे चन्द्र जैसी धवल उज्ज्वल कान्ति वाला चिन्तन करना चाहिए।

इस णमोकार मंत्र-कल्प के प्रारम्भ में जो गाथाएं दी गई हैं उनमें णमोकार मंत्र की महिमा बतलाते हुए उसे द्वादशांग वाणी का सार, और जिन शासन तथा चौदह पूर्वों का समुद्धार कहा है। यह 'ओं' कार उसी पंच परमेष्ठी के आद्य अक्षरों से बना बीज मंत्र है। जैसे किसी भी बीज के भीतर उसके भावी वृक्ष का आकार अन्तर्निहित रहता है, उसी प्रकार इस 'ओं' कार में समस्त मंत्रों के फलों का रहस्य भी अन्तर्निहित जान कर केवल एक 'ओं' कार के जप और ध्यान से मनुष्य लौकिक और पारलौकिक, तथा सांसारिक और पारमार्थिक सभी प्रकार के लाभों को प्राप्त कर सकता है।

इस 'ओं' कार का एकान्त, शान्त वातावरण में प्रसन्न चित्त होकर प्रतिदिन प्रातः और सायंकाल १०८ बार साधक को अवश्य जाप करते रहना चाहिए।

जिन पंच परमेष्ठी के आद्य अक्षरों के संयोग से यह 'ओं' कार बना है, उनके 'आदि अक्षर—' अ, सि, आ, उ, सा ' को निम्न प्रकार से ध्यान करने से अभीष्ट सिद्धि होती है —

नाभि-कमल में 'अ' कार का ध्यान करे।
मस्तक-कमल में 'सि' कार का ध्यान करे।
मुख-कमल में 'आ' कार का ध्यान करे।
हृदय-कमल में 'उ' कार का ध्यान करे।
कण्ठ-पिंजर में 'सा' कार का ध्यान करे।

नाभि आदि में आठ पत्रे वाले कमल की कल्पना करके मध्य की कर्णिका में 'ओं' तथा प्रदक्षिणा के क्रम से ऊपर से लेकर सब ओर एक-एक पत्र पर 'ओं' का ध्यान नौ बार करने से १०८ बार जाप हो जाता है। इसी प्रकार अन्य कमलों में भी १०८-१०८ बार जाप करे। प्रातःकाल के जाप ५ माला बराबर होते हैं और सायंकाल के भी जाप इतने ही होंगे। इस प्रकार प्रतिदिन एक हजार जाप सहज में हो जाते हैं।

पंच नमस्कार मंत्र के विभिन्न पदों के जाप का फल

१

गुरुपञ्चक नामोत्था विद्या स्यात् षोडशाक्षरा।
जपन् शतद्वयं तस्याश्चतुर्थस्याऽऽप्नुयात् फलम्॥१॥

मंत्र - अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नमः।

इस मंत्र की २ माला नित्य फेरने से चतुर्थभक्त (एक उपवास) का फल प्राप्त होता है।

शतानि त्रीणि षड्वर्णं चत्वारि चतुरक्षरम्।
पञ्चावर्णं जपन् योगी चतुर्थफलमश्नुते॥२॥

मंत्र - अरिहंत सिद्ध इन छह अक्षरों की ३ माला फेरने से एक उपवास का फल है।
मंत्र - अरिहंत इन चार अक्षरों की ४ माला फेरने से " "
मंत्र - सिद्ध इन दो अक्षरों की ५ माला फेरने से " "

३

पञ्चवर्णमयी पञ्चतत्त्वा विद्योद्धृता श्रुतात्।
अभ्यस्यमाना सततं भवक्लेशं निरस्यति॥३॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः।

इस मंत्र के प्रतिदिन १०८ जाप करने से सभी प्रकार के सांसारिक क्लेश दूर होते हैं।

४

मुक्तिसौख्यप्रदां ध्यायेद् विद्यां पञ्चदशाक्षराम्।
सर्वज्ञाभं स्मरेन्मन्त्रं सर्वज्ञानप्रकाशकम्॥४॥

पञ्चदशाक्षरी मंत्र- ॐ अरिहंत सिद्ध सयोगिकेवली स्वाहा।
सर्वज्ञाभ मंत्र - ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः।

उक्त मंत्रों का लगातार जाप करते रहने से सभी प्रकार की भविष्य-सूचना प्राप्त होती है।

५

वदीच्छेद् भवदावाग्नेः समुच्छेदं क्षणादपि।
स्मरेत्तदादिमन्त्रस्य वर्णसप्तकमादिमम्॥५॥

'णमो अरिहंताणं' इस सप्ताक्षरी मंत्र के जाप से भव-दावानल का विनाश होता है।

६

पञ्चवर्णं स्मरेन्मन्त्रं कर्म-निर्घातकं तथा।
वर्णमालाञ्चितं मन्त्रं ध्यायेत्सर्वाभयप्रदम्॥६॥

'णमो सिद्धाणं' इस पंचाक्षरी मंत्र के जाप से कर्मों का विनाश होता है।

वर्णमालाञ्चित मंत्र- ॐ नमोऽर्हते केवलिने परमयोगिने विस्फुरदुरु-शुक्लध्यानाग्निनिर्दग्धकर्मबीजाय प्राप्तानन्तचतुष्टयाय सौम्याय शान्ताय मंगल-वरदाय अष्टादशदोषरहिताय स्वाहा।

इस मंत्र के जाप से अभय पद प्राप्त होता है।

७

'अ सि आ उ सा' इस मंत्र के 'अ' को नाभिकमल में, 'सि' को मस्तक में, 'आ' को मुख कमल में, 'उ' को हृदयकमल में और 'सा' को कंठ-कमल में ध्यान करने से सर्व प्रकार मंगल-कामना पूर्ण होती है।

—०—

हृदयकमल की कर्णिका और आठ पत्रों पर पंच नमस्कार मंत्र और चार आवश्यक पदों का इस प्रकार से जाप करे -

अथवा इस प्रकार से जाप करे -

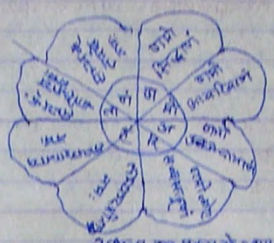

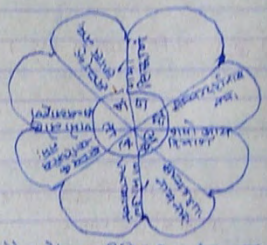

उक्त प्रकार से नौ पदों का प्रतिदिन १०८ बार जाप करने से सांसारिक ऐश्वर्य के साथ पारमार्थिक मोक्ष भी प्राप्त होता है। ज्ञानार्णवकार कहते हैं कि उक्त प्रकार से नौ पदों के जाप की महिमा वचन-अगोचर है।

(ज्ञानार्णव, सर्ग ३८ श्लो० ३८-४५)